

श्री जैन सिद्धान्त बोल संग्रह आठवें भाग के

खर्च का व्योरा

कागज २९॥१ रोम, फी रोम ४३॥	१२६८॥१)
छपाई फार्म ४९ की, प्रति फार्म १३॥	६३७)
जिल्द बँधाई ॥१) एक प्रति	३००)
	<hr/>
	२२०५॥१)

विषयसूची बनाने, प्रमाण ग्रन्थों से
मिलान करने तथा प्रेस कॉपी, प्रूफ
सशोधन आदि का खर्च

२७००)

४९०५॥१)

कागज, वाइन्डिंग क्लार्क, कार्डबोर्ड, रोलर कम्पोजिशन तथा प्रेस की
अन्य वस्तुओं के भाव बढ़ जाने और कम्पोज एवं छपाई खर्च कुछ अधिक
लगने के कारण ऊपर लिखे हिसाब से एक प्रति की लागत कीमत ८)
रूपये से अधिक पड़ी है। फिर भी ज्ञानप्रचार की दृष्टि से पुस्तक की कीमत
केवल २) दो रूपया ही रखी गई है। शेष सारा खर्च श्री अग्रचन्द भैरोदान
सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था, बीकानेर ने अपनी ओर से लगाया है।

नोट—श्री जैन सिद्धान्त बोल संग्रह के सभी भागों की कीमत लागत
से बहुत ही कम रखी गई है। इसलिए इन पर कमीशन नहीं दिया जाता।
श्री सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था की तरफ से जैन धर्म संबंधी अन्य
पुस्तकें भी प्रकाशित हुई हैं। विशेष जानकारी के लिए सूचीपत्र मँगाकर
देखिये। पुस्तक मँगाने वाले सज्जनों को अपना पता, पोष्ट आफिस और
रेल्वे स्टेशन का नाम साफ साफ लिखना चाहिए। पुस्तक बी. पी.
से भेजी जाती है।

पुस्तक मिलने का पता:—

- | | |
|--------------------------|-----------------------------|
| (१) पुस्तक प्रकाशन समिति | (२) अग्रचन्द भैरोदान सेठिया |
| बूलन प्रेस बिल्डिंग्स | जैन पारमार्थिक संस्था |
| बीकानेर (राजपूताना) | |

Agarchand Bhairudan Sethia
Jain Charitable Institution, Bikaner.

दो शब्द

श्री जैन सिद्धान्त बोल सग्रह के सातवें भाग के प्रकाशित होने के करीब तेरह महीनों के पश्चात् यह आठवाँ भाग पाठकों की सेवा में उपस्थित करते हुए हमें बड़े हर्ष और सन्तोष का अनुभव हो रहा है। आठवें भाग के साथ यह ग्रन्थ समाप्त हो रहा है। निरंतर छ वर्ष के परिश्रम से श्री जैन सिद्धान्त बोल सग्रह के ये आठ भाग तैयार हुए हैं। छः वर्ष पूर्व सोचे एवं स्वीकार किये हुए कार्य को पूरा कर आज हम अपने को भारमुक्त अतएव हल्का अनुभव कर रहे हैं।

यह आठवाँ भाग पहले के सात भागों का विषय कोप है। इस भाग में सातों भागों में आये हुए विषयों की विस्तृत सूची अक्षरादिक्रम से दी गई है। सात भागों के बोल जिन आगम एवं सिद्धान्त ग्रन्थों से उद्धृत किये गये हैं उन प्रमाणभूत ग्रन्थों का उल्लेख भी इस सूची में किया गया है। प्रमाणभूत ग्रन्थों का पूरा नाम देने से इसका बहुत अधिक विस्तार हो जाता अतएव यहाँ उनका निर्देश संकेत रूप से किया गया है। सक्तों के खनाम के लिये प्रमाण ग्रन्थों की संकेत सूची पृथक् दी गई है और उसमें ग्रन्थों के पूरे नाम तथा ग्रन्थ कर्त्ताओं के नाम, प्रकाशन का स्थान और समय आदि दिये गये हैं।

इस अनुक्रमणिका में पाठकों की जिज्ञासा का खयाल कर एक ही बोल दो चार तरह से बदल कर दिया गया है एवं बोल के अन्तर्गत भेद प्रभेदों का भी इसमें समावेश किया गया है। सूची तैयार करते समय यह भी खयाल रखा गया है कि सख्या विशेष एवं विषय विशेष के बोल लगातार एक साथ आ जायें। इसी तरह गाथाएँ और कथाएँ भी पास पास रखी गई हैं। शास्त्र विशेष के जितने अव्ययनाँ कथ्य इन भागों में आये हैं वे भी एक साथ दिये गये हैं। इस प्रकार पाठकों की सुविधा का खयाल कर हमने यह अनुक्रमणिका बहुत विस्तृत बनाई है। इस अनुक्रमणिका को तैयार करते समय सातों भागों का प्रमाण ग्रन्थों से, जिनसे कि इन भागों में बोल लिये गये हैं, भी मिलान किया गया है और सातों भागों के बोलों के प्रमाणों में जहाँ कहीं कमी या त्रुटि थी वह इस अनुक्रमणिका में यथासंभव ठीक कर दी गई है। यही कारण है कि इसे तैयार करने में इतना समय लगा है और सभित्ति को इसके लिये पर्याप्त परिश्रम उठाना पड़ा है। सहृदय पाठकों से यह भी निवेदन है कि इस विषय सूची से सात भागों में दिये हुए प्रमाण में कुछ भिन्नता हो तो वे विषयसूची के अनुसार भागों में सुधार कर लें।

जैन सिद्धान्त बोल सग्रह के सात भागों में कौनसा विषय किस भाग में कहाँ पर है ? पाठकगण इस विषय सूची की सहायता से सुगमतापूर्वक इसका पता लगा सकेंगे तथा साथ में प्रमाण ग्रन्थ होने से शका अथवा विशेष जिज्ञासा होने पर पाठक उन ग्रन्थों को देखकर आत्मसन्तोष कर सकेंगे। इसके अतिरिक्त यह विषयकोप जैन पारिभाषिक

शब्दों के लिये जैन कोष का काम भी देगा और पाठक केवल इसी की सहायता से कौनसा विषय किस ग्रन्थ में कहाँ पर है? सहज ही जान सकेंगे।

जैन सिद्धान्त बोल सग्रह कोई मौलिक रचना नहीं है। प्राकृत, संस्कृत भाषा के सिद्धान्त ग्रन्थों में से चुने हुए विषय सरल हिन्दी भाषा में आवश्यक व्याख्या एवं विवेचन के साथ इन भागों में दिये गये हैं। अतएव हम उन सभी ग्रन्थकारों के, जिनके ग्रन्थों से हमने बोलसग्रह में बोल लिये हैं, अत्यन्त ऋणी हैं। यदि हमारे अनुवाद, व्याख्या अथवा विवेचन में उन ग्रन्थकारों के आशय से कहीं खलना हुई हो तो हम उनसे क्षमा याचना करते हैं। पाठकगण से भी हमारा यह निवेदन है कि यदि उन्हें हमारे इस प्रकाशन में कोई त्रुटि या कमी प्रतीत हो तो हमें अवश्य सूचित करें ताकि हम आगामी संस्करण में उचित सुधार कर सकें। उनकी इस कृपा के लिए हम उनके कृतज्ञ रहेंगे।

इस आठवें भाग के छपाने में श्री प० हनुमान प्रसाद जी शर्मा शास्त्री ने अध्यवसाय-पूर्वक बड़ा परिश्रम उठाया है अतएव हम उन्हें धन्यवाद देते हैं। अन्त में इस ग्रन्थ के लेखन, सकलन, सशोधन प्रकाशन आदि में हमें प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से जिन जिन महात्मावों की सहायता प्राप्त हुई है उन सभी के प्रति आभार प्रदर्शित हुए हम अपना यह वक्तव्य समाप्त करते हैं।

पुस्तक प्रकाशन समिति
ऊन प्रेस बिल्डिंग्स, बीकानेर।

श्री सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था, बीकानेर पुस्तक प्रकाशन समिति

अध्यक्ष—श्री दानवीर सेठ भैरोदानजी सेठिया।

मंत्री—श्री जेठमलजी सेठिया।

उपमंत्री—श्री माणकचन्दजी सेठिया।

लेखक मण्डल

श्री इन्द्रचन्द्र शास्त्री एम.ए., शास्त्राचार्य, न्यायतीर्थ, वेदान्तवारिधि।
श्री रोशनलाल जैन बी. ए., एलएल. बी., न्यायतीर्थ, काव्यतीर्थ,
सिद्धान्ततीर्थ, विशारद।

श्री श्यामलाल जैन एम.ए., न्यायतीर्थ, विशारद।

श्री घेवरचन्द्र बाँठिया 'वीरपुत्र' न्यायतीर्थ, व्याकरणतीर्थ,
सिद्धान्तशास्त्री।



भैरोंदान सेठिया

जन्म सं० १९२३ विजया दशमी
फोटो सं० १९६३ अक्षय तृतीया





श्रीमान् धर्मभूषण दानवीर
सेठ भैरोंदानजी सेठिया
की
संक्षिप्त जीवनी

दानवीर सेठ भैरोंदानजी सेठिया का जन्म जैन बीसा ओस-वांल कुल में विक्रम संवत् १६३३ विजयादशमी के दिन हुआ। आप के पिता का नाम श्री धर्मचन्दजी था। आप चार भाई थे। श्री प्रतापमल्लजी और अग्रचन्दजी आप से बड़े और हजारीमल्लजी आप से छोटे थे। आप दो वर्ष के ही थे कि आपके पिता का स्वर्ग-वास हो गया। सात वर्ष की अवस्था में बीकानेर में बड़े उपाश्रय में साधुजी नामक यति के समीप आपकी शिक्षा का आरम्भ हुआ। दो वर्ष यहाँ पढ़ कर विक्रम सं० १६३२ में आपने कलकत्ते की यात्रा की। वहाँ से लौटकर आप बीकानेर के समीप शिववाड़ी गांव में

रहे । मन्दिर, उद्यान और सरोवर से यह गाँव सुहावना है । उस समय राज्य की विशेष कृपादृष्टि होने से यहाँ का व्यापार बढ़ा चढ़ा था । यहाँ सदा बाजार में मेला सा लगा रहता था । यहाँ आप अपने ज्येष्ठ भ्राता श्री प्रतापमलजी के पास व्यापार का काम सीखने लगे । स० १६३६ में आपने वम्बई की यात्रा की । वहाँ आपने बड़े भाई श्री अग्रचन्दजी के पास रह कर आपने वहीखाता जमा खर्च आदि व्यापारिक शिक्षा के साथ अंग्रेजी, गुजराती, आदि भाषाएं सीखीं । शिक्षा के साथ आपने यहाँ व्यावहारिक अनुभव भी प्राप्त किया । यहीं आपकी शिक्षा समाप्त नहीं होती । नवीन ज्ञान सीखने की लगन आपको जीवन भर रही और आज भी है । ज्ञान सीखने के प्रत्येक अवसर से आपने सदा लाभ उठाया है । दूसरे को पढ़ाने और सिखाने में भी आप सदा दिलचस्पी लेते रहे हैं । कई व्यक्तियों को व्यापार व्यवसाय का काम सिखा कर आपने उन्हें सफल व्यापारी बनाया है । आपने अपनी संस्था से भी कई सुयोग्य व्यक्ति तैयार किये हैं एवं उन्हें ऊँची से ऊँची शिक्षा दिलाई है ।

संवत् १६४० में आप देश आये । इसी वर्ष आप का विवाह हुआ । कुछ समय देश में ठहर कर संवत् १६४१ में आप पुनः वम्बई पधारे । यहाँ आकर आप एक फर्म में, जिसमें चालानी का काम होता था, मुनीम के पद पर नियुक्त हुए । आपके बड़े भाई श्री अग्रचन्दजी इस फर्म के सांभालदार थे ।

वम्बई में सात वर्ष रहकर सं० १६४८ में आप कलकत्ते गये और वहाँ आपने अपनी संचित पूँजी से मनिहारी और रंग की दुकान खोली और गोली सूता का कारखाना शुरू किया । सफल व्यापारी में व्यापारिक ज्ञान, अनुभव, समय की सूझ, साहस, अध्यवसाय, परिश्रमशीलता, ईमानदारी, वचन की दृढ़ता, नम्रता

तथा स्वभाव की मधुरता आदि जो गुण होने चाहिये वे सभी आप में विद्यमान थे। इसलिये थोड़े ही समय में आपका व्यापार चमक उठा। धीरे धीरे आपने प्रयत्न करके भारत से बाहर बेल्जियम, स्विज़रलैंड और बर्लिन आदि के रंग के कारखानों की तथा गबलॉन्ज (Gablonz) आष्ट्रिया के मनिहारी के कारखानों की सोल एजेन्सियाँ प्राप्त कर लीं। फलतः आपको अधिक लाभ होने लगा और काम भी विस्तृत हो गया। इसी समय आपके बड़े भाई श्री अग्र-चन्दजी भी आपकी फर्म में सम्मिलित हो गये। अव फर्म का नाम 'ए. सी. बी. सेठिया एन्ड कम्पनी' रखा गया। कार्य के विस्तृत हो जाने से आपने कर्मचारियों को बढ़ाया। फर्म की व्यवस्था के लिये आपने एक अंग्रेज को असिस्टेन्ट मैनेजर के पद पर नियुक्त किया और पत्र व्यवहार के लिये एक वकील को रक्खा। कर्मचारियों के साथ आपका व्यवहार स्वामी-सेवक का नहीं किन्तु परिवार के सदस्य का सा रहा है। आप कर्मचारियों से काम लेना खूब जानते हैं और उन्हें सब तरह निभाते भी हैं। उक्त अंग्रेज आपके पास २७ वर्ष रहा और वकील बाबू आज भी आपके सुपुत्र श्री जेठमलजी साहब की फर्म में हैं।

आप स्वभाव से ही कर्मठ और लगन वाले हैं। आपने कार्य करना ही सीखा है, विश्राम तो आपने जाना ही नहीं। जिस कार्य को आपने हाथ में लिया, उसे पूरा किये बिना आपने कभी नहीं छोड़ा। व्यापारिक जीवन में ऐसी सफलता पाकर भी आपने विश्राम नहीं लिया। आप और आगे बढ़ना चाहते थे। फलस्वरूप आपने हावड़ा में 'डी सेठिया कलर एन्ड केमिकल वर्क्स लिमिटेड' नामक रंग का कारखाना खोला। यह कारखाना भारतवर्ष में रंग का सर्वप्रथम कारखाना था। कारखाने से तैयार होने वाले सामान की खपत के लिये आपने भारत के प्रमुख नगरों—कल-

कत्ता, वम्बई, मद्रास, कराची, कानपुर, देहली, अमृतसर और अहमदाबाद में अपनी फर्म की शाखाएं खोलीं । इसके सिवा जापान के ओसाका नगर में भी आपने ऑफिस खोला ।

यहाँ यह बता देना भी अप्रासंगिक न होगा कि कारखाने और ऑफिस में विभिन्न कार्यों पर कुशल व्यक्तियों के नियुक्त होने पर भी आप आवश्यकता पर छोटे से बड़े सभी काम निस्संकोच भाव से कर लेते थे । गुरु से अन्त तक सभी कामों की जानकारी आप रखते थे । सर्वथा लोगों पर आपका कार्य निर्भर रहे यह आपको कतई पसन्द न था । यही कारण है कि रंगों के विश्लेषण के फॉर्मूले सीखने के लिये आपने एक जर्मन विशेषज्ञ को केवल दैनिक पाँच मिनिट के लिये ३००) मासिक पर नियुक्त किया एवं उसके लिये आपने निजी प्रयोगशाला स्थापित की ।

संवत् १९५७ में एक पुत्री (वसन्तकंवर) और दो पुत्रों (श्री जेठमलजी और पानमलजी) को छोड़कर आपकी धर्मपत्नी का स्वर्गवास होगया । आपकी पत्नी धर्मात्मा और गृहकार्य में बड़ी दक्ष थीं । इसी कारण आप गृह-व्यवस्था की चिन्ता से सदा मुक्त रहे एवं अपनी सभी शक्तियाँ व्यापार व्यवसाय में लगा सके थे । पहली धर्मपत्नी के स्वर्गवास होने पर आपका दूसरा विवाह हुआ । कर्तव्यनिष्ठ सेठियाजी का उस समय व्यापार-व्यवसाय की ओर ही विशेष ध्यान था । आप कुशलतापूर्वक व्यापार व्यवसाय में लगे रहे और उत्तरोत्तर सन्नति करने लगे । सं० १९७१ (सन् १९१४) के गत महायुद्ध में आपको रंग के कारखाने से आशातीत लाभ हुआ ।

संवत् १९६५ में आप एक भयंकर बीमारी से ग्रस्त हो गये । इस समय आप कलकत्ते थे । वहाँ के प्रसिद्ध डॉक्टर और वैद्यों का इलाज हुआ पर आपको कोई लाभ न पहुँचा । अन्त में आपने



Agarchand Bhairrodan Sethia
Jain Charitable Institution, Bikaner
श्री अगरचंद भैरोंदान सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था,
संस्था-भवन, बीकानेर



अज्ञानं तमसां पतिं विदलयन् सत्यार्थमुद्भासयन् ।
भ्रान्तान् सत्पथदर्शनेन सुखदे मार्गे सदा स्थापयन् ॥
ज्ञानालोकविकासनेन सततं भूलोकमालोकयन् ।
श्रीमद्भैरवदानमान पदवी पीठः सदा राजताम् ॥

कलकत्ता के प्रसिद्ध होमियोपैथिक डॉक्टर प्रतापचन्द्र मजूमदार से इलाज करवाया और आप स्वस्थ हुए। इसी समय से आपको होमियोपैथी चिकित्सा-पद्धति में अपूर्व विश्वास हो गया। आपकी जिज्ञासा बढ़ी और उक्त डॉक्टर के सुयोग्य पुत्र डॉक्टर जतीन्द्रनाथ के पास आपने होमियोपैथी का अभ्यास किया एवं इसमें प्रवीणता प्राप्त की। तभी से आप होमियोपैथी साहित्य देखते रहे हैं एवं जनता में अमूल्य दवा वितरण करते रहे हैं। वर्षों के अनुभव ने आपको इस प्रणाली का विशेषज्ञ बना दिया है।

सेठ साहेब ने केवल धन कमाना ही नहीं सीखा पर आप

विक्रमसंवत् १९६८ तदनुसार सन् १९१३ ई. में सेठ साहेब ने बीकानेर नगर में किंग एडवर्ड मेमोरियल रोड पर एक दूकान बी. सेठिया एन्ड सन्स के नाम से खोली। नाना प्रकार के फैंसी बढ़िया सामान और नई नई फैशन की चीजों के लिये यह बीकानेर की प्रसिद्ध दूकान है। यहाँ से सेठ, साहूकार, रईस और ऑफिसर लोग सामान खरीदते हैं। इसे सफलता पूर्वक चला कर सेठ साहेब ने यह दूकान अपने द्वितीयपुत्र श्री पानमलजी को दे दी। दूकान के पीछे उमसे जुड़ी हुई हवेली है। सेठ साहेब ने पानमलजी को दूकान और हवेली का पूरा मालिक बना दिया है और तारीख १४-१०-१९३० ई. को इन्हीं के नाम पर राज्य से इस जायदाद का पट्टा बनवा दिया है। पानमलजी ने आसपास और जमीन खरीद कर इस जायदाद को बढ़ाया है और काफी लागत लगा कर दूकान को दुबारा बनाया है जो कि नई फैशन का दुर्गमजिला विशाल भवन है। अभी पानमलजी और उनके पुत्र कुन्दनमलजी इस दूकान को बी. सेठिया एन्ड सन्स के नाम से ही चला रहे हैं।

सेठिया जैन पारमार्थिक संस्थाओं के विभिन्न विभागों द्वारा पिछले चाईस वर्षों में, समाज में शिक्षा एवं धर्म प्रचार के जो महत्वपूर्ण कार्य हुए वे समाज के सामने हैं।

सं० १९७६ में आपके पुत्र उदयचन्दजी का असामयिक देहान्त होगया। इस घटना से आप अत्यन्त प्रभावित हुए। व्यापार व्यवसाय से आपका मन हट गया। अतएव कलकत्ते का विरतृत व्यापार ससेट कर आप बीकानेर पधार गये। आपने पारमार्थिक संस्थाओं का कार्य हाथ में लिया और अपनी सारी शक्तियों संस्थाओं की उन्नति में लगा दीं। धार्मिक ज्ञानवृद्धि का भी आपने यह अच्छा सुयोग समझा। आपने थोकड़े, बोल और स्तवनों का स्वयं संग्रह किया और उन्हें प्रकाशित कराया। इसके सिवा आपने संस्कृत, प्राकृत, अर्द्धमागधी, आगम, न्याय, धर्मशास्त्र, हिन्दी, नीति और कानून विषयक पुस्तकों भी प्रकाशित कीं। इस वृद्धावस्था में भी आपने निरन्तर सं० १९६६ से पाँच वर्ष तक अथक परिश्रम कर अपूर्व लगन के साथ जैनसिद्धान्त बोल संग्रह के आठ भाग, सोलह सती और आर्हत प्रवचन ग्रन्थ तैयार करा प्रकाशित कराये हैं। आपकी ज्ञानपिपासा एवं ज्ञान प्रचार की भावना के फलस्वरूप संस्था से १०७ पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं।

आपकी दानवीरता एवं समाज तथा धर्म की सेवा का सम्मान कर सन् १९२६ में अखिल भारतवर्षीय श्रीश्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स के कार्यकर्त्ताओं ने आपको कॉन्फरन्स के वम्बई में होने वाले सप्तम अधिवेशन का सभापति चुना। कॉन्फरन्स का यह अधिवेशन बड़ा शानदार और सफल हुआ। आपकी दानशीलता के प्रभाव से उस अधिवेशन में एक लाख से अधिक फंड इकट्ठा हुआ।

समाज और धर्म की सेवा के साथ आपने बीकानेर नगर और राज्य की भी सेवा की। लगभग दश वर्ष तक आप बीकानेर म्यूनिसि-

पल बोर्ड के कमिश्नर रहे। सन् १९२६ में सबसे पहले जनता में से आप ही सर्व सम्मति से बोर्ड के वाइस प्रेसिडेन्ट चुने गये। सन् १९-३१ में राज्य ने आपको ऑनरेरी मजिस्ट्रेट बनाया। लगभग सवा दो वर्ष तक आप बेंच ऑफ ऑनरेरी मजिस्ट्रेट्स में कार्य करते रहे। आपके फैसल किये हुए मामलों की प्रायः अपीलें हुई ही नहीं, यदि दो एक हुई भी तो अपीलेंट कोर्ट में भी आप ही की राय बहाल रही। इससे आपकी नीर-क्षीर विवेकिनी न्यायबुद्धि का सहज ही अन्दाज हो जाता है। सन् १९३८ में म्यूनिसिपल बोर्ड की ओर से आप बीकानेर लेजिस्लेटिव एसोसिएट्स के सदस्य चुने गये। निस्स्वार्थभाव से बीकानेर की जनता की सेवा कर आप उसके कितने विश्वस्त एवं प्रिय बन गये, यह इससे स्पष्ट है।

सन् १९३० में संयोगवश सेठियाजी को पुनः व्यवसायक्षेत्र में प्रवेश करना पड़ा। बीकानेर में बिजली की शक्ति से चलने वाला ऊन की गाँठें बाँधने का एक प्रेस बिकाउ था। योग्य कार्यकर्त्ताओं के अभाव से वह बन्द पड़ा था। प्रेस के मालिक उसे चला न सके थे। क्रियात्मक शिक्षा देकर अपने पुत्रों को व्यापार-व्यवसाय में कुशल बनाने के उद्देश्य से आपने उक्त प्रेस खरीद लिया। राज्य ने आपको रियासत भर के लिये प्रेस की मोनोपोली दी। आपने प्रेस को एवं बीकानेर के ऊन के व्यापार को उन्नति देने का निश्चय किया। प्रेस के अहाते में आपने इमारतें, गोदाम और मकानात बनवाये और व्यापारियों के लिये सभी सहूलियतें प्रस्तुत कीं। आपने कमीशन पर व्यापारियों का खरीद फरोख्त का काम भुगताना, आर्डर सलाई एवं यहाँ से सीधा विलायत में माल चढ़ाने का काम शुरू किया। माल पर पेशगी रकम देकर भी आपने व्यापारियों को प्रोत्साहित किया। आपने प्रयत्न करके व्यापारियों के हक में राज्य एवं बीकानेर स्टेट रेल्वे से सुविधाएँ प्राप्त कीं। सभी प्रकार की सुवि-

धाओं के होने से वीकानेर राज्य एवं बाहर के व्यापारी यहाँ काफी तादाद में आने लगे। उन का कारबार करने वाली बड़ी बड़ी कम्पनियाँ भी यहाँ अपने कर्मचारी रखने लगीं। इस प्रकार उत्तरोत्तर प्रेस का काम बढ़ने लगा। सन् १९३४ में आपने उन के फॉटों से उन निकालने के लिये ऊल बरिंग फेक्टरी (Wool Buring Factory) खरीदी। राज्य ने इसके लिये भी आपके हक में मोनोपोली स्वीकृत की। इस प्रकार कुछ ही वर्षों में आपकी लगन और परिश्रम ने आपके संकल्प को कार्य रूप में परिणत कर दिया। आज उन प्रेस सन् १९३० के उन प्रेस से कुछ और ही है। यहाँ सैकड़ों मजदूर लगते हैं और हजारों मन उन का व्यापार होता है। हजारों गाँठें बँधती हैं और विलायत भेजी जाती हैं। प्रेस की साख ने लिवरपूल के मार्केट को भी प्रभावित कर रखा है। प्रेस के मार्केट वाली गाँठें वहाँ अपेक्षाकृत ऊँचे भाव में विक्रती हैं।

सेठ सा० की धार्मिकता एवं परोपकार-भावना के फलस्वरूप उन प्रेस में भी गाय गोधों के घास एवं कबूतरों के चुगे के लिये, होमियोपेथिक एवं आयुर्वेदिक औषधियों के लिये तथा साधारण सहायता आदि के लिये पृथक् पृथक् फंड कायम किये हुए हैं और सभी में अलग अलग रकम जमा कराई हुई है। रकम के व्याज की आब से उपरोक्त सभी कार्य नियमित रूप से चल रहे हैं। उन प्रेस के आदतिये भी गाय गोधों के घास एवं कबूतरों के चुगे के लिये लागा देते हैं।

इस प्रकार उन प्रेस को सब भौति समृद्धत कर सेठ साहेब ने उसे अपने सुयोग्य पुत्र श्री लहरचंदजी, जुगराजजी, और ज्ञानपालजी के हाथ सौंप दिया है एवं आप व्यापार व्यवसाय से सर्वथा निवृत्त हो धर्मध्यान में संलग्न हैं। पिछले पाँच वर्षों से धार्मिक साहित्य पढ़ना, सुनना और तैयार करवाना ही आपका कार्यक्रम रहा है।

परिवार की दृष्टि से सेठ सा० जैसे भाग्यशाली विरले ही मिलते हैं। आप के पाँच पुत्र हैं। सभी शिक्षित, संस्कृत एवं व्यापारकुशल हैं। सभी जुड़े किये हुए हैं एवं जुड़े २ व्यापार व्यवसाय में लगे हुए हैं। पाँचों पुत्र सेठजी के आज्ञानुवर्ती हैं एवं सभी भाइयों में परस्पर सराहनीय प्रेम है। यही नहीं आपके छः पौत्र, दो प्रपौत्र, दो पौत्री और दो प्रपौत्री हैं। सेठजी के दो पुत्रियों में से छोटी पुत्री मौजूद है एवं तीन दोहिते और पाँच दोहितियाँ हैं।

सेठजी सफल व्यापारी, समाज और राज्य में प्रतिष्ठा प्राप्त, बड़े परिवार के नेता एवं सम्पन्न व्यक्ति हैं। आप दानवीर और परोपकारपरायण हैं। धर्म और परोपकार के कार्यों में आपने उदारता के साथ धन ही नहीं बहाया किन्तु तन और मन का योग भी आपने दिया है। बचपन में माता और बड़ी बहिनों से धार्मिक संस्कार प्राप्त करने वाले एवं धर्मस्थान में शिक्षा का श्रीगणेश करने वाले सेठ साहेब की प्रवृत्ति सांसारिक कार्यों के बीच रहते हुए भी सदा धार्मिक रही है। सांसारिक वैभव में जलकमलवत् निर्लिप्त रह कर आपने नाम से ही नहीं, कर्म से भी धर्मचन्द का पुत्र होना सिद्ध किया है। आपने बचपन में ही श्री हुक्मीचन्द जी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री केवलचन्द जी महाराज से धर्म श्रद्धा ग्रहण की थी। आप गुणों के ही पुजारी हैं। पंच महाव्रतधारी निर्मल आचारवाले सभी साधु आपके लिये पूज्य हैं। आपने अपने जीवन में कभी चाय, भंग, तमाखू या अफीम का सेवन नहीं किया। सात व्यसनों का आपके त्याग है तथा रात्रिभोजन का भी आपके नियम है। आपने श्रावक के वारह व्रत धारण किये हैं और जीवन के पिछले वर्षों में आपने शीलव्रत भी धारण किया है। ग्रहण किये हुए त्याग प्रत्याख्यान आप दृढ़ता के साथ पालन करते रहे हैं।

आपकी सब से बड़ी विशेषता यह है कि आप स्वनिर्मित हैं। आप सदा स्वावलम्बी, साहसी, अध्यवसायशील एवं कर्मठ रहे हैं। सभी प्रकार से सम्पन्न होकर भी आप सर्वथा निरभिमान हैं। 'सादा जीवन और उच्च विचार' इस महान् सिद्धान्त को आपने जीवन में कार्य रूप दिया है। आपका चरित्र पवित्र एवं अनुकरणीय है। आप में परमहंसों का सा त्याग, साधुओं का सा कर्मसंन्यास और बीरों की सी कर्मनिष्ठा है। आपने क्या नहीं किया और क्या नहीं पाया परन्तु सांसारिक विभूति के मोह बन्धन में आपने अपने को कभी नहीं बाँधा। आपके इन्हीं गुणों से प्रभावित होकर जैन गुरुकुल शिक्षण संघ, व्यावर ने आपको 'धर्म भूषण' की उपाधि से विभूषित किया है। यह उपाधि सब तरह से आप जैसे महापुरुष को शोभा देती है। हमारी परमात्मा से यही प्रार्थना है कि आप चिरायु हों।

बीकानेर (राजपूताना)
भादवा सुद ७ वि० सं० २००१
ता० २६-७-४४ ई०

रोशनलाल जैन
बी.ए., एल.एल.बी.,
न्याय-काव्य-सिद्धान्ततीर्थ, विशारद.

श्रीमान् सेठ धर्मचन्दजी का वंश

श्रीमान् सेठ धर्मचन्दजी के चार पुत्र और पाँच पुत्रियाँ हुईं। उनके नाम—श्रीप्रतापचन्दजी, श्रीअगरचन्दजी, श्रीभैरोंदानजी, श्रीहजारीमलजी, चौदाबाई, घमाबाई, पन्नीबाई, मीराबाई और टुगीबाई। श्रीमान् प्रतापचन्दजी के तीन पुत्रियाँ और तीन पुत्र हुए। उनके नाम—तरखुबाई, सुगनीबाई, मानबाई। सुगनचन्दजी, हीरालालजी, चनणमलजी। इन तीनों के कोई सतान न हुई। इन तीनों का तरुणावस्था में ही स्वर्गवास हो गया। श्रीमान् चनणमलजी की धर्मपत्नी अभी मौजूद है। उन्होंने श्रीमान् जेठमलजी सेठिया के ज्येष्ठ पुत्र श्रीमाणकचन्दजी को गोद लिया।

श्रीमान् अगरचन्दजी के कोई सन्तान न हुई। उन्होंने अपने लघुभ्राता श्रीमान् भैरोंदानजी के ज्येष्ठ पुत्र श्रीजेठमलजी को गोद लिया।

श्रीमान् भैरोंदानजी के ६ पुत्र और दो पुत्रियाँ हुईं। वे इस प्रकार हैं—१ वसन्तकुंवर, २ जेठमलजी, ३ पानमलजी, ४ लहरचन्दजी, ५ उदयचन्दजी, ६ जुगराजजी, ७ ज्ञानपालजी, ८ और मोहिनीबाई। संवत् १८८६ मितिकाती सुद ८ को वसन्तकुंवर बाई का स्वर्गवास हो गया। उनके दो पुत्र और तीन पुत्रियाँ हैं।

श्रीमान् जेठमलजी के चार पुत्र और एक पुत्री हुईं। उनके नाम—माणकचन्दजी, केशरीचन्दजी, मोहनलाल, जसकरण और स्वर्णलता। १८८४ में केवल आठ वर्ष की अवस्था में ही जसकरण का स्वर्गवास हो गया। श्रीमाणकचन्दजी के इस समय एक पुत्र कुसुमकुमार और एक पुत्री आशालता है।

श्रीमान् पानमलजी के इस समय एक पुत्र श्रीकुन्दनमलजी (भवरलालजी) है । कुन्दनमलजी के एक पुत्र रविकुमार और एक पुत्री लीला है ।

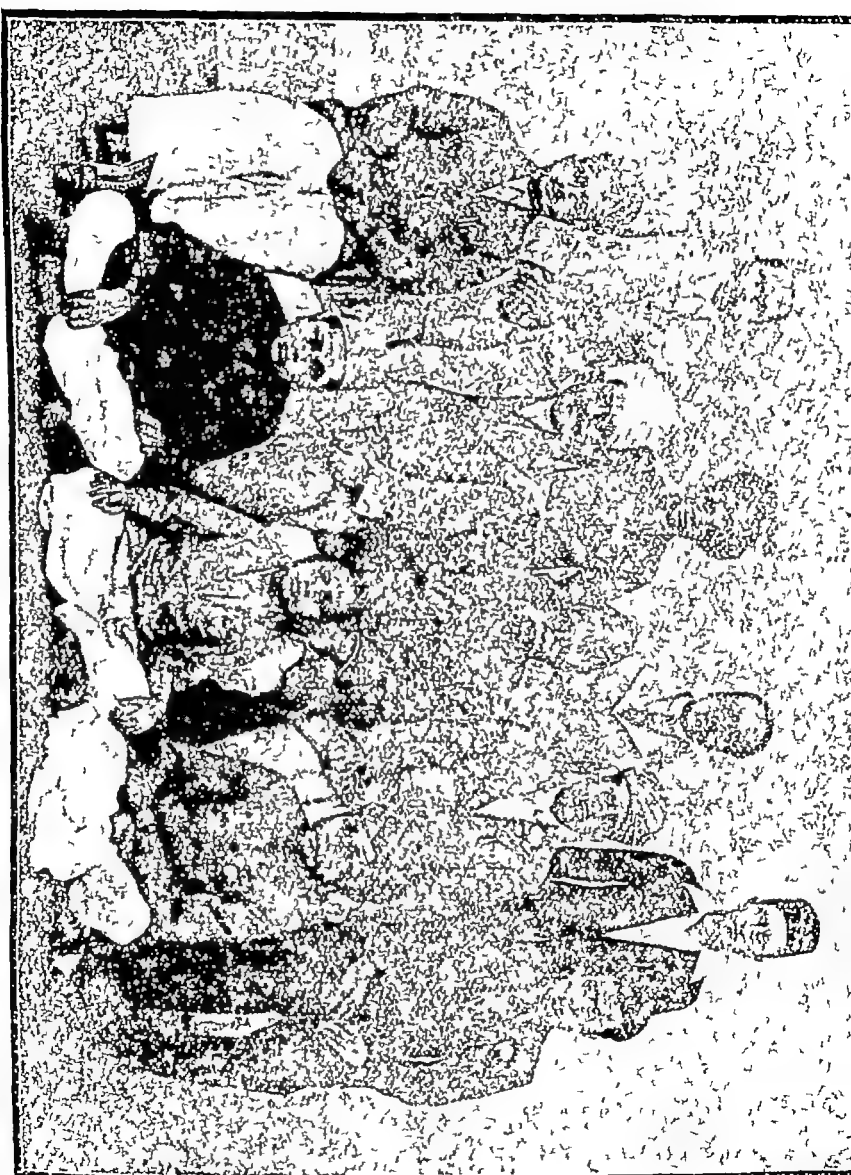
श्रीमान् लहरचन्दजी के इस समय एक पुत्र श्रीखेमचन्दजी और एक पुत्री चित्ररेखा है ।

संवत् १८७६ में श्रीमान् उदयचन्दजी का केवल १५ वर्ष की अवस्था में ही स्वर्गवास हो याग । उनके स्वर्गवास के पश्चात् करीब १६ महीनों के बाद उनकी धर्मपत्नी का भी स्वर्गवास हो गया ।

श्रीमान् जुगराजजी के इस समय एक पुत्र श्रीचेतनकुमार है । बाबू ज्ञानपालजी अभी अविवाहित है ।

मोहिनीबाई के इस समय एक पुत्र और दो पुत्रियाँ हैं ।

श्रीमान् भैरोंदानजी से छोटे भाई श्रीमान् हजारीमलजी थे । उनका स्वर्गवास युवावस्था में ही हो गया । उनकी धर्मपत्नी श्री रत्नकुंवरजी को वचपन से ही धर्म के प्रति विशेष रुचि एवं प्रेम था । संवत् १८३६ में केवल छः वर्ष की अवस्था में आपने रतलाम में पूज्यश्री उदयसागरजी महाराज के पास सम्यक्त्व ग्रहण की थी । पतिके स्वर्गवास हो जाने पर धर्म के प्रति आपकी रुचि और भी तीव्र हो गई । आपको संसार की असारता का अनुभव हुआ और वैराग्य भावना जागृत होगई । संवत् १८६५ में समस्त सांसारिक वैभवों का त्याग कर श्रीमज्जेनाचार्य पूज्यश्री श्रीलालजी महाराज के पास श्रीरंगूजी महाराज की सम्प्रदाय में श्रीमैनाजी महाराज की नेत्राय में पूर्ण वैराग्य के साथ दीक्षा अंगीकार की । ३६ साल हुए आप पूर्ण उत्साह के साथ संयम का पालन करती हुई आत्म कल्याण की साधना में अग्रसर हो रही हैं ।



१

२

३

१ पक्ति—

माणिकचन्द, केशरीचन्द, जुगारज, कुनणमल

२

लहरचन्द, जेठमल, भैरोंदानजी, पानमल ज्ञानपाल

प. १
प. २
प. ३
प. ४
प. ५
प. ६
प. ७
प. ८
प. ९
प. १०
प. ११
प. १२
प. १३
प. १४
प. १५
प. १६
प. १७
प. १८
प. १९
प. २०
प. २१
प. २२
प. २३
प. २४
प. २५
प. २६
प. २७
प. २८
प. २९
प. ३०
प. ३१
प. ३२
प. ३३
प. ३४
प. ३५
प. ३६
प. ३७
प. ३८
प. ३९
प. ४०
प. ४१
प. ४२
प. ४३
प. ४४
प. ४५
प. ४६
प. ४७
प. ४८
प. ४९
प. ५०
प. ५१
प. ५२
प. ५३
प. ५४
प. ५५
प. ५६
प. ५७
प. ५८
प. ५९
प. ६०
प. ६१
प. ६२
प. ६३
प. ६४
प. ६५
प. ६६
प. ६७
प. ६८
प. ६९
प. ७०
प. ७१
प. ७२
प. ७३
प. ७४
प. ७५
प. ७६
प. ७७
प. ७८
प. ७९
प. ८०
प. ८१
प. ८२
प. ८३
प. ८४
प. ८५
प. ८६
प. ८७
प. ८८
प. ८९
प. ९०
प. ९१
प. ९२
प. ९३
प. ९४
प. ९५
प. ९६
प. ९७
प. ९८
प. ९९
प. १००

की पढ़ाई चलती रही है। एफ. ए. परीक्षा में कुल १२ छात्र प्रविष्ट हुए थे जिनमें ८ उत्तीर्ण हुए। मैट्रिक परीक्षा में ३० छात्रों में २७ पास हुए। इस वर्ष कालेज में बी. ए. कक्षा नहीं रखी गई किन्तु आगामी सेशन से पुनः बी. ए. कक्षा खोल दी जायगी।

कन्या पाठशाला

इस पाठशाला में पूर्ववत् पहली से लेकर चौथी तक चार कक्षाएं चलती रही हैं। इन कक्षाओं में कन्याओं को हिन्दी, गणित, स्वास्थ्य, धर्म, भूगोल, वाणिक्या, सिलाई और कशीदा आदि विषयों का ज्ञान कराया जाता रहा है। छात्राओं की साल भर में संख्या ७० और ८० के बीच में रही।

समाज सेवा विभाग

इस विभाग द्वारा समाज सेवा संबंधी सभी प्रकार के कार्य किये जाते रहे हैं। इन में श्री श्वेताम्बर साधुमार्गी जैन हितकारिणी संस्था के आय व्यय का हिसाब रखना तथा ग्राम्य पाठशालाओं के संचालन की देखरेख एवं प्रबंध का कार्य होता रहा है।

इस विभाग द्वारा संत मुनिराजों एवं महापतियों के विहारादि संबंधी पत्रव्यवहार और दीक्षायाँ भाई बहनों के लिये भण्डोपकरण का प्रबंध भी होता रहा है।

इस विभाग द्वारा इस वर्ष ४२३॥॥॥ मूल्य की सन्ध्या द्वारा प्रकाशित पुस्तकें भिन्न भिन्न संस्थाओं और व्यक्तियों को भेंट स्वरूप दी गई हैं। इसके अतिरिक्त बिना मूल्य की १०२ पुस्तकें भी इस विभाग द्वारा भेंट दी गई।

प्रिन्टिंग प्रेस (छापाखाना)

इस विभाग में इस वर्ष मेठिया ग्रन्थमाला की १०५ से १०७ तक की नवीन पुस्तकों का मुद्रण हुआ। युद्ध जन्य कठिनाइयों के कारण इस साल प्रेस का काम मंद गति से चला। कर्मचारियों तथा कागज की कमी के कारण केवल नीचे लिखी पुस्तकें छप सकीं। समय को देखते हुए यह भी सतोषजनक ही है। (१) आर्हतप्रवचन (२) श्रीप्रतिकमणसूत्र मूल ७ वीं आवृत्ति (३) श्री सामायिकसूत्र मार्थ ५ वीं आवृत्ति (४) श्री जैन-सिद्धान्त चोल सग्रह सातवाँ भाग (५) श्रीमान् सेठ भैरोंदाजी सा सेठिया की सच्चित जीवनी (६) हिन्दी वाल शिक्षा दूसरी प्राइमर। अमी श्री जैन सिद्धान्त चोल सग्रह के आठवें भाग की छपाई हो रही है।

ग्रन्थालय और वाचनालय

इस वर्ष भिन्न भिन्न भाषाओं की कुल ३१० नई पुस्तकें ग्रन्थालय में आईं। दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक और त्रैमासिक पत्र पत्रिकाएँ इस वर्ष भी आती रही हैं और उन्हें वाचनालय में रखा जाता रहा है। इस वर्ष १२७ सदस्यों ने ३३६३ पुस्तकें पढ़ने के लिए पुस्तकालय से लीं तथा वाचनालय से लाभ उठाया।

ग्रन्थालय में इस समय हिन्दी, संस्कृत, गुजराती, अंग्रेजी, पत्राकार, हस्तलिखित आदि कुल मिलाकर ६६०६ पुस्तकें संगृहीत हैं । विवरण नीचे लिखे अनुसार है -

हिन्दी	३६८१	आयुर्वेद (वैद्यक)	४२
कोष और व्याकरण	१२७	ज्योतिष शास्त्र	२०
इतिहास और पुरातत्त्व	१४५	विविध	२३
दर्शन और विज्ञान	१४६	अंग्रेजी	१६८०
धर्म और नीति	१३७३	Works of reference	170
साहित्य और समालोचना	२५६	History and	
काव्य और नाटक	४४२	Geography	213
उपन्यास और कहानी	३८४	Theology, Philosophy	
जीवन चरित्र	१२२	and Logic	287
राजनीति और अर्थशास्त्र	१३७	Law & Jurisprudence	83
ज्योतिष और गणित	३७	Literature	264
स्वास्थ्य और चिकित्सा	१८७	Fiction	225
भूगोल और यात्राविवरण	३४	Politics & Civics	8
कानून	८४	Business & Economics	45
बाल साहित्य	२१३	Science and art of	
विविध	२६४	medicine	157
संस्कृत	६४३	Science & mathematics	56
कोष और व्याकरण	१६५	Biography & auto-	
साहित्य, काव्य, नाटक, चरित्र } २३५		biography	109
और कथा }		Industrial science	50
आर्ष ग्रन्थ	१३४	Art of teaching	13
दर्शन शास्त्र	६६	जर्मन, फ्रेंच आदि	१०३
धर्म शास्त्र और नीति	१८४	पत्राकार शास्त्र एवं ग्रन्थ	५३०
स्तुति स्तोत्रादि	३१	हस्तलिखित ग्रन्थ	१२३८
			११६९

ग्रन्थ निर्माण विभाग

इस साल छापाखाना विभाग में छपने वाले समस्त ग्रन्थों का संशोधन इसी विभाग के कर्मचारियों द्वारा हुआ । श्रीश्वेताम्बर साधुमार्गी जैन हितकारिणी सस्था की दश वर्षीय

रिपोर्ट लिखी तथा सशोधित की गई । श्रीजैनसिद्धान्त बोल संग्रह के आठवें भाग की पांडुलिपि तैयार की गई और आवश्यक सशोधन परिवर्तन कर प्रेसकापी तैयार की गई ।

सन् १९४४ के आय-व्यय का संक्षिप्त विवरण

१६६०३॥१॥ कलकत्ते के मकानों के किराये	११६८५॥१॥ श्रीसेठिया जैन पारमार्थिक
के मास बारह के	संस्था में खर्च हुए
१७८२॥१॥ व्याज	६३७॥१॥ मेठिया प्रिंटिंग प्रेस में
२०१॥ श्रीमान् लहरचंदजी सेठिया से	४५॥ 'बोर्डिंग' खाते 'खर्च' हुए
प्राप्त हुए शास्त्र तथा दीक्षो-	१००१॥ महायता में दिये श्री
करणादि में खर्च करने के लिये	स्थानकवासी जैन लाय-
१०१॥ श्रीमगनवाई स्वर्गीय धर्मपत्नी	व्रेरी श्रीनगर काश्मीरको
जेठमलजी मेठिया से प्राप्त हुए	५१॥ श्रीमहावीर जैन लायव्रेरी
शास्त्र तथा दीक्षोपकरणादि में	श्रीरायसिंहनगर में दिये
खर्च करने के लिये	१२८॥१॥ विविध खुदरा
५२००॥ श्रीमान् सेठ भैरोंदानजी सा	सहायता में दिये
सेठिया से प्राप्त हुए	३४४६॥ विद्यालय में वेतन के
२०००॥ छात्रवृत्ति देने के लिये	१७३६॥ बाल पाठशाला में
२०००॥ बोर्डिंग के लिये	८८८॥ कन्या पाठशाला में
१२००॥ सहायता मे देने के लिये	१२७५॥१॥ सेठिया नाइट कालेज
	५५२॥१॥ हेड ऑफिस में खर्च हुए
	७४७॥ मेठिया लायव्रेरी में पुस्तक
	व समाचारपत्र आदि में
	७४॥१॥ खर्च बिजली तथा पखे का
	१२६७॥ कर्मचारियों को महंगाई
	भत्ते के दिये
	५०॥१॥ परचुरण खर्च
	८४॥१॥ मकानों की मरम्मत में
७०७४॥ कलकत्ते के मकानों का	ता० २१
सितम्बर १९४४ को नया टीड ऑफ	
ट्रस्ट बनवाया उसमें म्याम्प, रजिस्ट्री	
व एटर्नी की फीस के खर्च हुए	

संस्था की कलकत्ता स्थित स्थावर संपत्ति

का

नवीन ट्रस्ट नामा

श्री सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था के संस्थापक महोदयों ने संस्था के स्थायित्व के लिये कलकत्ते और वीकानेर में स्थावर संपत्ति प्रदान कर कलकत्ता और वीकानेर में उसकी लिखापट्टी कर दी थी । कलकत्ते की संपत्ति के अलग अलग तीन डीड्स आफ सेटलमेन्ट रजिस्टर्ड कराये गये थे । किन्तु उनमें कुछ कमी महसूस कर संस्थापक महोदयों ने उन्हें रद्द कर दिया एवं संस्था के स्थायित्व के लिये उनके बदले ता० २१ सितम्बर १९४४ तदनुसार मिति आसोज सुदी ६ स० २००१ शनिवार को नीचे लिखी संपत्ति का नया डीड ऑफ ट्रस्ट बनाकर उसकी सवरजिस्ट्रार कलकत्ता के दफ्तर में रजिस्ट्री करा दी । उक्त नवीन डीड ऑफ ट्रस्ट के अनुसार सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था के वर्तमान में निम्नलिखित तीन ट्रस्टी हैं —

१ श्रीमान् दानवीर सेठ भैरोदानजी सेठिया

२ „ बाबू जेठमलजी सेठिया

३ „ „ माणकचंदजी सेठिया

उक्त डीड के अनुसार ट्रस्टियों की संख्या ६ तक हो सकेगी । ट्रस्ट कमेटी के अधीन संस्था की व्यवस्था के लिये जनरल कमेटी, प्रबन्धकारिणी कमेटी तथा आवश्यकतानुसार अन्य सब कमेटियां स्थापित की जायेंगी एवं यथासमय उनके लिये नियम उपनियम निर्धारित किये जायेंगे ।

कलकत्ते की स्थायी संपत्ति

१. मकान न १६०-१६०।१ पुराना चीना बाजार

२. मकान न. ३, ४, ७, ९, ११ और १३ कोस स्ट्रीट (मूंगापट्टी) तथा न १२३ और १२५ मनोहरदास स्ट्रीट

३. मकान न ६ जेक्शनलेन तथा १११, ११२, ११३, ११४ और ११५ केनिंग स्ट्रीट का दो तिहाई हिस्सा

नोट—उक्त जेक्शनलेन और केनिंग स्ट्रीट का एक तिहाई हिस्सा श्रीमान् बाबू जेठमलजी सा सेठिया ने संस्था को दिया वह नवीन ट्रस्ट डीड में है और एक तिहाई हिस्सा ता १६ ७-४० को संस्था ने खरीदा है । इस प्रकार इस मकान में संस्था का दो तिहाई हिस्सा है और एक तिहाई हिस्सा श्रीमान् गोविन्दरामजी भीखण्णचन्दजी भनसाली का है ।

कलकत्ते की उक्त स्थावर संपत्ति के सिवा वीकानेर नगर में संस्था की नीचे लिखी स्थावर संपत्ति है—

वीकानेर की स्थावर संपत्ति

१--मोहल्ला मरोटियों का विशाल भवन (जिसमें आगे तीन मंजिला मकान है और पीछे की तरफ दो मंजिला मकान है) आगे पौछे के चौक, छप्परे और बाड़ा सहित। यह भवन कोटडी के नाम से प्रसिद्ध है। यह मकान मस्था के संस्थापकों ने, सवर, सामायिक, प्रतिक्रमण, पौषत्र, दया करने और साधु साध्वियों के ठहरने के लिये (यदि वे ठहरना चाहें तो) तथा मुनि महाराज एवं महासतियों के व्याख्यान के लिये एवं इसी प्रकार के अन्य धार्मिक कार्यों के लिये दिया है। इसकी रजिस्ट्री स. १६८० में ता ३० नवम्बर १६२३ को हुई। तभी से इस कोटडी की सारसभाल सस्था कर रही है। सस्था ने इसकी मरम्मत कराई है, इसमें छप्पर वगैरह बनवाने में लागत लगाई है और सस्था-पकों ने इस मकान का नया खत वीकानेर राज्य में श्री अग्रचन्द भैरोदान सेठिया जैन पारमार्थिक सस्था के नाम करा दिया है। यह खत ता २६-४-४१ का है। नम्बर मिसल १७ तारीख मरजुमा १३-१२-३८ ई० नाम तहसील मालमडी नम्बर ३०३ है। इस खत के अनुसार इस मकान की कुल दरगज ३००५॥८॥ है।

नोट--इस भवन में पहली मंजिल में दरवाजे के दोनों तरफ के दोनों दीवानखाने और उनके नीचे के दोनों तनवर मस्था में नहीं दिये हुए हैं। ये दोनों अग्रचन्दजी भैरोदानजी सेठिया के निजी हैं और इनका खत उनके नाम का अलग बना हुआ है। दीवानखानों की कुल दरगज २२८॥ है। दीवानखानों के ऊपर की मंजिल सस्था की है।

२--मोहल्ला मरोटियों का दूसरा दो मंजिला विशाल भवन (चौक और बाड़ा सहित)। यह भवन सेठिया लायवैरी के नाम से प्रसिद्ध है। संस्थापक महोदयों ने यह भवन सेठिया जैन पारमार्थिक सस्था के लिये दिया है। अभी इस भवन में सेठिया ग्रन्थालय, कन्या-पाठशाला, बालपाठशाला, नाइट कॉलेज आदि सस्था के विभाग हैं। इसकी रजिस्ट्री वीकानेर में स. १६८० में ता २८ नवम्बर १६२३ को हुई। संस्थापकों ने इस मकान का नया खत वीकानेर राज्य से श्री अग्रचन्द भैरोदान सेठिया जैन पारमार्थिक सस्था के नाम करा दिया है। यह खत ता २६-४-४१ का है। नम्बर मिसल १७ तारीख मरजुमा १३-१२-३८ ई० नाम तहसील मालमडी नम्बर ३०४ है। इस खत के अनुसार इस मकान की दरगज १३६३॥८॥ है। ता २८ नवम्बर १६२३ की रजिस्ट्री के बाद सस्था को प्राप्त जमीन तथा एक बाड़ा भी नये खत में शामिल है।

नोट--इस भवन में कन्यापाठशाला के वर्तमान मकान के नीचे का तहखाना (जिसकी दरगज १३६८॥ है) तथा तीन बाड़ों में से दो बाड़े १६१॥८॥ दरगज के मस्था में नहीं दिये हुए हैं। यह तहखाना तथा दोनों बाड़े अग्रचन्दजी भैरोदानजी सेठिया के निजी हैं। तहखाने और दोनों बाड़ों के दो खत उनके नाम अलग बने हुए हैं।

३-मकान एक उगूण दरवाजे का चौकी समेत, जिसकी दरगज ३३६॥॥ है और जो ठठारों की गली में बाके है, मोती, भोलु व गोलु ठठारा से स १६७६ माह वदी ६ ता १५ जनवरी सन् १६२० ई को खरीदा और उस पर लागत लगाकर दो मजिले आसरे इमारत बनवाये इसके बाद वि स २००१ मिति प्रथम चैतवदी ६ ता ५ मार्च १६४५ को संस्थापक महोदय ने संस्था के हक में दानपत्र लिख दिया और तहसील मालमडी में रजिस्ट्री करादी । संस्था के नाम इस मकान का पट्टा बनाने क लिये भी राज्य में दाखास्त कर दी गई है । इस मकान के आसे पामे इस प्रकार है- मकान में प्रवेश करते ही दाहिनी ओर धन्ना ठठारा (पिलहाल जीवणजी महाराज) का घर है, बाई ओर हजारी ठठारे का घर है, पीछे के तरफ आशुनाई का मकान है और सामने गली है ।

नोट-उक्त कलकत्ता एव बीकानेर दोनों जगह की स्थावर संपत्ति एक ही संस्था (सेठियाजैन पारमार्थिक संस्था) की है । अतः उनकी सुव्यवस्था क लिये यह आवश्यक है कि कलकत्ते और बीकानेर की उक्त संपत्ति की देखभाल एक ही ट्रस्ट कमेटी के अधीन हो और एक से नियमों के अधीन उनका नियन्त्रण हो । अतएव संस्थापक महोदयों का विचार है कि कोटही और सेठिया लायब्रेरी के मकान की, बीकानेर राज्य में कराई हुई ता २८व ३० नवम्बर १६२३ की रजिस्ट्रियों को अपने सुरक्षित अधिकारके अनुसार रद्दकर संस्था की बीकानेर की संपत्ति के नये ट्रस्टीड बनाये जायें और उनकी बीकानेर राज्य में रजिस्ट्री करा दी जाय ।

सेठिया जैन ग्रन्थमाला का प्रकाशन

सेठिया जैन ग्रन्थमाला से श्री जैन सिद्धान्त बोल सग्रह के आठ भाग, सोलह सती, आर्हत प्रवचन, जैन सिद्धान्त कौमुदी, अर्द्धमागधी धातु रूपावली, कर्तव्य कौमुदी, सुक्ति-सग्रह, उपदेशशतक, सुखविपाक सार्थ, मांगलिक स्तवन सग्रह प्रथम द्वितीय भाग, गुणविलास, गणधरवाद के तीन भाग, सच्चित्त कानून सग्रह, प्रकरण थोकड़ा सग्रह, प्रस्तार रत्नावली, पचीस बोल का थोकड़ा, लघुदंडरू का थोकड़ा, सामायिक तथा प्रतिक्रमण सूत्र मूल और सार्थ इत्यादि कुल १०८ पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं । विशेष विवरण के लिए संस्था का सूचीपत्र मंगाकर देखिये । आर्डर आन पर पुस्तकें बी पी द्वांग भेजी जायेंगी ।

पता:- अग्रचन्द भैरोंदान सेठिया
जैन पारमार्थिक संस्था
बीकानेर (राजपूताना)

Agarchand Bhair Rodan Sethia
Jain Charitable Institution, Bikaner

प्रमाण ग्रन्थों को संकेत सूची

संकेत	ग्रन्थ नाम, भाषा व काल	ग्रन्थकर्त्ता और उसका काल	प्रकाशन का स्थान और समय
अत.	अतगडदसा-अतकृद्दशा सूत्र सटीक मूल प्राकृत, टीका सस्कृत	टीकाकार-अभयदेवसुरि वि. स १०७२-११३५	आगमोदय समिति वीर स २४४६
अणु.	अणुत्तरोक्ताई-अनुत्तरोपपत्तिक सूत्र सटीक, मूल प्राकृत, टीका सस्कृत	टीकाकार-अभयदेव सुरि वि. स १०७२-११३५	आगमोदय समिति वीर स २४४६
अनु	अनुयोगद्वार सूत्र सटीक मूल प्राकृत, टीका सस्कृत	टीकाकार-मलधार गच्छीय श्री हेमचन्द्र सूरि	आगमोदय समिति वीर स २४५०
अभि. चि	अभिधान चिन्तामणि सस्कृत-कोष	श्री हेमचन्द्राचार्य वि. स ११४५-१२२६	लालचन्द्र नदलाल वकील, श्री मुक्तिकमल जैन मोहनमाला कोठीपोल, वडुदा, वीर स २४५१
अभि रा	अभिधान राजेन्द्र कोष (सात भाग) प्राकृत से सस्कृत	श्री विजय राजेन्द्र सूरि वि. स १८८३-१९६३	श्री जैन प्रभाकर प्रिंटिंग प्रेस रतलाम, वीर स २४४०-२४५१
अर्द्ध मा	अर्द्धसागधी कोष (पाँच भाग) प्राकृत से हिन्दी, गुजराती और अंग्रेजी	शतावधानी श्री रत्नचन्द्रजी महाराज, वि. स १९३६-६८ वैशाल	श्री श्वे स्यानकवासी जैन कौन्फरन्स बम्बई, वीर स २४४६-२४६४

(२१)

ग्रन्थ नाम, भाषा व काल

अष्टक प्रकरण, संस्कृत

वृत्ति (वि. सं. १०८०)

भागमसार, मूल गुजराती, हिन्दी

प्रनुवाद, वि स १७७६

आचाराग सूत्र सटीक, मूल प्राकृत

टीका संस्कृत वि सं ६३३

आतुर प्रत्याख्यान प्रकीर्णक,

प्राकृत, दस पङ्क्ता में दूसरी पङ्क्ता

आलापपद्धति, संस्कृत

आवरयक सूत्र पूर्वभाग सटीक

मूल और निर्युक्ति-प्राकृत,

टीका संस्कृत

आवरयक सूत्र पूर्व और उत्तर भाग सटीक

मूल और निर्युक्ति-प्राकृत,

टीका संस्कृत

ग्रन्थ कर्त्ता और उसका काल

हरिभद्रसूरि (छठी शताब्दी)

श्रुतिकार-जिनेश्वरसूरि

श्रीमद्देवचन्द्रजी महाराज

वि १८ वीं १९ वीं शताब्दी

टीकाकार-शीखाकाचार्य

श्री देवसेनसूरि, वि १० वीं शताब्दी

निर्युक्तिकार-भद्रबाहुस्वामी

(वीर की पहली दूसरी शताब्दी)

टीकाकार-मलयगिरि

निर्युक्तिकार-श्रीभद्रबाहुस्वामी

(वीर की पहली दूसरी शताब्दी)

टीकाकार-हरिभद्रसूरि (छठी शताब्दी)

प्रकाशन का स्थान व समय

श्री मनसुखभाई पोखाडे, ग्रहमदावाद

श्री अभयदेवसूरि ग्रन्थमाला, बड़ा

उपाश्रय बीकानेर, वीर स २४४८

भागमोदय समिति, वीर स २४४२

भागमोदय समिति, वीर स २४५३

माणिकचंद्र दिगम्बर जैन ग्रन्थमाला

कम्बई, वीर स २४४६

भागमोदय समिति

वीर स २४५४

भागमोदय समिति

वीर स २४४३-२४४४

भा. द. टि.

भावग्रन्थ हरिभक्तियोग, संस्कृत

आ. वि.

आध्यात्मिक विकासक्रम, गुजराती

उत्त.

उत्तराध्ययन सूत्र (दो विभाग) सटीक

उत्त. (क)

मूल और नियुक्ति-प्राकृत, टीका संस्कृत

उत्तराध्ययन सूत्र सटीक, मूल प्राकृत,

टीका संस्कृत वि. स. १५४४

सर्वार्थ सिद्धि टीका . "।

उत्त (ख)

उत्तराध्ययन सूत्र हस्तलिखित

उपा.

उपासकदेशांग सूत्र सटीक

मूल प्राकृत, टीका संस्कृत ।

उपा. (गं.)

उपासकदेशांग सूत्र (अंग्रेजी अनुवाद)

उपा द

उपासकदेशांग सूत्र हस्तलिखित

उव.

उववाई (प्रौपण्डिक) सूत्र

मूल प्राकृत, टीका संस्कृत,

अपि मंडल अस्ति मूल-प्राकृत,

टीका-संस्कृत, अनुवाद-गुजराती

(२२)

मलधार गच्छीय श्री वेमचन्द्रसूरि

५ सुखलालजी सघवी (विद्यमान)

नियुक्तिकार-श्रीभवाहुस्वामी

टीकाकार श्री शान्त्याचार्य (११वीं शताब्दी)

टीकाकार-श्रीबमल सयमोपाध्याय

(सोलहवीं शताब्दी)

टीकाकार-अभयदेवसूरि

(वि. स. १०७२-११३५)

अनुवादक-ए एफ. खोल्लफ हार्नले

टीकाकार-अभयदेवसूरि

(वि. स. १०७२-११३५)

धर्मवोपसूरि, टीकाकार-शुभवर्द्धनगोत्री

अनुवादक-शास्त्री हरिशकर कालीदास

देवचंद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार

फंड बम्बई, वीर सं २४४६

एस जे शाहु, मादलपुर अहमदाबाद, वि. स. १९८६

देवचंद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार

फंड, बम्बई, वीर सं २४४२

विजय धर्म लक्ष्मी ज्ञान मंदिर

वेलेनगज, आगरा

वीर सं २४४६-२४५१

श्री सेडिया जैन ग्रन्थालय वीकानेर

आगमोदय समिति

, वीर सं. २४४६

विन्लोथिका इन्डिका कलकत्ता, सन् १९८० ई.

अनूप संस्कृत लायब्रेरी, (बीरानेर का प्राचीन

पुस्तक भंडार) वीकानेर

आगमोदय समिति, वीर सं २४४२

श्री जैन विद्याशाला डोशीवाइली पोले

अहमदाबाद, वि. सं. १९५८

ग्रन्थ नाम, भाषा व काल

ओघर्नयुक्ति, सूत्र-प्राकृत,

टीका संस्कृत । । । ५००

ग्रन्थकर्त्ता और उसका काल

निर्युक्तिकार श्री भद्रबाहुस्वामी

(वीर की पहली दूसरी शताब्दी)

टीकाकार श्री द्रोणाचार्य (ग्यारहवीं शताब्दी)

कर्मव्यक्रौमुदी द्वारा भाग संस्कृत,

भाषानुवाद सहित (विम ५८०)

(१) कर्मव्यक्रौमुदि (कर्म प्रकृति) मटीक,

(२) कर्मव्यक्रौमुदि, मलयगिरि की टीका

का गुजराती अनुवाद

(१) कर्म ग्रन्थ भाषा ५४१ प्रकृत

टीका-संस्कृत, हिन्दी अनुवाद सहित

(२) कर्म ग्रन्थ भाषा ५-६

मूल प्राकृत-टीका संस्कृत

कल्प सूत्र मटीक, मूल प्राकृत, सुबोधिका

टीका संस्कृत

टीका विनय विजयजी उपाध्याय

(१७ वीं १८ वीं शताब्दी)

प्रकाशन का स्थान और समय

आगमोदय समिति

वीर स २४४५

श्री भैरोंदानजी जेठमलजी सेठिया वीकानेर

वीर स २४५१

श्री जैन धर्म प्रसारक सभा भावनगर

वीर स २४४३

श्री अध्यात्म ज्ञान प्रसारक मंडल

पादरा (गुजरात), वीर स १९७६

श्री आत्मानन्द जैन पुस्तक प्रचारक मंडल

श्री रोशन मोह्ता आगरा, वीर स २४४४-२४४८

आत्मानन्द सभा, भावनगर

वीर स २४६६

देवचंद लालभाई जैन

पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई

वीर स २४४६

(२४)

कारण.	कारण सेवाद, हिन्दी	शतावधानी श्री रत्नचन्द्रजी स्वामी (वि. स १९३६-१९६८ वैशाख)	हीरालाल सुगनचंद जैन नया बाजार अजमेर वीर स २४६५
क्षेत्र.	चेन्नलोक प्रकाश, संस्कृत	उपाध्याय श्री विनयविजयजी [१७वीं शताब्दी]	श्रावक हीरालाल हंसराज जामनगर वीर स २४४२
गच्छा.	गुजरती अनुवाद सहित	अनुवादक-श्रावक हीरालाल हंसराज	भागमोदय सुमिति, वीर स २४५३
गीता	गच्छाचार पयन्ना प्राकृत		गीता प्रेस, गोरखपुर वि सं २००१
	श्रीमद्भगवद्गीता [संस्कृत] साधारण		भ्रातृमिलक ग्रन्थ सोसायटी
गुण	भाषा टीका सहित	मूल-रत्नशेखरसूरी	रतनपोल, अहमदाबाद, वीर स २४४५
	गुणस्थान क्रमरोह [संस्कृत का हिन्दी	अनुवादक-श्री तिलकविजयजी पंजाबी	भैरोंदानजी जेठमलजी सेठिया बीकानेर वीर स २४५५
गुण. थो	अनुवाद] वि सं १४४७		श्री जैन धर्म प्रसारक सभा, भावनगर, वीर सं २४५४
	चौदह गुणस्थान का थोकड़ा, हिन्दी		रत्नलाल अर्हदास जैन सोनीपत वीर सं २४५५
गौ कु	गौतम कुलक-प्राकृत	गौतम मुनि	
च.	चतुर्भाषा पाठमाला मूल संस्कृत, व्याख्या-हिन्दी	मूल-शतावधानी श्रीरत्नचन्द्रजी स्वामी (वि स १९३६-१९६८ वैशाख) व्याख्या धर्मोपदेश श्री फूलचंदजी महाराज	
चन्दन	चन्दनवाला (मती वसुमती) हिन्दी	पूज्य श्रीजवाहरलालजी महाराज के व्याख्यान (वि स १९३२-२००० आषाढशुक्ला ८)	श्री हितोक्तु श्रावक मडल रतलाम वीर स २४६२

संकेत

ग्रन्थ नाम, भाषा व काल

चन्द्र-प्रज्ञप्ति मूल-प्राकृत हिन्दी

अनुवाद सहित

खण्डोभञ्जरी, संस्कृत टीका तथा

अनुवाद सहित

ज

जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति (दो भाग) मूल-प्राकृत,

टीका संस्कृत (विक्रमस १६५०)

जी

जीवाजीवाभिगम सूत्र मूल-प्राकृत,

टीका-संस्कृत

जे

जैन तत्त्वादर्श, हिन्दी

पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध

जैन ग्रन्थावली, हिन्दी

जैन सिद्धान्त प्रवेशिका-हिन्दी

ज्ञाताधर्म कथा (गाथाधम्मकथा)

मूल-प्राकृत टीका संस्कृत (विस ११२०)

ज्ञानार्णव, संस्कृत हिन्दी अनुवाद

सहित

ज्ञान.

ग्रन्थकर्त्ता और उसका काल

अनुवादक मुनि श्री अमोलखञ्जिजी महाराज

(विस १६३४-)

वैद्य महामहोपाध्याय श्रीमद्गंगादास

टीकाकार और } श्रीगुरुनाथ विद्यानिधि

अनुवादक भट्टाचार्य

टीकाकार-उपाध्याय श्रीशान्तिचद्रगणी

टीकाकार- श्रीमलयगिरि

श्री विजयानन्दसूरीश्वर

(श्री आत्मारामजी महाराज)

पं. गोपालदासजी वैरैया

टीकाकार-श्रीअभयदेवसूरि

(विस १०७२-११३५)

मूलकर्त्ता-श्रीशुभचन्द्राचार्य [नवीं शताब्दी]

अनुवादक प पशालालजी बाकलीवाल

प्रकाशन का स्थान और समय

राजा बहादुर लाला सुखदेवसहाय ज्वालाप्रसाद

जौहरी महेन्द्रगढ़, वीरस २४४५

श्री जानकीनाथ काव्यतीर्थ, संस्कृत विद्यालय

निवेदितालेख कलकत्ता, १३३२ वङ्गाब्द

देवचन्द लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फंड बम्बई,

वीरस २४४६

देवचन्द लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फंड बम्बई,

वीरस २४४५

श्री आत्मानन्द जैन महासभा अम्बाला,

वीरस २४६२

श्रीरवेताम्ब जैन कौन्फरन्स बम्बई, वीरस २४५३

जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, वि. स १९८१

श्री आगमोदय समिति

वीरस २४४५

परमश्रुत प्रभावक मंडल, बम्बई

वीरस २४३३

(२६)

संकेत	ग्रन्थ नाम, भाषा व काल	ग्रन्थ कर्त्ता और उसका काल	प्रकाशन का स्थान व समय
ठा.	ठाण्णाग सूत्र [स्थानागसूत्र] दो भाग मूल-प्राकृत, टीका संस्कृत वि.स. ११२० [वि.स. १०७२-११३५]	टीकाकार श्री अभयदेवसुरि वाचकमुख्य श्री उमास्वाति विवेचक-पं. सुखलोलजी [विविमान]	आगमोदय समिति वीर सं २४४५-४६ मोतीलालकाधाजी पूना, वीर सं २४६२ गुजरात विद्यापीठ अहमदाबाद, वि.सं १९८५ देववंद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फंड बम्बई, वीर सं. २४४३ माणिक्यचन्द्र दिगम्बर जैन ग्रन्थमाला समिति हीराबाग गिरगाव बम्बई, वीर सं. २४४४ जैनधर्म प्रचारक सभा भावनगर
तत्त्वार्थ	सभाष्य तत्त्वार्थाधिगम सूत्र, संस्कृत		देवचंद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फंड बम्बई
तत्त्वार्थ [सु.]	तत्त्वार्थ सूत्र, गुजराती [दो भाग] तन्दुलवेया लिय पद्दण्णा, प्राकृत (दम पद्दण्णा में से पाचवीं पद्दण्णा) त्रिलोकसार, प्राकृत, टीका सहित	श्री नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती टीकाकार-श्री माधवचन्द्र हेमचन्द्राचार्य [वि.स. ११४५-१२२६]	देवचंद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फंड बम्बई देवचंद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फंड बम्बई वीर सं २४४४
तन्दुल.			
त्रिलोक.			
त्रि प	त्रिपटि शलाका पुरुष चरित्र गुजराती अनुवाद भाग ४		
द.प	दस पद्दण्णा [प्रकीर्णक] प्राकृत		
दश.	दशवैकालिक सूत्र, मूल और निर्युक्ति-प्राकृत, टीका संस्कृत	मूलकर्त्ता-शय्यभनस्वामी [वीर की प्रथम शताब्दी] निर्युक्ति-कार-भद्रबाहुम्ह्वामी [वीर की पहली दूसरी शताब्दी] टीकाकार-हरिभद्रसूरि [द्विती शताब्दी] अनुवादक-उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज [विविमान]	
दशा	दशाश्रुतस्कन्ध दशाभाषान्तर सहित मूल प्राकृत		जैन शास्त्रमाला कार्यालय, सैदमिश्न बाजार लाहौर, वीर सं. २४६६२

द्रव्य त.

द्रव्यानुयोग तर्कणा-संस्कृत,

द्रव्य लो

हिन्दी अनुवाद सहित

द्रव्य लो

द्रव्यलोक प्रकाश, संस्कृत

द्रव्य स

गुजराती अनुवाद सहित

द्रव्य स

द्रव्यसंग्रह, प्राकृत, हिन्दी

व.

टीका सहित

धर्मसंग्रह, संस्कृत [वि स १७३१]

व

धर्मविन्दुप्रकरण, संस्कृत

घर

धर्मस्तनप्रकरण [वि स १२७१]

न

नदीसूत्र मटीक

मूल-प्राकृत, टीका संस्कृत

मय.

नयचक्र, प्राकृत

नय प्र.

नयप्रदीप, संस्कृत

नयो.

नयोपदेश संस्कृत

मुनि भोजसागरजी [सोलहवीं शताब्दी]

अनुवादक-प ठाकुरदत्त शर्मा व्याकरणाचार्य

वित्तविजयजीमहाराज (१७वीं १८वीं शताब्दी)

अनुवादक-प हीरालाल हसराम

श्री नेमिचंद्र सिद्धान्त चक्रवर्ती

हिन्दी टीकाकार-बाबू मूरजमानु वकील

उपाध्याय श्री मानविजयजी

हरिभद्रसूरि (कृष्ण शताब्दी)

वृत्तिकार-मुनि चन्द्राचार्य (वि. १२वीं शताब्दी)

श्री शान्तिसूरि

देववाचक-क्षमाश्रमण [वीरकी १०वीं शताब्दी]

टीकाकार-आचार्य श्रीमलयगिरि

श्री देवसेनसूरि (वि. ८वीं शताब्दी)

श्री यशोविजय गणी [१७वीं १८वीं शताब्दी]

श्री यशोविजय गणी [१७वीं १८वीं शताब्दी]

परमश्रुत प्रभावक मंडल बम्बई,

वीर स २४३२

पं हीरालाल हसराम, जामनगर

वीर स २४४५

श्री जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय हीराबाग

गिरगाव बम्बई, वीर स २४५३

देवचंद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई

वीर स २४५१

आगमोदय समिति

वीर स २४५०

आत्मानन्द जैन सभा भावनगर, वीर स २४५२

आगमोदय समिति, वि. स. १६८०

माणिकचंद्र दिगम्बर जैन ग्रन्थमाला समिति बम्बई,

वीर स. २४४६

आत्मवीर सभा भावनगर, वीर स २४४५

आत्मवीर सभा भावनगर, वीर स. २४४५

संकेत

नव

नवपद.

निर

निशी

न्याय

न्याय को

न्याय द

न्याय दी.

(२८)

ग्रन्थ नाम, भाषा व काल ग्रन्थकर्त्ता और उसका काल

नवतत्त्व, मूल-प्राकृत हिन्दी

भाषानुवाद सहित

नवपद प्रकरण वृहद्वृत्ति

मूल-प्राकृत [वि स १०७३]

टीका संस्कृत वि स ११६५]

निरयावलिकासूत्र, मूल-प्राकृत

टीका संस्कृत

निशीयसूत्र, मूल प्राकृत

हिन्दी अनुवाद सहित

न्यायसूत्र वात्स्यायनभाष्य

तथा वृत्ति सहित संस्कृत

न्यायकोष, संस्कृत

न्यायदर्शनम् (न्यायसूत्रम्)

संस्कृतभाष्य तथा वृत्तिसहित

न्यायदीपिका, संस्कृत हिन्दी

अनुवाद सहित

मूलकर्त्ता-देवगुप्तसूरी

टीकाकार-यशोदेव उपाध्याय

टीकाकार-श्रीचन्द्रसूरी

अनुवादक-श्रीअमोलखन्धषिजी महाराज

[वि स १६३४-

सूत्रकार-महर्षिगौतम, भाष्यकर-वात्स्यायनमुनि

वृत्तिकार-विश्वनाथ न्याय पंचानन भट्टाचार्य

महामहोपाध्याय भीमाचार्य

सूत्रकार-महर्षिगौतम, भाष्यकर-वात्स्यायनमुनि

वृत्तिकार-विश्वनाथ न्याय पंचानन भट्टाचार्य.

श्रीधर्मभूषणयति (सन् १६०० ई)

अनुवादक-पं खूबचंदजी

प्रकाशन का स्थान और समय

श्री आत्मानन्द जैन पुस्तक प्रचारक मंडल देह

वीर सं. २४४२

देवचंद्र लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फंड बम्बई

वीर सं. २४५३

भागमोदय समिति

वीर सं २४४८

राजा बहादुर लाला सुखदेव सहायजी ज्वालाप्रसादजी

महेन्द्रगढ़, वीर सं २४४५

जयकृष्णदास गुप्ता विद्या विलास प्रेस

बनारस, सन् १६२० ई

गवर्नमेन्ट सेन्ट्रल कुलडियो बम्बई, सन् १८६३ ई.

जयकृष्णदास गुप्ता विद्या विलास प्रेस

बनारस, सन् १६२० ई.

श्रीजैनग्रन्थरत्नाकर कार्यालय बम्बई,

वीर सं. २४३६

न्यायप्रदीप, हिन्दी

पञ्चवणा (ग्रहापना)

मूल-प्राकृत-टीका संस्कृत

पंचसमूह (चार भाग)

मूल-प्राकृत, टीका संस्कृत

पंच प्रतिक्रमण

पंच वस्तुक स्वोपज्ञवृत्ति

संस्कृत, मूल-प्राकृत

पंचायक, मूल प्राकृत,

टीका-संस्कृत

पन्थिस बोल का थोकड़ा

परमात्म प्रकाश,

मूल-प्राकृत, टीका संस्कृत

भाषा अनुवाद सहित

पिगलसूत्र (पिगलच्छन्द

सूत्रम्) संस्कृत (पंचमावृत्ति)

साहित्यरत्न दरबारीलाल न्यायतीर्थ (विद्यमान)

टीकाकार-आचार्य श्रीमलयगिरि

मूलकर्ता-श्रीचन्द्रर्षि महत्तर

टीकाकार-आचार्य श्रीमलयगिरि

श्रीहरिभद्रसूरि [वि ऋषी शताब्दी]

श्री हरिभद्रसूरि [वि ऋषी शताब्दी]

टीका-श्रीग्रन्थदेवसूरि [वि १०७२-११३५]

मूलकार-योगीन्द्रदेव,

टीकाकार-ब्रह्मदेव [सोलहवीं शताब्दी]

भाषा टीकाकार-पंडित दौलतरामजी

श्री पिगलाचार्य

साहित्यरत्न कार्यालय जुमिलीबाग

तारदेव बम्बई, वि स १९८६

आगमोदय समिति

वीर सं २४४४

थावक हीराक्षाल हसराल जामनगर,

वि स १९६६

श्री जैनश्वेताम्बर मिश्र मडल लायवेरी, घी वालों का

रास्ता जयपुर, वीर स २४५४

देवचंद्र लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फंड बम्बई,

वीर स २४५३

श्री जैन धर्म प्रसारक सभा भावनगर,

वीर स २४३५

श्रीभैरौदान जेठमल सेठिया वीकानेर, वीरस. २४६६

श्री परमश्रुतप्रभावक मडल मवेरी

वाजार बम्बई,

वीर स. २४४२

श्री जानकीनाथ शर्मा संस्कृत विद्यालय

निवेदिता लेन कलकत्ता

(३०)

संकेत	ग्रन्थ नाम, भाषा व काल	ग्रन्थकर्त्ता और उसका काल	प्रकाशन का स्थान और समय
पिं नि.	पिण्डनिर्गुक्ति, मूल प्राकृत,	श्री भद्रबाहुस्वामी	श्री देवचद्र लालभाई जैन पुस्तकालय
पिं वि.	टीका-संस्कृत	टीकाकार-आचार्य श्रीमलयगिरि	फड वरवई, वीर स २४४४
पी प	पिण्डविगुक्ति, मूल-प्राकृत,	मूल श्रीजिनवहभसूरि	आचार्य श्रीमद् विजयदानसूरीश्वरजी जैन
पुरुषा.	टीका-संस्कृत [वि स ११७८]	टीकाकार-श्रीचन्द्रसूरि	ग्रन्थमाला सूरत, वीर स २४६५
	पीस एण्ड परसेनेलिटी	प्रोफेसर जगदीश मित्र	लाहोर
	पुरुषार्थ दिग्दर्शन (हिन्दी)	श्रीविजय धर्मसूरि	अनूपचन्द्र नरसिंहदास, यशोविजय जैन ग्रन्थमाला
प्र.	प्रमाणनयतत्त्वालोकालंकार, संस्कृत	श्रीवादिदेवसूरि (वि स ११४३-१२२६)	हेरिसरोड भावनगर, सन् १९२२ ई
	रत्नाकरावतारिका टीका सहित	टीकाकार-रत्नप्रभसूरि (वि १३ वीं शताब्दी)	हर्षचन्द्र भूराभाई धर्माभ्युदय प्रेस
प्रतिमा.	प्रतिमाशतरुलघुवृत्ति सहित	न्यायविशारद न्यायाचार्य श्रीयशोविजयजी	बनारस, वीर स २४३७
	मूल प्राकृत	(वि १७वीं १८वीं शताब्दी), वृत्तिकार-श्रीभावसूरि	श्री जैन आत्मानन्द सभा भावनगर,
प्र.मी.	प्रमाणमीमांसा, संस्कृत	श्री हेमचन्द्राचार्य	वीर स २४४१
	स्वोपज्ञ वृत्ति सहित	[वि स ११४५-१२२६]	मोतीलाल लाभाजी १९६ भवानीपेट पूना,
प्र र	प्रकरण रत्नाकर (चार भाग)		वीर स २४५२
	संस्कृत, प्राकृत तथा भाषा के		भीमशी माणिक चम्बई
	अनेक ग्रन्थों का संग्रह		[वि स १९३२ १९६८]

प्रव	प्रवचन सारोद्धार, मूल-प्राकृत, टीका-संस्कृत (वि स. १२४८) प्रशस्तपाद भाष्य	मूलकर्ता-श्रीनेमिचन्द्रसूरी (वि बारहवीं शताब्दी) टीकाकार-सिद्धसेनसूरीश्वर (वि तेरहवीं शताब्दी)	श्रीदेवचन्द्र लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फंड बम्बई, वीर स २४४८
प्रशस्त			आगमोदय समिति, वीर स २४४५
प्रश्न	प्रश्नव्याकरण सूत्र, मूल प्राकृत, टीका-संस्कृत	टीकाकार-श्री अभयदेवसूरी (वि स १०७२-११३५) उपाध्याय श्री क्षमाकल्याण गणी	सेठ फकीरचन्द घेलाभाई सूरत, (वि स १९७३)
प्रश्नो	प्रश्नोत्तर सार्धशतक (वि स १८५१)		सेठ भैरोंदाजी जेठमलजी सेठिया बीकानेर, वीर स २४५०
प्रस.	प्रकरण सप्रह दूसरा भाग हिन्दी (२७ थोकडों का सप्रह)	सप्रहकार-मुनिश्रीउत्तमचन्द्रजी स्वामी (वि स १९१०-१९७६) श्री हेमचन्द्राचार्य (वि स. ११४५-१२२६)	श्री मोतीलाल लाधाजी १६६ भवानी पेट पूना, सन् १९२८ई.
प्रा	प्राकृत व्याकरण, संस्कृत		श्री जैन आत्मानन्द सभा भावनगर, वीर स २४५६-२४६५
वृ	बृहत्कल्पसूत्रनिर्मुक्तिभाष्य वृत्ति सहित, मूल, निर्मुक्तिप्रौढभाष्य प्राकृत, वृत्ति-संस्कृत [पाच भाग प्रकाशित]	मूल एवं निर्मुक्तिकर्ता-भद्रबाहुस्वामी (वीर की पहली दूसरी शताब्दी), भाष्यकार-सचदास गणी क्षमाश्रमण, वृत्तिकार-मलयगिरि तथा जैमकीर्ति आचार्य, सम्पादक मुनि चतुराविजयजी पुण्यविजयजी भाषाकर्ता- डा जीवराज घेलाभाई दोशी.	
घृ (जि)	श्रीवृहत्कल्प सूत्र, मूल-प्राकृत गुजराती शब्दार्थ भावार्थ सहित		डा जीवराज घेलाभाई दोशी अहमदाबाद, वि स १९७१
वृ हो.	वृहत्सोडा चक्र		गर्ग एन्ड कम्पनी खारी बावली देहली

संकेत

जग्नः.

ग्रन्थ नाम, भाषा व काल

ब्रह्मसूत्र शास्त्रभाष्य, भामती,
वेदान्त कल्पतरु और कल्पतरु
परिमल सहित, संस्कृत

भ

भगवती (व्याख्याप्रज्ञप्ति) मुद्र
सटीक, मूल प्राकृत-टीका
संस्कृत (वि.स ११२८) भाग ३

भारत

भरतेश्वरबाहुवलि वृत्ति (दो भाग)

मूल-प्राकृत, वृत्ति-संस्कृत

भावना

भावनाशतक, मूल भावार्थ और
विवेचन सहित, मूल-संस्कृत
भावार्थ और विवेचन-गुजराती

यो

योगशास्त्र स्तोत्र विवरण

सहित, संस्कृत

योग

योगदर्शन, संस्कृत, भाष्य तथा
व्याख्या सहित

रत्ना

रत्नाकरावतारिका (प्रमाण नय
तत्वालोकांत गारुडीटीका) संस्कृत

ग्रन्थ कर्त्ता और उसका काल

भाष्यकार-श्रीशंकराचार्य, भामतीटीका-वाचस्पतिमिश्र
वेदान्त कल्पतरु-श्री अमलानन्द सरस्वती
कल्पतरु परिमल श्री अण्णय दीक्षितटीकाकार-श्री अमयदेवसूरि
(वि.स १०७२-११३५)

वृत्तिकार शुभशील गणी

(१५वीं १६ वीं शताब्दी)

शतावधानी श्री रत्नचर्दजी महाराज

[वि.स १६३६-१६६८]

श्री हेमचन्द्रानार्य

(वि.स ११४५-१२२६)

सूत्रकार-महामुनि पातञ्जलि, भाष्यकार-महर्षि कृष्ण
द्वैपायन, व्याख्याकार-श्रीमद् वाचस्पति मिश्र

श्री रत्नप्रभसुरि

(वि.स १६वीं शताब्दी)

प्रकाशन का स्थान व समय

तुकाराम जावजी सेठ बम्बई,
सन् १६१७ ई

श्री आगमोदय समिति,

वीर सं २४४४-२४४७

देवचन्द लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फंड बम्बई,

वीर सं. २४५८-२४६२

वद्वानवास दयाल कोट वाजार गेट बम्बई,

वीर सं २४४७

श्री जैन धर्म प्रसारक सभा भावनगर,

वीर सं २४५२

एच डी गुप्ता एन्ड सन्स, चौखम्बा संस्कृत

बुक डिपो बनारस, सन् १६११ ई

दर्पचन्द्र भुराभाई धर्माम्बुदय प्रेस बनारस,
वीर सं. २४३७

रा	राजप्रशनीय सूत्र सटीक मूल-प्राकृत, टीका-सस्कृत	टीकाकार-श्रीमलयगिरि वीर स २४५१	आगमोदय समिति वीर स २४५१
राज.	सती राजमती, हिन्दी	पूज्यश्री जवाहरलालजी महाराज साहव के व्याख्यानों में से	श्री हितेच्छु श्रावक मडल रतलाम, वीर स २४६३
रायो	राजयोग, गुजराती (दो भाग)	स्वामी विवेकानन्द (सन् १८६३-१९०२ ई)	डाह्याभाई रामचन्द्र महेता ग्रहमदावाद, सन् १९२१ ई
लोक	लोक प्रकाश, सस्कृत गुजराती अनुवाद	उपाध्याय विनयविजयजी [१७वीं १८वीं शताब्दी] अनुवादक श्रावक हीरालाल हसरान	प श्रावक हीरालाल हसरान जामनगर, वि स १९६७
वि	विपाकसूत्र सटीक मूल-प्राकृत, टीका-सस्कृत	टीकाकार-श्री अभयदेवसूरि [वि स १०७२-११३५]	आगमोदय समिति वीर स २४४६
विशे	विशेषावश्यक भाष्य प्राकृत टीका-सस्कृत, (वि स ११७५)	भाष्यकर्ता श्रीजिनभद्रगणि क्षमाभरण टीकाकार-मलघारि श्री हेमचन्द्रसूरि	हर्षचंद्र भूराभाई बनारस, वीर स. २४४१
विहर	विहरमान एकविंशति		
वेदान्त	वेदान्त परिभाषा		
व्यव	व्यवहार सूत्र, मूल-प्राकृत हिन्दी अनुवाद सहित	हिन्दी अनुवादक-श्री अमोलसमर्थविजी (वि स १९३४-)	राजाबहादुर लाला सुखदेवसहाय ज्वाला प्रसाद जौहरी महेन्द्रगढ़, वीर स. २४४५

ग्रन्थ नाम, भाषा व काल

व्यवहार चूलिका (हस्तलिखित) टब्बार्थ
(वि.स. १६४४ पौष सुदी १५ शनिवार
की लिखी हुई)

व्यवहार भाष्य निर्युक्ति विवरण
सहित, मूल, निर्युक्ति और भाष्य-प्राकृत,
टीका-संस्कृत (दस भाग)

शान्त्युधारस, प्रथम द्वितीय भाग
मूल-संस्कृत, विवेचन गुजराती
[वि.स. १७२३]

शास्त्र दीपिका, व्याख्या सहित
संस्कृत

श्रावक के चार शिक्षान्त

श्राद्धविधि प्रकरण स्वोपज्ञप्रति युक्त
[वि.स. १६०६]

श्राद्ध प्रतिक्रमण (वन्दिस्तु सूत्र)
मूल-प्राकृत, टीका-संस्कृत

ग्रन्थकर्त्ता और उसका काल

निर्युक्तिकार श्रीभद्रबाहुस्वामी
टीकाकार-श्रीमलयगिरि

मूलकर्त्ता-उपाध्याय श्रीविनयविजयजी
विवेचक-मोतीचंद गिरधराल कापडिया

सर्वतन्त्र स्वतन्त्र श्रीमत्पार्थ सारथि मिश्र
व्याख्याकार-श्री रामकृष्ण, श्रीसोमनाथ
पूज्यश्री जवाहरलालजी महाराज साहब के
व्याख्यानों के आधार पर

श्री रत्नशेखरसूरि
(वि.स. १४६७-१६१७)

टीकाकार-श्री रत्नशेखरसूरि
(वि.स. १४६७-१६१७)

प्रकाशन का स्थान और समय

श्री सेठिया जैनशाल भंडार बीकानेर

वकील केशवलाल प्रेमचंद अहमदाबाद,
वि.स. १९८२-८४

श्री जैन धर्म प्रसारक सभा भावनगर,
वि.स. १९६४-६५

तुकाराम जावजी मिश्र निर्णयसागर प्रेस
२३ कोल भाटलेन बम्बई, सन् १९१५ ई.

श्री हितेच्छु श्रावक भंडल रतलाम,
वीर स २४४३

श्रावक हीरालाल हंसराज जामनगर
वीर स २४४३

देवचंदलाल भाई जैन पुस्तकालय फड मन्वेरी वाज
बम्बई, वीर स २४४५

संकेत

व्यव. घृ.

व्यव. भा.

शा.

शास्त्र

शिक्षा.

श्राद्ध.

श्राद्ध प्रति.

आ. प्र.	आवक प्रज्ञप्ति, मूल-प्राकृत टीका-संस्कृत	मूलकर्ता-वाचकमुख्य 'ओ'उमास्वाति टीकाकार-श्रीहरिभद्रसूरि [छठी शताब्दी]	ज्ञान प्रसारक मंडल बम्बई, वि.स. १९६१
आ प्रति	आवक प्रतिक्रमण [हिन्दी और प्राकृत]	"	श्री भैरोंदानजी जेठमलजी सेठिया बीकानेर, वीरस २४६५
षड्भाषा. संगीत.	षड्भाषाचन्द्रिका, संस्कृत संगीतशास्त्र	प लक्ष्मीधर	राजकीय ग्रन्थमाला बम्बई, सन् १९१६ ई.
सप्त.	सप्तभगीतरंगिणी, संस्कृत हिन्दी अनुवाद सहित	मूलकर्ता-श्री विमलदास अनुवादक-ठाकुरप्रसाद शर्मा	श्री परमश्रुत प्रभावक मंडल बम्बई, वीर सं २४४२
सप्त.	सप्तभाषाग सून सटीक, मूत्र-प्राकृत टीका-संस्कृत [वि.स. ११२०]	टीकाकार श्री अभयदेवसूरि (वि स. १०७२-११३५)	आगमोदय समिति, वीर स. २४४४
समय.	समयसार, आत्मख्याति टीका तथा गुजराती अनुवाद सहित	श्री कुन्दकुन्दाचार्य [वि पहली शताब्दी] टीकाकार-अमृतचन्द्राचार्य (वि. १०वीं शताब्दी) अनुवादक-हिम्मतलाल जेठालाल शाह	श्री जैन प्रतिष्ठि सेवा समिति सोनगढ काठियावाड़, [वि. सं १९६७]
सम्पत्ति.	सम्पत्ति तर्क प्रकरण, मूल-प्राकृत टीका-संस्कृत [पांच भाग]	मूलकर्ता-आचार्य श्री सिद्धसेन दिवाकर [पहली शताब्दी] टीकाकार-श्री अभयदेवसूरि	गुजरात पुरातत्त्व मंदिर ग्रहमदाबाद, वि. स. १९८०
सरले सिं	सरले पिंगल, हिन्दी वि. सं १९७४	सम्पादक-प. सुखलाल नेवरदास (विद्यमान) श्री पुस्तकाल विद्यार्थी, विशारद, श्री लक्ष्मीधर शुक्ल, विशारद	हिन्दी साहित्य संमेलन प्रयाग, वि सं. १९८४

संकेत	ग्रन्थ नाम, भाषा व काल	ग्रन्थ कर्त्ता और उसका काल	प्रकाशन का स्थान व समय
सर्व द	सर्व दर्शन सप्रह, सस्कृत	श्री माधवाचार्य	जीवानन्द विद्यासागर भट्टाचार्य कलकत्ता, सन् १८८६
स. श.	सप्ततियुत स्थान प्रकरण [सत्तरिसय ठाणावृत्ति]	मूलकर्त्ता श्री सोमतिलकसूरि	श्री जैन आत्मानन्द सभा भावनगर वीर स. २४४५
सांख्य.	मूल-प्राकृत (वि स १३८७) टीका-सस्कृत (वि स १६७०) सांख्यतत्त्व कौमुदी, सस्कृत हिन्दी अनुवाद सहित साधु प्रतिकरण सूत्र	टीकाकार-श्री देवविजय श्री ईश्वरकृष्ण	नवलकिशोर प्रेस लखनऊ, सन् १८८८ ई श्री भैरोदानजी जेठमलजी सेठिया बीकानेर, वीर सं. २४४६
सि	सिद्धान्त कौमुदी	भट्टोजी दीक्षित	तुकाराम जावजी बम्बई
सि. सु.	सिद्धान्त मुक्तावलि	श्री विश्वनाथ पंचानन भट्टाचार्य	पाण्डुरंग जावजी निर्णयसागर प्रेस कोलभाट बोन बम्बई, सन् १२६४ ई. श्री आगमोदय समिति, वीर स २४४३
सूर्य.	सूर्यगङाग(सूक्तताग)मूत्र,मूल- प्राकृत,टीका सस्कृत वि सं. ६३३	टीकाकार-श्री शीलाभाचार्य (वि दसवीं शताब्दी)	श्री आगमोदय समिति, वीर स. २४४५
सूर्य.	सूर्यप्रज्ञप्ति सटीक, मूल-प्राकृत टीका-सस्कृत	टीकाकार-आचार्य श्री मलयगिरि	

संकेत	ग्रन्थ नाम, भाषा व काल	ग्रन्थकर्त्ता और उसका काल	प्रकाशन का स्थान और समय
सेन.	सेनप्रश्न (प्रश्नरत्नाकराभिध. श्री सेन प्रश्न) सस्कृत (वि. १७ वीं शताब्दी) स्याद्वादमञ्जरी, सस्कृत (वि स १३४६) हठयोगदीपिका, गुजराती	समग्रकर्त्ता-श्रीशुभावजिय गणी (विजयसेन सूरि को पूछे हुए प्रश्नों के उत्तरों का संग्रह) श्री महिसेनसूरि मुख-स्वात्मराम योगीन्द्र, भाषाटीका-वेदान्त कवि हीरालाल जादवराय बुच डा एस राधाकृष्णन	श्रीदेवचन्द लालभाई जैन पुस्तकालय फंड बम्बई, वीर स २४४५ श्री मोतीलाल लायाजी १९१ भवानी पेठ पूना, वीर स २४५२ महादेवरामचन्द्र जागुहे बुकसेलर त्रया दरवाजा ग्रहमदाबाद वि स १९७१ मेक्सिमलिन कम्पनी, सन् १९३१ ई
हठ	(हिस्ट्री ऑफ) इंडियन फिलॉसोफी, दो भाग, अंग्रेजी	समग्रकर्त्ता-कीर्तिविजय गणी (वि १७ वीं शताब्दी) (श्री हीरविजयसूरि को पूछे गये प्रश्नों के उत्तरों का संग्रह)	जेसंगलाल छोटालाल सुतरीया ग्रहमदाबाद, (श्रीहसविजय जैन लायब्रेरी) वीर स २४४६
हि. फि.	हीर प्रश्न (प्रश्नोत्तर समुच्चय) सस्कृत		

अध्ययनादि के संकेत

संकेत	पूरा नाम	किस किस ग्रन्थ में है:—
अ०	अध्ययन	आवश्यक, आचाराग, उत्तराध्ययन, उपासकदशा, हातार्धमंकथा, दशवैकालिक, विपाकसूत्र, सूयगडाग, अन्तगडशासूत्र, अणुतरोववाई आदि
अधि	अधिकार	धर्मसंग्रह
अध्या	अध्याय	तत्त्वार्थसूत्र, द्रव्यानुयोग तर्कणा
आ.	आह्निक	प्रमाणमीमासा, न्यायसूत्र
उ.	उद्देशा	सूयगडाग, भगवती, निशीथसूत्र, वृहत्कल्पसूत्र, व्यवहारसूत्र, ठाणागसूत्र, आचारांग सूत्र
उल्ला	उल्लास	सनप्रश्न
का.	कारिका	स्याद्वादमञ्जरी
काड.	काण्ड	सम्पत्ति तर्क
गा.	गाथा	आगर्भों में तथा व्यवहारभाष्य, विशेषानुशयकभाष्य हरिभट्टीयावश्यक, मलयगिरि आवश्यक, परमात्मप्रकाश
चु	चतुर्लिका	आचारागसूत्र, दशवैकालिकसूत्र
टी.	टीका	
द.	दशा	दशाश्रुतस्कन्धदशा
द्वा.	द्वार	प्रवचनमारोद्धार पंचसंग्रह, पंचवस्तुक, प्रश्नव्याकरणसूत्र (आश्रवद्वार और संवरद्वार), नवपद प्रकरण

नि.	निर्द्युक्ति	आचारंग, सृगडाग, दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, आवश्यक, भ्रष्टानिर्द्युक्ति, भ्रष्टानिर्द्युक्ति
प	पद	पञ्चवर्णासूत्र
पर्व.	पर्व	त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र
परि.	परिच्छेद	रत्नाकरावतारिका
प्रक.	प्रकरण	ज्ञानार्णव
प्रका.	प्रकाश	योगशास्त्र, हीरप्रश्न, श्राद्धविधिप्रकरणा
प्रति.	प्रतिपत्ति	जीवाजीवाभिगम
प्रा.	प्राप्त	चन्द्रप्रज्ञप्ति, सूर्यप्रज्ञप्ति
प्रा. प्रा.	प्राप्तप्राप्त	चन्द्रप्रज्ञप्ति, सूर्यप्रज्ञप्ति
भा.	भाग	कर्मप्रन्थ, कर्तव्यकौमुदी
य.	वर्ग	निरयावलिता, भ्रष्टानिर्द्युक्ति, भ्रष्टानिर्द्युक्ति
यक्ष.	वक्षस्कार	जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति
विव.	विवरण	पञ्चाशक
श.	शतक	भगवती
श्लो.	श्लोक	
शु.	श्रुतस्कन्ध	आचारंगसूत्र, सृगडागसूत्र
स.	सर्ग	
सु.	सूत्र	ठाण्णंगसूत्र, समवायांगसूत्र, तत्त्वार्थसूत्र, रत्नाकरावतारिका

श्री जैन सिद्धान्त बोल संग्रह

आठवाँ भाग

जैन सिद्धान्त बोल संग्रह के सात भागों का विषय कोष

मंगलाचरण

आसाढे धवलाइ छट्टि चवणं चित्तस्स तेरस्सिए ।
सुद्धाए जणणं सुकिण्ह दसमी, दिक्खा य मग्गस्सिरे ॥
जस्सासी वइसाह सुद्ध दसमी, एणं जणाणंदणं ।
सुक्खो कत्ति अमावसाइ तमहं, वंदामि वीरं जिणं ॥

भावार्थ—आषाढ़ सुदी छठ को देवलोक से चव कर चैत सुदी त्रयोदशी को जिसने जन्म धारण किया, मगसिरवदी दशमी को जिसने लोक-कल्याण के लिये दीक्षा अङ्गीकार की, वैशाख सुदी दशमी को जिसे लोक को आनन्द देने वाला पूर्ण ज्ञान का प्रकाश प्राप्त हुआ एवं अन्त में कार्तिक मास की अमावस्या के दिन जिस का निर्वाण हुआ ऐसे श्री वीर भगवान् को मैं वन्दना करता हूँ ।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अंक की कथा औत्प- त्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२७४	न० सू० २७ गा० ६४ टी०
अंग पन्द्रह मोक्ष के	८५०	५	१२१	पंच व० गा० १४६ १६३
१ अंग प्रविष्ट श्रुत	८२२	५	१०	न.सू ४५, विशेष गा ४४०-४२
अंग प्रविष्ट श्रुतज्ञान	१६	१	१३	न सू ४५, टी. २ उ १ सू ७१
अंग बाह्य श्रुत	८२२	५	१०	न सू ४४ विशेष गा ४५० ४२
अंग बाह्य श्रुतज्ञान	१६	१	१३	न सू ४४, टी. २ उ १ सू ७१
अंग सूत्र ग्यारह	७७६	४	६६	
२ अंगार दोष	३३०	१	३३६	ध अधि. ३ ग्लो. २३ टी पृ. ४४, पिं नि गा ६४५-६०, उत्त अ २४ गा १२ टी.
अंगुल के तीन भेद	११८	१	८३	अनु सू. १३३
अंगुष्ठ संकेत पञ्चक्रवाण	५८६	३	४३	आव. ह अ ६ नि गा १४७८, प्रव द्वा ४ गा २००
अंजूकुमारी की कथा	६१०	६	५०	वि अ. १०
३ अक्षण्डयक	३५६	१	३७३	ठा ५ उ १ सू. ३६६
अकम्पितस्वामी गणधर	७७५	४	५२	विशे. गा. १८८४ से १६०४
की नरक विषयक शंका और समाधान				
अकर्मभूमि के तीस भेद	६५७	६	३०७	पत्र. प १ सू. ३७
अकर्मभूमिज	७१	१	५१	ठा. ३ उ. १ सू. १३०, पत्र प. १ सू ३७, जी. प्रति ३ सू १०७
अकर्मभूमि छः जम्बू- द्वीप की	४३५	२	४१	ठा. ६ उ ३ सू. ४२२

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
१ अकर्मशिक्षनातक	३७१	१ ३८६	ठा ५ उ ३ मू ४४५, भ श २४ उ ६ सू ७५१
२ अकस्माद्भय	५३३	२ २६८	ठा ७ उ ३ सू ५४६, सम ७
अकाममरण	५३	१ ३१	उत्त अ ५ गा २
अकाममरणीय अध्ययन	६७२	७ ४६	उत्त अ. ५
की वत्तीस गाथाएं			
अकारण दोष (आहार का दोष)	३३०	१ ३४०	उत्त अ २४ गा १२ टी, उत्त अ २६ गा ३२, ध अधि. ३ श्लो २३ टी., पि नि गा. ६६१ से ६६८
अकाल (काल का भेद)	४३१	२ ३८	विशे. गा २७०८ से २७१०
अकिंचनत्व (परिग्रह त्याग	६६१	३ २३४	नव. गा. २३, सम. १०, शा. भा. १ प्रक ८ (सवरभावना)
३ अकृत्स्ना आरोपणा	३२६	१ ३३५	ठा. ५ उ. २ सू ४३३, सम २८
अक्रियावादी आठ	५६१	३ ६०	ठा. ८ उ. ३ सू ६०७
अक्रियावादी की व्याख्या और उसके चौरासी भेद	१६१	१ १४५	भ.श ३० उ. १ सू. ८२४ टी, आचा अ. १ उ. १ सू. ३ टी, सूय० अ० १२
अक्षर का क्या अर्थ है?	६१८	६ १३८	वृ गा. ७२ से ७५, न. सू० १, ४३ टी. पृ. ६३, २०१
अक्षर श्रुत	८२२	५ ३	न सू० ३६, विशे० गा० ४५५-५००, कर्म भा. १ गा ६
अक्षर श्रुत	६०१	६ ३	कर्म भा. १ गा० ७

विषय	श्रोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अक्षरश्रुत के तीन भेद	८२२	५	६	न. सू. ३६, विशेष. गा. ४६४-४६६, कर्म भा. १ गा. १
अक्षरसमास श्रुत	६०१	६	३	कर्म. भा. १ गा. ७
अक्षीण महानसीलब्धि	६५४	६	२६७	प्रव. द्वा. २७० गा. १४६४
१ अगमिक श्रुत	८२२	५	१०	न. सू. ४४, विशेष. गा. ४४६
अगार चारित्र धर्म	२०	१	१५	ठा. २ उ० १ सू० ७२
अगुरुलघुत्वगुण	४२५	२	१६, २४	आगम. द्रव्य. त. मध्या ११ श्लो. ४
२ अगुरुलघु परिणाम	७५०	३	४३४	ठा. १० उ० ३ सू० ७१३, पत्र प. १३ सू० १८४
अग्निकुमार देवों के दस अधिपति	७३५	३	४१८	म. श. ३ उ० सू० १६६
अग्निभूति गणधर की कर्म	७७५	४	३१	विशेष. गा. १६०६ १६४४
विषयक शंका समाधान				
३ अग्रवीज	४६६	२	६६	दश. अ. ४ सू. १
अघाती कर्म	२७	१	१६	कर्म. गा. १ टी. पृ. १०
अघाती प्रकृतियाँ	८०६	४	३५०	कर्म. भा. १ गा. १४
अचक्षुदर्शन	१६६	१	१५७	ठा. ४ उ० ४ सू० ३६५, कर्म. भा. ४ गा. १२
अचक्षुदर्शन अनाकारो-पयोग	७८६	४	२६६	पत्र. प. १६ सू० ३१२
४ अचरम समय निर्ग्रन्थ	३७०	१	३८५	ठा. ४ उ० ३ सू० ४४५

१ श्रुतज्ञान का भेद । २ अजीवपरिणाम का भेद । ३ वादर वनस्पतिकाय का भेद । ४ निर्ग्रन्थ का भेद ।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अचलभ्राता गणधर की	७७५	४	५४	विशे० गा० १६०५ से १६४८
पुण्य पाप विषयक शङ्का				
और उसका समाधान				
अचित्त योनि	६७	१	४८	तत्त्वार्थ अध्या २ सू ३३, ठा० ३ उ० १ सू० १४०
अचित्त वायु के पाँच प्रकार	४१३	१	४३८	ठा० ५ उ० ३ सू० ४४४
१ अचियत्तोपघान	६६८	३	२५७	ठा० १० उ० ३ सू० ७३८
२ अचेल कल्प	६६२	३	२३४	पचा० १७ गा० ११, १२, १३
अचौर्य पर पाँच गाथाएं	६६४	७	१७६	
अचौर्य महाव्रत की पाँच	३१६	१	३२६	आव ह अ ४ पृ ६५८, प्रव द्वा ७२ गा. ६३८, सम २५ आचा श्रु २. चू. ३ अ० २४ सू १७६, घ अधि ३ श्लो. ४५ टी. पृ० १२५
भावनाएं				
अचौर्याणुव्रत	३००	१	२८६	आव ह. अ. ६ पृ ८२१ ठा ५. उ. १ सू ३८६, उपा अ १ सू ६, घ. अधि. २ श्लो० २७ पृ ६०
अचौर्याणुव्रत (स्थूल अद- ३०३	१	२६६		उपा. अ० १ सू ७, आव ह अ. ६, पृ. ८२१ घ. अधि १ श्लो० ४५ पृ १०२
त्तादान विरमण व्रत) के				
पाँच अतिचार				
३ अच्छविस्नातक	३७१	१	३८६	ठा ५. उ ३ सू ४४५, भ. श २५ उ. ६ सू ७५१

१ समय की घात करने वाला एक दोष । २ साधु के कल्प का एक भेद ।

३ स्नातक निर्ग्रन्थ का एक भेद ।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अच्छेद्य तीन	७३	१	५३	टा० ३ उ० २ सू० १६
अच्छेरे (आश्चर्य) दस	६८१	३	२७६	टा १० उ. ३ सू० ७७, प्रव. द्वा० १३८ गा. ८८५-८८६
अजीर्ण कितने प्रकार का है	१८	६	१५७	प्रश्नो०
अजीव अरूपी के दस भेद	७५१	३	४३४	पत्र० प० १ सू० ३, जी० प्रति० १ सू० ४
अजीव के चौदह भेद	८२७	५	१६	पत्र० प० १ सू० ३, ४
अजीव के छः संस्थान	४६६	२	६६	म ज २५ उ ३ सू ७०६, पत्र प १ सू ४, जी प्रति १
अजीव तत्त्व के पाँच सौ	६३३	३	१८१	पत्र० प० १ सू० ३, ४, उत्त० अ० ३६ गा० ४-४६
साठ भेद				
अजीव परिणाम दस	७५०	३	४२६	पत्र. प १३ सू १८०, टा १० उ ३ सू ७१३
अजीव मिश्रिता सत्यामृषा	६६६	३	३७१	टा १० उ ३ सू ७४१, पत्र प ११ सू १६५, ध अधि ३ श्लो० ४१ टी० ११२
भाषा	५			
अजीवाधिकरण	५०	१	३०	तत्त्वार्थ० अध्या० ६ सू० ८
१ अज्ञात चरक	३५३	१	३६८	टा ५ उ १ सू ३६६
अज्ञानवादी की व्याख्या	१६१	१	१४६	म स ३० उ १ सू ८४ टी, आचा. अ १ उ १ सू. ३ टी, सूय अ १२
और उसके ६७ भेद				
अठईस गुण अनुयोग	६५२	६	२८६	वृ नि गा. ४१ मे २४४
देने वाले के				
अठईस नक्षत्र	६५३	६	२८८	ज वत्त. ७ सू १५५, सम २७

विषय	बाल भाग पृष्ठ	प्रमाण
अठाईस प्रकृतियों मोह- नीय कर्म की	६५१ ६ २८४	वर्म. भा १ गा. १३-२२, सम० २८
अठाईस भेद मतिज्ञान के	६५० ६ २८३	सम २८, वर्म भा १ गा ४-५
अठाईस लब्धियाँ	६५४ ६ २८६	प्रव. द्वा २७० गा. १४६२- १४०८
अठारह कल्प साधु के	८६० ५ ४०२	दश अर्ह गा. ७ से ६८, सम० १८
अठारह गाथा चुल्लक निर्ग- थीय अध्ययन की	८६७ ५ ४१६	उत्त अ ६
अठारह गाथा दशवैका लिक प्रथम चुल्लिका की	८६८ ५ ४२०	दश वृ १
अठारह दोष दो प्रकार से जो अरिहन्त में नहीं होते	८८७ ५ ३६७	प्रव द्वा ४१ गा ४५१ ५२, स. श द्वा ६६ गा १६१-१६२
अठारह दोष पौषध के	८६४ ५ ४१०	शिक्षा०
अठारह द्वार गतागत के	८८८ ५ ३६८	पन्न प ६ के आधार से
अठारह पापस्थानक	८६५ ५ ४१२	ठा १ सू ४८, प्रव द्वा. २३७ गा. १३५१-१३५३, भ श. १ उ ६, भ. श १२ उ ५, सू ४५०, दशा. द. ६
अठारह पुरुष दीक्षा के अयोग्य	८६१ ५ ४०६	प्रव द्वा १०७ गा. ७६०-६१ ध अधि ३ श्लो ७८ टी पृ. ३
अठारह प्रकार का ब्रह्मचर्य	८६२ ५ ४१०	सम १८, प्रव द्वा १६८ गा. १०६१
अठारह प्रकार की चोर की प्रभूति	८६६ ५ ४१५	प्रश्न. अधर्मद्वार ३ सू १२ टी.

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अठारह भेद अब्रह्मचर्य के	८६३	५	४१०	आव ह अ ४ पृ ६५२
अठारह लिपियाँ	८८६	५	४०१	पत्र प १ सू ३७, सम १८
१ अड़तालीस ग्लान प्रति	७६७	४	२६७	प्रव द्वा ७१ गा ६२६,
चारी				नवपद सल्लंघना अधिकार गा० १२६
अड़तालीस भेद तिर्यञ्च के	१००१	७	२६५	पन्न प १ सू १०-३६
अड़तालीस भेद ध्यान के	१००२	७	२६६	उव सू २०
अड़तीस गाथाएँ सूयगढांग	६८५	७	१३६	सूय अ ११
सूत्र के ग्यारहवें अध्याय की				
अढ़ाई द्वीप में चन्द्र सूर्यादि	७६६	४	३०२	सूर्य प्रा १६ सू १००
ज्योतिषी देवों की संख्या				
अणुत्तरोववाई सूत्र का	७७६	४	२०२	
संक्षिप्त विषय वर्णन				
अणुव्रत पाँच	३००	१	२८८	आव ह अ ६ पृ ८१७ में ८०६, ठा ५ सू ३८६, उपा. अ. १, ध अधि २ श्लो २३-२६
अणुव्रत पाँच	४६७	२	२००	
२ अतथाज्ञानानुयोग	७१८	३	३६५	ठा. १० उ ३ सू ७२७
अतिक्रम	२४४	१	२२१	पि नि गा १८२, ध अधि ३ श्लो ५३ टी. पृ. १३६
अतिचार	२४४	१	२२१	पि नि गा. १८२, ध. अधि ३. श्लो ५३ टी पृ १३६

१ रोगी साधु की सेवा करने वाला साधु ।

२ द्रव्यानुयोग का भेद-वस्तु के अयथार्थ स्वरूप का व्याख्यान ।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अतिचार चौदह ज्ञान के	८२४	५	१४	भाव. ह. अ. ४ पृ. ७३०
अतिचार निन्नाणवे	४६७	२	२०१	
अतिचार पाँच समकित के	२८५	१	२६५	उपा. अ. १ सू. ७, भाव. ह. अ. ६ पृ. ८१०
अतिचारभावक के बारह	३०१-	१	२६०-	उपा. अ. १ सू. ७, भाव. ह.
व्रतों के	३१२		३१४	अ. ६ पृ. ८१७-८३६, ध. अधि २२२लो ४३-५८ पृ. १००
१ अतिथिवनीपक	३७३	१	३८८	ठा. ५ उ. ३ सू. ४५४
अतिथि संविभाग व्रत	१८६	१	१४१	पचा. १ गा. ३१ ३२, भाव. ह. अ. ६ पृ. ८३६
अतिथि संविभाग व्रत के	३१२	१	३१३	उपा. अ. १ सू. ७, भाव. ह. अ. ६ पृ. ८३६
पाँच अतिचार				
अतिथि संविभाग व्रत	७६४	४	२८४	आगम.
निश्चय और व्यवहार से				
अतिमुक्त (एवंता) कुमार	७७६	४	१६८	अत. व. ६ अ. १५
की कथा				
अतिव्याप्ति	१२०	१	८५	न्यायदी. प्रका. १
अतिव्याप्ति दोष	७२२	३	४०८	ठा. १० उ. ३ सू. ४४२ती.
अतिशय चौतीस अरिहंत	६७७	७	६८	सम. ३४, स.श. द्वा. ६७
देव के				
अतिशय पाँच आचार्य	३४२	१	३५३	ठा. ५ उ. २ सू. ४३८
उपाध्याय के				

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
अतिशय पैतीस अरिहन्त	६७६ ७ ७१	सम. ३५ टी., रासू. ४ टी., उव सू १० टी.
देव की वाणी के		
अतीर्थङ्कर सिद्ध	८४६ ५ ११७	पन्न प. १ सू ७
अतीर्थ सिद्ध	८४६ ५ ११७	पन्न प. १ सू ७
अदत्तादान(चोरी)विरति	६६४ ७ १७६	
पर पाँच गाथाएं		
अदत्तादान विरमण रूप	३१६ १ ३२६	आव ह भ ४ पृ ६५८, प्रव. द्वा. ७२ गा. ६३८, सम २५, आचा. श्रु. २ चू. ३ भ. २४, प्र. अधि ३ श्लो ४५ टी. ३ १२५
तीसरे महाव्रत की पाँच		
भावनाएं		
अदत्तादान विरमण व्रत	७६४ ४ २८१	आगम.
निश्चय और व्यवहार से		
अद्धाद्धामिश्रिता	६६६ ३ ३७१	ठा. १० उ. ३ सू. ७४१, पन्न. प. ११ सू. १६५, घ. अधि. ३ श्लो. ४१ टी. पृ १२२
सत्यामृषा		
अद्धा पञ्चखाण के दस	७०५ ३ ३७६	प्रव द्वा. ४ गा. २०१-२०२, पचा ५ गा ८-११, आव. ३ नि. गा. १५६७
भेद		
अद्धा पल्योपम (सूक्ष्म, १०८ १ ७६		अनुसू. १२८, प्रव द्वा १५८ गा. १०२४-१०२५
व्यवहारिक)		
अद्धामिश्रिता सत्यामृषा	६६६ ३ ३७१	ठा. १० उ. ३ सू. ७४१, पन्न. प. ११ सू. १६५, घ. अधि ३ श्लो. ४१ टी पृ १२२
अद्धा सागरोपम	१०६ १ ७८	अनु सू. १२८, प्रव द्वा. १५६ गा. १०२६-१०३०

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अद्भुत रस	६३६	३	२०८	अनु सू. १२६ गा. ६८-६९
अधर प्राणायाम	५५६	२	३०३	यो प्रका ५ श्लो ६,
अधर्मदान	७६८	३	४५२	ठा १० उ ३ सू ७४५
अधर्म, द्रव्य	४२४	२	३	आगम उक्त, अ ३६ गा. ५
अधर्मास्तिकाय के प्रभेद	२७७	१	२५५	ठा ५ उ ३ सू. ४४१
अधिक तिथि वाले पर्व	४३४	२	४१	ठा ६ उ ३ सू ५२४, चन्द्र. प्रा १२
अधिक दोष	७२३	३	४१२	ठा १० उ ३ सू ७४३
अधिकरण के भेद	५०	१	२६	तत्त्वार्थ अध्या ६ सू ८
अधोलोक	६५	१	४६	लोक भा. २ स १२, अ श ११ उ १० सू ४२०
अध्ययन तेईस सूर्यगडांगके	६२४	६	१७३	सूर्य, सम २३
१ अध्यवपूरक दोष	८६५	५	१६४	प्रव. द्वा. ६ उ गा ५६६, ध अधि. ३ श्लो २२ टी पृ ३८, पि. नि गा ६३, पि वि गा. ४ पंचा १३ गा. ६
अध्रुववन्धिनी प्रकृतियाँ	८०६	४	३३७	कर्म भा. ५ गा ३ से ५
अध्रुवसत्ताक प्रकृतियाँ	८०६	४	३४३	कर्म भा ५ गा. ८-१२
अध्रुवोदया प्रकृतियाँ	८०६	४	३४१	कर्म भा ५ गा ७
२ अनक्षर श्रुत	८२२	५	४	नसू ३६, विशेष गा ५०१-५०३
अनगार चारित्र धर्म	२०	१	१५	ठा २ उ. १ सू ७२
३ अनध्यवसाय	१२१	१	८६	रत्ना. परि १ सू १३-१४, न्याय प्र अध्या. ३
अननुगामी अवधिज्ञान	४२८	२	२७	ठा ६ उ ३ सू ५२६, न सू ६ से १६

१ आहार का दोष २. श्रुतज्ञान का एक भेद ३ वह ज्ञान, जिसमें वस्तु के स्वरूप का निश्चय नहीं होता ।

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अननुबन्धी प्रतिलेखना	४४८	२ ५३	ठा. ६ उ. ३ सू. ४०३, उत्त. अ. २६ गा. २४
अननुयोग के दृष्टान्त बारह	७८०	४ २३८	आव. हप्र. १ गा. १३३, १३४, वृ. नि. गा. १७१, १७२
अनन्त आठ	६२०	३ १४७	अनु सू. १०६
अनन्तक दस	७८०	३ ४०३	ठा. १० उ. ३ सू. ७३१
अनन्तक पाँच	४१७	१ ४४१	ठा. ४ उ. ३ सू. ४६२
अनन्तक पाँच	४१८	१ ४४२	ठा. ४ उ. ३ सू. ४६२
अनन्त छह	४८८	२ १००	अनु सू. १४६ टी. प्रव. द्वा. २४६ गा. १४०४
अनन्त जीविकवनस्पति	७०	१ ५१	ठा. ३ उ. १ सू. १४१
अनन्तमिश्रितासत्यामृषा	६६६	३ ३७१	ठा. १० उ. ३ सू. ७८१, पत्र प. ११ सू. १६४, ध. अधि. ३ लो. ४१ टी. पृ. १२२
अनन्तरागत सिद्धों के	६७६	७ ६६	न सू. २० टी. पृ. १२४
अल्पबहुत्व के तेनीस बोल			
१ अनन्तरागम	८३	१ ६१	अनु सू. १४४
अनन्त संसारी	८	१ ६	आवृ. गा. ४२, ठा. २ उ. २ सू. ७६
अनन्तानुबन्धी कषाय	१५८	१ ११८	पत्र प. १८ सू. १८८, ठा. ४ सू. २८६, कर्म. गा. १ गा. १७, १८ रत्ना परि. ६ सू. ४६
अनभीप्सित साध्य धर्म	५४६	२ २६२	
विशेषण पक्षाभास			
अनर्तित प्रतिलेखना	४४८	२ ५३	ठा. ६ उ. ३ सू. ४०३, उत्त. अ. २६ गा. २४

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अनर्थ दण्ड	३६	१	२३	ठा २ उ. १ सू ६६
अनर्थदण्ड विरमणव्रत १२८(क)१	६१			आव ह अ ६ पृ. ८२६
अनर्थ दण्ड विरमणव्रत ३०८ १	३०७			उपा अ १ सू ७, आवह अ ६
के पाँच अतिचार				पृ ८२६, प्रवद्वा ६ गा २८२
अनर्थदण्ड विरमण व्रत ७६४ ४	२८३			आगम
निश्चय और व्यवहार से				
अनवकांक्षाप्रत्ययाक्रिया २६५ १	२८१			ठा २ उ. १ सू ६०, ठा ५ उ. २ सू ४१६, आव.ह अ ४ पृ ६१४
अनवस्था दोष	५६४	३	१०३	प्र मी अध्या १ आ. १ सू ३३
अनशन	४७६	२	८५	उत्त अ ३० गा ८, ठा ६ उ ३ सू ५११, उव सू १६, प्रवद्वा ६ गा. २७०,
अनशन इत्वरिक के	४७७	२	८७	उत्त अ ३० गा. १०-११, भ श २५ उ ७ सू ८०२
छः भेद				
अनशन के दो भेद	६३३	३	१८५	उत्त सू १६, भ ग. २५ उ ७ सू ८०२
और उनके प्रभेद				
अनाचार	२४४	१	२२१	पि नि. गा. १८२, ध अधि ३ श्लो ५३ टी पृ १३६
अनाचीर्ण वाचन साधुके १००७ ७	२७२			दरा अ ३
अनात्मभूत लक्षण	६२	१	४३	न्याय दी प्रका १
अनात्मवान् के लिये	४५८	२	६१	ठा ६ उ. ३ सू ४६६
अहितकर स्थान छः				
अनाथता की पन्द्रह गाथाएं ८५४ ५	१३०			उत्त अ. २० गा ३८-४२
अनाथीमुनि-अशरण भा. ८१२ ४	३७६			उत्त अ २०
अनाथी मुनि की कथा ८५४ ५	१३०			उत्त. अ. २०

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अनादि श्रुत	८२२	५	८	नंसू ४३, विशेष गा. ४३७-४४८
अनादि सिद्धान्त नाम	७१६	३	३६८	अनु सू १३०
अनानुपूर्वी	११६	१	८४	अनु सू ६६, ६७, ६८
अनावाध सुख	७६६	३	४५५	ठा १० उ ३ सू ७३७
अनाभिग्राहिक मिथ्यात्व	२८८	१	२६७	ध.अधि २ श्लो २२ टी. पृ ३६, कर्म भा. ४ गा ४१
अनाभोग आगार	४८३	२	६७	आव ह अ ६ पृ ४८२, प्रव द्वा ४ गा २०३ टी.
अनाभोग निवर्तित क्रोध	१६४	१	१२४	ठा ४ उ. १ सू २४६
अनाभोग प्रत्यया क्रिया	२६५	१	२८१	ठा २ उ १ सू ६०, ठा ४ उ २ सू ४१६, आव ह. अ ४ पृ ६१३
अनाभोग वकुश	३६८	१	३८३	ठा ४ उ ३ सू ४४४
अनाभोगिक मिथ्यात्व	२८८	१	२६७	ध.अधि २ श्लो २२ टी. पृ. ३६, कर्म. भा ४ गा ४१
अनासक्ति परनौ गाथाएं	६६४	७	२०५	
अनाहारक	८	१	७	ठा २ उ २ सू. ७६
अनित्यंस्थ संस्थान	४६६	२	६६	भ श २५ उ ३ सू ७२४,
अनित्य भावना	८१२	४	३५६	गा भा १ प्रक १, भावना, ज्ञान प्रक २, प्रव द्वा. ६७ गा ५७२, तत्त्वार्थ अध्या. ६ सू ७
अनिदानता	७६३	३	४४४	ठा १० उ ३ सू ७४८
अनियट्टि (अनिवृत्ति)	८४७	५	८०	कर्म भा २ गा २ व्याख्या
वादर सम्पराय गुणस्थान				
अनिवृत्तिकरण	७८	१	५७	आव स गा. १०६-७ टी, आगम., विशे. गा १२०२-१८, प्रव. द्वा २२४ गा १३०२ टी, कर्म भा २ गा. २

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
१ अनिसृष्ट दोष	८६५	५	१६४	प्रथ द्वाद७ गा ५६६, ध अधि. ३ श्लो २२ टी पृ ३८, पि निगा. ६३, पि वि गा. ४, पंचा, १३ गा. ६
२ अनिहवाचार	५६८	३	६	ध अधि १ श्लो. १६ टी पृ १८
३ अनीक	७२६	३	४१६	तत्त्वार्थ, अध्या ४ सू ४
अनुकम्पा	२८३	१	२६४	ध अधि २ श्लो २२ टी पृ ४३
अनुकम्पादान	७६८	३	४५०	ठा १० उ ३ सू ७४५
अनुकम्पा प्रत्यनीक	४४५	२	५०	म. श ८ उ ८ सू ३३६
अनुगामी अवधिज्ञान	४२८	२	२७	ठा ६ उ ३ सू ५२६, नं सू ६-१०
अनुगत भेद	७५०	३	४३३	ठा १० उ ३ सू ७१३ टी, पत्र. प १३ सू १८५
अनुत्तर दस केवली के	६५५	३	२२३	ठा १० उ ३ सू ७६३
अनुत्तर पाँच केवली के	३७६	१	३६१	ठा ५ उ १ सू ४१०
अनुत्तर विमान पाँच	३६६	१	४२०	पत्र प १ सू ३८, म. श १४ उ ७ सू ५२६
अनुत्तर विमान में उत्पन्न	६८३	७	११२	पत्र. प १५ उ २ टी. पृ ३१६
जीव क्या नरक तिर्यञ्च				
के भव करता है?				
अनुत्तर विमानवासी देव	६८३	७	१०३	म श ५ उ ४ सू १६६
शंका होने पर किसे				
पूछते हैं और कहाँ से?				
अनुत्पन्न उपकरणोत्पा-	२३५	१	२१६	दशा द ४
दनता विनय				

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अनुपशान्त क्रोध	१६४	१	१२४	ठा ४ उ १ सू २४६
अनुपालनाशुद्ध प्रत्या- ख्यान	३२८	१	३३७	आव ह अ. ६ पृ. ८४६, ठा ५ उ ३ सू ४६६
१ अनुपेक्षा	३८१	१	३६८	ठा ५ उ ३ सू ४६५
अनुपेक्षा(भावना)वारह	८१२	४	३५५	शा भा. १-२, भावना, ज्ञान पत्र २, प्रव द्वा ६७ गा. ५७२-५७३, तत्त्वार्थ प्रख्या ६ सू ७
अनुभागनाम निधत्तायु	४७३	२	८०	मश ६३८ सू २५० टी ठा ६ उ ३ सू ५३६ टी
अनुभाग वन्ध	२४७	१	२३२	ठा ४ उ २ सू २६६, कर्म भा १ गा २
अनुभाव(फल)आठ कर्मोके	५६०	३	४३	पत्र प २३ सू २६२
अनुभाषण शुद्ध प्रत्या- ख्यान	३२८	१	३३७	ठा ५ उ ३ सू ४६६, आव ह अ ६ पृ ८४७
अनुमान	३७६	१	३६५	रत्ना. परि ३ सू १०
अनुमाननिराकृतवस्तुदोष	७२३	३	४११	ठा १० उ ३ सू ७४३ टी
अनुमाननिराकृत साध्य	५४६	२	२६१	रत्ना. परि ६ सू १२
धर्म विशेषण पक्षाभास				
अनुमान प्रमाण	२०२	१	१६०	मश. ५ उ ४ सू १६३, अनुसू १४४
अनुयोग के चार द्वार	२०८	१	१८५	अनु. सू. ५६
अनुयोग के चार भेद	२११	१	१६०	दश. नि. गा ३ पृ. ३
अनुयोग के चार भेद	४२७	२	२६	अनु सू. ५६
अनुयोग के सात निक्षेप	५२६	२	२६२	विशे. गा. १३८५ मे १३६२
अनुयोग देने वाले के	६५२	६	२८६	वृ नि. गा २४१-२४४
अठाईस गुण				

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
अनुयोग द्वार सूत्र का	२०४ १ १७६	
संक्षिप्त विषय वर्णन		
अनुयोग श्रुत	६०१ ६ ४	कर्म भा १ गा ७
अनुयोग समास श्रुत	६०१ ६ ४	कर्म भा १ गा. ७
अनुस्रोतचारी भिक्षु	४११ १ ४३७	ठा ५ उ ३ सू ८५३
अनुस्रोतचारी मच्छ	४१० १ ४३६	ठा ५ उ. ३ सू. ४५३
अनृद्धिप्राप्त आर्य के भेद	६५३ ३ २१६	पत्र. प १ सू ३७
अनेकरूपधुना प्रमाद-	५२१ २ २५१	उत्त अ २६ गा २७
प्रतिलेखना		
अनेकवादी	५६१ ३ ६१	ठा ८ उ ३ सू. ६०७
अनेक सिद्ध	८४६ ५ १२०	पत्र प १ सू ७
अनेकान्तवाद पर आठ	५६४ ३ १०२	प्रभी अध्या. १ आ १ सू. ३३टी
दोष और उनका वारण		
अनैकान्तिक हेत्वाभास	७२२ ३ ४१०	ठा. १० उ ३ सू ७४३ टी
अन्तःशल्य मरण	८७६ ५ ३८३	सम १७, प्रव. द्वा. १५७ गा. १००६
अन्तक्रियाएं चार	२५४ १ २३७	ठा ४ उ. १ सू. २३५
अन्तगददसांग सूत्र का	७७६ ४ १६१	
संक्षिप्त विषय वर्णन		
अन्तचरक	३५२ १ ३६७	ठा. ५ उ १ सू. ३६६
अन्तचारी भिक्षु	४११ १ ४३७	ठा ५ उ. ३ सू ४५३
अन्तचारी मच्छ	४१० १ ४३६	ठा ५ उ. ३ सू ४५३
अन्तरद्वीप छप्पन	१०११ ७ २७७	पत्र प १ सू. ३७ टी, प्रव. द्वा. २६२ गा. १४२०-१४२१, जी. प्रति ३ सू. १०८-११२

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अन्तर द्वीपिक	७१	१	५२	टा ३३ १ सू १३०, पत्र प १ सू ३७ जी प्रति ३ सू १००
अन्तर नरकों का	५६०	२	३४१	भ. ग १८ उ ८ सू ४०७
अन्तरात्मा	१२५	१	८६	परमा गा १४
अन्तराय कर्म और	५६०	३	८१	कर्म भा १ गा. ४२, पत्र प २३
उसके भेद				सू २६३-२६४, तत्त्वार्थ, ३०४, ८
अन्तराय कर्मका अनुभाव	५६०	३	८२	पत्र प २३ सू २६२
अन्तराय कर्म के पाँच	३८८	१	४१०	कर्म भा. १ गा ४२, पत्र.
भेद व्याख्या सहित				प २३ सू २६३
अन्तराय कर्म के बन्ध	५६०	३	८३	भ. ग ८ उ ६ सू. ३४१
के कारण				
अन्ताहार	३५६	१	३७१	टा ०४ उ ० १ सू ३६६
अन्तोसल्ल मरण	७६८	४	२६६	भ. ग २ उ १ सू. ६१
अन्त्यकाश्यप (महावीर)	७७०	४	६	जन विद्या बोल्यूम १ न. १
१ अन्न इलायचरक	३५३	१	३६८	टा ४. उ १ सू ३६६
अन्नपुण्य	६२७	३	१७२	टा. ६ उ ३ सू ६७६
अन्यत्व भावना	८१२	४	३६४, ३८२	शा भा १ प्रक ४, भावना, ज्ञान प्रक. २, प्रवद्रा. ६७ गा. ४७३, तत्त्वार्थ अध्या. ८ सू ७.
अन्यलिङ्ग सिद्ध	८४६	५	११६	पत्र. प. १ सू. ७
अपनी ओर से किसी	६८३	७	१३१	गच्छा. अधि २ टी., मूल. अ ६
को भयन देना ही क्या				गा २३ टी.
अभयदान का अर्थ है?				

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अपर सामान्य	५६	१	४१	रत्ना परि ७ सू १६
अपरावर्तमान प्रकृतियों	८०६	४	३५१	कर्म भा ५ गा १८
अपरिग्रह पर ग्यारह गाथाएं	६६४	७	१८१	
अपरिग्रह महाव्रत की	३२१	१	३२६	आवह्य अ ४ पृ ६६८, प्रव. द्वा ७२
पाँच भावनाएं				गा ६४०, सम २५, आचा श्रु २ चू ३ अ २४, ध अधि ३ श्लो. ४५ टी
अपरिणय दोष	६६३	३	२४७	प्रव द्वा ६७ गा ५६८, पिं. नि गा ५२०, ध अधि ३ श्लो २२ टी पृ ४१, पचा १३ गा २६
(आहार का दोष)				
अपरिश्रावीस्नातक निर्ग्रन्थ	३७१	१	३८७	अ ५ सू ४४५, म. श. २५ उ ६ सू ७५ १
अपर्यवसित भुत	८२२	५	८	न सू ४३, विशेष. गा ५३७ से ५४८
अपर्याप्तक जीव	८	१	६	ठा २ उ २ सू ७६
अपवर्तना करण	५६२	३	६५	कम्म गा. २
अपवर्तनीय आयु धिष-	५६०	३	६७	तत्त्वार्थ अध्या. २ सू ५२, ठा २ उ. ३ सू. ८५ टी.
यक शका समाधान				
अपवाद (विशेष नियम)	४०	१	२५	वृ. नि गा ३१६, स्या. का ११ टी
अपवाद सूत्र	७७८	४	२३६	वृ उ १ नि. गा १२२१
अपश्चिम मारणान्तिकी	३१३	१	३१४	उपा अ १ सू. ७, ध अधि २ श्लो ६६ टी पृ. २३१
संलेखना के ५ अतिचार				
अपाय विचय धर्म ध्यान	२२०	१	२०२	ठा. ४ उ. १ सू २४७,
अपायापगमातिशय	१२६ (ख)	१	६६	स्या. का १ टी
१ अपार्श्व स्थिता	७६३	३	४४५	ठा १० उ ३ सू ७५८
२ अपूर्वकरण	७८	१	५६	आव म गा १०६-१०७ टी., विशे गा १२०२ से १२१८, प्रव द्वा. २२४ गा १३०२ टी., कर्म. भा. २ गा २ व्याख्या, आगम.

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अपूर्वकरणगुणस्थान	८४७	५ ८०	कर्म. भा २ गा २ व्याख्या
अपूर्वस्थिति बन्ध	८४७	५ ७६	कर्म. भा २ गा २ व्याख्या
अपौद्गलिक सम्यक्त्व	१०	१ १०	प्रव द्वा १४६ गा ६४२ टी
अपकाय	४६२	२ ६४	ठा ६३ ३सू ४८०, दन अ ४, कर्म भा ४ गा १०
अपारंभा आदि- श्रावकों के विशेषण	८६०	५ १४४	उवस ४१, मयश्रु २अ २सू ३६
अप्रतिपत्ति दोष	५६४	३ १०४	प्रमी अध्या १आ १ सू ३३ टी
अप्रतिपाती अवधिज्ञान	४२८	२ २८	ठा ६३ ३सू ४२६, न सू १५
अप्रतिबद्धयथालन्दिक	५२२	२ २६०	विशे गा ७
अप्रत्याख्यानावरण	१५८	१ ११६	पत्र. प. १४ सू ११८, ठा ४ उ १
कपाय			सू २४६, कर्म. भा १ गा १७-१८
अप्रत्याख्यानिकी क्रिया	२६३	१ २७८	ठा २३ १सू ६०, ठा. ५ उ २ सू. ४१६, पत्र प २२ सू २८४
अप्रथम समय निर्ग्रन्थ	३७०	१ ३८५	ठा ५ उ ३ सू ४४५
अप्रमत्तसयत गुणस्थान	८४७	५ ७६	कर्म भा २ गा २
अप्रमाण दोष	३३०	१ ३३६	ध अधि ३ज्जो २३टी, पृ. ५५, पि नि गा. ६४१-६५४
अप्रमाद प्रतिलेखनाद्यः	४४८	२ ५२	ठा ६ उ. ३ सू ५०३, उत्त अ २६ गा. २५
अप्रशस्तकाय विनय के	५०४	२ २३३	भश २५ उ ७ सू. ८०२, ठा. ७ उ. ३
सात भेद			सू ५८५, उव सू. २०
अप्रशस्त मनविनय के	७६१	४ २७५	उव. सू २०
वारह भेद			

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अप्रशस्त मन विनय के	५००	२	२३१	भ ग २५उ, ७सू. ८०२, ठा ७उ३
सात भेद				सू ५८५, उव सू २०
अप्रशस्त वचन छः	४५६	२	६२	ठा ६उ ३सू ५२७, प्रव. द्वा. २३६
				गा १३११, वृ(जी) उ ६
अप्रशस्त वचन विनय	५०२	२	२३२	भ ग २५उ ७सू ८०२, ठा ७उ३
के सात भेद				सू ५८५
१ अमावृतक	३५६	१	३७३	ठा ५उ १सू ३६६
अवद्विक निहव का मत	५६१	२	३८४	विशे गा २५०६ से २५४६
अब्रह्मचर्य का स्वरूप	४६७	२	१६७	
अब्रह्मचर्य के अठारह भेद	८६३	५	४१०	आव ह अ ४ पृ ६४२
अभगसेन चोर की कथा	६१०	६	३७	वि अ ३
अभयकुमार की कथा	६१५	६	७४	नमू २७गा ७२, आव ह गा. ६४६
पारिणामिकी बुद्धि पर				
अभवसिद्धिक (अभव्यजीव)	८	१	७	ठा २उ. २सू ७६, आप्र गा ६७
अभव्य और मोक्ष	४२४	२	६	आगम
अभव्य जीव ऊपर कहाँ	६८३	७	११३	प्रव द्वा १६० गा १०१६ टी, म
तक उत्पन्न होते हैं?				श १ उ २
अभव्या परिपद (अच्छेरा)	६८१	३	२७६	ठा १०उ ३सू ७७७, प्रव द्वा १३८
				गा. ८८५
अभिगम पाँच	६२४	३	१६७	भ ग २ उ. ३ सू १०६
अभिगम पाँच श्रावक के	३१४	१	३१५	भ. श. २ उ ५ सू १०६
अभिगम रुचि	६६३	३	३६३	उत्त अ २८ गा २३
अभिग्रह पञ्चकवाण	७०५	३	३८१	प्रव द्वा ४ गा. २०२, पचा ५ गा १०,
				आव ह अ ६ नि गा १५६७

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अभिमान के वारह नाम	७६०	४	२७५	भग १२ उ ५ सू ४४६
अभिवर्धित संवत्सर	४००	१	४२६	ठा ५ उ ३ सू ४६०, प्रव. द्वा १४० गा ६०१
अभिवर्धित संवत्सर	४००	१	४२८	ग. ५ उ ३ सू ४६०, प्रव. द्वा १४२ गा ६०१
अभिपैक सभा	३६७	१	४२१	ठा ५ उ ३ सू. ४७२
अभिहृत दोष (आहार का दोष)	८६५	५	१६३	प्रव. द्वा ६७गा ४६६, घ अघि ३ श्लो २० टी पृ ३८, पिं नि गा ६३, पिं विगा ४, पचा, १३गा. ६
अमात्य(मंत्री)की पारि- णामिकी बुद्धि की कथा	६१५	६	८५	त्रिप पर्व ६, नसू २७गा ७०, अत्र. ह गा ६४६
अमात्य पुत्र की पारिणा- मिकी बुद्धि की कथा	६१५	६	६०	नसू ०७गा ७३, उत्त अ १३टी. भाव ह गा ६४०
अमायाविता(सरलता)	७६३	३	४४५	ठा १० उ ३ सू ७५८
अमावस्या वारह	८०१	४	३०३	सूर्य. प्रा १० प्रा. प्रा ६ सू ३८
अमूढदृष्टि दर्शनाचार	५६६	३	८	पत्र. प. १ सू ३७टी. गा १२८, उत्त अ २८ गा ३१
अमोसली प्रतिलेखना	४४८	२	५३	ठा ६ उ. ३ सू ४०३, उत्त अ. २६ गा २५
अयोगी केवली गुणस्थान	८४७	५	८६	कर्म भा. २ गा २ व्याख्या
अयोग्य अठारह पुरुष दीक्षा के	८६१	५	४०६	प्रव. द्वा १०७गा ७६०-७६१, घ. अघि ३ श्लो. ७८ टी.
अयोग्य स्त्रियां वीम दीक्षा के	८६१	५	४०६	प्रव. द्वा. १०८गा. ७६२, घ अघि ३ श्लो ७८टी पृ ३
अरसाहार	३५६	१	३७१	ठा ५ उ. १ सू ३६६

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अरिहन्त	२७४	१	२५२	भ. मगलाचरण
अरिहन्त	४३८	२	४५	ठा. ई. उ. ३ सू. ४६१, पन्न. प. १ सू. ३७
अरिहन्त देख की वाणी के पैतीस अतिशय	६७६	७	७१	सम ३५ टी, रा सु ४ टी, उव सु. १० टी
अरिहन्त देव के चौतीस अतिशय	६७७	७	६८	सम ३४, स श द्वा ६७
अरिहन्त भगवान के अष्ट महाप्रातिहार्य	७८२	४	२६०	सम ३४, म. श. द्वा. ६६
अरिहन्त भगवान के चार मूलातिशय	१२६(ख)	१	६६	स्या का. १ टी.
अरिहन्त भगवान के चार गुण	७८२	४	२६०	सम ३४, स श. द्वा ६६
अरिहन्त भगवान के पाये जाने वाले दोष दो प्रकार से	८८७	५	३६७	स्या का. १ टी.
अरिहन्त भगवान के लोकोत्तम और शरण रूप हैं	१२६(क)	१	६४	प्रव द्वा ४१ गा. ४४१-४४२, स. श द्वा ६६ गा १६१-१६२
अरुपी	६०	१	४२	भाव. ह. अ. ४ पृ. ५६६
अरुपी अजीव के तीस भेद	३३	३	१८१	तत्त्वार्थ. अभ्या. ५ सू. ३
अरुपी अजीव के दस भेद	७५१	३	४३४	आगम., पचीस बोल का थोकडा, पन्न. प. १ सू. ३, उत्त. अ. ३६ गा. ४-६
अर्जुनमाली (निर्जरा भावना)	८१२	४	३८६	पन्न. प. १३, सू. जी. प्रति १ सू. ४
अर्जुनमाली की कथा	७७६	४	१६६	अंत. व ६ अ. ३
अर्थ कथा	६७	१	६६	अंत व ६ अ. ३
	६७	१	६६	ठा ३३. ३ सू. १८६

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अर्थक्रिया छः द्रव्यों की	४२५	२	१८	आगम
अर्थ दण्ड	३६	१	२३	टा २ उ १ सू ६६
अर्थधर पुरुष	८४	१	६२	टा ३ उ ३ सू १६६
अर्थ योनि तीन	१२६	१	६०	टा ३ उ ३ सू १८५ टी
अर्थशास्त्र की कथा	६४६	६	२८०	नं सू २७ गा ६५ टी
औत्पत्तिकी बुद्धि पर				
अर्थश्रुत धर्म	१६	१	१५	टा २ उ १ सू. ७२
अर्थागम	८३	१	६०	अनु सू १४४
अर्थाचार	५६८	३	६	ध अधि १ श्लो १६टी पृ १८
अर्थाधिकार	४२७	२	२६	अनु सू ७०
अर्थाविग्रह	५८	१	४०	न सू. २८, कर्म. भा १ गा ५
अर्थाविग्रह के छः भेद	४२६	२	२८	न सू ३०, टा ६ उ ३ सू ५२५, तत्त्वार्थ अध्या. १
अर्द्धपर्यङ्का	३५८	१	३७२	टा ५ उ १ सू ३६६ टी, टा ५ उ १ सू ६००
अर्द्धपेटा गोचरी	४४६	२	५१	टा ६ सू ५१४, उत्त अ. ३० गा १६, प्रव द्वा ६७ गा ७४५, ध अधि ३ श्लो. २२ टी पृ. ३७
अर्धचक्रवाल श्रेणी	५४४	२	२८४	टा ७ उ ३ सू. ५८१, म. श २५ उ ३ सू ७३०
अर्धनाराच संहनन	४७०	२	७०	पत्र प २३ सू २६३, टा ६ उ ३ सू ४६४, कर्म भा. १ गा. ३८ टा. १० उ ३ सू ७२७
अर्पितानर्पितानुयोग	७१८	३	३६३	टा ५ उ ३ सू ४७२
अलङ्कारिका सभा	३६७	१	४२२	टा. ६ उ. ३ सू ५२७, प्रव द्वा. २३४
अलीक वचन	४६६	२	६२	गा १३२१, घृ. (जी.) उ ६

विषय	बौले भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अलोकाकाश	३४	१ २३	अ. २ उ. १ सू. ७४
अल्पआयु के तीन कारण	१०५	१ ७४	अ. ३ उ. १ सू. १२६, भ. श. ६ उ. ६ सू. २०४
अल्पबहुत्व स्थावर जीवों	६६५	७ २५२	भ. श. १ उ. ३ सू. ६६१
की अवगाहना की			
अल्पबहुत्व के तेतीस बौले	६७६	७ ६६	अ. सू. २०८टी. पृ. २६६
अनन्तरागम सिद्धों के			
अल्पबहुत्व चार संज्ञाओं	१४७	१ १०७	पत्र प. ८ सू. १४८
का चार गतियों में			
अल्पबहुत्व छः काय का	४६४	२ ६५	जी. प्रति. २ सू. ६२, पत्र प. ३ द्वा. ४
अल्पबहुत्व जीव के	८२५	५ १८	जी. प्रति. ४ सू. २२६, प्र. सं. भा. २ पत्र प. ३ द्वा. ३, १५, १६
चौदह भेदों का			
अल्पबहुत्व वेदों का	५६६	३ १०६	जी. प्रति. ३ सू. ६३
अवगाहनानाम निधत्तायु	४७३	२ ८०	भ. श. ६ उ. ५ सू. २६०, अ. ६ उ. ३ सू. ६३६
अवगाहना नारकी	५६०	२ ३१६	जी. प्रति. ३ सू. ८६, प्र. द्वा. १७६
जीवों की			गां १०७७-१०८०
अवग्रह	२००	१ १५८	अ. ४ उ. ४ सू. ३६४
अवग्रह के दो भेद	५८	१ ४०	न. सू. २८, कर्म. भा. १ गा. ४-६
अवग्रह के दो भेद	४२६	२ २८	नं. सू. २८, तत्त्वार्थ. अध्या. १
अवग्रह ज्ञान के बारह भेद	७८७	४ २६६	अ. ० उ. ३ सू. ६१०टी. विशे. गा. ३०७, तत्त्वार्थ अध्या. १ सू. १६
अवग्रह पाँच	३३४	१ ३४४	भ. श. १ उ. २ सू. ६६७, प्र. द्वा. ८ भा. ६ उ. १, आचा. श्रु. २. चू. १ अ. ७ उ. २ सू. १६२

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
अवग्रह प्रतिमापंसात	५१८ २ २४८	आचा धु २३ १अ ७३ सू १६
अवधिज्ञान	३७५ १ ३६१	ठा ५ उ ३ सू ४६३, कर्म भा १ गा ४, न. सू १
अवधिज्ञान और मनः पर्यय ज्ञान में क्या अन्तर है	६१८ ६ १३७	भ १ १३ ३टी, तत्त्वार्थ अध्या. १ सू. २६
अवधिज्ञान के भेद	१३ १ ११	ठा. २३. १ सू ७१
अवधिज्ञान के छः भेद	४२८ २ २७	ठा ६ उ ३ सू ४२६, नं सू ६ सं १६
अवधिज्ञान दर्शन मद	७०३ ३ ३७४	ठा १० उ. ३ सू ७१०, अ ८ ठ ३ सू. ६०६
अवधिज्ञान नारकी जीवों का	५६० २ ३२३	जी प्रति ३म ८८ प्रव. द्वा १७६ गा १०८४
अवधिज्ञान के चलित होने के पाँच बोल	३७७ १ ३६२	ठा० ६ उ० १ सू० ३६४
अवधिज्ञान साकारोपयोग	७८६ ४ २६८	पत्र० प० २६ सू० ३१२
अवधिज्ञान से मनः पर्यय ज्ञान अलग क्यों कहा गया?	६१८ ६ १३७	भ १ १३ ३ टी, तत्त्वार्थ. अध्या. १ सू २६
अवधि ज्ञानावरणीय	३७८ १ ३६४	ठा ५ उ. ३ सू ४६४, कर्म. भा १ गा ६
अवधिज्ञानी जिन	७४ १ ५३	ठा० ३ उ० ४ सू० २२०
अवधिदर्शन	१६६ १ १५८	ठा ४ उ ४ सू ३६४, कर्म. भा. ४ गा. १२
अवधिदर्शन अना-कारोपयोग	७८६ ४ २६६	पत्र० प० २६ सू० ३१२
अवधिमरण	८७६ ५ ३८२	सम. १७, प्रव. द्वा. १४ गा १००६
अवधिलिप्ति	८५४ ६ २६१	प्रव. द्वा. २७० गा. १४६२

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अवन्दनीय साधु पाँच	३४७	१	३५७	आवह अ. ३ निगा ११०७-८ पृ ५१६ प्रवद्वा २गा. १०३-२३
अवयव से नाम	७१६	३	३६८	अनु सू १३०
अवलित प्रतिलेखना	४४८	२	५३	ठा ६ उ. ३ सू ५०३, उत्त अ. २६ गा २५
अवसन्न साधु	३४७	१	३५८	आवह अ. ३ निगा ११०७-८ पृ ५१६ प्रवद्वा. २गा १०६-८
अवसर आदि नौ बातों का जानकार होना साधु के लिये आवश्यक है	६४१	३	२१२	आचा श्रु १ अ २ उ ५ सू ८८
अवसर्पिणी	३३	१	२२	ठा० २३० १ सू ७४
अवसर्पिणी काल के छः आरे	४३०	२	२६	ज वत्त २, ठा ६ उ ३ सू ४६२, भ श ७ उ. ६ सू २८७-२८८
अवस्था दस	६७८	३	२६७	ठा १० उ ३ सू ७७२
अवान्तर सामान्य	५६	१	४१	रत्ना परि. ७ सू १६
अवाय	२००	१	१५६	ठा ४ उ ४ सू ३६४
अविनीत के चौदह लक्षण	८३५	५	३०	उत्त. अ. ११ गा. ६-६
अविरत सम्यग्दृष्टि गुण	८४७	५	७४	कर्म भा २ गा, २
अविरति आश्रव	२८६	१	२६८	ठा ५ उ. २ सू. ४१८, सम. ५
अविरुद्धानुपलब्धि हेतु के सात भेद	५५६	२	२६८	रत्ना. परि ३ सू ६५-१०२
अविरुद्धोपलब्धि रूप हेतु के छः भेद	४६५	२	१०४	रत्ना. परि. ३ सू ६८-८२
अवैदिक दर्शनों की सत्रह बातों से परस्पर तुलना	४६७	२	२२३	

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण-
अव्यक्त दृष्टि नामक	५६१	२ ३५६	दिशे, गा २३५६-२३८८
तीसरे निहव का मत			
अव्यक्त स्वप्न दर्शन	४२१	१ ४४५	भग १६३६ सू ६७७
अव्यवस्था दोष	५६४	३ १०४	प्र मी अध्या, १ आ. १ सु ३३
अव्यवहार राशि	६	१ ८	आगम०
अव्यवहार राशि	४२५	२ २१	आगम०
अव्याप्ति	१२०	१ ८४	न्याय दी प्रका १
अव्याप्ति दोष	७२२	३ ४०८	ठा. १० उ. ३ सू ७४३ टी
अशक्य बोल छः	४६०	२ १०१	ठा ६ उ ३ सु. ४७६
अशवल स्नातक	३७१	१ ३८६	ठा ६ उ ३ सू ४४५, भ, श २५ उ. ६ सू. ७५१

‘अशरण’ परदस गाथापुं६६४ ७ २२२

अशरण भावना	८१२	४ ३५८,	शा भा १ प्रक. २, भावना, ज्ञान. ३७६ प्रक. २, प्रव. द्वा. ६७ गा. ६७२, तत्त्वार्थ अध्या ६ सू ७
अशुचि भावना	८१२	४ ३६५,	शा. भा १ प्रक. ६, भावना, ज्ञान. ३८४ प्रक. २, प्रव. द्वा ६७ गा ६७२, तत्त्वार्थ अध्या ६ सू ७, १ ३४
अशुभ दीर्घायु के ३ कारण	१०६	१ ७४	ठा. ३ उ. १ सू. १२५
अशुभ नाम कर्म चौदह	८३६	५ ३३	पत्र प. २३ सु २६२
प्रकार से भोगा जाता है			
अशुभ भावना पाँच	४०१	१ ४२८	प्रव. द्वा ७३ गा. ६४१, उत्त. अ ६६ गा. २६१-२६४

१ अश्लोक भय

५३३ २ २६८ ठा ७ उ ३ सू ४४६, मम.

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अश्वमित्र नामक चौथा	५६१	२	३२८	विशे गा २३८६-२४२३।
निहव और उसका मत				
अश्वों का दृष्टान्त-ज्ञाता	६००	५	४६६	
धर्म कथाका १७वाँ अध्ययन				
अष्ट महाप्रातिहार्य अरि-	७८२	४	२६०	सम. ३४, स श द्वा ६७
हन्त भगवान् के				
२ अष्टशत सिद्ध आश्वर्य	६८१	३	२६०	ठा १० उ ३ सू ७७७, प्रव. द्वा १३८ गा ८८६
अष्ट स्पर्शी	६१	१	४२	भ.श. १२३.५ सू. ४५०
असईजण गोमणया कर्मादान ८६०	५	१४६	उपा अ १ सू ७	भ.श ८ उ ४ सू ३३०, आवह अ. ६ पृ. ६३८
असंक्लेश दस	७१५	३	३८६	ठा १० उ. ३ सू ७३६
असंख्यातजीविकवनस्पति ७०	१	५१	ठा. ३ उ. १ सू १४१	
असंख्येय के नौ भेद	६१६	३	१४६	अनु सू. १४६ टी
असंज्ञिश्रुत	८२२	५	६	नसू. ४०, विशेषे गा ४०४ से ४२६
असंज्ञी	८	१	६	ठा २ उ २ सू ७६
असंभव	१२०	१	८५	न्याय. दी प्रका. १
असंभव दोष	७२२	३	४०८	न्याय. दी. प्रका १, रत्ना. परि. १ सू २ टी
असंयत	६६	१	५०	भ. श. ६ उ. ३ सू २३७
असंयत पूजा आश्वर्य (अच्छेरा) ६८१	३	२६०	ठा १० उ ३. सू ७७७, प्रव. द्वा १३८ गा. ८८६	
अमंयती अविरति कोपामुक ६८३	७	१३०	म ग ८ उ ६ सू ३३२	
या अपामुक आहार देने से				

विषय

बोल भाग पृष्ठ

प्रमाण

एकान्त पाप होना भगवती

में किम अपेक्षा से कहा है?

असंयम पाँच

२६७ १ २८३ टा. ५ उ. २ सू. ४०६ ४३०

असंवर (आश्रव) दस

७११ ३ ३८६ टा. १० उ. ३ सू. ७०६

१ असंवृत वकुश

३६८ १ ३८३ टा. ५ उ. ३ सू. ४४५

असंस्कृत अ० की १३ गाथाएं १६ ४ ४०६ उक्त अ. ४

असज्जाय चौतीस

६६८ ७ ३५ टा ४ उ २ सू. २८५ टा. १० उ. ३

असज्जाय वतीस

६६८ ७ २८ सू. ७१४, प्रव. द्वा २६८

गा १४६०-१४७१, व्यव. भाष्य

उ. ७ गा. २६६-३१६, आव. ६

अ ४ गा. १३२१ म १३६०

असत्य का स्वरूप

४६७ २ १६६

असत्य भाषा

२६६ १ २४६ पत्र प. ११. सू. १६१

असत्यवचन के चार प्रकार २७० १ २४६ दण अ. ४ सू. ४ टी.

असत्य वचन दस

७०० ३ ३७१ टा १० उ. ३ सू. ७४१, पत्र. प ११

सू. १६५, व. अधि. ३ खो ४१

टी. पृ १२२

असत्यामृषा भाषा

२६६ १ २४६ पत्र. प ११ सू. १६१

असत्यामृषा (व्यवहार)

७८८ ४ २७२ पत्र प ११ सू. १६६

भाषा के बारह भेद

असमाधि के बीस स्थान ६०६ ६ २१ सम. २०, दसा. द १

असत्तावेदनीय

५१ १ ३० पत्र प २३ सू. २६३, कर्म भा १

गा १२ व्याख्या

असिकर्म

७२ १ ५२ जी प्रति. ३३१ सू. १११

तन्दु सू १४-१५ पृ. ४०

विषय	चोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
असिद्ध हेत्वाभास	७२२	३	४०६	ठा १० उ. ३ सू. ७४३ टी.
असुरकुमारोंकेदसअधिपति	७३१	३	४१७	भ. श. ३ उ. ८ सू. १६६
अस्तिकाय के पाँच भेद	२७७	१	२५४	ठा ५ उ ३ सू. ४४१
अस्तिकाय धर्म	७६	१	५४	ठा ३ उ ३ सू १८८
अस्तिकाय धर्म	६६२	३	३६२	ठा १० उ ३ सू. ७६०
अस्तिकाय पाँच	२७६	१	२५३	उत्त अ. २८ गा. ७-१२, डा. ६ उ ३ सू १४१
अस्तित्व गुण	४२५	२	१६	आगम, द्रव्य त अध्या. ११ श्लो २
अस्ति सुख	७६६	३	४५४	ठा १० उ. ३ सू ७३७
अस्वाध्यायआन्तरिक्षदस	६६०	३	३५६	ठा १० उ ३ सू ७१४, प्रव द्वा २६८ गा १४६०-७१, व्यव. भाष्य उ ७
अस्वाध्यायऔदात्तिकदस	६६१	३	३५८	ठा १० उ ३ सू ७१४
अस्वाध्याय का सवैया	*	५	४७५	
अस्वाध्याय चौतीस	६६८	७	३५	ठा. ४ उ २ सू. २८६, ठा. १० उ ३ सू ७१४, प्रव द्वा. २६८ गा. १४६०-१४७१ व्यव भाष्य उ ७ गा २६६-३१८, आव ह अ ४ गा १३२१ से १३६०
अस्वाध्याय वत्तीस	६६८	७	२८	
अहंकार के दस कारण	७०३	३	३७४	ठा १० उ ३ सू. ७१०, ठा ८ उ ३ सू. ६०६
अहिंसा अणुव्रत	३००	१	२८८	आव ह अ. ६ पृ ८१७, ठा ५ उ १ सू ३८६, उपा अ. १ सू ६, ध. अधि. २ श्लो. २६ पृ. ६७
अहिंसा अणुव्रत (स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रत)	३०१	१	२६०	आव ह अ ६ पृ ८१८, उपा अ १ सू. ७, ध अधि. २ श्लो ४३ पृ १००
के पाँच अतिचार				
अहिंसा और कायरता	४६७	२	१६३	

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अहिंसा की व्यावहारिकता	४६७	२	१६५	
अहिंसा (दया) पर	१७	गाथा	६६४	७ १६७
अहिंसा भगवती की उपमा	६२२	३	१५०	प्रश्न. सवरदार १ सू. २२
अहिंसा भगवती के साठ नाम	६२२	३	१५१	प्रश्न. सवरदार १ सू. २१
अहिंसा महाव्रत की पाँच भावनाएँ	३१७	१	३२४	भाव. अ. ४४ दृ. १८, प्रव. द्वा. ७२ गा. ६३६, अम. २५, आचा. भु. २ चु. ३ अ. २४ सू. १७६, ध. अवि. ३ श्री. ४४ टी. पृ. १२५
अहिंसावाद	४६७	२	२१०	
अहोरात्रिकी ग्यारहवीं	७६५	४	२६०	मम. १२, भ. ग. २३ १ सू. ६३ टी.
भिक्षुपट्टिमा				दशों द. ७
अर्हल्लव्धि	६५४	६	२६४	प्रव. द्वा. २७० गा. १८०४

आ

आँवले का दृष्टान्त पारि-	६१५	६	११३	नसू. २७ गा. ७४, भाव. द्वा. गा. ६५१
णामिकी बुद्धि पर				
आउंटण पसारण आगार	५८७	३	४१	भाव. द्वा. ६४ दृ. २०, प्रव. द्वा. ४ गा. २०३
आउर पञ्चकवाण पइण्णा	६८६	३	३५३	द. प.
आकाश	३४	१	२२	ठा. २ उ. १ सू. ७४
आकाश के सत्ताईस नाम	६४८	६	२४१	भ. ग. २० उ. २ सू. ६६४
आकाश द्रव्य	४२४	२	३	आगम, वत्त. अ. ३६ गा. ६
आकाश सम्बन्धी दस	६६०	३	३५६	ठा. १० उ. ३ सू. ७१४, प्रव. द्वा. २६८
अस्वाध्याय				गा. १४५० से ७१५५ भाष्य उ. ७
आकाशास्तिकाय के भेद	२७७	१	२५५	ठा. ५ उ. ३ सू. ४८१
आक्रान्त वायु	४१३	१	४३८	ठा. ५ उ. ३ सू. ४८६

विषय बोल भाग पृष्ठ प्रमाण

आक्षेपणी कथा की व्याख्या	१५४	१	११२	ठा ४ उ. २ सू. २८२, दश. अ. ३
और भेद				निगा १६४-१६५, १६६, १६७
व्याख्यायिका निःसृत असत्य	७००	३	३७२	ठा १० उ. ३ सू. ७४१, पञ्चम ११ सू. १६५, अ. अधि. ३ को ४, १ टी. ६ पृ. १२२
आगति नारकी जीवों की	५६०	२	३२७	प्रव. द्वा १८२, गा. १०६१-६३
आगम	३७६	१	३६६	रत्ना. परि ४ सू. १, २
आगम की व्याख्या, भेद	८३	१	६०	रत्ना. परि ४ सू. १, २, अनुसू. १४४
आगम निराकृत साध्य	५४६	२	२६१	रत्ना. परि ६ सू. ४३
धर्म विशेषण पक्षाभास				
आगम पैंतालीस	६६७	७	२६०	जै अ., अमि रा भा १ प्रस्तावना
आगम प्रमाण	२०२	१	१६१	अ. ग. ५ उ. ४ सू. १६३, अनुसू. १४४
आगम बत्तीस	६६६	७	२१	
आगम व्यवहार	३६३	१	३७५	ठा ५ उ. २ सू. ४२१, अ. श. ८ उ. ८ सू. ३४०
आगम व्यवहार के छः प्रकार	३६३	१	३७५	ठा ५ उ. २ सू. ४२१, अ. श. ८ उ. ८ सू. ३४०
आगामी उत्सर्पिणी के	७८४	४	२६५	सम १५६
बारह चक्रवर्ती				
आगामी उत्सर्पिणी के	५११	२	२३६	ठा. ७ उ. ३ सू. ५५६, सम १५६
सात कुलकर				
आगामी चौबीस तीर्थंकर	६३१	६	१६७	सम १५८, प्रव. द्वा ७ गा. ३०० से
ऐरवत क्षेत्र के				३०२
आगामी चौबीस तीर्थंकर	६३०	६	१६६	सम १५८, प्रव. द्वा ७
भरत क्षेत्र के				गा. २६३-२६४

विषय बोल भाग पृष्ठ प्रमाण

आगार आठ आयबिलके ५८८ ३ ४१ आव. ह. अ. ६ पृ. ८६, प्रव. दा. १
गा. २०४

आगार आठ एकाशनके ५८७ ३ ४१ आव. ह. अ. ६ पृ. ८६, प्रव. दा. १
गा. २०४

आगार छः पोरिसि के ५८३ २ ६७ आव. ह. अ. ६ पृ. ८६, प्रव. दा. १
गा. २०४

आगार छः समकित के ५८५ २ ५८३ आव. ह. अ. ६ पृ. ८६, प्रव. दा. १
गा. २०४

आगार नौ निव्विगई ६२६ ३ १७४ आव. ह. अ. ६ पृ. ८६, प्रव. दा. १
गा. २०४

आगार चारह तथा चार ८०७ ४ ३१६ आव. ह. अ. ६ पृ. ८६, प्रव. दा. १
गा. २०४

आगार सात एगट्टाण ५१७ २ २४७ आव. ह. अ. ६ पृ. ८६, प्रव. दा. १
गा. २०४

(एक स्थान) के
आगार उदी पोरिसि के ५१६ २ २४७ आव. ह. अ. ६ पृ. ८६, प्रव. दा. १
गा. २०४

आचारम्लिक (आयबिलि) ३५५ १ ३७० आव. ह. अ. ६ पृ. ८६, प्रव. दा. १
गा. २०४

आचार पाँच ३२४ १ ३३२ आव. ह. अ. ६ पृ. ८६, प्रव. दा. १
गा. २०४

आचार प्रकल्प के पाँचभेद ३२५ १ ३३३ आव. ह. अ. ६ पृ. ८६, प्रव. दा. १
गा. २०४

आचार विनय के चारभेद ३३६ १ ३१४ आव. ह. अ. ६ पृ. ८६, प्रव. दा. १
गा. २०४

आचार समाधि के चारभेद ५५३ २ २६४ आव. ह. अ. ६ पृ. ८६, प्रव. दा. १
गा. २०४

आचार सम्पदा ५७४ ३ १२२ आव. ह. अ. ६ पृ. ८६, प्रव. दा. १
गा. २०४

आचारांग सूत्र का विषय ७७६ ४ ६७ आव. ह. अ. ६ पृ. ८६, प्रव. दा. १
गा. २०४

आचारांग सूत्र के नवें अंश ८७८ ५ ३८६ आव. ह. अ. ६ पृ. ८६, प्रव. दा. १
गा. २०४

के चौथे उ० की १७ गांथाएँ

विषय **सूत्रबाल भाग पृष्ठ** **प्रमाण**

१. आचारंगसूत्र के नवें अ० के ८७८ ५ ४८४ आवा. शु. १ अ. ६ उ. ४
२. चौथे उ० की १७ मूल गाथाएं
आचारंगसूत्र के नवें अ० के ८७४ ५ ४८२ आवा. शु. १ अ. ६ उ. २
३. दूसरे उ० की सोलह गाथाएं
आचारंगसूत्र के नवें अ० के ८७४ ५ ४८१
४. दूसरे उ० की १६ मूल गाथाएं ४ ६ २० आवा. शु. १ अ. ६ उ. १
५. आचारंगसूत्र के नवें अ० के ८२२ ६ १६६ आवा. शु. १ अ. ६ उ. १
६. के पहले उ० की तेईस गाथाएं ४ ६ २० आवा. शु. १ अ. ६ उ. १
७. आचारंगसूत्र प्रथम श्रुत-१००५ ७ २७१ आवा. शु. १ अ. ६ उ. १
८. स्कन्ध के इकावन उद्देश्य ४ ६ २० आवा. शु. १ अ. ६ उ. १
९. आचार्य ४ ६ २० ७ २५२ आवा. शु. १ अ. ६ उ. १
१०. आचार्य उपाध्याय के गण ३४४ १ ३५५ आवा. शु. १ अ. ६ उ. १
११. में पाँच कलह स्थान
१२. आचार्य उपाध्याय के गण ३४३ १ ३५४ आवा. शु. १ अ. ६ उ. १
१३. से निकलने के पाँच कारण ४ ६ २० आवा. शु. १ अ. ६ उ. १
१४. आचार्य उपाध्याय के ३४ ३४२ १ ३५३ आवा. शु. १ अ. ६ उ. १
१५. विशिष्ट पाँच अतिशय
१६. आचार्य उपाध्याय के सात १४ २ २४२ आवा. शु. १ अ. ६ उ. १
१७. संग्रह स्थान ४ ६ २० आवा. शु. १ अ. ६ उ. १
१८. आचार्य की ऋद्धि के ३ भेद १०२ १ ३७१ आवा. शु. १ अ. ६ उ. १
१९. आचार्य के छः कृत्य ४५१ २ ५५ आवा. शु. १ अ. ६ उ. १
२०. आचार्य के छत्तीस गुण ६८२ ७ ६४ आवा. शु. १ अ. ६ उ. १
२१. आचार्य के तीन भेद १०३ १ ७२ आवा. शु. १ अ. ६ उ. १
२२. आचार्य के पाँच प्रकार ३४१ १ ३५२ आवा. शु. १ अ. ६ उ. १
२३. आचार्य पदवी ५१३ २ २३६ आवा. शु. १ अ. ६ उ. १

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
आच्छेद्य दोष	८६५	५	१६३	प्रव द्वा ६७ गा ५६६, प. अ. वि. ३ श्लो. ३२ टी पृ ३८ पि नि गा. ६३, पि पि गा ४, पचा. १३ गा ६
आजीव दोष	८६६	५	१६४	प्रव द्वा ६७ गा ५६७, प. अ. वि. ३ श्लो. ३२ टी पृ ४०, पि नि गा ४०८ पि पि गा ४८, पचा १३ गा १८
आजीवक के १२ श्रमणापा ०७६३	४	२७६		अ. ग. उ. ३ स ३३०
आजीविक श्रमण	३७२	१	३८७	प्रव द्वा ६४ गा १०३१
आज्ञापनिकी या आनायनी २६५	१	२८०		ठा २ उ १ सू ६०, ठा ४ उ २ स ४१६, आव ह अ ४ पृ ६१३
(आणवणिया) क्रिया				उत्त. अ २८ गा २०
आज्ञा रुचि	६६३	३	३६३	ठा ४ उ १ सू ६११
आज्ञाविजय धर्मध्यान	२२०	१	२०१	ठा ४ उ १ सू ४३१, अ. ग. उ. ८
आज्ञा व्यवहार	३६३	१	३७६	ठा ४ उ १ सू ४३१, अ. ग. उ. ८ स ३४०
आठ अक्रियावादी	५६१	३	६०	ठा. ८ उ ३ सू ६०७
आठ अनन्त	६२०	३	१४७	अनु सू १४६
आठ आगार आयम्बित्त के ५८८	३-४१			आव ह अ. ६ पृ ८६, प्रव द्वा. ४ गा. ००४
आठ आगार एकाशन के ५८७	३	४०		आव. ह अ. ६ पृ ८६ प्रव द्वा ४ गा ३०३ अ. ग. १२ उ. १० सू ४६७
आठ आत्मा	५६३	३	६५	ठा. ८ उ ३ सू ६११
आठ आयुर्वेद	६००	३	११३	आवा अ. ६ उ. ४ सू १६४
आठ उपदेश योग्य बातें	५८५	३	३६	प्रग. मेवर द्वा १ सू. ३०
आठ उपमा अहिंसा की	६२२	३	१५०	नं पीठिका गा. ४-१७
आठ उपमा सच की	६२३	३	१५६	कम्म. गा. २
आठ करण	५६२	३	६४	

विषय	बोल भाग सूत्र	प्रमाण
आठ कर्म	५६० ३ ४३	विशे गा १६०६-१६४४, तत्त्वार्थ अध्या ८, कर्म भा. १, मं श ८ उ ६ सू ३५१, भंश १ उ ४, उत्त अ ३३, पत्र प २३, द्रव्यालो. स १०
आठ कर्मों का ज्ञय करने	६८३ ७ ११७	उव सू ४१
वाले महात्मा यहाँ की स्थिति		
पूरी करके कहाँ उत्पन्न होते हैं?		
आठ कर्मों की स्थिति	५६० ३ ४३-६० पत्र प २३ सू २६४, तत्त्वार्थ,	अध्या ६ सू १५ मं २१, उत्त अ. ३३
आठ कर्मों के अलुभाव	५६० ३ ४३-६० पत्र प २३ सू २६२	
आठ कर्मों के बन्ध के कारण	५६० ३ ४३-६० मंश ०८ उ ०६ सू ३५१	
आठ कर्मों के भेद प्रभेद	५६० ३ ४३-६० पत्र ०१ २३ सू ३६३, उत्त अ. ३३	कर्म भा १, तत्त्वार्थ अध्या ६ सू ५-१४
आठ कारण झूठ बोलने के	५८२ ३ ३७	साधु प्र महाव्रत २
आठ कृष्ण राज्ञि	६१६ ३ १३३	ठा ८ उ ३ सू ६२३, मंश. ६ उ सू २४२, प्रव द्वा २६७ गा १४४१ मे १४४४
आठ गण	५६६ ३ १०८	पिगल, कृ. . . .
*आठ गणधर पार्श्वनाथ के	५६५ ३ ३	ठा ८ उ ३ सू ६१७, सम. ८

१. ठाणाग सूत्र एव समवायाग सूत्र के मूल पाठ में भगवान् पार्श्वनाथ के आठ गणधर वतलाये हैं किन्तु हरिमंथीयावरयक गाथा २६६ से २६६ में, प्रवचन, सारोद्धार द्वार १५ में तथा स्तरिमय ठाणा वृत्ति द्वार १११ में भगवान् पार्श्वनाथ के दस गणधर होना वतलाया है। ठाणाग और समवायाग के टीकाकार श्री अभयदेवमूरि ने भी टीका में दस गणधर का होना माना है। मूल पाठ में दी हुई आठ की संख्या का सामंजस्य करने के लिये उन्होंने टीका में यह उजागर किया है कि अन्य आयु होने के कारण सूत्रकार ने दो गणधरों की विवक्षा न कर आठ ही गणधर वतलाये हैं।

विषय

खोल भाग पृष्ठ

प्रमाण

आठ गणि सम्पदा	५७४ ३ ११	दशा. द. ४, ठा. ८३ सू. ६०१
आठ गुण आलोचना करने	५७६ ३ १६	ठा. ८८. ३ सू. ६०४, म. रा. २५
वाले के		उ. ७ सू. ७६६
आठ गुण आलोचना देने	५७५ ३ १५	ठा. ८३ सू. ६०४, म. रा. २५
वाले साधु के		ठा. ८३ सू. ७६६, ठा. ८३
आठ गुण शिक्षा शील के	५८४ ३ १३८	उत्त. म. ११ गा. १४५
आठ गुण सिद्ध भगवान् के	५६७ ३ ४१	अनु. सू. १३६, पृ. १४, सु. ३१
		प्रव. द्वा. २६७ गा. १४६, ३-६४
आठ गुण साधु और सोने के	५७१ ३ ६	पचा. १४ गा. ३२-३४
आठ ज्ञानाचार	५६८ ३ ५	ध. अधि. ११ लो. १६ टी. १८
आठ तरह के संकेत	५८६ ३ ४२	आव. ह. म. ६ नि. गा. ३४७, ८
पञ्चकवाण में		प्रव. द्वा. ४ गा. ३०१
आठ तुण वनस्पतिकाय	६१२ ३ १२६	ठा. ८३ सू. ६१३
आठ त्रस	६१० ३ १२७	दशा. म. ४ गा. ८३ सू. ६१६
आठ दर्शन	५६८ ३ १०६	ठा. ८३ सू. ६१८
आठ दर्शनाचार	५६६ ३ ६	पत्र. प. १ सू. ३७ गा. १२८, उत्त.
		म. २८ गा. ३१
आठ दोष अने कान्तवाद पर	५६४ ३ १०२	प्र. मी. अध्या. १ भा. १ सू. ३३
आठ दोष चित्त के	६०३ ३ १२०	किं भा. २ श्लो. १६१-१६१
आठ दोष साधु को वर्जनीय	५८३ ३ ३८	उत्त. म. २४ गा. ६
आठ नाम ईषत्प्रागभारा के	६०६ ३ १२६	पत्र. प. २ सू. ४४, ठा. ८३ सू. ६४४
आठ पुद्गल परावर्तन	६१८ ३ १३६	कर्म. भा. १ गा. ८६-८८
आठ पृथिव्या	६०८ ३ १२६	ठा. ८३ सू. ६४५
आठ प्रकार से वेद का	५६६ ३ १०६	जी. प्रति. २ सू. ६२
अन्य बहुत्व		

विषय बोले भाग पृष्ठ क्रमांक

१ आठ प्रभावक	५७२	३	१०	अव. द्वा १४८ गा. ६३४।६
आठ प्रमाद	५८०	३	३६	अव. द्वा २०७ गा १२०७।८
आठ प्रवचन सात	५७०	३	८	उत्त अ. २४. गा १, सम. ८
आठ प्रायश्चित्त	५८१	३	३७	ठा. ८ उ. ३ सू. ३०६
आठ बातें छद्मस्थ नहीं देख सकती	६०२	३	१२०	ठा. ८ उ. ३ सू. ६१०
आठ भेद गन्धर्व के	६१३	३	१२६	उव सू २४, पत्र. पं. २१ सू. ४७
आठ भेद प्रतिक्रमण के	५७६	३	२२१	आव ह अ ४ निगा १२३३४२
आठ मद	७०३	३	३७४	ठा. ८ उ. ३ सू. ६०६, ठा. १०
				उ ३ सू ७१०
आठ महाग्रह	६०४	३	१२१	ठा. ८ उ. ३ सू. ६१२
आठ महानिमित्त	६०५	३	१२१	ठा. ८ उ. ३ सू. ६०८, प्रव. द्वा २४७
				गा १४०६ सू १४०६
आठ मांगलिक पदार्थ	५६४	३	३	उव. सू. ४ टी. रा सू. १४
आठ योगांग	६०१	३	११४	यो., रा यो.
आठ योनि संग्रह	६१०	३	१२७	दश अ. ४, ठा. ८ उ. ३ सू. ६६६
आठ राजा भगवान् महा-वीर के पास दीक्षित हुए	५६६	३	३	ठा. ८ उ. ३ सू. ६२१
आठ रुचक प्रदेश	६०७	३	१२५	आवाश्रु १ म. १ उ १ टी. निगा ४२,
				आगम, भ श. ८ उ. ६ सू. ३४०
				टी., ठा. ८ उ. ३ सू. ६२४
आठ लोकस्थिति	६२१	३	१४८	भ श. १ उ. ६, ठा. ८ उ. ३ सू. ६००
आठ लौकान्तिक देव	६१५	३	१३२	भ. ग ६ उ ६ सू ४४३, ठा. ८
और उनके विमान				उ. ३ सू. ६२३
आठ वचन विभक्तियाँ	५६५	३	१०५	ठा. ८ उ. ३ सू. ६०६, अमु. सू. १२८
				सि. फारक प्रकरण

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
आठ वर्गणा	६१७	३ १३४	शि. गा. ६३१ से ६३७
आठ व्यन्तर देव	६१४	३ १३०	आ. उ. ३ सू. ६१४, जी.
			प्रति २ सू. १२१, पत्र प. २
			सू. ४७-४८, पत्र प. ४ सू. १००
आठ संख्या प्रमाण	६१६	३ १४१	अनु. सू. १४६
आठ संयम	५७३	३ ११	तत्त्वार्थ अध्या. ६ सू. ६१
आठ संपदा	५७४	३ ११	दशा. ६४, आ. उ. ३ सू. ६०१
आठ मूक्षम	६११	३ १२८	आ. उ. ३ सू. ६१५, दशा. अ. गा. १४
आठ स्थान एकलविहार	५८६	३ ३६	आ. उ. ३ सू. ६६४
प्रतिमा के			
आठ स्थान माया की	५७७	३ १६	आ. उ. ३ सू. ६६७
आलोच्यणा करने के			
आठ स्थान माया की	५७८	३ १८	आ. उ. ३ सू. ६६७
आलोच्यणान करने के			
आठ स्थानों की प्राप्ति	६०६	३ १२४	आ. उ. ३ सू. ६४६
और रक्षा केलिये प्रयत्न			
करना चाहिये			
आठ स्पर्श	५६७	३ १०८	आ. उ. ३ सू. ६६८, पत्र प. २ सू. २६
आढ्यत्व सुख	७६६	३ ४५४	आ. १० उ. ३ सू. ७३७
आगत और प्रागत	८०८	४ ३२३	पत्र प. २ सू. ६३
देवलोक का वर्णन			
आतापक	३५६	१ ३७३	आ. ५ उ. १ सू. ३६६
आत्मकृत दोष	७२३	३ ४१२	आ. १० उ. ३ सू. ७४३
आत्मचिन्तन पर चार	६६४	७ २४८	
गाथाएं			

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
आत्मदमन के विषय में	६६४	७ २०७	
सोलह गाथाएं			
आत्मभूत लक्षण	६२	१ ४३	न्याय. टी. प्रका. १
आत्म रक्षक देव	७२६	३ ४१६	तत्त्वार्थ अध्या. ४ सू. ४
आत्मवादी	१६२	१ १४६	आचा शु. १ अ. १३ १ सू. ६
आत्मसंवेदनीय उपसर्ग	२४३	१ २२०	ठा. ४३ ४ सू. ३६१, सूय. शु. १ अ. ३
के चार प्रकार			उ. १ नि. गा. ४८
आत्मा	१	१ २	ठा. १ उ. १ सू. २
आत्मांगुल की व्याख्या	११८	१ ८३	अनु. सू. १३३
आत्मा के विषय में गण-	७७५	४ २४	विशे. गा. १६४६ से १६०६
धर इन्द्रभूति की शका			
और उसका समाधान			
आत्मा के आठ भेद	५६३	३ ६५	भ. श. १२ उ. १० सू. ४६७
आत्मा के आठ भेदों का	५६३	३ ६५	भ. श. १२ उ. १० सू. ४६७
पारस्परिक सम्बन्ध			
१ आत्मागम	८३	१ ६१	अनु. सू. १४४
आत्मा तीन	१२५	१ ८६	पद्मा. गा. १३-१६
आत्मा पर छः गाथाएं	६६४	७ १५६	
आत्यन्तिक मरण	८७६	५ ३८३	सम. १७, प्रव. द्वा. १६७ गा. १००६
आदानपद नाम	७१६	३ ३६६	अनु. सू. १३०
आदान भंडमात्र निक्षे-	३२३	१ ३३१	सम. ६, ठा. ६ उ. ३ सू. ४४७, ध.
पणा समिति			अधि. ३ श्लो. ४७ टी. पृ. १३०, उत्त. अ. २४ गा. २

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
१ आदान भय	५३३	२	२६८	ठा. ७३ ३. सू. ४४६, मम ७
आदित्यप्रमाणसंवत्सर	४००	१	४२६	ठा ५३ ३सू. ४६०, प्रव द्वा १४२ गा ६००
आदित्य संवत्सर	४००	१	४२७	ठा ५३ ३सू. ४६०, प्रव द्वा १४२ गा. ६०१
आधा कर्म	७६०	३	४४३	आचा अ २३ १नि. गा. १८३
आधा कर्म दोष	८६५	५	१६१	प्रव द्वा. ६७गा ५६५, अग्रि ३ श्लो २२टी. पु. ३८, पि नि गा ६२, पि वि गा. ३, पंचा १३ गा ५
आधार	४८	१	२८	विशे गा. १४०६
आधिकरणिकी क्रिया	२६२	१	२७७	ठा २ ३ १ सू. ६०, ठा ५ ३ २ सू. ४१६, पन्न. प २२ सू. २७६
आधिगमिक सम्यक्त्व	१०	१	१०	ठा २३ १सू. ७०, पन्न. प १ सू ३७, तत्त्वार्थ अध्या. १ सू. ३
आधेय	४८	१	२८	विशे गा १४०६
आध्यात्मिक विकासक्रम	८४७	५	६३	आ वि.
तथा दूसरे दर्शन				
आनन्द श्रावक	६८५	३	२६५	उपा अ. १
आनन्द श्रावक की बार्डिस	६८५	३	२६७	उपा अ १ सू ७
बोल्लोकीमर्यादासातवेंव्रतमें				
आनन्दश्रावककेअधिकार	६८५	३	४५७	उपा (अ), उपा (ह.)
में आये हुए 'चेइय' शब्द				
पर टिप्पण				
आनन्दश्रावककेअधिकार	४५५	२	५८	उपा अ. १ सू. ८
में सम्यक्त्व के छः आगार				

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
आनन्द श्रावक के अधिकार	६८५	३	३०३	उपा. अ. १ सू. ८
में सम्यक्त्व के छः आगार				
आनन्द श्रावक के वारह	६८५	३	२६५	उपा. अ. १ सू. ६-७
व्रत और अतिचार				
आनुगमिक व्यवसाय	८५	१	६२	ठा. ३ उ. ३ सू. १८५
आनुपूर्वी	४२७	२	२६	अनु. सू. ७०
आनुपूर्वी	*	६	क	
आनुपूर्वी कंठस्थ गुणने की	*	६	ग	
सरल विधि				
आनुपूर्वी दस	७१७	३	३६०	अनु. सू. ७१-११६
आपृच्छना समाचारी	६६४	३	२५०	भ.श. २ उ. ७ सू. ८०१, ठा. १ उ. ३ सू. ७४६, उत्त. अ. २६ गा. २, प्रव. द्वा. १०१ गा. ७६०
आप्त की व्याख्या	३७६	१	३६६	रत्ना. परि. ४ सू. ४
आभिग्रहिक मिथ्यात्व	२८८	१	२६७	ध. अधि. २ श्लो. २२ टी. पृ. ३६, कर्म. भा. ४ गा. ६१
आभिनिबोधिक ज्ञान	१५	१	१२	पत्र. प. २६ सू. ३१२, ठा. २ उ. १ सू. ७१
आभिनिबोधिक ज्ञान	३७५	१	३६०	ठा. ४ उ. ३ सू. ४६३, न. सू. १, कर्म. भा. १ गा. ४
आभिनिबोधिक ज्ञान के	६५०	६	२८३	सम. २८, कर्म. भा. १ गा. ४, ५
अठाईस भेद				
आभिनिबोधिक साकारोप	७८६	४	२६७	पत्र. प. २६ सू. ३१२
आभिनिवेशिक मिथ्यात्व	२८८	१	२६७	कर्म. भा. ४ गा. ६१, ध. अधि. २ श्लो. २२ टी. पृ. ३६

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
१ आभियोगिक देव	७२६	३ ४१६	तत्त्वार्थ अध्या ४ सू. ४
आभियोगिकी भावना	१४१	१ १०४	उत्त अ ३६ गा २६२
आभियोगिकी भावना के पाँच प्रकार	४०४	१ ४३१	उत्त अ. ३६ गा २६२, प्रव. द्वा. ७३ गा. ६४४
आभोग निवर्तित क्रोध	१६४	१ १२३	अ ४ उ १ सू. २४६
२ आभोग वकुश	३६८	१ ३८३	ठा ४ उ ३ सू. ४४४
आभ्यन्तर तप के छः भेद	४७८	२ ८६	उत्तमू २०, उत्त अ ३० गा ३०, प्रव द्वा. ६ गा. २७१, ठा ६ उ ३ सू. ५११
आभ्यन्तरपरिग्रह के १४ भेद	८४०	५ ३३	वृ उ. १ गा. ८३१
आमशौषधि लब्धि	६५४	६ २६०	प्रव द्वा २७० गा. १४६२
३ आम्नायार्थवाचकाचार्य	३४१	१ ३५२	ध.अधि ३९लो ४६टी पृ. १२८
आयंविल के आठ आगार	५८८	३ ४१	भाव. ह. अ ६ पृ. ८४६, प्रव द्वा ४ गा २०४
आयंविल पञ्चखाण	७०५	३ ३७६	प्रव द्वा. ४ गा २०४, भाव ह अ. ६ पृ ८४६, पचा ५ गा. ६
आयंविल वर्द्धमान तप	६८६	३ ३४६	अत. व ८ अ १०
४ आयत संस्थान	४६६	२ ६६	भ स २४ उ ३ सू. ७०४, पत्र. प. १ सू. ४
आयुर्कर्म और उसके भेद	५६०	३ ६५	कर्म. भा १ गा. २३, पत्र १ २३ सू. २६३, तत्त्वार्थ अध्या ८ सू ११
आयुर्कर्म का ४ अनुभाव	५६०	३ ६५	पत्र. १ २३ सू. २६३
आयुर्कर्म के बंध के कारण	५६०	३ ६५	भ. ग. = उ. ६ सू. ३४१

१ दास क समान सेवा करने वाले देव । २ शरीर और उपकरण की विभूषा करने वाला मातु । ३ उत्तम और अपवाद रूप आम्नाय का अर्थ करने वाला आचार्य । ४ दंडे सरीला लम्बा आकार

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
आयुकी व्याख्या और भेद ३०	१	२१	तत्त्वार्थ अध्या. २ सू. ५२, भ. श २० उ. १० सू. ६८५
आयु के दो प्रकार	५६०	३ ६६	तत्त्वार्थ (सु) अध्या २ सू ५२,
आयु परिणाम नौ	६३६	३ २०४	ठा ६ उ ३ सू. ६८६
आयु बन्ध छः प्रकार का	४७३	२ ७६	भ श ६ उ ८ सू. २५०, ठा. ६ उ. ३ सू ५३६
आयु बन्ध नैरयिकों का	५६०	२ ३४१	भ श ३० उ. १ सू. ८२५
आयु भेद सात	५३१	२ २६६	ठा. ७ उ ३ सू ५६१
आयुर्वेद आठ	६००	३ ११३	ठा ८ उ ३ सू. ६११
आरंभ	४६	१ २६	ठा. २ उ० १ सू० ६४
आरंभ	६४	१ ६७	ठा. ३ उ० १ सू० १२४
आरंभ परिग्रह को छोड़ने	४६	१ २६	ठा. २ उ १ सू. ६५
पर ११ बोलों की प्राप्ति			
आरंभ परिग्रह छोड़े बिना ७७३	४	१७	ठा २ उ. १ सू ६४
११ बातों की प्राप्ति नहीं होती			
आरण और अच्युत	८०८	४ ३२३	पत्र० प० २ सू० ५३
देवलोक का वर्णन			
आरभटा प्रतिलेखना	४४६	२ ५३	ठा. ६ उ. ३ सू. ५०३, उक्त. अ. २६ गा. २६
आरम्भिकी क्रिया	२६३	१ २७८	ठा. २ उ. १ सू. ६०, ठा. ५ उ २ सू. ४१६, पत्र प २२ सू २८४
आराधना तीन	८६	१ ६२	ठा ३ उ ४ सू. १६५
आरे छः अवसर्पिणी	४३०	२ २६	जं. वक्त. २ सू १६-३६, ठा ६ उ ३ सू. ४६२, भ. श. ७ उ. ६
काल के			सू २८७-२८८

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
------	---------------	--------

भारे छः उत्सर्पिणी काल के	४३१ २ ३५	जवज २सू. ३७-४०, ठा १३३ सू. ४६२, विशेष गा २७०८-१०
आरोग्य सुख	७६६ ३ ४५३	ठा. १० उ. ३ सू० ७३७
आरोपणा प्रायश्चित्त	३२५ १ ३३४	ठा ६ उ २ सू ४३३
आरोपणा के पाँच भेद	३२६ १ ३३४	ठा ६ उ. ३ सू. ४३३, सम २८
आरोपणा प्रायश्चित्त २४५ (ख)	१ २२३	ठा ४ उ १ सू. २६३
आर्जव	३५० १ ३६५	ठा ५ उ १ सू. ३६६, प्रव द्वा ६६ गा ६६४, ध. अधि ३ ओ. ४६ टी पृ १२७
आर्जव	६६१ ३ २३३	मव गा २३, सम. १०, गा. भा. १ प्रक. ८
आर्त्तध्यान	२१५ १ १६४	ठा ४ उ. १ सू २४७, सम ४, दग अ १ नि. गा ४८ टी
आर्त्तध्यान के चार प्रकार	२१६ १ १६६	ठा ६ उ १ सू २४७, मानह. अ ४ ध्यानशतक गा ६-६ पृ ४८४
आर्त्तध्यान के चार लिंग	२१७ १ १६८	ठा ४ उ. १ सू. २४७, भग २६ उ ७ सू ८०३, भाव. ह. अ. ४ ध्यानशतक गा. १४ पृ. ६८७
आर्य (ऋद्धिप्राप्त) के छः भेद	४३८ २ ४२	ठा ६ उ ३ सू ४६१, पत्र. प. १ सू ३७ पत्र प १ सू ३७
आर्य (अऋद्धिप्राप्त) के छः भेद	६५३ ३ २१६	पृ उ. १ नि गा ३२६३
आर्य के बारह भेद	५८५ ४ २६६	प्रतद्वा २७४ गा. १४८७-१४८८
आर्य क्षेत्र साढ़े पचीस	६४२ ६ २२३	पत्र प १ सू. ३७, पृ. उ १ नि. गा. ३२६३
आर्यगङ्ग निहव का मत	५६१ २ ३६६	विशे. गा. २४२६-२४४०

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
आर्यापाद आचार्य की कथा ८२१	४	४६६	नवपद गा १८टी. (सम्यक्त्वद्वार)	
सम्यक्त्व के स्थिरीकरण				
नामक आचार के लिये				
आलोचना करने योग्य ६७०	३	२५८	म श २५ उ ७ सू. ७६६,	
साधु के दस गुण			ठा १० उ ३ सू. ७३३	
आलोचना के दस दोष ६७२	३	२५६	म. श २५ उ. ७ सू. ७६६,	
			ठा १० उ ३ सू. ७३३	
आलोचना देने योग्य ६७१	३	२५६	म. श. २५ उ. ७ सू. ७६६,	
साधु के दस गुण			ठा १० उ. ३ सू. ७३३	
आलोचना पर ८ गाथाएं ६६४	७	२४६		
आलोचना करने योग्य ६७०	३	२५८	म श २५ उ ७ सू. ७६६,	
साधु के दस गुण			ठा १० उ ३ सू. ७३३	
आलोचना करने वाले के ५७६	३	१६	ठा ८ उ ३ सू. ६०४, म. श २५	
आठ गुण			उ. ७ सू. ७६६	
आलोचना देने वाले साधु ५७५	३	१५	ठा ८ उ. ३ सू. ६०४, म. श. २५	
के आठ गुण			उ ७ सू. ७६६	
आलोचना माया की करने ५७७	३	१६	ठा ८ उ ३ सू. ६०७	
के आठ स्थान				
आलोचना माया की न ५७८	३	१८	ठा ८ उ ३ सू. ६०७	
करने के आठ स्थान				
आवलिका	५५१	२	२६२	जं. वक्त २ सू. १८
आवश्यक के छः भेद	४७६	२	६०	आव. ह.
आवश्यक के छः भेदों का	४७६	२	६३	आव. ह.
पारस्परिक सम्बन्ध				

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
आवश्यक के दस नाम	६८७ ३ ३५०	विशे.गा.८७२-८७६.अनुसू २८
आवश्यक(आवस्सिया)६६४	३ २५०	भ.श.२५३ उ.सू.८०१,ठा.१०३३
समाचारी		सू.७४६,उत्त.अ.२६ गा.२,प्रव. द्वा.१०१ गा.७६०
आविर्भाव	४४ १ २७	न्याय.को.
आवीचि मरण	८७६ ५ ३८२	सम.१७,प्रव.द्वा.१४७ गा.१००६
आशंसा प्रयोग दस	६६७ ३ २५३	ठा.१० उ.३ सू.७४६
आशातनाएं तेतीस	६७५ ७ ६१	सम.३३,दशा.द.३,आव.ह.अ.४ पृ.७२४
आशीविष लब्धि	६५४ ६ २६३	प्रव.द्वा.२७० गा.१४६३
आश्चर्य (अच्छेरा) दस	६८१ ३ २७६	ठा.१० उ.३. सू.७७७, प्रव. द्वा.१३८ गा.८८४-८८६
आभव और संवर	४६७ २ २०५	
आश्रव के वयालीस भेद	६६२ ७ १४६	नव.गा.१६
आश्रव के बीस भेद	६०७ ६ २५	सम.६,प्रध. नि. गा.२ पृ.३, ठा.५ उ.२ सू.४१८,४२७, ठा.१० उ.३ सू.७०६
आश्रव, क्रिया, वेदना	८६८ ५ १६८	भ.श.१६ उ.४ सू.६४८
और निर्जरा के १६ भांगे		
आश्रव तत्त्व के बीस और ६३३ ३ १८३		नव.गा.१६,सम.४,प्रध. नि. गा.२ पृ.३ टी.,ठा.५ उ.२ सू.४१८,४२७ ठा.१० उ.३ सू.७०६
वयालीस भेद		
आश्रव द्वार प्रतिक्रमण	३२६ १ ३३८	ठा.५ उ.३ सू.४६७, आव. ह.अ.४ गा.१२४०-१२४१
आश्रव पाँच	२८६ १ २६८	ठा.५ उ.२ सू.४१८, सम.६

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
आश्रव भावना	८१२	४ ३६७	शा. भा. १ प्रक. ७, भावना, ज्ञान- प्रक. २, प्रव. ० द्वा. ६७ गा. ६७२, तत्त्वार्थ. अध्या. ६ सू. ७ यो, रा. यो.
आसन और उसके प्रकार	६०१	३ ११५	हठ, पी. प.,
आसन प्राणायाम के	५५६	२ ३०४	उत्त. प्र. ३६ गा. २६४
आसुरी भावना	१४१	१ १०४	उत्त. प्र. ३६ गा. २६४, प्रव. द्वा. ७३ गा. ६४५
आसुरी भावना के ५ भेद	४०५	१ ४३१	ध. अधि. २ श्लो. २२टी पृ ४३
आस्तिक्य	२८३	१ २६४	ठा. २ उ. २ सू. ७६
आहारक	८	१ ७	पत्र. प. २८ व. २
आहारक अनाहारक के तेरह द्वार	८१७	४ ३६८	भ. श. २५ उ. १ सू. ७१६, द्रव्य. लो. स. ३ पृ ३५८, कर्म. भा. ४ गा. २४
आहारक काययोग	५४७	२ २८७	कर्म. भा. ४ गा. १४
आहारक मार्गणा के भेद	८४६	५ ६३	भ. श. २५ उ. १ सू. ७१६, द्रव्य. लो. स. ३ पृ ३५८, कर्म. भा. ४ गा. २४
आहारक मिश्र काययोग	५४७	२ २८७	प्रव. द्वा. २७० गा. १४६४
आहारक लब्धि	६५४	६ २६६	पत्र. प. २१ सू. २६७, ठा. ५
आहारक शरीर	३८६	१ ४१४	उ. १ सू. ३६५, कर्म. भा. १ गा. २३
आहारक शरीर बन्धन नाम कर्म	३६०	१ ४१६	कर्म. भा. १ गा. ३५, प्रव. द्वा. २१६ गा. १२७२
आहारक समुद्घात	५४८	२ २८६	पत्र. प. २६ सू. ३३१, ठा. ७
			उ. ३ सू. ५८६, प्रव. द्वा. २३१ गा. १३११, द्रव्य लो. स. ३ पृ. १२४

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
आहार की गवेषणा के सोलह उत्पादना दोष	८६६	५ १६४	प्रव द्वा ६७गा. ५६७-५६८, ध. मधि. २ श्लो २२टी. पृ. ४०, पि नि. गा. ४०८-४०९, पि. वि. गा. ५८-५९, पंचा १३गा १८-१९
आहार की गवेषणा के सोलह उद्गम दोष	८६५	५ १६१	प्रव. द्वा. ६७गा. ५६५-५६६, ध. मधि ३श्लो २२टी पृ. ३८, पिं नि. गा. ६२-६३, पि वि गा. ३-४, पंचा. १३ गा. ५-६
आहार के छः कारण	३३०	१ ३४०	उत्त म. २६गा. ३०, ध मधि. ३ श्लो. २३टी. पृ. ५६, पिं. नि. गा ६६२
आहार करने के (साधु के) छः कारण	४८४	२ ६८	पिं. नि. गा. ६६२, उत्त, म. २६ गा. ३२
आहार के ४७ दोष	१०००	७ २६५	पिं. नि. गा. ६६६
आहार तिर्यंच का	२६१	१ २४५	ठा. ४ उ. ३ सू ३४०
आहार त्यागने के (साधु के) छः कारण	४८५	२ ६९	पि. नि गा ६६६, उत्त. म २६ गा ३४
आहार देवता का	२६३	१ २४६	ठा० ४ उ० ३ सू ३४०
आहार नरक का	२६०	१ २४४	ठा ४ उ ३ सू ३४०
आहार नारकी जीवों का	५६०	२ ३४०	म श १४ उ ६ सू ५१६
आहार पर्याप्ति	४७२	२ ७७	पञ्चप १सू १२टी, म. ग. ३उ १ सू १३०, प्रव. द्वा. २३२ गा १३१७, कर्म भा. १ गा ४६
आहार मनुष्य का	२६२	१ २४५	ठा. ४ उ. ३ सू. ३४०
आहार संज्ञा	१४२	१ १०५	ठा. ४ उ. ४ सू. ३४६, प्रव. द्वा १४५ गा. ६२३

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
आहार संज्ञा	७१२ ३ ३८६	ठा १०३ ३ सू. ७५२, भ ग ७ उ ८ सू. २६६
आहार संज्ञा चार कारणों से उत्पन्न होती है	१४३ १ १०५	ठा ४ उ. ४ सू. ३५६, प्रव. द्वा १४५ गा. ६२३ टी
आहार के ४२ दोष	६६० ७ १४६	पिं. नि गा. ६६६
इ		
इंगाल कर्म कर्मादान	८६० ५ १४४	उपा. अ १ सू. ७, भ श ८ उ ४ सू. ३३०, आव. ह अ ६ पृ. ८२८
इंगिनी मरण	८७६ ५ ३८४	सम १७, प्रव. द्वा १५७ गा. १००७
इकतालीस प्रकृतियाँ	६८६ ७ १४६	कर्म भा ६ गा. ५४-५५
उदीरणा विना उदय में आती हैं		
इकतीस उपमा साधु की	६६२ ७ ४	प्रश्न धर्मद्वार ५ सू. २६, उव. सू. १७
इकतीस गाथाएं सूयग-	६६३ ७ ८	सूय अ ४ उ १
हांग अ० ४ उ० १ की		
इकतीस गुण सिद्ध	६६१ ७ २	उत्त अ ३१ गा. २० टी, प्रव. द्वा २७६ गा. १४६३-१४६४,
भगवान् के दो प्रकार से		सम ३१, आव. ह अ ४ पृ. ६६२, आचा शु १ अ ४ उ ६ सू. १७०
इकावन उद्देशे आचा-	१००५ ७ २७१	सम ५१
रांग प्रथम श्रुत स्कन्ध के		
इक्कीस कारणों से विद्य-	६१४ ६ ७१	विशे. गा. १६८३ टी.
मान पदार्थ नहीं जाना जाता		
इक्कीस गाथा उत्तराध्ययन	६१७ ६ १३०	उत्त अ. ३१
के इकतीसवें अध्ययन की		

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
इक्कीस गाथादशवैकालिक	६१६ ६ १२६	दश अ. १०
केसभिकवु अध्ययन की		
इक्कीस गुण श्रावक के	६११ ६ ६१	प्रव द्वा २३६ गा १३६६-६८, घ अघि १ श्लो. २० पृ २८ नं सू. २७ गा. ७१-७४ टी, प्राव ह गा ६४८ से ६४९
इक्कीस दृष्टान्त पारिणा-	६१५ ६ ७३	
मिकी बुद्धि के		
इक्कीस प्रकार का धोवण	६१२ ६ ६३	प्राचा धु २ अ १ उ. ७८ सू. ४१, ४३, पिं निगा १८-२१, दश अ. ५ उ. १ गा. ७५-७६
पानी		
इक्कीस प्रश्नोत्तर	६१८ ६ १३३	
इक्कीस शवल दोष	६१३ ६ ६८	दशा द २, मम २१
इक्कीस श्रावक के गुण	६११ ६ ६१	प्रव द्वा. २३६ गा १३६६-६८, घ अघि १ श्लो. २० पृ २८ भ श २५३ उ सू ८०१, ठा १० उ ३ सू ७४८, उत्त अ २६ गा ३ प्रव. द्वा १०१ गा ७६०
इच्छाकार समाचारी	६६४ ३ २४६	प्राव द्वा अ ६ पृ ८२५, ठा ४३ १ सू ३८६, उपा अ. १ सू ६, घ अघि २ श्लो २६ पृ ६७ न सू २७ गा ६४ टी.
इच्छापरिमाण व्रत	३०० १ २६०	
इच्छामहं की कथा औत्पत्ति	८४६ ६ २८१	
की बुद्धि पर		
१ इच्छालोभिक	४४४ २ ४८	ठा ६३. ३ सू १०६, हु (जी.) उ
इत्वरिक अनशन के छः भेद	४७७ २ ८७	उत्त अ ३० गा ६ ने ११
इन्द्र	७२६ ३ ४१५	तत्तार्थ, अख्या. ४ सू

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
इन्द्रभूति गणधर की जीव विषयक शंका-समाधान	७७५ ४ २४	विशे. गा १५४६मे १६०४
इन्द्रस्थान की पाँच सभाएं	३६७ १ ४२१	ठा ५ उ ३ सू. ४७२
१ इन्द्र स्थावरकाय	४१२ १ ४३८	ठा. ५ उ १ सू. ३६३
इन्द्रिय का स्वरूप और उसके पाँच भेद	३६२ १ ४१८	पन्न प १५ सू १६१, ठा ५ उ ३ सू ४४३ टी, जे प्र.
इन्द्रिय की व्याख्या और भेद	२३ १ १७	पन्न प १५ उ १ सू १६१ टी, तत्त्वार्थ अध्या २ सू १६
इन्द्रिय परिणाम	७४६ ३ ४२६	ठा सू ७१३, पन्न प १३ सू. १८२
इन्द्रिय पर्याप्ति	४७२ २ ७७	पन्न प १ सू १२ टी, भ श ३ उ १ सू १३०, कर्म भा १ गा ४६, प्रव द्वा २३२ गा १३१७
इन्द्रियमार्गणा और भेद	८४६ ५ ५७	कर्म भा ४ गा १०
इन्द्रियां प्राप्यकारी चार	२१४ १ १६३	ठा. ४ उ ३ सू ३३६, रत्ना परि २ सू ५ टी.
इन्द्रियों का विषयपरिमाण	३६४ १ ४१६	पन्न प १५ उ १ सू १६५
इन्द्रियों के तेईस विषय और २४० विकार	६२६ ६ १७५	ठा सू ४७, ३६०, ४४३, ५६६, पन्न प २३ उ २ सू २६३, पबोल १२, तत्त्वार्थ अध्या. २ सू. २१
इन्द्रियों के दो सौ चालीस विकार	६२६ ६ १७५	ठा सू ४७, ३६०, ४४३, ५६६, पन्न. प. २३ उ २ सू २६३, पबोल १२, तत्त्वार्थ अध्या २ सू २१
इन्द्रियों के संस्थान	३६३ १ ४१६	पन्न प. १५ उ १ सू १६१, ठा. ५ उ. ३ सू ४४३ टी
इहलोक भय	५३३ २ २६८	ठा ७ उ ३ सू ५४६, सम. ७

विषय

बोल भाग पृष्ठ

प्रमाण

ई

ईर्यापथिक कर्म	७६०	३	४४२	आचा अ. २३ १ ति गा १=३
ईर्यापथिकी क्रिया	२६६	१	३८३	ठा २ उ. १ सू. ६०, ठा. ६ उ २ सू. ४१६, आच. ह अ. ४ पृ. ६१८
ईर्यासमिति	३२३	१	३३१	सम ६, ठा. ६ उ. ३ सू. ४६७, उत्त. अ २४ गा २, ध अ धि ३ श्लो ४७ टी पृ १३०
ईर्यासमितिकी चार यतना १८१	१	१३६		उत्त. अ २४ गा ६-८
ईर्यासमितिके चार कारण १८१	१	१३५		उत्त. अ २४ गा. ४-८
ईशान देवलोक का वर्णन ८०८	४	३२०		पत्र. प. २ सू. ६३
ईपत्प्राग्भारा(सिद्धि) का स्वरूप	६०८	३	१२६	ठा ८ उ ३ सू. ६८, पत्र प २ सू. ६४, उत्त. अ. ३६ गा ६ मे ६२
ईपत्प्राग्भारा पृथ्वी के आठ नाम	६०६	३	१२६	पत्र प २ सू. ४४, ठा ८ उ ३ सू. ६४८
ईपत्प्राग्भारा पृथ्वी के चारह नाम	८१०	४	३५२	सम. १२
ईहा (मतिज्ञान का भेद)	२००	१	१५८	ठा. ४ उ ४ सू. १६४

उ

उक्खित्तविवेगेणं—आगार ५८८	३	४२	आच ह अ ६ पृ ८६६, प्र. ४ गा २०४
उच्चार (मलपरीक्षा) की कथा औत्पत्तिकी बुद्धि पर	८४६	६	२६४ न. सू. २७ गा. ६३ टी

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
वच्चारपरिस्रवणखेलसिघाण	३२३	१ ३३१	सम ५, उत्त अ २४ गा. २,
जल्लपरिस्थापनिका समिति			ठा. ५ उ ३ सू ४५७, ध. अघि ३ श्लो. ४७ टी. पृ १३०
उच्छ्वाससंकेत पञ्चस्वाण	५८६	३ ४३	भाव ह अ. ६ नि गा. १५७८, प्रव. द्वा. ४ गा. २००
उज्जिभतकुमार की कथा	६१०	६ ३४	वि. अ २
उत्कटुका	३५८	१ ३७३	ठा. ५ उ. १ सू. ३६६ (टी.), ४००
उत्कटुकासनिक	३५७	१ ३७१	अ ५ उ. १ सू ३६६
उत्करिका भेद	७५०	३ ४३३	ठा १० उ. ३ सू. ७१३ टी., पक्ष प १३ सू १८६
उत्कालिक श्रुत	८२२	५ ११	नं सू. ४४
उत्कीर्तनानुपूर्वी	७१७	३ ३६१	अनु. सू ७१
उत्तिष्ठचरक	३५२	१ ३६७	ठा. ५ उ. १ सू. ३६६
उत्तम पुरुष चौपन	१००६	७ २७७	सम ५४
उत्तर गुण	५५	१ ३२	सूय. अ. १४ नि गा. १२६, पचा, ५ गा २ टी.
उत्तर प्राणायाम	५५६	२ ३०३	योग प्रका ५ श्लो ६
उत्तरमीमांसा दर्शन	४६७	२ १५४	
उत्तराध्ययनसूत्रके १ की सर्वे ७८१	४	२५५	उत्त अ. २१ गा. १३-२४
अ० की अन्तिम १२ गाथाएं			
उत्तराध्ययनसूत्रके ग्यारहवें ८६३	५	१५५	उत्त अ ११ गा १५ से ३०
अ० की सोलह गाथाएं			
उत्तराध्ययनसूत्र के ग्यार-६७३	७	५१	उत्त अ ११
हवें अ० की बत्तीस गाथाएं			

विषय	वोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
उत्तराध्ययनसूत्र के चरण-	६१७	६ १३०	उत्त. म. ३१
विहिम्न० की २१ गाथाएं			
उत्तराध्ययन सूत्र के चौथे	८१६	४ ४०६	उत्त. म. ४
अध्ययन की तेरह गाथाएं			
उत्तराध्ययन सूत्र के छठे	८६७	५ ४१६	उत्त. म. ६
अध्ययन की १८ गाथाएं			
उत्तराध्ययन सूत्र के छठे	८६७	५ ४८५	
अध्ययन की १८ मूल गाथाएं			
उत्तराध्ययन सूत्र के छत्तीस	२०४	१ १६३	
अ० का संक्षिप्त विषयवर्णन			
उत्तराध्ययन सूत्र के तीसरे	६०६	६ २६	उत्त. म. ३
अध्ययन की बीस गाथाएं			
उत्तराध्ययन सूत्र के दसवें	६८४	७ १३३	उत्त. म. १०
अध्ययन की ३७ गाथाएं			
उत्तराध्ययन सूत्र के पचीसवें	६६६	७ २५४	उत्त. म. २४
अ० की पैंतालीस गाथाएं			
उत्तराध्ययन सूत्र के पन्द्रहवें	८६२	५ १५२	उत्त. म. १४
अ० की सोलह गाथाएं			
उत्तराध्ययन सूत्र के पन्द्रहवें	८६२	५ ४८०	
अ० की सोलह मूल गाथाएं			
उत्तराध्ययन सूत्र के पाँचवें	६७२	७ ४६	उत्त. म. ६
अ० की बत्तीस गाथाएं			
उत्तराध्ययन सूत्र के बीसवें	८५४	५ १३०	उत्त. म. २० गा. ३८-४६
अ० की पन्द्रह गाथाएं			

विषय

बोल भाग पृष्ठ

प्रमाणा

उत्तराध्ययन सूत्र के बीसवें ८५४ ५ ४७७

अ० में से पन्द्रह मूल गाथाएं

उत्पत्तिया बुद्धि २०१ १ १५६ न.सू.२६, अ. ४७४ सू. ३६४

उत्पत्तिया बुद्धि श्री २७ कथा ६४६ ६ २४२ व. सू. २७ गा. ६२-६५ टी.

उत्पन्न मिश्रिता सत्यामृषा ६६६ ३ ३७० अ. १० उ ३ सू. ७४१, पत्र

भाषा

प. ११ सू. १६५, ध. अधि ३
श्लो ४१ टी पृ. १२२

उत्पन्न विगत मिश्रिता ६६६ ३ ३७० अ १० उ ३ सू. ७४१, पत्र.

सत्यामृषा भाषा

प. ११ सू. १६५, ध. अधि ३
श्लो. ४१ टी पृ १२२

उत्पाद ६४ १ ४५ तत्त्वार्थ. अध्या. ५ सू. २६.

उत्पादना दोष सोलह ८६६ ५ १६४ प्रव. द्वा ६७ गा ५६७-५६८,

आहार के

ध. अधि ३ श्लो. २२ टी. पृ ४०,
पि नि गा. ४०८ ४०९, पचा. १३
गा १८-१९, पि. वि गा ४८-४९

उत्पादनोपघात ६६८ ३ २५४ अ १० उ. ३ सू. ७२८

उत्पाद, व्यय, श्रौव्य रूप ४२५ २ २२ आगम.

सत्त्व छहों द्रव्यों में

उत्सर्ग ४० १ २५ घृ गा ३१६, स्या. का ११ टी.

उत्सर्ग सूत्र ७७८ ४ २३६ घृ उ १ गा १२२१

उत्सर्पिणी काल ३३ १ २२ अ ० उ १ सू ७४

उत्सर्पिणी के छः आरे ४३१ २ ३५ ज. वज २ सू ३७-४०, अ ६

उ ३ सू. ४६२, विशेष गा.
२७०८-२७१०

उत्सेधांगुल

११८ १ ८३

अनु. सू. १३३

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
उदधिकुमारोंकेदसअधिपति७३७	३ ४१६	भ श ३ उ ८ सू १६६
उदय	२५३ १ २३७	कर्म. भा. २ गा. १ व्याख्या
उदयाधिकार कर्मप्रकृतियों ८४७	५ ६४	कर्म. भा २ गा १३ से २२
का गुणस्थानों में		
उदायी राजा	६२४ ३ १६३	ठा ६ उ. ३ सू ६६१
उदाहरण	३८० १ ३६७	न्याय दी. प्रका ३
उदितोदय राजा की पारि-६१५	६ ८१	न सू २७ गा. ७२, धाव ह
णामिकी बुद्धि की कथा		गा ६४६
उदीरणा	२५३ १ २३७	कर्म भा. २ गा १ व्याख्या
उदीरणाकरण	५६२ ३ ६५	कम्म. गा २
उदीरणाधिकार कर्म	८४७ ५ ६८	कर्म भा २ गा. २३-२४
प्रकृतियों का गुणस्थानों में		
उदीरणा बिना उदय में	६८६ ७ १४६	कर्म भा ६ गा ४४-४५
आने वाली ४१ प्रकृतियां		
उद्गम दोष सोलह आहार के ८६५	५ १६१	प्रवद्धा ६७ गा ४६४-४६६, ध अग्नि ३ श्लो २२ टी पृ ३८, पि नि. गा ६२-६३, पिं. वि गा. ३-४, पचा १३ गा. ४-६
उद्गमोपघात	६६८ ३ २५४	ठा. १० उ ३ सू ७३८
१ उद्देशाचार्य	३४१ १ ३५२	ध अग्नि ३ श्लो ८६ टी पृ १-८
उद्देशे इकावन आचारांग १००५	७ २७१	सम ४१
प्रथम श्रुतस्कन्ध के		
चद्धार पल्योपम (सूक्ष्म, १०८ १ ७५		अनु. सु. १२८ प्रव द्वा. १४८
व्यावहारिक)		गा. १०१८ १०२२

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
उद्धार सागरोपम	१०६	१ ७८	अनु सू १३८, प्रव द्वा १४८ गा १०२७-१०२८
उद्भिन्न दोष	८६५	५ १६३	प्रव द्वा ६७ गा ४६६, अ अधि ३ श्लो. २२ टी. पृ ३८, पि नि गा ६३, पि वि गा ४, पचा १३ गा ६१
उद्धर्तना करण	५६२	३ ६५	कम्म गा २
उद्धर्तना नारकी जीवों की	५६०	२ ३२६	प्रव द्वा १८१ गा १०८७-६०, पन्न० प २० सू २६३
उनचालीस कुल पर्वत	६८६	७ १४४	सम ३६
उनतीस गाथाएं महावीर-६५५	६	२६६	सूय. अ. ६
स्तुति नामक सूयगडांग सूत्र के छठे अध्ययन की			
उनतीस पापश्रुत	६५६	६ ३०५	सम २६, उत्त. अ ३१ गा १६ टी, आव ह अ ४ पृ ६६०
उनपचास भंग श्रावक	१००३	७ २६७	भ श ८ उ ५ सू ३२६
के प्रत्याख्यान के			
उनपचास भेद ७ स्वरों के	५४०	२ २७५	अनु सू. १२७ गा ५६, ठा ७ उ ३ सू. ४४३
उन्नीस कथा ज्ञाताधर्म कथा की	६००	५ ४२७	ज्ञा०
उन्नीस दोष कायोत्सर्ग के	८६६	५ ४२५	आव ह अ ५ गा १४४६-४७, प्रव द्वा ५ गा २४७-२६०, यो प्रसा ३ पृ २५०
उन्माद के छः बोल	४५७	२ ६०	ठा ६ उ ३ सू ४०१
उन्मार्ग देशना	४०६	१ ४३३	उत्त. अ ३६ गा. २६५ टी, प्रव द्वा ७३ गा. ६४६
उपकरण १४ साधुओं के	८३३	५ २८	पंच, व गा ७७१-७७६

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
उपकरण द्रव्येन्द्रिय	२४	१	१७	तत्त्वार्थ. अध्या. २ सू. १७
उपकरण वकुश साधु	३६६	१	३८०	ठा ४ उ. ३ सू ४४४ टी, भ ग. २५ उ. ६ सू ७५१ टी.
उपकरणोत्पादनता विनय	२३५	१	२१६	दशा द ४
उपक्रमकीव्याख्या और भेद	४२७	२	२५	अनु सू. ७०
उपक्रमकीव्याख्या और भेद	२४६	१	२३४	ठा ४ उ. २ सू २६६
उपघात दस	६६८	३	२५४	ठा १० उ ३ सू. ७३८
उपघात निःसृत असत्य	७००	३	३७२	ठा. १० उ ३ सू. ७४१, पत्र. प. ११ सू. १६५, अ अधि ३ ग्लो ८१ टी. पृ १२२
उपदेश के योग्य आठ बातें	५८५	३	३६	आचा अ. ६ उ. ५ सू १६४
उपदेश राजमती का	७७१	४	१५	दग. अ. २
रहनेमि को				
उपदेश रुचि	६६३	३	३६२	उत्त अ २८ गा १६
उपदेश से सम्यक्त्व प्राप्ति	८२१	४	४३४	नवपद गा. १४ टी सम्यक्त्वा (चिलातीपुत्र)
१ उपधानाचार	५६८	३	६	ध. अधि १ ग्लो. १६ टी. पृ १८
उपनय	३८०	१	३६७	रत्ना परि. ३ सू ४६
उपनीत दोष	७२३	३	४१२	ठा १० उ. ३ सू ७४३
उपपात जन्म	६६	१	४७	तत्त्वार्थ. अध्या. २ सू ३०
उपपात सभा	३६७	१	४२१	ठा. ५ उ ३ सू. ४७२
२ उपवृत्ति दर्शनाचार	५६६	३	८	पत्र. प १ सू ३७ गा १२८, उत्त. अ २८ गा. ३१

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
उपभोग परिभोग परिमाण ६४३	६	२२५	उपा अ १ सू. ६, ध अधि २	
व्रत में २६ बोलों की ग्यारदा			श्लो ३४ टी पृ ८०, आ प्रति.	
उपभोग परिभोग परिमाण १२८(क) १	६१		आव ह. अ ६ पृ ८२७	
उपभोग परिभोग परिमाण ३०७ १	३०५		उपा अ १ सू. ७, प्रव द्वा. ६	
व्रत के पाँच अतिचार			गा २८१	
उपभोग परिभोग परिमाण ७६४ ४	२८३		आगम.	
व्रत निश्चय और व्यवहार से				
उपभोगान्तराय	३८८ १	४११	कर्म भा. १ गा ५२, पत्र प. २३ सू. २६३	
उपमा आठ अहिंसा की	६२२ ३	१५५	प्रश्न सवरद्वार १ सू २२	
उपमा आठ संघ की	६२३ ३	१५६	न. पीठिका गा. ४-१७	
उपमा एकतीस साधु की	६६२ ७	४	प्रश्न धर्मद्वार ५ सू २६, उव सू १७	
उपमा चार वारह साधु की	८०५ ४	३०६	अनु. सू १५० गा. १३१	
उपमा चार क्रोध की	१५६ १	१२०	{ डा. ४ उ. १ सू. २४६, ठा ४ उ २ सू २६३ टी, पत्र प १४ सू. १८८, कर्म. भा १ गा २०	
उपमा चार मान की	१६० १	१२१		
उपमा चार माया की	१६१ १	१२१		
उपमा चार लोभ की	१६२ १	१२२		
उपमा दस संसार की लवण ६७६ ३	२६६		प्रश्न अधर्मद्वार ३ सू ११, उव सू २१	
समुद्र से				
उपमान प्रमाण	२०२ १	१६१	अनु सू १४४. भ श ५ उ. ४ सू. १६३	
उपमान संख्या के ४ प्रकार ६१६ ३	१४२		अनु सू. १४६	
उपमा वत्तीस शील की	६६४ ७	१५	प्रश्न. धर्मद्वार ४ सू २७	
उपमा संख्या की व्याख्या २०३ १	१६१		अनु सू १६६ पृ २३१	
और भेद				

विषय	वोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
चम्बरदत्त कुमारकी कथा ६१०	६ ४५	वि. अ. ७
उम्मीसे दोष	६६३ ३ २४७	प्रव. द्वा. ६७ गा. ४६८ पृ १४८, पिं. नि. गा. ५२०, ध. अधि. ३ श्लो. २२ टी पृ ४१, प्रचा १३ गा २६
उरपरिसर्प	४०६ १ ४३६	पत्र. प १ सू ३६, उत्त अ ३६ गा १८०
उववाई (भौपपातिक) सूत्र ७७७	४ २१५	
का संक्षिप्त विषय वर्णन		
उष्ण योनि	६७ १ ४८	तत्त्वार्थ अध्या. २ सू ३३, ठा ३ उ १ सू १४०

ऊ

ऊनोदरी	४७६ २ ८६	उत्त अ ३० गा ८, ठा. ६ उ. ३ सू. ५११, उव. सू. १६, प्रव द्वा ६ गा २७०
ऊनोदरी के भेद	२१ १ १६	भ. श २५ उ. ७ सू. ८०२
ऊनोदरी तप के १४ भेद	६३३ ३ १८६	उव सू. १६, भ श. २५ उ ७ सू ८०२
ऊर्ध्वता सामान्य	५६ १ ४१	रत्ना. परि. ५ सू ५
ऊर्ध्व लोक	६५ १ ४६	लोक भा. २ स. १२, भ. ग. ११ उ १० सू ४२०

ऋ

ऋजुमति मनःपर्यष ज्ञान	१४ १ १२	ठा. २ उ १ सू ७१
ऋजुमति लब्धि	६५४ ६ २६१	प्रव. द्वा २७० गा. १४६२
ऋजुसूत्र नय और उसके दो भेद	५६२ २ ४१६	रत्ना परि. ७ सू २८, अनु सू. १५२ गा. १३८, श्रवण. त अध्या. ६ श्लो. १४

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
ऋज्वायता श्रेणी	५४४ २ २८३	ठा. ७ उ. ३ सू. ५८१, भ. श. २५ उ. ३ सू. ७२०
ऋतुएं छः	४३२ २ ४०	ठा. ६ उ. ३ सू. ५२३ टी, वृ. हो.
ऋतुप्रमाण संवत्सर	४०० १ ४२६	{ ठा. ५ उ. ३ सू. ४६०, प्रव. द्वा. १४२ गा. ६०१
ऋतु संवत्सर	४०० १ ४२७	
ऋद्धि के तीन भेद	६६ १ ७०	ठा. ३ उ. ४ सू. २१४
ऋद्धि गौरव (गारव)	६८ १ ७०	ठा. ३ उ. ४ सू. २१५
ऋद्धि प्राप्त आर्य के छः भेद ४३८ २ ४२		ठा. ६ उ. १ सू. ४६१, पन्न प. १ सू. ३७
ऋषभदेव का संक्षिप्त जीवन ८२० ४ ४१६		त्रि. ष. पर्व १
ऋषभदेव के अट्टाणवे पुत्र ८१२ ४ ३८८		सूय. अ. १ अ. २ उ. १, त्रि. ष. पर्व १
(बोधिदुर्लभ भावना)		
ऋषभदेव भगवान् के १३ भव ८२० ४ ४०६		त्रि. ष. पर्व १
ऋषभनाराच संहनन ४७० २ ७०		पन्न. प. २३ सू. २६३, ठा. ६ उ. ३ सू. ४६४, कर्म. भा. १ गा. ३८

ए

एक आत्मा	१ १ २	ठा. १ सू. २
एक गण से दूसरे गण में जाने के सात कारण	५१५ २ २४४	ठा. ७ उ. ३ सू. ५८१
एक जम्बूद्वीप	४ १ २	ठा. १ सू. ५२, तत्त्वार्थ ग्रन्थ ३
एकतः अनन्तक	४१८ १ ४४२	ठा. ५ उ. ३ सू. ४६२
एकतः खा श्रेणी	५४४ २ २८३	ठा. ७ उ. ३ सू. ५८१, भ. श. २५ उ. ३ सू. ७२०
एकता और अनेकता का विचार छः द्रव्यों में	४२४ २ ७	आगम

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
एकतो वक्रा श्रेणी	५४४	२	२८३	ठा ७ उ ३ सू. १८१, भ. ज. २६ उ ३ सू. ७३०
एकत्व भावना	८१२	४	३६२,	शा. भा. १ प्रक. ४, भावना, ज्ञान ३८१ प्रक. २, प्रव. द्वा. ६७ गा. ६७०, तत्त्वार्थ. अध्या. ६ सू. ७
एकत्व वितर्क अविचारी शुक्लध्यान	२२५	१	२१०	आव. ह. अ. ४ ध्यानगतक गा. ७६-८०, ठा. ४ उ १ सू. २४७, ज्ञान प्रक. ४२, क. भा. २ श्लो. २१६
एक दण्ड	३	१	२	ठा. १ सू. ३
एक परमाणु	६	१	३	रा. १ सू. ४४
एक प्रदेश	५	१	३	ठा. १ सू. ४५
एकमासिकी भिक्षुपडिमा	७६५	४	२८५	सम. १२, भ. रा. २ उ. १ सू. ६३ टी, दशा. द. ७
एकगत्रिकी वारहवीं भिक्षु पडिमा	७६५	४	२६१	सम. १२, भ. रा. २ उ. १ सू. ६३ टी, दशा. द. ७
एकल विहार प्रतिमा के आठ स्थान (गुण)	५८६	३	३६	ठा. ८ उ. ३ सू. ६६४
एकवादी	५६१	३	६०	ठा. ८ उ. ३ सू. ६०७
एक समकित	२	१	२	प्रव. द्वा. १४६ गा. ६४०, पंचा. १ गा. ३, तत्त्वार्थ. अध्या. १ पत्र प. १ सू. ७ टी.
एक समय में कितने सिद्ध हो सकते हैं ?	८४६	५	१२०	पत्र. प. १ सू. ७
एक सिद्ध	८४६	५	१२०	उत्त. अ. २६ गा. २७
एकामर्षी प्रमादप्रतिलेखना	५२१	२	२५१	ठा. १० उ. ३ सू. ७४३
एकार्थिक दोष	७२३	३	४११	

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
एकार्थिकानुयोग	७१८ ३ ३६३	ठा १० उ. ३ सू. ७२७
एकासन के आठ आगार	५८७ ३ ४०	आव ह अ ६ पृ ८६२, प्रव द्वा. ४ गा २०३
एकासन वियासण का पञ्चक्खाण	७०५ ३ ३७८	प्रव द्वा ४ गा २०२-२०३ टी, पचा ६ गा ८, आव. ह. अ ६ पृ ८६२
एकेन्द्रियजीवों का समारंभ	२६८ १ २८५	ठा ५ उ २ सू ४२६, ४३०
न करने से होने वाला पाँच प्रकार का संयम		
एकेन्द्रियजीवोंके समारंभ	२६७ १ २८४	ठा ५ उ २ सू ४२६ ४३०
से होने वाला पाँच असंयम		
एगद्वाण का पञ्चक्खाण	७०५ ३ ३७८	प्रव द्वा ४ गा २०२, २०४ टी, आव ह. अ ६ पृ ८६३, पचा. ६ गा ६
एगद्वाण के सात आगार	५१७ २ २४७	आव ह अ ६ पृ ८६३, प्रव द्वा ४ गा २०४
एवंभूत नय	५६२ २ ४१८	अनु सू. १६२ गा १३६, रत्ता. परि. ७ सू ४०
एषणा समिति	३२३ १ ३३१	सम. ६, ठा ५ उ. ३ सू. ४६७, उत्त अ. २४ गा. २, ध. अधि. ३ श्लो. ४७ टी पृ. १३०
एषणा समिति के भेद	६३ १ ६६	उत्त. अ २४ गा. ११-१२
एषणोपघात	६६८ ३ २५४	ठा १० उ ३ सू. ७३८

ऐ

ऐरवत क्षेत्र के आगामी चौबीस तीर्थंकर	६३१ ६ १६७	सम १६८, प्रव द्वा. ७ गा. ३००-३०३
--------------------------------------	-----------	-------------------------------------

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कथा अंजूकुमारी की	६१०	६	५०	वि० अ० १०
कथा अतिमुक्त कुमार की	७७६	४	१६८	अत० व० ६ अ० १४
कथा अनाथी मुनि की	८५४	५	१३०	उत्त० अ० २०
कथा अभगसेन चोर की	६१०	६	३७	वि० अ० ३
कथा अभयकुमार की	६१५	६	७४	न० सू० २७ गा० ७२, आव०
पारिणामिकी बुद्धि पर				ह० नि० गा० ६४६
कथा अमात्य (मंत्रा) की	६१५	६	८५	त्रि० ष० पर्व० ६, न० सू० २७
पारिणामिकी बुद्धि पर				गा ७२, आव० ह० नि० गा० ६४६
कथा अमात्य पुत्र की	६१५	६	६०	उत्त० अ० १३ टी०, आव० ह० नि०
पारिणामिकी बुद्धि पर				गा० ६४०, न० सू० २७ गा० ७३
कथा अर्जुनमाला की	७७६	४	१६६	अत० व० ६ अ० ३
कथा अर्थशास्त्र की	६४६	६	२८०	न० सू० २७ गा० ६५ टी०
औत्पत्तिकी बुद्धि पर				
कथा अश्वों की	६००	५	४६६	ज्ञा० अ० १७
कथा आँवले की पारिणा-	६१५	६	११३	न० सू० २७ गा० ७४, आव०
मिकी बुद्धि विषयक				ह० नि० गा० ६४१
कथा आर्यापाद आचार्य	८२१	४	४६६	नवपद० मन्मथत्वाधिवा
की स्थिरीकरण पर				गा० १८ टी०
कथा इक्कीस पारिणामिकी	६१५	६	७३	न० सू० २७ गा० ७१-७४,
बुद्धि की				आव० ह० नि० गा० ६४८-६४१
कथा इच्छामहं की औत्प-	६४६	६	२८१	न० सू० २७ गा० ६५ टी०
त्तिकी बुद्धि पर				
कथा उच्चार (मल परीक्षा)	६४६	६	२६४	न० सू० २७ गा० ६३ टी०
की औत्पत्तिकी बुद्धि पर				

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कथा उज्ज्वल कुमार की	६१०	६	३४	वि० अ० २
कथा उदितोदय राजा की	६१५	६	८१	न० सू० २७ गा० ७२, आव०
पारिणामिकी बुद्धि पर				ह० नि० गा० ६४६
कथा उन्नीस ज्ञाताधर्म-	६००	५	४२७	
कथांग सूत्र की				
कथा उम्बरदत्त कुमारकी	६१०	६	४५	वि० अ० ७
कथा एवता कुमार की	७७६	४	१६८	अत व ६ अ १४
कथा कछुए और शृगालकी	६००	५	४३७	ज्ञा० अ० ४
कथा कमलामेला की भाव	७८०	४	२५०	आव० ह० नि० गा० १३४, वृ०
अननुयोग पर				नि० गा० १७२ पीटिका
कथा काक की औत्पत्ति-	६४६	६	२६३	न० सू० २७ गा० ६३ टी०
की बुद्धि पर				
कथा काल सेठ की पारि-	६१५	६	७८	न० सू० २७ गा० ७२, आव०
णामिकी बुद्धि पर				ह० नि० गा० ६४६
कथा कुब्जा की क्षेत्र अन-	७८०	४	२३६	आव० ह० नि० गा० १३३,
नुयोग पर				वृ० नि० गा० १७१ पीटिका
कथा कुमार सेठ की पारि-	६१५	६	७६	न० सू० २७ गा० ७२, आव०
णामिकी बुद्धि पर				ह० नि० गा० ६४६
कथा कुशध्वज राजा की	४२१	४	४५५	नवपद गा० १८ टी० सम्य-
कांचा दोष पर				क्त्वाविकार
कथा कृष्ण की अपरकङ्का	६००	५	४६६	ज्ञा० अ० १६
गमन सम्बन्धी				
कथा कौण्डारक की	७८०	४	२४८	आव० ह० नि० गा० १३४, वृ०
भाव अननुयोग पर				नि० गा० १७२ पीटिका

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कथा क्षपक की पारिणा- मिकी बुद्धि पर	६१५	६	८८	न० सू० २७ गा० ७३, आव० ह० नि० गा० ६५०
कथा जुल्लक की औत्पत्ति- की बुद्धि पर	६४६	६	२६७	न० सू० २७ गा० ६३ टी०
कथा खुड्ग(गेंडा)की पारि- णामिकी बुद्धि पर	६१५	६	११६	न० सू० २७ गा० ७४, आव० ह० नि० गा० ६५१
कथा खुड्ग(अंगूठी) की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२५८	न० सू० २७ गा० ६३ टी०
कथा गजसुकुमार की	७७६	४	१६३	अत० व० ३ अ० ८
कथा गर्हा पर	५७६	३	३४	आव० ह० अ० ४ नि० गा० १२४२
कथा गाय और वछड़े की द्रव्य अननुयोग पर	७८०	४	२३६	आव० ह० नि० गा० १३३, वृ० गा० १७१ पीटिका०
कथा गेंडे की पारिणामि- की बुद्धि पर	६१५	६	११६	न० सू० २७ गा० ७४, आव० ह० नि० गा० ६५१
कथा गोलक-लाखकी गोली- की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२६६	न० सू० २७ गा० ६३ टी०
कथा ग्रामीण की वचन अननुयोग पर	७८०	४	२४२	आव० ह० नि० गा० १३३, वृ० नि० गा० १७१ पीटिका०
कथा घयण (भांड) की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२६५	न० सू० २७ गा० ६३ टी०
कथा चण्डकौशिक सर्प की पारिणामिकी बुद्धि पर	६१५	६	११४	त्रि० प० पर्व १०, न० सू० २७ गा० ७४, आव० ह० नि० गा० ६५१
कथा चन्द्रमा की	६००	५	४५६	जा० अ० १०

विषय बोल भाग पृष्ठ प्रमाण

कथा चरणाहत की पारि-	६१५	६	११२	नं.सू.२७गा.७४,आव.ह नि.
णामिकी बुद्धि पर				गा. ६६१
कथा चाणक्य की पारि-	६१५	६	६४	न.सू.२७ गा. ७३,आव.ह नि.
णामिकी बुद्धि पर				गा. ६६०
कथा चारपुत्रवधुओं की	६००	५	४४२	ज्ञा. अ. ७
कथा चिलातीपुत्र की उप-	८२१	४	४३४	नवपद गा. १८ टी. सम्यक्त्वा-
देश से सम्यक्त्व प्राप्ति पर				विकार, ज्ञा. अ. ८
कथा चेटक निधान की	६४६	६	२७६	न.सू. २७ गा. ६६ टी.
औत्पत्तिकी बुद्धि पर				
कथा चौदह रोहक की	६४६	६	२४३	न.सू. २७ गा. ६४ टी.
औत्पत्तिकी बुद्धि पर				
कथा जिनदत्त और	६००	५	४३६	ज्ञा. अ. ३
सागरदत्त की				
कथा जिनदास कुमार की	६१०	६	५६	वि. अ. १६
कथा जिनपाल जिनरत्नकी	६००	५	४५३	ज्ञा. अ. ६
कथा तीन	६७	१	६६	ठा. ३ उ. ३ सू. १८८
कथा तुम्हे की	६००	५	४४१	ज्ञा. अ. ६
कथा तेतलीपुत्र की	६००	५	४६२	ज्ञा. अ. १४
कथा तेरह सम्यक्त्व की	८२१	४	४२२	नवपद गा. १८-१८
कथा दस दुःखविपाक की	६१०	६	२६५३	वि. अ. १ मे. १०
कथा दस सुख विपाक की	६१०	६	५३६०	वि. अ. ११ से २०
कथा दावद्रव वृत्त की	६००	५	४५६	ज्ञा. अ. ११
कथा दुर्गन्था की जुगुप्सा	८२१	४	४५८	नवपद. गा. १८ टी. सम्यक्त्वा-
दोष पर				विकार

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कथा देवदत्ता रानी की	६१०	६	४७	वि. अ. ६
कथा देवी पुष्पवती की	६१५	६	८०	न. सू. २७ गा. ७२, आव. ह. नि
पारिणामिकी बुद्धि पर				गा. ६४६
कथा धनदत्त की पारि-	६१५	६	८३	न. सू. २७ गा. ७२, ज्ञा. अ. १८,
णामिकी बुद्धि पर				आव. ह. नि. गा. ६४६
कथा धनपति कुमार की	६१०	६	५६	नि. अ. १६
कथा धन सार्थवाह की	८२१	४	४४६	नवपद. गा. १६टी सम्यक्त्वा-
सम्यक्त्व प्राप्ति के लिये				धिकार
कथा धन्नाकुमार की	७७६	४	२०४	अणु व. ३ अ. १
कथा धन्ना सार्थवाह और	६००	५	४३४	ज्ञा. अ. २
विजय चोर की				
कथा नकुल की भाव	७८०	४	२४६	आव. ० ह. नि. गा. १३४, वृ. ०
अननुयोग पर				नि. गा. १७२ पीटिका
कथा नन्द मणियार की	८२१	४	४४४	नवपद. गा. १५, ज्ञा. अ. १३
कथा नन्द मणियार की	६००	५	४६०	ज्ञा. अ. १३
कथा नन्दी फल की	६००	५	४६४	ज्ञा. अ. १५
कथा नन्दीवर्धनकुमार की	६१०	६	४३	वि. अ. ६
कथा नन्दीपेण साधु की	६१५	६	८२	न. सू. २७ गा. ७२, आव. ह. नि.
पारिणामिकी बुद्धि पर				गा. ६४६
कथा नाणक की औत्प-	६४६	६	२७५	न. सू. २७ गा. ६४ टी.
त्तिकी बुद्धि पर				
कथा निन्दा पर	५७६	३	२८	आव. ह. अ. ४ नि. गा. १२४२
कथा निवृत्ति पर	५७६	३	२६	आव. ह. अ. ४ नि. गा. १२४२

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कथा पट की औत्पत्तिकी	६४६	६ २६२	न सू. २७ गा. ६३ टी
बुद्धि पर			
कथा पणित की औत्प-	६४६	६ २५६	न सू. २७ गा. ६३ टी
त्तिकी बुद्धि पर			
कथा पति की औत्पत्तिकी	६४६	६ २६६	न सू. २७ गा. ६३ टी
बुद्धि पर			
कथा परदेशी राजा की	७७७	४ २१७	रा
कथा परिहरणा पर	५७६	३ २४	आव.ह. अ. ४ नि. गा. १२४२
कथा पुंढरीक और कुंड-	६००	५ ४७२	ज्ञा. अ. १६
रीक की			
कथा पुत्र की औत्पत्तिकी	६४६	६ २७१	न सू. २७ गा. ६३ टी.
बुद्धि पर			
कथा प्रतिक्रमण पर	५७६	३ २२	आव.ह. अ. ४ नि. गा. १२४२
कथा प्रतिचरणा पर	५७६	३ २३	आव.ह. अ. ४ नि. गा. १२४२
कथा वधिरोल्लाप की वचन	७८०	४ २४१	आव.ह. नि. गा. १३३, वृ. नि.
अननुयोग पर			गा. १७१ पीठिका
कथा वारह अननुयोग की	७८०	४ २३८	आव.ह. नि. गा. १३२, १३४,
			वृ. नि. गा. १७१-१७२ पीठिका
कथा बीस विपाक सूत्र की	६१०	६ २६	वि
कथा बृहस्पतिदत्त कुमार की	६१०	६ ४१	वि. अ. ५
कथा भद्रनन्दी कुमार की	६१०	६ ५८	वि. अ. १२
कथा भद्रनन्दी कुमार की	६१०	६ ६०	वि. अ. १८ -
कथा भरतशिला की	६४६	६ २४३	न सू. २७ गा. ६४ टी.
औत्पत्तिकी बुद्धि पर			

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कथा भिक्षुक की औत्प- ६४६	६	२७६	न. सू. २७ गा. ६४ टी	
त्तिकी बुद्धि पर				
कथा मणि की पारि- ६१५	६	११३	न. सू. २७ गा. ७६, यावद्	
णामिकी बुद्धि पर			नि गा. ६६१	
कथा मधुसिक्थ की औत्प- ६४६	६	२७२	न. सू. २७ गा. ६४ टी	
त्तिकी बुद्धि पर				
कथा मयूराण्ड और सार्थ ८२१	४	४५३	नवपद गा. १८ टी. सम्यक्त्वावि-	
वाह की शंका दोष के लिये			कार, जा अ ३	
कथामल्लिनाथभगवान् की ६००	५	४४४	जा अ ८	
कथा महाचन्द्रकुमार की ६१०	६	६०	वि अ १६	
कथा महाबलकुमार की ६१०	६	५६	वि. अ १७	
कथा महेश्वरदत्त वणिक् ४२१	४	४५६	नवपद गा. १८ टी. सम्यक्त्वा-	
की विचिकित्सा दोष के लिये			विकार	
कथा मार्ग की औत्पत्तिकी ६४६	६	२६७	न. सू. २७ गा. ६३ टी.	
बुद्धि पर				
कथा मुद्रिका की औत्प- ६४६	६	२७२	न. सू. २७ गा. ६४ टी	
त्तिकी बुद्धि पर				
कथा मुनि की स्वाध्याय ७८०	४	२४०	आप्त. द. गा. १३३, वृ. नि गा	
विषयक काल अनुयोग पर			१७१ पीठिका	
कथा मृगापुत्र की ६१०	६	२६	वि अ १	
कथा ज्ञेयकुमार की ६००	५	४२६	जा अ १	
कथा राजमती रहनेमि की ७७१	४	१३	दश अ २ टी	
कथा रोहक की औत्प- ६४६	६	२४३	न. सू. २७ गा. ६४ टी	
त्तिकी बुद्धि पर				

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
कथा वज्रस्वामी की पारि-६१५ द १०६	आवृत्त गा ६५०, न सू २७	
णामिकी बुद्धि पर		गा ७३
कथा वज्रस्वामी की	८२१ ४ ४८१	नवपद गा १८ टी मय्यक्त्वा-
वात्सल्य पर		धिकार
कथा वरदत्तकुमार की	६१० द ६०	वि अ २०
कथा वारणा पर	५७६ ३ २५	आवृत्त अ ४ नि गा १२४२
कथा विष्णुकुमार की	८२१ ४ ४८५	नवपद गा १८ टी
प्रभावना पर		मय्यक्त्वाधिकार
कथा वृत्त की औत्पत्तिकी	६४६ द २५७	न सू २७ गा ६३ टी
बुद्धि पर		
कथा शकटकुमार की	६१० द ३६	वि अ ४
कथा शतसहस्र की	६४६ द २८२	न सू २७ गा ६५ टी
औत्पत्तिकी बुद्धि पर		
कथा शम्भ के साहस की	७८० ४ २५२	आवृत्त गा १३४, वृ नि
भाव अननुयोग पर		गा १७२ पीठिका
कथा शरट (गिरगिट) की	६४६ द २६२	न सू २७ गा ६३ टी
औत्पत्तिकी बुद्धि पर		
कथा शिक्षा की औत्पत्तिकी	६४६ द २७६	न सू २७ गा ६५ टी
बुद्धि पर		
कथा शुद्धि पर	५७६ ३ ३६	आवृत्त अ ४ नि गा १२४२
कथा शैलक राजर्षि की	६०० ५ ४३८	ज्ञा. अ ४
कथा आवक भार्या की	६१५ द ८४	न सू २७ गा ७२, आवृत्त
पारिणामिकी बुद्धि पर		निगा. ६४६

विषय	वोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कथा श्रावक भार्या की	७८०	४ २४५	श्राव. ह. नि. गा. १३४, वृ.
भाव अननुयोग पर			नि. गा. १७२ पीठिका
कथा श्रेणिक की	८२१	४ ४६५	नवपद. गा. १८ टी
उपवृंहणा पर			सम्यग्वाधिका
कथा श्रेणिक के कोप की	७८०	४ २५३	श्राव. ह. नि. गा. १३४, वृ.
भाव अननुयोग पर			नि. गा. १७२ पीठिका
कथा श्रेयांस कुमार की	८२१	४ ४२३	नवपद. गा. १२८
सम्यक्त्व प्राप्ति के लिये			
कथा सती कुन्ती की	८७५	५ ३४६	ज्ञा. अ. १६
कथा सती कौशल्या की	८७५	५ २६८	त्रि. प. पर्व ७
कथा सती चन्दनवाला	८७५	५ १६७	श्राव. ह. नि. गा. १२०-४०१
(वसुमती) की			त्रि. प. पर्व १०, चन्दन
कथा सती दमयन्ती की	८७५	५ ३५२	पञ्च प्र., भरत. गा. ८, त्रि. प.
			पर्व ८ सू. ३
कथा सती द्रौपदी की	८७५	५ २७५	ज्ञा. अ. १६, त्रि. प. पर्व ८
कथा सती पद्मावती की	८७५	५ ३६६	श्राव. ह. नि. गा. १३११
			भाष्य. गा. २०४-२०६
कथा सती पुष्पचूला की	८७५	५ ३६४	श्राव. ह. नि. गा. १२८६
कथा सती प्रभावती की	८७५	५ ३६५	श्राव. ह. नि. गा. १२८४
कथा सती ब्राह्मी की	८७५	५ १८५	श्राव. ह. नि. गा. १६६, त्रि.
			प. पर्व १, २
कथा सती मृगावती की	८७५	५ ३०३	श्राव. ह. नि. गा. १०४८, दश.
			अ. १ नि. गा. ७६
कथा सती राजमती की	८७५	५ २४६	दश. अ. २, त्रि. प. पर्व ८, उज्ज.
			अ. २२, राज

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कथा सती शिवा की	८७५	५	३४६	आव ह नि गा १२८४, भरत. गा. १०
कथा सती सीता की	८७५	५	३२१	त्रि ष पर्व ७
कथा सती सुन्दरी की	८७५	५	१६०	आव ह नि गा १६६, ३४८, त्रि ष पर्व १, २
कथा सती सुभद्रा की	८७५	५	३४०	दश अ १ नि गा ७३-७४, भरत गा. ८
कथा सती सुलसा की	८७५	५	३१३	आव ह नि गा. १२८४, भरत गा. ८, डा ६ सू. ६६१ टी
कथा २७ औत्पत्तिकी बुद्धिकी	६४६	६	२४२	न सू. २७ गा ६२-६४ टी.
कथा सयहाल की पर- पाषण्ड दोष पर	८२१	४	४६१	नवपद. गा १८ टी. सम्यक्त्वाधिकार
कथा साप्तपदिक व्रत की भाव अननुयोग पर	७८०	४	२४६	आव ह नि गा १३४, वृ नि गा. १७२ पीठिका
कथा सुं सुमा, चित्ताती पुत्र की	६००	५	४७०	ज्ञा अ. १८
कथा सुजात कुमार की	६१०	६	५८	वि अ १३
कथा सुन्दरी नन्द की	६१५	६	१०५	आव ह. नि गा ६६०, न.
पारिणामिकी बुद्धि पर				सू. २७ गा ७३
कथा सुबाहु कुमार की	६१०	६	५३	वि. अ ११
कथा सुबुद्धि मंत्री और जितशत्रु राजा की	६००	५	४५८	ज्ञा. अ १२
कथा सुवासव कुमार की	६१०	६	५०	वि अ १४
कथा ठ संठ (काल) की	६१५	६	७८	न सू. २७ गा ७२,
पारिणामिकी बुद्धि पर				आव ह नि गा ६४६

विषय	वोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
कथा श्रावक भार्या की भाव अननुयोग पर	७८० ४ २४५	श्राव. ह नि गा १३४, पृ निगा. १७२ पीठिका
कथा श्रेणिक की उपवृंहणा पर	८२१ ४ ४६५	नवपद गा १८ टी सम्यक्त्वाधिकार
कथा श्रेणिक के कोप की भाव अननुयोग पर	७८० ४ २५३	श्राव. ह. नि. गा. १३४, पृ नि गा. १७२ पीठिका
कथा श्रेयांस कुमार की सम्यक्त्व प्राप्ति के लिये	८२१ ४ ४२३	नवपद गा १२८
कथा सती कुन्ती की	८७५ ५ ३४६	ज्ञा अ. १६
कथा सती कौशल्या की	८७५ ५ २६८	त्रि. प. पर्व ७
कथा सती चन्दनवाला (वसुमती) की	८७५ ५ १६७	श्राव ह नि गा ६२०-३३१ त्रि प. पर्व १०, चन्दन
कथा सती दमयन्ती की	८७५ ५ ३५२	पंच प्र, भरत गा. ८, त्रि प पर्व ८ सू. ३
कथा सती द्रौपदी की	८७५ ५ २७५	ज्ञा अ. १६, त्रि प पर्व ८
कथा सती पद्मावती की	८७५ ५ ३६६	श्राव ह नि गा १३११ भाष्यगा २०४-२०९
कथा सती पुष्पचूला की	८७५ ५ ३६४	श्राव. ह. निगा. १२८४
कथा सती प्रभावती की	८७५ ५ ३६५	श्राव ह निगा १२८४
कथा सती ब्राह्मी की	८७५ ५ १८५	श्राव ह नि. गा. १६६, त्रि प पर्व १, २
कथा सती मृगावती की	८७५ ५ ३०३	श्राव. ह निगा १०४८, दश अ. १ निगा. ७६
कथा सती राजपती की	८७५ ५ २४६	दश. अ. २, त्रि प पर्व ८, उत अ २२, राज

विषय वोल भाग पृष्ठ प्रमाण

कथा सती शिवा की	८७५	५	३४६	आव ह नि गा १२८४, भरत. गा. १०
कथा सती सीता की	८७५	५	३२१	त्रि प पर्व ७
कथा सती सुन्दरी की	८७५	५	१६०	आव ह नि गा १६६, ३४८, त्रिष पर्व १, २
कथा सती सुभद्रा की	८७५	५	३४०	दश अ १ नि गा ७३-७४, भरत गा ८
कथा सती सुलसा की	८७५	५	३१३	आव ह नि गा १२८४, भरत गा ८, डा ६ सू ६६१ टी.
कथा २७ औत्पत्तिकी बुद्धि की ६४६	६	२४२	न सू २७ गा ६२ ६५ टी.	
कथा सयडाल की पर- पापंड दोष पर	८२१	४	४६१	नवपद गा १८ टी सम्यक्त्वाधिकार
कथा साप्तपदिक व्रत की भाव अननुयोग पर	७८०	४	२४६	आव ह नि गा १३४, वृ नि गा. १७२ पीठिका
कथा सुंसुमा, चिलाती पुत्र की ६००	५	४७०	ज्ञा अ. १८	
कथा सुजात कुमार की	६१०	६	५८	वि अ. १३
कथा सुन्दरानन्द की पारिणामिकी बुद्धि पर	६१५	६	१०५	आव ह नि गा ६५०, नं. सू. २७ गा. ७३
कथा सुवाहु कुमार की	६१०	६	५३	वि अ ११
कथा सुबुद्धि मंत्री और जितशत्रु राजा की	६००	५	४५८	ज्ञा अ. १२
कथा सुवासव कुमार की	६१०	६	५०	वि अ १४
कथा ठ सेंठ (काल) की पारिणामिकी बुद्धि पर	६१५	६	७८	न सू. २७ गा ७२, आव ह नि गा ६४६

विषय	वोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
कथा सौर्यदत्त की	६१० ६ ४६	वि अ. ८
कथा स्तम्भ की औत्पत्तिकी	६४६ ६ २६६	न. सू. २७ गा. ६३ टी
बुद्धि पर		
कथा स्तूप की पारिणामिकी	६१५ ६ ११७	उत्त (क) प्र. १ टी, निर,
बुद्धि पर		न सू. २७ गा. ७४, आन ह नि. गा. ६५१
कथा स्त्री की औत्पत्तिकी	६४६ ६ २६८	न. सू. २७ गा. ६३ टी
बुद्धि पर		
कथा स्थूलभद्र की	६१५ ६ ६५	आव द गा. ६४०, न सू. २७
पारिणामिकी बुद्धि पर		गा. ७३
कथा हाथी की औत्पत्तिकी	६४६ ६ २६४	न सू. २७ गा. ६३ टी.
बुद्धि पर		
कनकावलीतपयंत्रसहित	६८६ ३ ३३८	अत व. ८ प्र. २
कन्दर्प	४०२ १ ४२६	उत्त. अ. ३६ गा. २६१, प्रव द्वा. ७३ गा. ६४२
कन्दर्प भावना	१४१ १ १०४	उत्त. अ. ३६ गा. २६१
कन्दर्प भावना के पाँच	४०२ १ ४२८	उत्त अ. ३६ गा. २६१, प्रव द्वा. ७३ गा. ६४२
प्रकार		
कप्पवडंसिया सूत्र का	३८४ १ ४०१	निर.
संक्षिप्त विषय-वर्णन		
कप्पवडंसिया सूत्र के दस	७७७ ४ २३३	
अध्ययनों का वर्णन		
कमलामेला का दृष्टान्त	७८० ४ २५०	आव द नि. गा. १३५, घृ
भाव अननुयोग पर		नि. गा. १७२ पं. टिका

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कम्मिया (अभ्यास से उत्पन्न) बुद्धि	२०१	१	१५६	नं.सू. २६, ठा. ४८.४ सू. ३६४
कम्मिया बुद्धि के वारह दृष्टान्त	७६२	४	२७६	न.सू. २७ गा. ६७-६८, आ.व. ह नि. गा. ६४७
करण आठ	५६२	३	६४	कम्म गा. २
करण की व्याख्या और उसके भेद	७८	१	५५	आ.व. म. गा. १०६-१०७ टी. विशेष. गा. १२०२ से १२१८, प्रव. द्वा. २२४ गा. १३०-२टी., कर्म भा. २ गा. २, आगम.
करण के तीन भेद	६४	१	६७	ठा. ३ उ. १ सू. १२४
करणसप्तति के सत्तर बोल	६३७	६	२१६	प्रव. द्वा. ६६-६७ गा. ५५२-५६६, ध. अधि. ३ ओ. ४७ पृ. १३०
करणानुयोग	७१८	३	३६३	ठा. १० उ. ३ सू. ७२७
कारिण्याति दान	७६८	३	४५२	ठा. १० उ. ३ सू. ७४५
करुण रस	६३६	३	२१०	अनु. सू. १२६ गा. ७८-७९
करुणा भावना	२४६	१	२२७	भावना. (परिशिष्ट), क. भा. २ ओ. ४६-४७, च.
कर्म अन्तराय के भेद, अनुभाव और वन्ध के कारण	५६०	३	८१	प. न. प. २३ सू. २६२-२६४, तत्त्वार्थ अध्या. ८, कर्म भा. गा. ५२, भ. श. ८ उ. ६ सू. ३६५
कर्म आठ	५६०	३	४३	शि. गा. १६०६-१६४४, तत्त्वार्थ अध्या. ८, कर्म भा. १, भ. श. ८ उ. ६ सू. ३६५, भ. ग. १ उ. ८, उ. त्त. अ. ३ प. न. प. २३, द्रव्यलो. न. १०

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कर्म आठ के क्षय से प्रकट	५६७	३	४	अनु. सू. १२६, प्रव. द्वा. २७६
होने वाले आठ गुण				गा. १५६३-१६६४, सम. ३१
कर्म आयु के भेद, अनुभाव	५६०	३	६५	भ. श. ८८६ सू. ३५१, पत्र. प. २३
और बन्ध के कारण				सू. २६२-२६४, कर्म भा. १
कर्म और जीव का अनादि	५६०	३	५१	गा. २३, तत्त्वार्थ. अध्या. ८
सम्बन्ध				विशे. गा. १८१३-१८१४, कर्म भा. १ प्रस्तावना
कर्म और जीव का सम्बन्ध	५६०	३	४७	विशे. गा. १६३५-१६३६
कर्म काठिया	६८३	७	१२७	आव. द. गा. ८४१-८४२ पृ. ३४६
कर्म का लक्षण	५६०	३	४४	कर्म भा. १ गा. १ तथा भूमिका
कर्म की चार अवस्थाएं	२५३	१	२३७	कर्म भा. २ गा. १ व्याख्या
कर्म की मूर्तता	५६०	३	४६	विशे. गा. १६२४-१६२८
कर्म की व्याख्या और भेद	२७	१	१८	कर्म भा. १ गा. १ व्याख्या
कर्म की शुभाशुभता	५६०	३	४६	विशे. गा. १६४२-१६४६
कर्म की सिद्धि	५६०	३	४४	विशे. गा. १६११-१६१७
कर्म के विषय में गणधर	७७५	४	३१	विशे. गा. १६०६ में १६४४
अग्निभूति का शंका समाधान				
कर्म के नामादि दस भेद	७६०	३	४४१	आचा. ध्रु. १ अ. २ उ. १
				टी. गा. १८३-१८४
कर्म गोत्र के भेद, अनुभाव	५६०	३	७६	भ. श. ८८६ सू. ३५१, पत्र.
और बन्ध के कारण				प. २३ सू. २६२-२६४, कर्म भा. १ गा. ५२, तत्त्वार्थ. अध्या. ८
कर्म ज्ञानावरणीय के भेद	५६०	३	५५	भ. श. ८८६ सू. ३५१, पत्र.
अनुभाव, बन्ध के कारण				प. २३ सू. २६२-२६४, कर्म भा. १ गा. ६, ४४, तत्त्वार्थ. अध्या. ८

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
कर्म तीन	७२ १ ५२	जी प्रति ३ उ १ सू १११, तन्दुल सू १४, १५ पृ ४०
कर्म दर्शनावरणीय के भेद, ५६० ३ ५६		कर्म भा १ गा १०-१२, ४४,
अनुभाव और बन्ध के		भ. श. ८ उ ६ सू ३५१, पत्र प०
कारण		२३ सू २६२-२६४,
कर्म नाम के भेद, अनु-	५६० ३ ६८	पत्र प. २३ सू २६२-२६४,
भाव और बन्ध के कारण		भ. श. ८ उ. ६ सू ३५१, जा अ ८ सू ६४, आव ह नि गा १७६-१८१, कर्म भा १ गा २३, २७, ३१ तत्त्वार्थ अध्या ८
कर्म प्रकृतियों का उदया-	८४७ ५ ६४	कर्म. भा २ गा १३-२२
धिकार गुणस्थानों में		
कर्म प्रकृतियों का उदीरणा-	८४७ ५ ६८	कर्म भा २ गा २३-२४
धिकार गुणस्थानों में		
कर्म प्रकृतियों का बन्धा-	८४७ ५ ८८	कर्म. भा २ गा ३-१२
धिकार गुणस्थानों में		
कर्म प्रकृतियों का सत्ता-	८४७ ५ ६६	कर्म भा २ गा २४-३४
धिकार गुणस्थानों में		
कर्म प्रकृतियों के बारह द्वार ८०६ ४ ३३६		कर्म. भा. ४ गा १-१६
कर्म बन्ध के कारण	५६० ३ ५२	कर्म भा १ भूमिका तथा ग. १ न्याख्या, टा. १ सू. ६६
कर्म भूमिज	७१ १ ५१	टा ३ उ १ सू १३०, पत्र प १ सू ३७, जी प्रति ३ सू १०७
कर्म भूमि पन्द्रह	८५८ ५ १४२	पत्र प १ सू ३७, भ. ग. २० ट. ८ सू ६७५

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
कर्ममाहनीय के भेद, अनु-५६० ३ ६२		भ श ८३ ६ सू ३५१, पत्र
भाव और बन्ध के कारण		प २३ सू २६२-२६४, कर्म भा.
		१ गा १३-२२, तत्त्वार्थ ग्रन्था ८
कर्मवाद	४६७ २ २१२	
कर्मवाद का मन्तव्य क्या	५६० ३ ८६	
आत्मा को पुरुषार्थ से		
विमुख नहीं करता ?		
कर्मवाद का महत्त्व	५६० ३ ८५	कर्म भा. १ भूमिका
कर्मवादी	१६२ १ १५०	आचा अ १ उ. १ सू ६
कर्मवेदनीय के भेद, अनु- ५६० ३ ६०		पत्र प २३ सू २६२-२६४,
भाव और बन्ध के कारण		भ श. ८ उ. ६ सू. ३५१,
		भ श ७ उ ६ सू २८६, कर्म
		भा १ गा. १३, तत्त्वार्थ ग्रन्था ८
कर्म से छुटकारा और	५६० ३ ५३	विशे गा. १=१७-१=२१, भ
उसके उपाय		ज ६ उ. ३ सू २३५, म्या का २६
कर्मादान पन्द्रह	८६० ५ १४४	उपा. अ. १ सू ७, भ. ज ८ उ. ४
		सू ३३०, आव. ह अ. ६ पृ ८०=
कर्मार्य	७८५ ४ २६६	वृ. उ. १ नि गा ३०६३
कर्मों की उत्तरप्रकृतियों	६३३ ३ १६७	कर्म भा १, पत्र प २३ सू २३३
एक सौ अड़तालीस		
कर्मों की सकलता के	६६४ ७ २१४	
विषय में पाँच गाथाएं		
कर्मों के क्रम की सार्थकता	५६० ३ ८४	पत्र. प २३ सू २८८ टी
कलाचार्य	१०३ १ ७२	श सू ७७
कलासवर्ण संख्यात	७२१ ३ ४०४	दा. १० उ ३ सू. ७१७

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कल्प अटारह साधु के	८६०	५ ४०२	समे १८, दश अ ६ गा ८-६६
कल्प दस साधु के	६६२	३ २३४	पचा १७ गा. ६-४०
कल्पनीय ग्रामादि १६ स्थान ८६७	५ १६६	वृ उ. १ सू. ६	
कल्पपलिमन्थु छः	४४४	२ ४७	ठा. ६ उ ३ सू ५२६, वृ (जी) उ ६
कल्प बीस	६०४	६ ६	वृ उ १
कल्पवृत्त के दस भेद	७५७	३ ४४०	सम १०, ठा. १० उ ३ सू ७६६, प्रव द्वा १७१ गा १०६७-७०
कल्पवृत्त क्या सचित्त	६१८	६ १४०	आचाधु २ पीठिका, जी प्रति
वनस्पति रूप और देवाधि-			३ सू. १११, ज वत्त २ सू २०६टी.,
ष्ठित हैं?			प्रव द्वा १७१, यो प्रका. ४ श्लो ६४
कल्प संख्यान	७२१	३ ४०६	ठा १० उ ३ सू ७४७
कल्पस्थिति छः	४४३	२ ४५	ठा ३ उ ४ सू २०६, ठा ६ उ ३ सू ६३०, वृ (जी) उ ६
कल्पातीत	५७	१ ४०	तत्त्वार्थ अध्या ४ सू १८
कल्पोपपन्न देव के इन्द्र दस ७४१	३ ४२०	ठा १० उ ३ सू ७६६	
कल्पोपपन्न देव वारह	८०८	४ ३१८	पन्न प २, ४, ६, जी. प्रति ३ सू २०७-२२३, तत्त्वार्थ अध्या ४
कल्याणक प्रतीर्थङ्कर देव के २७५	१ २५३	पचा ६ गा. ३०-३१, दशा द ८	
कपाय आश्रव	२८६	१ २६६	ठा ५ उ २ सू ४१८, सम ५
कपाय की ऐहिक हानियाँ १६६	१ १२५	दश अ. ८ गा ३८	
कपाय की व्याख्या और १५८	१ ११७	पन्न. प १४ सू १८८, ठा ४ उ १	
भेद			सू. २४६, कर्म भा १ गा. १७-१८
कपाय कुशील	३६६	१ ३८१	ठा ५ उ. ३ सू ४४५, भ. श २५ उ ६ सू ७५१
कपाय कुशील के पाँच भेद ३६६	१ ३८४	ठा ५ उ. ३ सू ४४५	

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कपाय के भेद और प्रभेद	१५८-१	११७-	४	४ सू २४६, २६३, पत्र. १४
उपमा सहित	१६२	१२२	४	१८८ कर्म भा १ गा १६, २०
कपाय जीतने के चार उपाय	१६७	१	१२५	दश म ८ गा ३६
कपाय पर तेईस गाथाएं	६६४	७	२३६	
कपाय परिणाम	७४६	३	४२६	ठा १० उ. ३ सू ७१३, ११ प १३ सू १८२
कपाय प्रतिक्रमण	३२६	१	३३८	ठा. ५ उ ३ सू ४६७, मातृ. ४ म ४ गा. १२५०-१२५१
कपाय प्रमाद	२६१	१	२७३	ठा. ६ उ ३ सू ५०२, ध मधि ० ओ. ३६ पृ ८१, पचा १ गा २३ टी
कपाय मार्गणा और भेद	८४६	५	५८	कर्म भा ४ गा ११
कपाय मोहनीय	२६	१	२०	कर्म भा १ गा १७, पत्र. १ १४ सू १८६ टी
कपाय समुद्घात	५४८	२	२८८	पत्र. १. ३६ सू ३३१, ठा ७ उ ३ सू ४८६, श्रव्य लोम. ३ पृ १२६, प्रज्ञा २३१ गा १०११
कपायात्मा	५६३	३	६६	भ. म १२ उ. १० सू ४६७
फाँला	२८५	१	२६५	उपा म १ सू ७, मातृ. ४. म ६
काक की कथा औत्पत्तिकी	६४६	६	२६३	नं सू २७ गा. ६३ टी
बुद्धि पर				
काठिया तेरह	६८३	७	१२७	म. व ३ नि गा ८१-८२
काण्ड नरकों के	५६०	२	३२८	जी. प्रति ३ सू. ६६
कापोत लेश्या	४७१	२	७३	उत्त. म. ३४ गा. २४-२५, कर्म भा. ४ गा. १३
काम कथा	६७	१	६६	ठा. ३ उ ३ सू. १८६
काम गुण पाँच	३६५	१	४२०	ठा. ५ उ. १ सू ३६०

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
कामदेव श्रावक	६८५ ३ ३०६	उपा अ २
कामभोग की असारता के	६६४ ७ २१८	
विषय में सोलह गाथाएं		
काम सुख	७६६ ३ ४५४	ठा १० उ.३ सू. ७३७
कायकौत्कुच्य	४०२ १ ४२६	उत्तअ. ३६ गा २६१, प्रव. द्वा. ७३ गा ६४२
कायक्लेश	४७६ २ ८६	उत्त अ ३० गा ८, ठा. ६ उ ३ सू ५११, उव सू १६, प्रव द्वा ६ गा २७०
कायक्लेश के तेरह भेद	६३३ ३ १६०	उव सू १६, म श. २५ उ ७ सू ८०२
कायक्लेश के तेरह भेद	८१६ ४ ३६७	उव. सू १६
कायगुप्ति	१२८(ख)१ ६२	उत्त अ. २४ गा. २४-२५, ठा ३ उ १ सू १२६
काय छः	४६२ २ ६३	ठा ६ उ ३ सू ४८०, दश. अ ८, कर्म भा. ४ गा १०
काय छः का अल्पबहुत्व	४६४ २ ६५	जी प्रति २ सू ६२, पत्र प ३ द्वा ८
काय छः की कुलकोटियाँ	४६३ २ ६४	प्रव द्वा १४० गा ६६३-६६७
काय पुण्य	६२७ ३ १७२	ठा ६ उ ३ सू ६७६
कायमार्गणा के भेद	८४६ ५ ५८	कर्म भा ४ गा १०
काययोग	६५ १ ६८	ठा ३ उ १ सू १०४, तत्त्वार्थ ग्रन्था. ६ सू १
काययोग के सात भेद	५४७ २ २८६	अ.श २५ उ १ सू. ७१६, द्रव्य लो म ३ पृ ३५८, कर्म भा. ४ गा २४

विषय	वोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
काय विनय	४६८	२ २३०	उव सू २०, भग २५ उ. ७ सू ८०२, डा. ७ उ ३ सू ४८४, ध.प्र.वि. ३ श्लो ४४ टी.पृ. १४१
काय विनय अप्रशस्त के सात भेद	५०४	२ २३३	भग २५ उ ७ सू ८०२, डा ७ उ ३ सू ४८४, उव सू २०
काय विनय प्रशस्त के सात भेद	५०३	२ २३२	भग २५ उ. ७ सू ८०२, डा ७ उ. ३ सू ४८४, उव सू २०
कायस्थिति	३१	१ २१	डा. २ उ ३ सू ८५
काया के दोष सामायिक के ७८६	४	२७३	जिज्ञा
कायिकी क्रिया	२६२	१ २७७	डा २ उ. १ सू ६०, डा. ४ उ २ सू ४१६, पत्र. प. २२ सू. २७६
कायोत्सर्ग आवश्यक	४७६	२ ६२	आव ह. अ ५
कायोन्मर्ग के १२ आगार ८०७	४	३१६	आव ह अ. ५ पृ ७७८
कायोत्सर्ग के उन्नीस दोष ८६६	५	४२५	आव ह अ ४ गा. १४४६- १४४७, प्रव द्वा ४ गा २४७- २६०, यो. प्रका. ३ पृ २४०
कारक समकित	८०	१ ५८	विशे गा. २६७४, इन्द्रियलोग ३ श्लो. ६६६, ध.प्र.वि. ३ श्लो. २२ टी पृ ३६, आ.प्र. गा. ४६
कारण	४३	१ २७	न्याय को, जै. प्र
कारण के दो भेद	३५	१ २३	विशे. गा. २०६६
कारण दोष	७२२	३ ४०६	डा. १० उ ३ सू ७४३
कारण दोष	७२३	३ ४१२	डा. १० उ. ३ सू ७४३
कारुण्यदान	७६८	३ ४५१	डा. १० उ ३ सू ७४४
कार्माण काययोग	५४७	२ २८७	भ. ज. २५ उ १ सू ७१६, इन्द्रिय लो ३ पृ. ३४८, कर्म. भा. ६ गा. २६

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
कार्माण शरीर	३८६ १ ४१४	पञ्च.प. २१सू. २६७, ठा. ५ उ १ सू. ३६६, कर्म.भा. १ गा ३३
कार्माणशरीरबन्धन	३६० १ ४१६	कर्म भा १ गा ३५, प्रव द्वा २१६ गा. १२७३
नामकर्म		
कार्मिकी बुद्धि	२०१ १ १५६	नसू २६, ठा. ४ उ ४ सू ३६४
कार्य	४३ १ २७	न्याय को, जै. प्र.
काल	२१० १ १८६	न्यायप्र.अध्या ७, रत्ना.परि. ४ सू. १५ टी०
काल	२७६ १ २५७	आगम, कारण, सम्मति भा ५ काण्ड ३ गा० ५३
काल के चार भेद	४३१ २ ३८	विशे. गा. २७०८-२७१०
काल के नौ भेद	६३४ ३ २०२	विशे. गा० २०३०
काल के भेद और व्याख्या	३२ १ २२	ठा २ उ ४ सू. ६६
काल के ७ भेद (गृहूर्त तक)	५५१ २ २६२	ज. वक्त २ सू. १८
काल चक्र के दो भेद	३३ १ २२	ठा २ उ १ सू ७४
काल द्रव्य	४२४ २ ३	आगम, उत्त. अ. ३६
काल निधि	६५४ ३ २२१	ठा ६ उ. ३ सू ६७३
कालपरिमाण के ४६ भेद	६६८ ७ २६३	अनुसू ११४, भ श ६ उ ७
काल पुद्गल परावर्तन सूक्ष्म	६१८ ३ १३६	कर्म भा ४ गा. ८६-८८
और वादर का स्वरूप		
काल प्रत्युपेक्षा	४५६ २ ६०	ठा ६ उ ३ सू. ५०२
कालाचार	५६८ ३ ६	ध अधि. १ श्लो. १६ टी पृ १८
कालानुपूर्वी	७१७ ३ ३६१	अनु सू. ७१
कालिक भूत	८२२ ५ ११	नं० सू० ४४
काली रानी	६८६ ३ ३३३	अत. व ८ अ १

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कालोदधि समुद्र में चन्द्र सूर्यादि की संख्या	७६६	४	३०१	मूर्य प्रा. १६ सू १००
काव्य के चार भेद	२१२	१	१६०	ठा ४ उ. ४ सू ३७६
काव्य के रस नौ	६३६	३	२०७	अनु.मू १२६ गा ६३ मे=१
कितनी दीक्षापर्यायवाले को	५१४	२	२४३	ठा १७ १ मू ३६६, ज्यव. ३. १०
कौनसा सूत्र पढ़ाना चाहिए				मू २१-३६
किन्त्रिपिक	७२६	३	४१६	तत्त्वार्थ. अध्या. ४ सू ४
किन्त्रिपिकी भावना	१४१	१	१०४	उत्त अ. २६ गा २६३
किन्त्रिपिकी भावना के	४०३	१	४३०	उत्त० अ० ३६ गा. २६३, प्र
पांच प्रकार				द्वा ७३ गा. ६८३
किस गति में किस कपाय	१६३	१	१२३	
की अधिकता होती है ?				
कीलिका संहनन	४७०	२	७०	पत्र १. २३ सू. २६३, ठा. ६ उ. ३ सू ४६४, कर्म गा १ गा. ३६
कुण्डकोलिक श्रावक	६८५	३	३१६	उपा अ. ६
कुन्ती	८७५	५	३४६	सा अ १६
कुब्ज संस्थान	४६८	२	६८	ठा ६ सू ४६४, कर्म गा. १ गा ४०
कुब्जा का दृष्टान्त क्षेत्र	७८०	४	२३६	माय ह नि गा १३३, वृत्ति. गा. १७१ पीडिसा
अननुयांग पर				
कुमार की कथा पारिणा-	६१५	६	७६	न मू २७ गा. ७२, माय ह नि. गा० ६४६
मित्री बुद्धि पर				
कुम्भक प्राणायाम	५५६	२	३०३	यो. प्रसा ४ ग्लो. ७
कुम्भ की उपमा से ४ पुरुष	१६६	१	१२६	ठा ४ उ. ४ सू ३६०
कुम्भ की चौभंगी	१६८	१	१२५	ठा ४ उ० ६ सू० ३६०
कुरुक्षेत्र दस (महाविदेहके)	७५४	३	४३८	ठा० १० ठ० ३ मू० ७६४

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कुलकर दस आगामी उत्सर्पिणी के	७६७	३ ४५०	ठा० १० उ० ३ सू० ७६७
कुलकर दस गत ,,	७६६	३ ४४६	ठा० १० उ० ३ सू० ७६७
कुलकर ७ आगामी ,,	५११	२ २३६	ठा० ७ उ० ३ सू० ५१६, मम १५६
कुलकर सात गत ,,	५१२	२ २३६	ठा० ७ उ० ३ सू० ५१६, मम १५७
कुलकर सात वर्तमान अवसर्पिणी के	५०८	२ २३७	ठा० ७ उ० ३ सू० ५१६, मम १५७, जे० भा० २ पृ० ३६२
कुलकोड़ी छः काय की	४६३	२ ६४	प्रव द्वा १५० गा ६६३-६६७
कुल धर्म	६६२	३ ३६१	ठा० १० उ० ३ सू० ७६०
कुलपर्वत ३६ समयक्षेत्र के	६८६	७ १४४	सम० ३६
कुल मद	७०३	३ ३७४	ठा० १० उ० ३ सू० ७१०, ठा० ८ सू० ६०६
कुलार्थ	७८५	४ २६६	वृ० १ नि गा ३२६३
कुण्डसन सात	६१८	६ १५५	गौ कु ज्ञा अ. १८ सू० १३७, पृ० ३१ नि गा. ६४०
कुशध्वज राजा की कथा	८२१	४ ४५५	नवपद गा. १८ टी.
कांचा दोष के लिये कुशील	३४७	१ ३६०	आव ह. अ. ३ नि. गा ११० उ० ११०८, प्रव द्वा. २ गा १०६-११५
कुशील	३६६	१ ३८१	ठा० ४ उ० ३ सू० ४४५, भ. ज. २४ उ० ६ सू० ७५१
कुशील के अठारह भेद	८६३	५ ४१०	आव ह. अ. ४ पृ ६५२
कुशील के तीन भेद	३४७	१ ३६०	आव ह. अ. ३ नि गा ११० उ० ५१६ प्रव द्वा २ गा. १०६
कुशील के पांच भेद	३६६	१ ३८४	ठा० ४ उ० ३ सू० ४४५
१ कृतदान	७६८	३ ४५२	ठा० १० उ० ३ सू० ७६४

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
१ कृतिकर्म	७६०	३	४४३	भावा अ. २ उ १ नि गा १८४
कृतिकर्म कल्प	६६२	३	२३८	पचा १७ गा २३-२४
२ कृत्स्ना आरोपणा	३२६	१	३३५	ठा. ५ उ २ सू ४३३, सम. २८
३ कृपण वनीपक	३७३	१	३८८	ठा. ५ उ ० सू ४४४
कृपिकर्म	७२	१	५२	जी. प्रति. ३ उ १ सू १११, तन्दुल. सू १४-१५ पृ. ४०
कृष्ण का अपरकंका	६८१	३	२८०	ठा. १० उ. ३ सू ७७७, प्रव द्वा. १३८ गा ८८६
गमन (आश्चर्य)				
कृष्ण का अपरकंकागमन	६००	५	४६६	झा. अ १६
४ कृष्णपात्तिक	८	१	७	भ रा १३ उ. १ सू. ४७०, ठा. २ उ २ सू ७६
५ कृष्णराजियाँ आठ	६१६	३	१३३	ठा. ८ उ. ३ सू ६२३, भ. ज. उ. ६ सू. २४२, प्रव द्वा. २१७ गा १४४१ सं १४६४
कृष्ण लेश्या	४७१	२	७३	उत्त अ. ३४ गा. २१-२२, वर्म भा. ४ गा. १३
कृष्णा रानी	६८६	३	३४१	मन व. ८ भ. ४
केवलज्ञान	३७५	१	३६१	ठा. ५ उ २ सू १६३, न सू १. कर्म. भा. १ गा. ४ व्याख्या
केवलज्ञान साकारोपयोग	७८६	४	२६८	पग प २६ सू ३१३
केवलज्ञानावरणीय	३७८	१	३६४	ठा. ५ उ ३ सू ४६४, वर्म भा १ गा १

१ वन्दना । २ प्रमथिन का एक भेद ।

लेने वाला । ४ अर्द्धगुरुत्वावर्तन से म

वाला जीव । ५

जैन

१ प्रतीया कृत्

मार में

व्यादि

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
केवलज्ञानी जिन	७४	१ ५३	ठा ३ उ ४ सू २२०
केवलदर्शन	१६६	१ १५८	ठा ४ सू ३६५, कर्म भा ४ गा १२
केवलदर्शन अनाकारोपयोग	७८६	४ २६६	पन्न प. २६ सू० ३१२
केवलि मरण	८७६	५ ३८४	सम १७, प्रव द्वा १५७ गा. १००७
केवलि लब्धि	६५४	६ २६३	प्रव द्वा २७० गा १४६३
केवलि समुद्घात	५४८	२ २६०	पन्न. प. ३६ सू ३३१, ठा. ७ उ ३ सू ५८६, द्रव्य लो स ३ पृ. १२५, प्रव द्वा २३१ गा १३११
केवली के दस अनुत्तर	६५५	३ २२३	ठा १० उ ३ सू ७६३
केवली के परिषद सहन	३३२	१ ३४२	ठा० ५ उ० १ सू० ४०६
करने के पांच स्थान			
केवली के पांच अनुत्तर	३७६	१ ३६१	ठा० ५ उ० १ सू० ४१०
केवली जानने के ७ स्थान	५२४	२ २६१	ठा० ७ उ० ३ सू० ५५०
केवली प्ररूपित धर्म मांगलिक	१२६ क १	६५	आव ह अ ४ पृ. ५६६
लोकोत्तम और शरणरूप है			
केसवाणिज्जे कर्मादान	८६०	५ १४५	उपा. अ १ सू. ७, भ श ८ उ. ५ सू ३३०, आव. ह अ ६ पृ ८२८
कोङ्कणदारक का दृष्टान्त	७८०	४ २४८	आव. ह गा १३४, वृ नि गा० १७२ पीठिका
भाव अननुयोग पर			
कोणिक की विशाला	६१५	६ ११७	उत्त (क) अ १ गा ३ टी., निर अ. १, न. सू. २७ गा. ७४, आव ह नि गा. ६५१
नगरी जीतने की कथा			
कोष्ठक बुद्धि लब्धि	६५४	६ २६६	प्रव द्वा २७० गा १४६४
१ कौकुचिक	४४४	२ ४७	ठा ६ उ ३ सू ५२६, वृ (जी) उ ६

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
कौतुक	४०४ १ ४३१	उत्त अ ३६ गा २६२, प्रव द्वा ७३ गा० ६४४
कौतुक भृतिकर्म आदि	३४७ १ ३६०	आव ह अ ३ निगा ११०१
का स्वरूप		पृ ११६, प्रव. द्वा २ गा. ११५-११६
१ कौतुकच्य	४०२ १ ४२६	उत्त म. ३६ गा २६१, प्रव द्वा ७३ गा० ६४४
कौशल्य	८७५ ५ २६८	त्रि० प० पर्व ७
क्या एकलविहार शास्त्र	६१८ ६ १४२	पृ पीठिसागा ६८८-७०० टी., ठा ८३ ३ सू० ४६६
सम्मत है ?		
क्या पृथ्वी के जीव अठा-	६८३ ७ १२२	भ ज. १६ उ. ३ सू ६४०
रह पाप का सेवन करते हैं?		
क्या सभी मनुष्य एकमी	६८३ ७ १२१	भ० ज० १ उ० २ सू० २१
क्रिया वाले होते हैं ?		
क्रिया की व्याख्या और	२६२ १ २७६	ठा. ३ उ. १ सू. ६०, ठा. ४ उ० सू ४१६, प्रव. २ सू २७६
उसके पाँच भेद		
क्रिया के पाँच भेद	२६३ १ २७७	ठा. ३ उ. १ सू ६०, ठा. ४ उ० सू ४१६, प्रव. २ सू २७६
क्रिया के पाँच भेद	२६४ १ २७६	ठा ३ उ १ सू ६०, ठा. ४ उ सू. ४१६, आ. प्र म. १ पृ ६१०
क्रिया के पाँच भेद	२६५ १ २८०	ठा ३ उ. १ सू ६०, ठा. ४ उ सू ४१६, याव. प्र म ४७ ६१३
क्रिया के पाँच भेद	२६६ १ २८२	ठा ३ उ १ सू ६०, ठा. ४ उ. सू. ४१६, याव. प्र म. ४७ ६१३, ७ निगा ११८३

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
क्रिया पचीस	६४०	६	२१८	ठा. २ उ. १ सू. ६०, ठा ५ उ २ सू. ४१६, आव ह अ ४ पृ ६११
क्रियारहित ज्ञान पर ४ गाथा	६६४	७	१६२	
क्रिया रुचि	६६३	३	३६३	उत्त अ २८ गा २५
क्रियावादी	१६२	१	१५०	आचा० अ० १ उ० १ सू० ५
क्रियावादी की व्याख्या	१६१	१	१४४	भ श ३० उ १ सू. ८२४ टी.,
और उसके १८० भेद				आचा. अ १ उ १ सू ३, सूय अ १२
क्रियास्थान तेरह	८१४	४	३६२	सूय धु २ अ. २ सू १६ से २६
१ क्रीत दोष	८६५	५	१६३	प्रव द्वा. ६७ गा ५६५, ध अधि. ३ श्लो ०२ पृ ३८, पि नि. गा ६२, पि वि गा ३, पचा १३ गा ५
क्रीड़ा अवस्था	६७८	३	२६७	ठा. १० उ ३ सू ७७२
क्रोध आदि की शांति के	८१८	४	४०२	आद्ध प्रका० २ पृ० ४३५
तेरह उपाय				
क्रोध कषाय के दस नाम	७०२	३	३७४	सम० ५२
क्रोध के चार भेद और	१५६	१	१२०	पन्न प. १४ सू. १८८, ठा ४ सू २४६, २६३ टी, कर्म भा. १ गा. १६
उनकी उपमाएं				
क्रोध दोष	८६६	५	१६५	प्रव गा ५६७, ध अधि ३ श्लो २ २ टी पृ ४०, पि नि गा. ४०८, पि वि गा ५८, पचा १३ गा १८
क्रोध निःसृत असत्य	७००	३	३७१	ठा १० सू ७४१, पन्न प ११ सू १६५, ध अधि. ३ श्लो. ४१ पृ १२२
क्रोध संज्ञा	७१२	३	३८७	ठा १० उ ३ सू ७५२, भ. श ७ उ० ८ सू० २६६

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
क्रोधादि उत्पत्ति के ४ स्थान	१६५	१	१२४	टा० ४ उ० १ सू० २४६
क्रोधादि के चार प्रकार	१६४	१	१२३	टा० ४ उ० १ सू० २४६
क्लेश दस	७१४	३	३८८	टा० १० उ० ३ सू० ७३६
क्षपक की पारिणामिकी	६१५	६	८८	न.सू. २७ गा. ७३, प्राव. ह. नि
बुद्धि की कथा				गा० ६५०
क्षपक भ्रेणी	८४७	५	८४	प्रव. द्वा ८६ गा. ६६४-६६६, कर्म. भा० २ गा० २
क्षपक भ्रेणी का वर्णन	५६	१	३६	विशे गा. १३१३, द्रव्यलो. म ३ रलो. १२१८-१२३४, कर्म भा २ गा. २, प्राव. म. गा. १२१-१२३
क्षमा	६६१	३	२३३	नव. गा. २३, सम. १०, शा. भा १ प्रक = (संवर भावना)
क्षमापना पर आठ गाथाएं	६६४	७	२५०	
क्षयोपशमप्रत्यय अवधिज्ञान	१३	१	११	टा० २ उ० १ सू० ७१
क्षान्ति	३५०	१	३६५	टा ६ सू. ३६६, ध. अधि. ३३ लो ४६५ १२७, प्रव. द्वा. ६६ गा. ६५४
क्षान्ति क्षमणता	७६३	३	४४५	टा. १० उ० ३ सू. ७५८
क्षायिक और औपशमिक	६८३	७	११७	म० शा० १८०३ सू. ३७ टी.
सम्यक्त्व में क्या अन्तर है?				
क्षायिक भाव की व्याख्या	३८७	१	४०८	कर्म. भा. ४ गा ६५, अनु. म. १२६, प्रव. द्वा. २२१ गा० १२६१
और उसके नौ भेद				
क्षायिक समकित	८०	१	५६	प्रव. द्वा १६६ गा ६४४, कर्म. भा० १ गा० १६
क्षायिक समकित	२८२	१	२६३	कर्म० भा० १ गा १६
क्षयोपशमिक भाव की व्या-	३८७	१	४०८	कर्म. भा. ४ गा ६५, अनु. मृ १२६, प्रव. द्वा. २२१ गा. १२६२
ख्या और उसके १८ भेद				

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
ज्ञायोपशमिक समकित	८०	१ ५६	प्रव द्वा. १४६ गा ६४४, कर्म भा० १ गा० १५
ज्ञायोपशमिक समकित	२८२	१ २६२	कर्म० भा० १ गा० १५
जीणकषायवीतराग	८४७	५ ८४	कर्म० भा० २ गा० २
छद्मस्थ गुणस्थान			
जीरमधुसर्पिराश्रवलब्धि	६५४	६ २६५	प्रव द्वा २७० गा १४६४
क्षुद्र प्राणी छः	४६७	२ ६७	ठा. ६ उ. ३ सू ५१३
क्षुल्लक की कथा औत्प-	६४६	६ २६७	न०सू० २७ गा० ६३ टी.
त्तिकी वृद्धि पर			
क्षुल्लक निर्ग्रन्थीय अध्ययन	८६७	५ ४१६	उत्त० अ० ६
की अठारह गाथाएं			
क्षेत्र	२१०	१ १८६	न्याय प्र अध्या ७, रत्ना. परि० ४ सू० १५ टी०
क्षेत्रपरिमाण के तेईस भेद	६२५	६ १७३	अनु.सू. १३३ पृ १६०-१६२, प्रव द्वा २६४ गा १३६१ टी.
क्षेत्र पत्न्योपम (सूक्ष्म,	१०८	१ ७७	अनु. सू १४०, प्रव द्वा. १५८ गा० १०२६
व्यवहारिक)			
क्षेत्र पुद्गल परावर्तन सूक्ष्म	६१८	३ १३८	कर्म. भा ५ गा ८६-८८
और वादर का स्वरूप			
क्षेत्र प्रत्युपेक्षणा	४५६	२ ६०	ठा० ६ उ० ३ सू० ५०२
क्षेत्र वास्तु आदि ६ परिग्रह	६४०	३ २११	आव. ह अ ६ पृ. ८२५
क्षेत्र सागरोपम	१०६	१ ७८	अनु.सू १४०, प्रव.द्वा. १५६ गा १०३१-१०३२
क्षेत्रानुपूर्वी	७१७	३ ३६१	अनु सू० ७१
क्षेत्रार्थ	७८५	४ २६६	वृत् १ नि गा. ३२६३

ख

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
खड्डग (गेंहे) की कथा पारि-	६१५	६	११६	न.सू. २७ गा. ७४, मा. ४.
णामिकी बुद्धि पर				नि. गा. ६४१
खण्ड भेद।	७५०	३	४३३	ठा. १०३, ३ सु. ११३ टी., १४.
				प. १३ टी. १८५
खर पृथ्वी	४६५	२	६६	जी. प्रति. ३ सु. १०१
खगवाटरपृथ्वी के	४०	भेद	६८७	७ १४५ प. ११५ १४
खिसित वचन	४५६	३	६२	ठा. ६७, ३ सु. २७ प्र. २१३
				गा. १३२१, सु. (जी.) ३६
खुड्डग (अंगूठी) की कथा	६४६	६	२५८	न. सू. २७ गा. १३ टी.
आत्मिकी बुद्धि पर				
खुले मुँह कही गई भाषा	६१८	६	१५०	भ. १६३ २ सु. ४३८
मावत्र होती है या निरवत्र?				
खेचर	४०६	१	४३६	प. १ सु. ३२, उत्त. ४, ३६
खेलापधि लब्धि	६५४	६	२६०	प्र. २७० गा. १४२
ख्याति	४६७	२	२२०	

ग

गंठी मुट्ठी (ग्रन्थि मुष्टि) आदि	५८६	३	४२	आ. ६ गा. १६ २७.
पञ्चकत्वाण के आठ संकेत				प्र. ४. ४ गा. २००
गच्छ प्रतिपद्य यथालन्दिक	५२२	२	२६०	वि. ० गा. ७ टी.
गच्छ में आचार्य उपाध्याय	३४४	१	३५५	ठा. ४ ट. १ सु. ३६६
के पांच कलहस्थान				
गच्छाचार पड़णा	६८६	३	३५४	द. १०
गज की कथा आत्मिकी	६४६	६	२६४	न. सू. २७ गा. ६३ टी.
बुद्धि पर				

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
गजसुकुमाल की कथा	७७६	४	१६३	अतः व० ३ अ० ८
गण आठ	५६६	३	१०८	छ०, पिगल०
गण को धारण करने वाले	४५०	२	५४	अ० ६ उ० ३ सु० ४७४
के छः गुण				
गण ४ शुभ और ४ अशुभ	२१३	१	१६१	सरल पि०
गणधर अकम्पित स्वामी का	७७५	४	५२	विशे गा १८८५-१६०४
नरक विषयक शंका समाधान				
गणधर अग्नि भूति का कर्म	७७५	४	३१	विशे गा १६०६-१६४४
विषयक शंका समाधान				
गणधर अचल भ्राता का पुण्य	७७५	४	५४	विशे गा १६०५ से १६४८
पाप विषयक शंका समाधान				
* गणधर ऽपार्श्वनाथ के	५६५	३	३	ठा ८३ सू ६१७, सम. ८ टी
गणधर इन्द्र भूति का आत्मा	७७५	४	२४	विशे गा १५४६-१६०५
विषयक शंका समाधान				
गणधर ग्यारह	७७५	४	२३	विशे गा १५४६ से २०२४, सम ११, आवह नि गा ५६३-६५६, आवह टिप्पण पृ २८-३६
* गणधर दस भगवान्	५६५	३	३	ठा ८ सू ६१७ टी, मैम ८ टी, प्रथ
पार्श्वनाथ के				द्वा १५ गा ३३०, आवह नि गा २६८-२६९, सश द्वा १११
गणधर पदवी	५१३	२	२४०	ठा ३ उ ३ सू १७७ टी.
गणधर प्रभास स्वामी का	७७५	४	६०	विशे गा १६७३ से २०३०
मोक्ष विषयक शंका समाधान				

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
गणधरमंदिनस्वामी का बन्ध ७७५	४	४४		विशे. गा. १८०२-१८६३
मोक्षविषयक शंकासमाधान				
गणधरमेतार्यस्वामी का पर-७७५	४	५६		विशे. गा. १६४६-१६७१
लोकविषयक शंकासमाधान				
गणधर मौर्यपुत्र का देवों के ७७५	४	५०		विशे. गा. १८६४-१८८४
विषय में शंका समाधान				
गणधर लब्धि	६५४	६	२६३	प्रब. द्वा. २७० गा. १४६३
गणधरवाद संक्षेप में	७७५	४	२३	विशे. गा. १४४६-२०२४
गणधर वायुभूति का जीव ७७५	४	३४		विशे. गा. १६४६-१६८६
और शरीर के भेदाभेद				
विषयक शंकासमाधान				
गणधरग्वक्तस्वामीका पृथ्वी ७७५	४	३६		विशे. गा. १६८७-१७६६
आदि भूतों के अस्तित्व				
विषय में शंका समाधान				
गणधरसंख्या तीर्थङ्करों की ७७५	४	२३		आव. ह. नि. गा. २६६-२६६
गणधरसुधर्मास्वामी के, 'यहाँ ७७५	४	४०		विशे. गा. १७७०-१८०१
जो जैसा है परभव में वह वैसा				
ही रहता है, मत का समाधान				
गण धर्म	६६२	३	३६१	अ. १० उ. ३ सू. ७१०
गणना अनन्तक	४१७	१	४४१	अ. ४ उ. ३ सू. ४१०
गणनानुपूर्वी	७१७	३	३६१	अनु. सू. ७१
गणनासंख्या के तीन भेद ६१६	३	१४३		अनु. सू. १४६
गणेश भगवान् महावीर के ६२५	३	१७१		अ. ८ उ. ३ सू. ६८०
गणापक्रमण सान	५१५	२	२४४	अ. ७ उ. ३ सू. ४११

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
गणाभियोग आगार	४५५	२ ५६	उपा अ १ सू८, आवह अ. ६ पृ ८१०, ध अ धि २ श्लो २२ पृ ४१
गणावच्छेदक पदवी	५१३	२ २४०	ठा० ३ उ० ३ सू० १७७ टी
गणित निमित्त आदि सूक्ष्म	६४२	३ २१३	ठा० ६ उ० ३ सू० ६७६
वस्तुओं के ज्ञाता है नैपुणिक			
गणित योग्य काल परिमाण	६६८	७ २६३	अनुसू ११४, भ. श ६ उ ७ सू २४७
के छियालीस भेद			
गणितानुयोग	२११	१ १६०	दश० नि० गा० ३ पृ ३
गणिविज्ञा पइण्णा	६८६	३ ३५५	द० प०
गणि सम्पदा आठ	५७४	३ ११	दशाद ४, ठा ८ उ ३ सू ६०१
गणि पदवी	५१३	२ २४०	ठा० ३ उ० ३ सू० १७७ टी०
गत उत्सर्पिणी के २४ तीर्थंकर	६२७	६ १७६	प्रव द्वा ७ गा २८८-२६०
गत उत्सर्पिणी के ७ कुलंकर	५१२	२ २३६	ठा ७ उ० ३ सू ५५६, सम १५७
गत प्रत्यागता गोचरी	४४६	२ ५२	ठा. ६ उ. ३ सू ५१४, उत्त अ ३० गा १६, प्रव द्वा ६ उगा ७४५, ध अ धि ३ श्लो. २२ टी. पृ ३७
गतागत के अठारह द्वार	८८८	५ ३६८	पन्न प ६ के आधार से
गति की व्याख्या और भेद	१३१	१ ६६	पन्न प २३ उ. २ सू २६३, कर्म भा ४ गा. १०
गति दस	७२५	३ ४१३	ठा १० उ ३ सू ७४५
गति नाम निधत्तायु	४७३	२ ७६	भ श ६ उ ८, ठा. ६ उ ३ सू ५३६
गति परिणाम	७४६	३ ४२६	ठा १० सू ७१३, पन्न प १३
गति परिणाम	७५०	३ ४३२	ठा १० उ. ३ सू ७१३, पन्न. प. १३
गति पाँच	२७८	१ २५७	ठा. ५ उ. ३ सू. ४४२
गति प्रतिघात	४१६	१ ४४०	ठा. ५ उ. १ सू. ४०६

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
गति प्रत्यनीक	४४५	२ ४६	भ.ग. च.व. ८ सू. ३३२
गति मार्गणा और भेद	८४६	५ ५७	कर्म, भा. ४ गा. १०
गन्ध नारकियों का	५६०	२ ३३६	जी. प्रति ३ सू. ८७
गन्ध परिणाम	७५०	३ ४३३	ठा. १०३. ३ सू. ७१३, पत्र १३
गन्धर्व वाणव्यन्तर आठ	६१३	३ १२६	उत्तम २४, पत्र ३ सू. ८७
गमिक श्रुत	८२२	५ १०	न.सू. ४४, विशेष. गा. ६४६
गर्भ जन्म	६६	१ ४७	तत्त्वार्थ. अ. २ सू. ३२
गर्भहरण आश्चर्य	६८१	३ २७७	ठा. १०३. ३ सू. ७७७, पत्र ३ सू. १३८ गा. ८८६
गर्व के वारह नाम	७६०	४ २७५	भ.ग. १२३ ४ सू. ४४६
गर्ही पर कथा	५७६	३ ३४	आवृत्त ४ नि. गा. १२४८
गर्वेणैपणा	६३	१ ६७	उत्तम २४ गा. ११-१२
गर्वेणैपणा के सोलह	८६६	५ १६४	प्रव. द्वा. ६७ गा. ६६७-६६८, पत्र. ३ सू. १३०, पि. नि. गा. ४०८-४०९, पि. नि. गा. ६८-६९, पत्रा. १३ गा. १८-१९
उत्पादना दोष			अधि. ३३ लो. २२ टी. पृ. ६०, पि. नि. गा. ४०८-४०९, पि. नि. गा. ६८-६९, पत्रा. १३ गा. १८-१९
गर्वेणैपणा के सोलह	८६५	५ १६१	प्रव. द्वा. ६७ गा. ६६४-६६५, पत्र. ३ सू. १३०, पि. नि. गा. ४०८-४०९, पि. नि. गा. ६८-६९, पत्रा. १३ गा. १८-१९
उद्गम दोष			अधि. ३३ लो. २२ टी. पृ. ६०, पि. नि. गा. ४०८-४०९, पि. नि. गा. ६८-६९, पत्रा. १३ गा. १८-१९
गाथा अष्टाह उत्तराध्ययन	८६७	५ ४१६	उत्तम. अ. ६
सूत्र के छठे अध्ययन की			
गाथा (मूल) १८ उत्तराध्य-८६७	५ ४८५	उत्तम. अ. ६	
यन सूत्र के छठे अध्ययन की			
गाथा १८ दशवैकालिक	८६८	५ ४२०	दशम. सू. १
सूत्र की प्रथम चतुर्लिका की			

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
गाथा (मूल) १८ दशवैका-	८६८ ५ ४८७	दश० चु० १
लिकसूत्र प्रथमचूलिका की		
गाथा अड़तीस सूयगडांग	८८५ ७ १३६	सूय० अ ११
सूत्र के ११ वें मार्गाध्ययन की		
गाथा आठ आलोचना पर	८८४ ७ २४६	
गाथा आठ क्षमापना पर	८८४ ७ २५०	
गाथा आठ धर्म पर	८८४ ७ १५१	
गाथा आठ विजय पर	८८४ ७ १६८	
गाथा इक्कीस स्त्री परिज्ञा	८६३ ७ ८	सूय अ ४ ट. १
अध्ययन प्रथम उद्देशे की		
गाथा इक्कीस चरणविहि	८१७ ६ १३०	उत्त अ ३१
नामक अध्ययन की		
गाथा २१ सभिक्षु अ० की	८१६ ६ १२६	दश अ ३०
गाथा २६ वीरस्तुति अ० की	८५५ ६ २६६	सूय अ ६
गाथा ग्यारह अपरिग्रह पर	८८४ ७ १८१	
गाथा ग्यारह तप पर	८८४ ७ २०२	
गाथा ग्यारह दशवैकालिक	७७१ ४ ११	दश अ २
सूत्र के दूसरे अध्ययन की		
गाथा ग्यारह विनय पर	८८४ ७ १६५	
गाथा ४ आत्मचिन्तन पर	८८४ ७ २४८	
गाथा ४ क्रियारहितज्ञान पर	८८४ ७ १६२	
गाथा चार भ्रमरवृत्ति पर	८८४ ७ १८५	
गाथा चौदह सत्य पर	८८४ ७ १७२	
गाथा चौबीस विनय	८३३ ६ २०१	दश अ ६ उ २
समाधि अध्ययन की		

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
गाथा २४ ममाधि अध्ययन की	६३२ ६	१६७ सूय. शु. १ अ. १०
गाथा ३६ धर्माध्ययन की	६८१ ७	८७ सूय. शु. १ अ. ६
गाथा ६ आत्मा पर	६६४ ७	१५६
गाथा छः रतिअरति पर	६६४ ७	१६०
गाथा छः 'वमन किये हुणको	६६४ ७	१८६
ग्रहण न करना' विषय पर		
गाथा तीन निर्ग्रन्थ प्रवचन	६६४ ७	१५५
महिमा पर		
गाथा तीन यतना पर	६६४ ७	१६५
गाथा २३ आचारांग नवें	६२२ ६	१६६ आचा. शु. १ अ. ६ उ. १
अध्ययन प्रथम उद्देशे की		
गाथा तेईस कपाय पर	६६४ ७	२३६
गाथा तेरह असंस्कृत	८१६ ४	४०६ उत अ. ४
अध्ययन की		
गाथा १० अशरण भाव पर	६६४ ७	२२२
गाथा दस जीवन की	६६४ ७	२२५
अस्थिरता पर		
गाथा दस 'पूजा प्रशंसा	६६४ ७	१६०
त्याग' पर		
गाथा दस प्रमाद पर	६६४ ७	२३१
गाथा दस राग द्वेष पर	६६४ ७	२३३
गाथा दस सम्यग्दर्शन पर	६६४ ७	१५८
गाथा दो व्यवहार निश्चय पर	६६४ ७	१६३
गाथा दो सच्चे त्यागी पर	६६४ ७	१८८

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
गाथा नौ अनासक्ति पर	६६४	७ २०५	
गाथा नौ कठोर वचन पर	६६४	७ २१४	
गाथा ६ नमस्कारमहिमा पर	६६४	७ १५३	
गाथा नौ मृगचर्या पर	६६४	७ १८६	
गाथा नौ शल्य पर	६६४	७ २४४	
गाथा पचीस नरकविभक्ति	६४१	६ २१६	सूय. अ. १ अ. ४ उ. २
अध्ययन के दूसरे उद्देशे की			
गाथा पन्द्रह अनाथता की	८५४	५ १३०	उत्त अ. २० गा. ३८-५२
गाथा १५ पूज्यता पर	८५३	५ १२७	दश अ. ६ उ. ३
गाथा १५ महानिर्ग्रन्थीय	८५४	५ १३०	उत्त अ. २० गा. ३८-५२
अध्ययन की			
गाथा पन्द्रह मोक्ष मार्ग पर	६६४	७ १६४	
गाथा पन्द्रह विनयसमाधि	८५३	५ १२७	दश अ. ६ उ. ३
अध्ययन के तीसरे उद्देशे की			
गाथा पाँच अर्चौर्य पर	६६४	७ १७६	
गाथा ५ कर्मों की सफलता पर	६६४	७ २१६	
गाथा ५ रात्रिभोजन त्याग की	६६४	७ १८४	
गाथा ४ ५ यज्ञीयाध्ययन की	६६६	७ २५४	उत्त अ. २५
गाथा वत्तीस अकाम मर-	६७२	७ ४६	उत्त अ. ५
णीय अध्ययन की			
गाथा ३२ बहुश्रुत पूजा अ० की	६७३	७ ५१	उत्त अ. ११
गाथा वत्तीस वैतालीय	६७४	७ ५६	सूय. अ. ७ उ. २
अध्ययन के दूसरे उ० की			
गाथा बारह जैन साधु के	७८१	४ २५५	उत्त अ. २१ गा. १३-२४
लिए मार्ग प्रदर्शक			

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
गाथा वारह दशवैकालिक ८११	४	३५२	दश अ ४ गा. १४ २४	
सूत्र के चौथे अध्ययन की				
गाथा वारह वैराग्य पर ६६४	७	२२८		
गाथा १२ समुद्रपालीय अ० की ७८१	४	२५५	उत्त अ २१ गा. १३.२५	
गाथा २० चतुरंगीय अ. की ६०६	६	२६	उत्त अ. ३	
गाथा २७ ग्रन्थाध्ययन की ६४६	६	२३०	सूय ध्रु १ अ. १४	
गाथा २७ नरयविभक्ति ६४७	६	२३६	सूय ध्रु १ अ. ५ उ १	
अध्ययन के पहले उद्देशे की				
गाथा १७ अहिंसा-दया पर ६६४	७	१६७		
गाथा सत्रह उपधानश्रुत ८७८	५	३८०	माना ध्रु १ अ. ६ उ १	
अध्ययन के चौथे उ० की				
गाथा सत्रह भगवान् महा- ८७८	५	३८०	आवा ध्रु. १ अ. ६ उ ४	
वीर की तपश्चर्या विषयक				
गाथा सत्रह विनय समाधि ८७७	५	३७७	दश अ. ६ उ. १	
अध्ययन के प्रथम उ० की				
गाथा ७ जीभ के संयम पर ६६४	७	२१२		
गाथा सात तृष्णा पर ६६४	७	२४२		
गाथा सात दान पर ६६४	७	२००		
गाथा सात विनय समाधि ५५३	२	२६३	ज्ज म. - उ ४	
अध्ययन के चौथे उ० की				
गाथा सात सम्यग्ज्ञान पर ६६४	७	१६०		
गाथा ३७ द्रुमपत्रक अ० की ६८४	७	१३३	उत्त म १०	
गाथा सोलह उपधानश्रुत ८७४	५	१८२	माना ध्रु. १ म. ६ उ. २	
अध्ययन के उ० २ की				

विषय बोल भाग पृष्ठ प्रमाण

गाथा १६ आत्मदमन पर ६६४ ७ २०७

गाथा सोलह उत्तराध्ययन ८६२ ५ १५२ उत्त अ १५

सूत्र के सभिकखु अ० की

गाथा सोलह कामभोगों ६६४ ७ २१८

की असारता पर

गाथा १६ दशवैकालिक सूत्र ८६१ ५ १४७ दश च २

की दूसरी चूलिका की

गाथा १६ बहुश्रुत उपमा की ८६३ ५ १५५ उत्त अ. ११ गा १५-३०

गाथा सोलह महावीर की ८७४ ५ १८२ आचा श्रु १ अ. ६ उ २

वसति विषयक

गाथा सोलह शील पर ६६४ ७ १७७

❀ गान्धार ग्राम की सात ५४० २ २७३ अनुसू १२ गा ४१-४२ पृ.

मूर्खनाएं

१३०, ठा ७ उ ३ सू ५५३

❀ जैन सिद्धान्त बोल संग्रह भाग २ पृष्ठ २७३ पर गान्धार ग्राम की जो सात मूर्खनाएँ कपी हैं वे सगीतशास्त्र नामक ग्रंथ में ली हुई हैं । अनुयोगद्वारा तथा स्थानाग सूत्र में गान्धार ग्राम की मूर्खनाओं के नाम दूसरी तरह दिये हैं । इनकी गाथा इस प्रकार है —

नदी अ खुदिआ पूरिमा य चवत्थी अ सुद्धगंधारा ।

उत्तरगंधारा वि य सा पंचमिआ हवइ मुच्छा ॥ १ ॥

सुट्ठुतरमायामा सा छट्ठी सव्वओ य णायव्वा ।

अह उत्तरायया कोटिमा य सा सत्तमी मुच्छा ॥ २ ॥

अर्थ—(१) नदी (२) चुद्रिका (३) पूरिमा (४) शुद्धगान्धारा (५) उत्तरगान्धारा (६) सुट्ठुतरमायामा (७) उत्तरायवकोटिमा ।

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
गान्धार स्वर	५४० २ २७१	अनु सू १२७गा. २१५ १२७, ठा ७ उ. ३ सू ६६३
गाय और बछड़े का दृष्टान्त ७८०	४ २३६	आव. द. गा १३३ पृ. ८८, पृ पीठिका नि गा १७१
द्रव्य अननुयोग पर		
गारवसीव्याख्या और भेद	६८ १ ७०	ठा ३ उ ४ सू २१६
गिद्धपट्टमरण	७६८ ४ २६६	म. श. २ उ १ सू. ६१
गिद्धपिष्टमरण	८७६ ५ ३८४	सम १७, प्र. द्वा. १६७ गा १००७
गिरिपडण मरण	७६८ ४ २६६	म. श. २ उ. १ सू ६१
गिहन्थ संसहेण आगार	५८८ ३ ४२	आव. द. म ६ पृ ८६६, प्र. द्वा. ४ गा. २०४
आयम्बिल का		
गुण	४६ १ २८	उत्त अ २८ गा ६, तत्त्वार्थ अध्या ४ सू ४०
गुण २८ अनुयोग देने वाले के ६५२	६ २८६	वृषीठिका नि गा. २४१-२६६
गुण आठ आलीयणा	५७६ ३ १६	ठा ८ उ ३ सू ६०४, म. श. २४ उ ७ सू ७६६
करने वाले के		
गुण आठ आलीयणा देने ५७५	३ १५	ठा. ८ उ ३ सू ६०४, म. श. २४ उ. ७ सू. ७६६
वाले के		
गुण ८ एकलविहार प्रतिमा के ५८६	३ ३६	ठा. ८ उ ३ सू ६०४
गुण आठ शिखा शील के ५८४	३ ३८	उत्त अ ११ गा. ४-४
गुण ८ सिद्ध भगवान् के ५६७	३ ४	अनुसू १२१. पृ. ११४, सम ३१, प्र. द्वा. २७६ गा. १४६ उ ८६ पचा १४ गा. ३२-६६
गुण आठ से साधु और सोने ५७१	३ ६	
की समानता		
गुण इकतीस सिद्ध भग-	६६१ ७ २	उत्त अ. ३१ गा २०३, प्र. द्वा. ८०६ गा. १४६ उ-१४६४, सम ३१, नाव. द. म ४२१. ६२, आ. गा. ५१ म. २ उ. ६ सू १००
वान् के दो प्रकार से		

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
गुण इक्कीस श्रावक के	६११ ६ ६१	प्रव. द्वा २३६ गा. १३६६- १३६८, ध अधि १५लो. २० पृ २८
गुण के दो प्रकार से दो भेद ५५ १ ३२		सूय अ १४ नि गा. १२६, पचा ६ गा २टी, द्रव्य त अ ६ या. १२
गुण छः गण को धारण ४५० २ ५४		ठा. ६ उ ३ सू. ४७५
करने वाले के		
गुण छः श्रावक के ४५२ २ ५६		धर प्रक गा ३३ पृ ८२
गुण ३६ आचार्य महाराज के ६८२ ७ ६४		प्रव द्वा ६४ गा ६४१-६४६
गुण दस आलोचना करने ६७० ३ २५८		म. श २५ उ. ७ सू ७६६,
योग्य साधु के		ठा. १० उ. ३ सू ७३३
गुण दस आलोचना देने ६७१ ३ २५६		म श २५ उ ७ सू ७६६,
योग्य साधु के		ठा १० उ ३ सू ७३३
गुण पचीस उपाध्याय के ६३७ ६ २१५		प्रव द्वा ६६-६७ गा ५६२-५६६, ध. अधि ३३लो ४६-४७ पृ १३०
गुण १५ दीक्षा देने वाले गुरु के ८५१ ५ १२४		ध अधि ३३लो. ८०-८४ पृ ७
गुण पैंतीस गृहस्थ धर्म के ६८० ७ ७४		यो प्रका. १३लो ४७-५६ पृ ५०
गुण प्रकाश के चार स्थान २५६ १ २४४		ठा ४ उ ४ सू ३७०
गुण १२ अरिहन्त देव के ७८२ ४ २६०		सम. ३४, म श द्वा. ६६, स्या का १
गुण रत्न संवत्सर तप ७७६ ४ २००		अत व ६ अ १५
गुण लोप के चार स्थान २५८ १ २४३		ठा. ४ उ ४ सू ३७०
गुण व्रत की व्याख्या, भेद १२८ क १ ६१		भाव द्वा. अ ६ पृ ८२६-८२६
गुण व्रत तीन	४६७ २ २००	
गुण भ्रेणी	८४७ ५ ७६	कर्म भा २ गा. २
गुण संक्रमण	८४७ ५ ७६	कर्म भा. २ गा. २

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
गुण सत्ताईस साधु के	६४५ ६ २२८	सम २७, उत्त.म ३१गा १८, आव २ अ ४ पृ ६४६
गुण सत्रह श्रावक के	८८३ ५ ३६२	ध अवि. २ ग्लो २० टी पृ. १८
गुण १६ दीक्षा लेने वाले के	८६४ ५ १५८	ध अवि. ३ ग्लो ७३-७८ पृ १
गुणस्थान	४६७ २ २०६	
गुणस्थान का सामान्य स्वरूप	८४७ ५ ६८	कर्म भा २, ४, प्रव द्वा २२१ गा १३०२
गुणस्थान चौदह	८४७ ५ ६३	कर्म. भा २, ४, प्रव द्वा २२१ गा १३०२, गुण थो.
गुणस्थानों में अट्ठाईस द्वार	८४७ ५ १०५	गुण थो
गुणस्थानों में अन्तर द्वार	८४७ ५ ११२	गुण थो
गुणस्थानों में अल्पवहुत्व द्वार	८४७ ५ ११३	गुण. थो, कर्म भा २ गा १२
गुणस्थानों में आत्म द्वार	८४७ ५ १०८	गुण थो.
गुणस्थानों में उपयोग द्वार	८४७ ५ १०६	गुण थो
गुणस्थानों में कर्म प्रकृतियों	८४७ ५ ६४	कर्म भा. २ गा. १३-२२
का उदयाधिकार		
गुणस्थानों में कर्म प्रकृतियों	८४७ ५ ६८	कर्म. भा २ गा २१-२६
का उदीरणाधिकार		
गुणस्थानों में कर्म प्रकृतियों	८४७ ५ ८८	कर्म भा २ गा २१-२२
का वन्धाधिकार		
गुणस्थानों में कर्म प्रकृतियों	८४७ ५ ६६	कर्म भा २ गा २१-३६
का सत्ताधिकार		
गुणस्थानों में कारण द्वार	८४७ ५ १०७	गुण थो.
गुणस्थानों में क्रिया द्वार	८४७ ५ १०६	गुण थो

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
गुणस्थानों में गुण द्वार	८४७	५ १०८	गुण थो.
गुणस्थानों में चारित्र्य द्वार	८४७	५ ११२	गुण थो.
गुणस्थानों में जीव द्वार	८४७	५ १०८	गुण थो
गुणों में जीव योनि द्वार	८४७	५ १११	गुण थो.
गुणस्थानों में दण्डक द्वार	८४७	५ १११	गुण थो.
गुणस्थानों में ध्यान द्वार	८४७	५ १११	गुण थो
गुणस्थानों में निमित्त द्वार	८४७	५ ११२	गुण थो.
गुणस्थानों में निर्जरा द्वार	८४७	५ १०६	गुण थो.
गुणस्थानों में परिषद द्वार	८४७	५ १०७	गुण थो
गुणस्थानों में भाव द्वार	८४७	५ १०७	गुण थो
गुणस्थानों में मार्गणा द्वार	८४७	५ ११०	गुण थो
गुणस्थानों में योग द्वार	८४७	५ १०६	गुण थो.
गुणस्थानों में लेश्या द्वार	८४७	५ १०६	गुण थो
गुणस्थानों में समकित द्वार	८४७	५ ११२	गुण थो
गुणस्थानों में स्थिति द्वार	८४७	५ १०५	गुण थो
गुणस्थानों में हेतु द्वार	८४७	५ ११०	गुण थो.
गुप्ति	२२	१ १६	उत्त अ २४ गा २
गुप्ति की व्याख्या और भेद	१२८	ख १ ६२	उत्त अ २४ गा २०-२६, ठा ३ उ १ सू १२६
गुरु	६३	१ ४४	यो. प्रका २ श्लो. ८
गुरु निग्रह आगार	४५५	२ ५६	उपा अ १ सू ८, भाव ह. अ. ६ पृ ८१०, ध अ धि २ श्लो २२ पृ ४१
गुरु प्रत्यनीक	४४५	२ ४६	म श ८ उ ८ सू ३३६
गुर्वभ्युत्थान आगार	५१७	२ २४७	भाव ह. अ. ६ पृ ८३, प्रव. द्वा ४ गा १२०६

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
गृहपति अवग्रह	३३४	१	३४५	भ.न. १६८.२सू. ५६७, भा.ता. शु.२ चू. १५७ उ.२सू. १६२, प्रव. द्वा. ८४ गा. ६=१
गृह संकेत पञ्चकखाण	५८६	३	४३	भा.त. भा. ६नि. गा. १५७८, प्रव. द्वा. ४ गा. २००
गृहस्थ धर्म के पैतीस गुण	६८०	७	७४	यो.प्रका. १५०. ४७-२६५ ४=
गृहस्थलिंग सिद्ध	८४६	५	११६	पत्र प. १ सू. ७
गृहस्थ वचन	४५६	२	६२	टा. ६८. ३सू. ४२७, प्रव. द्वा. २३४ गा. १३२१, चू. (जी.) उ. ६
गंडे की कथा पारि- णामिकी बुद्धि पर	६१५	६	११६	नं.सू. २७ गा. ७८, भा.त. द. गा. ६५१
गैरुक्त श्रमण	३७२	१	३८७	प्रव. द्वा. ६४ गा. ७३१
गोचरी के छः प्रकार	४४६	२	५१	टा. ६८. ३सू. ४१४, उत्त. भा. ३० गा. १६, प्रव. द्वा. ६७ गा. ७४६, भ. भा. नि. ३ श्लो. २० टी. पृ. ३७
गोत्र कर्म और उसके भेद	५६०	३	७६	पत्र. प. २३सू. २६३, कर्म भा. १
गोत्रकर्मका अनुभाव	५६०	३	८०	पत्र. प. २३ सू. २६२
गोत्र कर्म के यन्त्र के कारण	५६०	३	८०	भ. न. ८८८ सू. ३६१
गोत्र नरकों के	५६०	२	३१५	जी. प्रति. ३सू. ६७, प्रव. द्वा. १७० गा. १०७०
गोनिषत्रिका	३५८	१	३७२	टा. ६८. १ सू. २६१ टी., ४००
गोमूत्रिका गोचरी	४४६	२	५१	टा. ६८. ३सू. ४१४, उत्त. भा. ३० गा. १६, प्रव. द्वा. ६७ गा. ७४६, भ. भा. नि. ३ श्लो. २० टी. पृ. ३७
गोमूत्र (लाग्य की गोली) की कथा और तत्त्विकी बुद्धि पर	६४६	६	२६६	न. सू. २७ गा. १३ टी.

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
गोशालक के श्रमणोपासक	७६३	४ २७६	भ श ८८५ सू ३३०
गोष्ठामाहिल सातवां निद्रव	५६१	२ ३८४	विशे. गा २५०६ से २५४६
गौण	३८	१ २४	तत्त्वार्थ अध्या ५ सू ३१
गौण आदि दस नाम	७१६	३ ३६५	अनु सू १३०
गौण नाम	७१६	३ ३६५	अनु सू १३०
गौरव की व्याख्या व भेद	६८	१ ७०	ठा ३८.४ सू २१५
गौरव दान	७६८	३ ४५२	ठा. १० उ ३ सू ७४५
ग्यारह अंग सूत्र	७७६	४ ६६	
ग्यारह उपासक पद्धिमापं	७७४	४ १८	दशा द ६, सम ११
ग्यारह गणधर	७७५	४ २३	विशे गा १५४६-२०२४, सम ११, आव ह टिप्पण पृ २८-३५, आव ह नि गा ६६३-६४१
ग्यारह गाथा दशवैकालिक	७७१	४ ११	दश अ २
सूत्र के दूसरे अध्ययन की			
ग्यारह दुर्लभ	७७२	४ १७	आव ह नि गा ८३१ पृ ३४१
ग्यारह नाम महावीर के	७७०	४ ३	जैन विद्या बोल्यूस १ न. १
ग्यारह बोल आरंभ परिग्रह	४६	१ २६	ठा. २ उ १ सू ६५
छोड़ने पर प्राप्त होते हैं			
ग्यारह बोल आरंभ परिग्रह	७७३	४ १७	ठा २ उ. १ सू ६४
छोड़े बिना प्राप्त नहीं होते			
ग्रन्थाध्ययन की २७ गाथाएं	६४६	६ २३०	सूय अ १६
ग्रन्थि संकेत पञ्चखाण	५८६	३ ४३	आव ह अ ६ नि गा १४७८, प्रव द्वा. ४ गा २००
ग्रहणौषणा	६३	१ ६७	उत्त अ २४ गा ११-१२

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
१ ग्रहणैपणा के दस दोष ६६३	३	२४२	प्रव. द्वा. ६७ गा. ४६८, वि. नि. गा. ४२०, ध. मधि ३ ग्लो. २२ टी. पृ. ४१, पचा. १३ गा. २६	
ग्राम धर्म	६६२	३	३६१	अ. १० उ. ३ सू. ७६०
ग्राम नगर आदि दस धर्म ६६२	३	३६१	अ. १० उ. ३ सू. ७६०	
ग्रामादि सोलह स्थान साधु ८६७	५	१६६	वृ. उ. १ सू. ६	
के लिए कल्पनीय				
ग्रामेयक (ग्रामीण) का दृष्टान्त ७८०	४	२४५	माव. ह. नि. गा. १२३ पृ. ८८, वृ. पीठिका नि. गा. १७१	
वचन अननुयोग पर			उत्त. म. २४ गा. ११-१२	
ग्रामैपणा (परिभोगैपणा) ६३	१	६७	ध. मधि ३ ग्लो. २३ टी. पृ. ४४, वि. नि. गा. ६३४-६६८, उत्त. म. २४ गा. १२ टी., उत्त. म. २६ गा. ३२ टी.	
ग्रामैपणा के पाँच दोष ३३०	१	३३६	प्रव. द्वा. ७१ गा. ६२६ ६३६, नवपद गा. १२६ पृ. ३१६	
ग्लान प्रतिचारी बारह	७६७	४	२६७	त्रु. नि. गा. १८७१, १८७२, १८७६, १८७८, म. ग. २४३. १
और अड़तालीस			सू. ८०२, उत्त. म. २६, २६, मो. गा. ४८, ४८, ६२, ६३३, ६३३	
ग्लान की सेवा करना साधु ८८३	७	१०८	प्रव. द्वा. ७१ गा. ६२६ ६३६, नवपद गा. १२३ पृ. ३१६	
के लिये आवश्यक है या				
उसकी इच्छा पर निर्भर है?				
ग्लान साधु की सेवा करने	७६७	४	२६७	
वाले बारह				

घ

घन तप	४७७	२	८८	उत्त. म. ३० गा. १०
घन संन्यास	७२१	३	४०६	अ. १० उ. ३ सू. ७७७

१. ग्रहणैपणा के दस दोषों में द्वादश 'दामक' दोष हैं, उसके नाश के भेद हैं।

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
घयण (भांड) की कथा	६४६ ६ २६५	न सु २७ गा ६३ टी
औत्पत्तिकी बुद्धि पर		
घाती कर्म	२७ १ १६	अष्ट ३० श्लो १
घ्राणेन्द्रिय	३६२ १ ४१८	पत्र प १५ सू १८१, अ १३३ सू ४४३, जै प्र

च

चउसरण पङ्गणा	६८६ ३ ३५३	द प
चैवालीर बोलस्थावरकी	६६५ ७ २५२	म श १६३३ सू ६५१
अवगाहनाकेअल्पबहुत्वके		
चक्रवर्तियों का वर्ण	७८३ ४ २६३	आव. ह नि गा ३६१
चक्रवर्तियों की अवगाहना	७८३ ४ २६३	आव. ह नि गा ३६२-३६३
चक्रवर्तियों की गति	७८३ ४ २६१	ठा २ उ ४ सू ११२
चक्रवर्तियों की प्रव्रज्या	७८३ ४ २६५	ठा १० उ ३ सू ७१८
चक्रवर्तियों की स्थिति	७८३ ४ २६३	आव ह नि गा ३६५-३६६
चक्रवर्तियों के ग्राम	७८३ ४ २६२	सम ६६
चक्रवर्तियों के जन्मस्थान	७८३ ४ २६२	सम १५८, आव ह अ १ नि गा ३६७-४००
चक्रवर्तियों के पिता के नाम	७८३ ४ २६२	
चक्रवर्तियों के स्त्री रत्न	७८३ ४ २६४	सम १५८
चक्रवर्ती	४३८ २ ४२	ठा ६ उ ३ सू ४६१, पत्र प १ सू ३७
चक्रवर्ती का काकिणीरत्न	७८३ ४ २६१	ठा ८ उ ३ सू ६३३
चक्रवर्ती का बल	७८३ ४ २६२	आव म गा ७३-७४ पृ ७८
चक्रवर्ती का भोजन	७८३ ४ २६१	ज वक्त २ सू २० टी
चक्रवर्ती का द्वार	७८३ ४ २६३	सम ६४
चक्रवर्ती की महानिधियां	६५४ ३ २२०	ठा ६ उ ३ सू ६७३

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
चक्रवर्ती की सन्तान	७८३	४	२६४	ही. प्रका. २, १३
चक्रवर्ती के एकेंद्रिय रत्न	७८३	४	२६३	डा. ७ उ. ३ सू. ६६८
चक्रवर्ती के एकेंद्रिय रत्न सात	५२८	२	२६५	डा. ७ उ. ३ सू. ६६८
चक्रवर्ती के चौदह रत्न	८२८	५	२०	सम. १४, डा. ७ उ. ३ सू. ६६८
चक्रवर्ती के पंचेन्द्रिय रत्न	७८३	४	२६३	डा. ७ उ. ३ सू. ६६८
चक्रवर्ती के पंचेन्द्रिय रत्न	५२८	२	२६५	डा. ७ उ. ३ सू. ६६८
चक्रवर्ती वारह	७८३	४	२६०	डा. सू. ११२, १४८, ६६३, सम. ६४, ६६, १४८, १४८, २ सू. २० टी. माव ह. म. १ गा. ३८२-४०१. त्रि. प. ही. प्रका. २, ३ पृ. १३, २०
चक्रवर्ती वारह आगामी	७८४	४	२६५	मम. १६६
उत्सर्पिणी के				
चक्रवर्ती लब्धि	६५४	६	२६४	प्रम. द्वा. २७० गा. १४६१
१ चक्रवाल श्रेणी	५४४	२	२८४	डा. ७ उ. ३ सू. ६६१, म. म. २४ उ. ३ सू. ७३०
चक्षुर्दर्शन	१६६	१	१५७	डा. सू. ३६६, म. भा. १ गा. १०
चक्षुर्दर्शन अनाकारोपयोग	७८६	४	२६८	मम. १. २६ सू. ३१२
चक्षुर्दर्शन की तरह श्रोत्रादि	६८३	७	१०६	म. न. १ उ. ३ सू. ३७ टी.
दर्शन क्यों नहीं कहे गये?				
चक्षुर्गिन्द्रिय	३६२	१	४१८	मम. १. १६ सू. १६१, डा. ५ उ. २ सू. ४४३, म. प्र.
चक्षुर्लोलुप	४४४	२	४८	डा. ६ उ. ३ सू. ६०२, पृ. (टी.) ३१
चण्डकौशिक सर्प की पारि-	६१५	६	११४	विष. प. १०, म. सू. ३७ गा. ७४. माव ह. नि. म. २६१
णामिकी बुद्धि पर क्या				

१ अन्तर्गन्धद्रव्यों की यह श्रेणी जिसके द्वारा प.माणु आदि वायु साध्य व्याप्त होते हैं।

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
१ चतुःस्पर्शी	६१	१ ४२	भ श १२ उ. ५ सू ४४०.
चतुरंगीयअ०की२०गाथा६०६	६	२६	उत्त अ. ३
चतुरस्र संस्थान	४६६	२ ६६	भ श. २५ उ ३ सू. ७२४, पत्र प. १
चतुर्थ भक्त प्रत्याख्यान	६१८	६ १४६	भ श २७ १ सू ६३, ठा ३ उ. ३
का कया मतलब है?			सू. १८२ टी, अंत. व. ८ अ १
चतुर्मासिकी भिक्षु पट्टिमा ७६५	४	२८६	सम. १२, भ. श २ उ. १ सू ६३ टी, दशा द. ७
चतुर्विंशतिस्तव आवश्यक ४७६	२	६१	आव. ह. अ २
चतुष्पद तिर्येच पंचेन्द्रिय २७१	१	२५०	ठा ४ उ ४ सू. ३५०
के चार भेद			
चन्दनवाला (वसुमती)	८७५	५ १९७	आव ह नि गा ५२०-५२१, नि ष पत्र १०, चन्दन
चन्द्र और सूर्यो की संख्या ७६६	४	३००	सूर्य प्रा. १६
चन्द्रगुप्त राजा के सोलह	८७३	५ १७८	व्यव. चू (हस्तलिखित)
स्वप्न फल सहित			
चन्द्रप्रज्ञप्ति सूत्र का वर्णन ७७७	४	२२८	
चन्द्रप्रमाण संवत्सर	४००	१ ४२५	ठा ५ उ ३ सू ४६०, प्रव द्वा. १४२ गा ६०१
चन्द्रमा का दृष्टान्त	६०५	५ ४५६	ज्ञा अ. १०
चन्द्र संवत्सर	४००	१ ४२७	ठा. ५ उ ३ सू ४६०, प्रव. द्वा. १४२ गा. ६०१
चन्द्रसूर्यावतरण आश्चर्य	६८१	३ २८४	[ठा. १० उ. ३ सू. ७७७, प्रव. द्वा. १३८ गा. ८८५, ८८६]
चमरोत्पात आश्चर्य	६८१	३ २८७	

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
चरण करणानुयोग	२११	१ १६०	दश. नि. मा. ३ पृ ३
चरणविहितअ०षी२१गाथा६१७	६	१३०	उत्त. अ. ३१
चरणममृति (चरण मत्तमि) के मत्तर बोल	६३७	६ २१६	प्र. हा. ११ गा. ४४२-४६६, ध. अ. वि. ३२ लो. ६७२ १३०
चरणादन का हट्टान्त पारि- णामिकी वृद्धि पर	६१५	६ ११२	न. म. २३ गा. ७४, भा. व. द. नि. गा. ६५१
चरमशरीरीको प्राप्त १७वाते ८६६	५	३६५	ध. वि. प्र. अ. ८, ४८४-४८८
चरम गमय निर्ग्रन्थ	३७०	१ ३८५	अ. १ उ. ३ सू. ६८४
चरमाचरम के चौदह बोल ८४३	५	४२	म. ग. १८ उ. १ सू. ११
चरिम पञ्चकवाण	७०५	३ ३८०	प्र. हा. ११ गा. २०१, ५ गा. ११, आ. व. द. अ. ६ नि. मा. १३६५
चाणक्य की पारिणामिकी वृद्धि की कथा	६१५	६ ६४	भा. व. द. नि. मा. ६०, न. म. २३ गा. ७३
चार अनुपेक्षा धर्मध्यानकी २२३	१	२०७	{ हा. १८ गा. २४७, अ. ग. २०, उ. अ. ८०८, ३२ सू. २० गा. १ ४, अ. ११ ध्याननगर गा. ६४, ८०
चार अनुपेक्षा शुक्लध्यानकी २२८	१	२१२	
चार अन्त क्रियाएं	२५४	१ २३७	हा. १३, १ सू. २३४
चार अवस्था कर्म की	२५३	१ २३७	धर्म. भा. २ गा. १, अ. ग. २०
चार आगार कार्यान्तर्गत ८०७	४	३१६	आ. व. द. म. ३ नि. मा. १५११
चार आलम्बन धर्मध्यानके २२२	१	२०६	{ हा. १८ गा. २४७, अ. ग. २०, २५३ गा. २४७, आ. व. द. म. ३ नि. मा. १५११
चार आलम्बन शुक्लध्यान २२७	१	२११	
को			
चार इन्द्रियां प्राप्यकारि २१४	१	१६३	न. म. ३३, अ. ग. २० सू. ३६

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
चार उपसर्ग	२३६	१ २१८	{ ठा ४३ ४सू ३६१, सूय शु १ अ ३ उ १ नि गा ४८
चार उपसर्गतिर्यश्चसंबन्धी	२४२	१ २१६	
चार उपसर्ग देव संबन्धी	२४०	१ २१६	
चार उपसर्गमनुष्यसंबन्धी	२४१	१ २१६	
चार उपाय कपाय जीतनेके	१६७	१ १२५	दश अ = गा ३६
चार कपाय	१५८	१ ११७	पत्र ५, १४, ठा. ४८ १ सू २४६, कर्म भा १ गा. १७-१८
चार कपाय की हानियां	१६६	१ १२५	दश अ = गा ३८
चार कपायों की अधिकता	१६३	१ १२३	
गति की अपेक्षा			
चार कारण ईर्यासमितिके	१८१	१ १३५	उत्त अ २४ गा ४८
चार कारण जीव, पुद्गलोंके	२६८	१ २४७	ठा० ४८० ३ सू० ३३७
लोक बाहर न जा सकने के			
चार कारण तिर्यश्चायु के	१३३	१ ६६	ठा० ४ उ० ४ सू० ३७३
चार कारण देव के, मनुष्य-	१३८	१ १०१	ठा० ४ उ० ३ सू ३२३
लोक में न आ सकने के			
चार कारण देवायु के	१३५	१ १००	ठा. ४ उ ४ सू ३७३
चार कारण नरकायु के	१३२	१ ६६	ठा. ४ उ. ४ सू ३७३
चार कारण मनुष्यायु के	१३४	१ १००	ठा ४ उ ४ सू सू ३७३
चार कारणों से आहार-	१४३	१ १०५	ठा ४ उ ४ सू ३६६, प्रव द्वा. १४६ गा ६२३ टी
संज्ञा उत्पन्न होती है			
चार कारणों से जीव, पुद्गल	२६८	१ २४७	ठा ४ उ ३ सू ३३७
लोक से बाहर नहीं जा सकते			
चार कारणों से परिग्रह-	१४६	१ १०६	ठा. ४ उ. ४ सू ३६६, प्रव द्वा १४६ गा. ६२३ टी.
संज्ञा उत्पन्न होती है			

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
चार कारणों से भयसंज्ञा उत्पन्न होती है	१४४	१	१०६	टा. ४८. ४ सू. ३६६, प्रव. द्वा. १४६ गा. ६०३ टी.
चार कारणों से मैथुनसंज्ञा उत्पन्न होती है	१४५	१	१०६	टा. ४ उ. ४ सू. ३६६, प्रव. द्वा. १४६ गा. ६०३ टी.
चार कारणों से साध्वी के साथ आलापसंलाप करता हुआ साधु निर्ग्रन्थाचार का अतिक्रमण नहीं करता	१८३	१	१३७	टा. ४ उ. २ सू. २६०
चार गति में चार संज्ञाओं का अन्वयबहुत्व	१४७	१	१०७	प्रव. प. ८ सू. १४८
चार छेद सूत्र	२०५	१	१८०	
१ चारण	४३८	२	४२	टा. ६ सू. ४२१, प्रव. प. १ सू. ३७
चारण लब्धि	६५४	६	२६२	प्रव. द्वा. २७० गा. १४६३
चार दानी में से चारों की उपमा से	१७५	१	१२६	टा. ४ उ. ४ सू. ३६६
चार देशकथा	१५१	१	१०६	टा. ४ उ. २ सू. २८३ टी.
चार दोष	२४४	१	२२१	पि. नि. गा. १८०, प्र. प. पि. १ खो. ४३ टी. सू. १३६
चार द्वार अनुयोग के	२०८	१	१८५	मनु सू. ६६
चार निक्षेप	२०६	१	१८६	मनु सू. १४०, त्यागप्र. प्रव. प. १
चार पक्षा	२७२	१	२५१	टा. ४ उ. ४ सू. ३६०
चार पृथक्पृथक् की कथा	६००	५	४४२	ग. म. ७
चार पुद्गल परिणाम	२६६	१	२४७	टा. ४ उ. २ सू. २६०
चार पृथक्पृथक् की उपमा से	१६६	१	१२६	टा. ४ उ. ३ सू. ३६०

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
चार पुरुष फूल की उपमासे १७१	१	१२७	ठा० ४ उ० ४ सू० ३२०
चार पुरुष मेघ की उपमा से १७३	१	१२७	ठा ४ उ० ४ सू० ३४६
चार पुरुषार्थ	१६४	१ १५१	पुरुषा.
चार प्रकार आत्म संवेद- नीय उपसर्ग के	२४३	१ २२०	ठा ४ उ० ४ सू० ३६१, सूय श्रु १ अ ३, उ १ नि गा ४=
चार प्रकार आर्त्तध्यान के	२१६	१ १६६	ठा ४ उ १ सू २४७, आव ह अ. ४ ध्यानशतक गा. ६-६
चार प्रकार का अनुयोग	२११	१ १६०	दश नि गा ३ पृ ३
चार प्रकार का असत्यवचन	२७०	१ २४६	दश. अ. ४ सू ४ टी.
चार प्रकार का आचारविनय	२३०	१ २१४	दशा द ४
चार प्रकार का उपकरणो-त्पादनता विनय	२३५	१ २१६	दशा. द० ४
चार प्रकार का उपक्रम	२४६	१ २३४	ठा० ४ उ० २ सू० २६६
चार प्रकार का काव्य	२१२	१ १६०	ठा० ४ उ० ४ सू० २७६
चार प्रकार का तिर्यश्च का आहार	२६१	१ २४५	ठा० ४ उ० ३ सू० ३४०
चार प्रकार का दान	१६७	१ १५६	ध० र० गा० ७० टी०
चार प्रकार का देव का आहार	२६३	१ २४६	ठा ४ उ ३ सू ३४०
चार प्रकार का दोष निर्घातन विनय	२३३	१ २१६	दशा० द० ४
चार प्रकार का धर्म	१६६	१ १५४	स० श० द्वा० १४१
चार प्रकार का नरक का आहार	२६०	१ २४४	ठा० ४ उ० ३ सू० ३४०
चार प्रकार का प्रायश्चित्त	२४५	क १ २२२	ठा० ४ उ० १ सू० २६३
चार प्रकार का बन्ध	२४७	१ २३१	ठा ४ सू २६६, कर्म भा १ गा. २

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
चार प्रकार का भारप्रत्य-२३८	१ २१८	दशा. द. ४
वरोहणता विनय		
चार प्रकार का मनुष्य का २६२	१ २४५	टा. ४ उ. ३ सू. ३८०
आहार		
चार प्रकार का मेघ १७४क	१ १२८	टा. ४ उ. ६ सू. ३८७
चार प्रकार का वर्ण संज्व-२३७	१ २१७	दशा. द. ८
लनता विनय		
चार प्रकार का विक्षेपणा २३२	१ २१५	दशा. द. ४
विनय		
चार प्रकार का श्रुत विनय २३१	१ २१५	दशा. द. ४
चार प्रकार का संक्रम २५०	१ २३५	टा. ४ सू. २६६, वर्मा. भा. २ गा. १
चार प्रकार का संयम १७६	१ १३४	टा. ४ उ. २ सू. ३१०
चार प्रकार का सहायता-२३६	१ २१७	दशा. द. ४
विनय		
चार प्रकार की दुःखशय्या २५५	१ २४०	टा. ४ उ. ३ सू. ३२४
चार प्रकार की भाषा २६६	१ २४८	पद्म. प. ११ सू. १६१
चार प्रकार की विनय- २३४	१ २१६	दशा. द. ४
प्रतिपत्ति		
चार प्रकार के प्रव्रजित पुरुष १७६	१ १३०	टा. ४ उ. ३ सू. ३२४
चार प्रकार के शूर पुरुष १६३	१ १५०	टा. ४ उ. ३ सू. ३१७
चार प्रकार के श्रावक १८४	१ १३८	टा. ४ उ. ३ सू. ३२१
चार प्रकार क्रोध के १६४	१ १२३	टा. ४ उ. १ सू. २६६
चार प्रकार तीर्थ के १७७	१ १३०	टा. ४ उ. ४ सू. ३६३
चार प्रकार फूल के १७०	१ १२६	टा. ४ उ. ३ सू. ३२०

विषय बोल भाग पृष्ठ प्रमाण

चार प्रकार रौद्रध्यान के	२१८	१	१६८	ठा ४ उ १ सू २४७
चार प्रकार वस्तु के स्वपर-	२१०	१	१८८	न्यायप्र अध्या. ७, रत्ना
चतुष्टय के				परि ४ सू १५ टी
चार प्रकार श्रावक के	१८५	१	१३६	ठा. ४ उ. ३ सू. ३२१
चार प्रकार संसारी जीव के	१३०	१	६७	ठा ५ सू ४३०, भ श २ उ १ सू ६२
चार प्रकार सेलोक की	२६७	१	२४७	ठा ० ४ उ ० २ सू ० २८६
व्यवस्था				
चार प्रकार से श्रमण की	१७८	१	१३१	दशम २ निगा १५४-१५७,
व्याख्या				अनु सू. १५० गा १२६-१३२
चार प्रमाण	२०२	१	१६०	भ श. ५ उ ४, अनु सू १४४
चार बन्धका स्वरूप समझाने के	२४८	१	२३२	ठा ४ उ २ सू २६६, कर्म
के लिए मोदक का दृष्टान्त				भा १ गा २
चार बोल देवता के मनुष्य-	१३६	१	१०२	ठा ४ उ ३ सू ३२३
लोक में आ सकने के				
चार बोल देवता के मनुष्य-	१३८	१	१०१	ठा. ४ उ ० ३ सू ३२३
लोक में न आ सकने के				
चार बोल देवों की पहचान के	१३७	१	१०१	व्यव भाष्य उ. २ गा ३०४
चार बोल नैरयिक के मनुष्य-	१४०	१	१०३	ठा ० ४ उ. १ सू २४५
लोक में न आ सकने के				
चार भंग कुम्भ के	१६८	१	१२५	ठा ४ उ ४ सू ३६०
चार भक्त कथा	१५०	१	१०८	ठा ४ उ. २ सू २८२ टी.
चार भांगे स्थण्डिल के	१८२	१	१३७	उत्त अ २४ गा १६
चार भाण्ड (पण्य वस्तु)	२६४	१	२४६	ज्ञा अ ८ सू ६६
चार भावना	१४१	१	१०३	उत्त अ ३६ गा २६१-२६४

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
चार भावना	२४६ १ २२४	भावना (परिशिष्ट.) क.भा. २ श्री. ३५-५७, न.
चार भावना धर्मध्यान की	२२३ १ २०७	डा. ४४. १ मृ. २४ म. न. २६३.
चार भावना शुक्लध्यान की	२२८ १ २१२	७ मृ. ८०३, भाव ह. म. ४० न. १० न. न. का १. ५, ८८, उ. मृ. २००
चार भाव प्राण	१६८ १ १५७	प. न. ५ १ मृ. १ टी
चार भेद आक्षेपणी कथा के	१५४ १ ११२	डा. ४४. २ मृ. २८२, द. न. म. ३ ति. गा १६४-१६५
चार भेद उपमा संख्या के	२०३ १ १६१	म. न. मृ. १४६ मृ. २३१
चार भेद क्रोध के उपमा सहित	१५६ १ १२०	प. न. ५ १ मृ. १८८, डा. ४४ २४६, २६३, धर्म भा १ गा १६
चार भेद गति के	१३१ १ ६६	प. न. ५ २३३ मृ. २६३, न. मं भा ४ गा १०
चार भेद चतुष्पाद तिर्यच- पंचेन्द्रिय के	२७१ १ २५०	डा. ४४ उ. ४ मृ. ३५०
चार भेद दर्शन के	१६६ १ १५७	डा. ४४ ३६५, न. मं भा. १ गा १२
चार भेद देवी के	१३६ १ १०१	उ. न. म. ३१ गा. २०२
चार भेद धर्म कथा के	१५३ १ ११२	डा. ४४ उ. ४ मृ. २८२
चार भेद धर्मध्यान के	२२० १ २०१	डा. ४४ उ. ४ मृ. २६३
चार भेद धर्मध्यान के	२२४ १ २०८	न. न. म. ३०३-४००, यो. म. न. ३-१०, न. मं भा. २० मृ. २००-२०१
चार भेद ध्यान के	२१५ १ १६३	डा. ४४ उ. ४ मृ. २६३, म. न. ६ म. न. भा. १ गा. २१ टी. ४४ म. १ मि. म. ४४ टी. ४४ म. १ न. न. म. १४ ७ १८२, म. न. म.

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
चार भेद निकाचित के	२५२	१ २३६	ठा० ४ उ० २ सू० २६६
चार भेद निधत्त के	२५१	१ २३६	ठा ४ उ० २ सू० २६६
चारभेद निर्वेदनी कथा के	१५७	१ ११५	ठा ४ उ २ सू २८२
चारभेद प्रायश्चित्त के	२४५ख	१ २२३	ठा० ४ उ० १ सू २६३
चार भेद बुद्धि के	२०१	१ १५६	न सू २६६, ठा० ४ उ० ४ सू ३६४
चार भेद मतिज्ञान के	२००	१ १५८	ठा० ४ उ० ४ सू० ३६४
चार भेद मान के उपमा सहित	१६०	१ १३१	पत्र. १ १४ सू १८८, ठा ४ उ २ सू २६३, कर्म भा १ गा १६
चार भेद माया के उपमा सहित	१६१	१ १२१	पत्र १. १४ सू १८८, ठा ४ उ २ सू २६३, कर्म भा १ गा २०
चार भेद मोक्ष मार्ग के	१६५	१ १५३	उत्त अ २८ गा २
चार भेद लोभ के उपमा सहित	१६२	१ १२२	पत्र १ १४ सू १८८, ठा ४ उ २ सू २६३, कर्म भा १ गा २०
चार भेद वादी के	१६१	१ १४४	भश ३० उ १ सू ८२४ टी, आचा. ध्रु १ अ १ उ १ सू ३ टी, सूय ध्रु १ अ. १२
चार भेद विक्षेपणी कथा के	१५५	१ ११३	ठा ४ उ २ सू २८२, दश अ ३ नि गा १६७-१६८
चार भेद शुक्ल ध्यान के	२२५	१ २०६	ठा ४ सू २४७ ज्ञान प्रक ४०, क भा २ ग्लो २११-२१६, आच ह अ ४ ध्यानशतक गा ७७-८२
चार भेद संवेगनी कथा के	१५६	१ ११४	ठा ४ उ २ सू २८२
चार भेद सामायिक के	१६०	१ १४३	ध अघि २ श्लो ३७ टी, विशेष गा. २६७३-२६७७
चार भेद स्त्री कथा के	१४६	१ १०७	ठा ४ उ २ सू. २८२ टी.

विषय	वोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
चार मंगलरूप, लोकोत्तम, १२६क १ ६४		आम्र ४५. ५६६
तथा शरण रूप हैं		
चार महाव्रत	१८० १ १३५	अ० ४३० १ मृ० २६६
* चार मूल मंत्र	२०४ १ १६३	
चार मृत्तातिशय अरि-	१२६ख १ ६६	स्या का. १ टी.
हन्त भगवान् के		
चार मेघ	१७२ १ १२७	अ० ४३० ४ मृ० ३६६
चार मेघ	१७४ख १ १२६	अ० ४३० ४ मृ० ३६६
चार राजकथा	१५२ १ ११०	अ० ४३० २ मृ० २८२ टी
चार लक्षण गौद्र ध्यान के २१६	१ २००	{ अ० ४३१ मृ० २०३ अम २५ उ० मृ० ८०३, आम्र ४५ ध्यानमनक गा २६, १४. १७, ६८, ६०
चार लिंग आर्चध्यान के २१७	१ १६८	
चार लिंग धर्मध्यान के २२१	१ २०५	
चार लिंग शुक्ल ध्यान के २२६	१ २११	
चारवन जंबूद्वीप के मेरु २७३	१ २५१	अ० ४३० २ मृ० २०३
पर्वत पर		
चार वाचना के अपात्र	२०७ १ १८५	अ० ४३० २ मृ० ३०३
चार वाचना के पात्र	२०६ १ १८५	अ० ४३० २ मृ० ३०३
चार वादी	१६२ १ १४६	आम्र. ४५. १३ मृ० ३०३
चार विकथा	१४८ १ १०७	अ० ४३० २ मृ० ३०३

चार मुक्तमूत्र में उपाध्यायन मूत्र का ध्यानाधान समे हूय कानाया है कि
 भा. अम्र ४५. १३ चार मूत्र पत्राया जाना है अर्थात् यदि उपाध्यायन पत्राया है।
 हिन्दू आचार्यों मूत्र के बाद उपाध्यायन मूत्र पत्राया सम उपाध्यायन के मूत्रका अन्त
 होने का ही मर्म है। नीचे दूरी गो भी उपाध्यायन मूत्र का उपाध्यायन का अन्त
 होने के पत्रा उपाध्यायन मूत्र अन्तर्गत है कि बाद पत्राया जाता है उपाध्यायन
 के अन्तर्गत मूत्र के ही अन्त में अन्त है और यही पत्राया जाना भी अन्तर्गत है।

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
चार विनयप्रतिपत्ति	२२६	१ २१३	दशा द ४
चार विश्राम	१८७	१ १४१	ठा ४ उ ३ सू ३१४
चार विश्राम श्रावक के	१८८	१ १४२	ठा ४ उ. ३ सू. ३१४
चार व्याधि	२६५	१ २४७	ठा ४ उ. ४ सू ३४३
चार शिक्षाव्रत	१८६	१ १४०	पचा १ गा २५-३२, श्राव. ह. अ ६ पृ ८३१
चार शुभ, चार अशुभ गण	२१३	१ १६१	सरलपिगल
चार संज्ञा	१४२	१ १०४	ठा ०४ उ ०४ सू ३६६, प्रव द्वा. १४५ गा. ६२३
चार संज्ञाओं का अल्प-	१४७	१ १०७	पत्र प ८ सू १४८
बहुत्व चार गति में			
चार सद्वहणा	१८६	१ १४२	उत्त अ २८ गा २८, ध अ धि २ श्लो २२ टी पृ ४३
चार सुख शय्या	२५६	१ २४१	ठा ०४ उ ०३ सू ३२५
चार स्थान क्रोधोत्पत्ति के	१६५	१ १२४	ठा ४ उ. १ सू २४६
चार स्थान गुण प्रकाश के	२५६	१ २४४	ठा ४ उ ४ सू ३७०
चार स्थान गुण लोप के	२५८	१ २४३	ठा. ४ उ ४ सू ३७०
चार स्थान से हास्योत्पत्ति	२५७	१ २४३	ठा ४ उ १ सू २६६
चारित्र की व्याख्या और भेद	३१५	१ ३१५	ठा ५ उ २ सू ४२८, विशेष गा १२६०-१२८०
चारित्र कुशील	३६६	१ ३८४	ठा ५ उ ३ सू ४४५
चारित्र के भेद	४६७	२ १६६	
चारित्र धर्म	१८	१ १५	ठा. २ उ १ सू ७२
चारित्र धर्म	६६२	३ ३६२	ठा १० उ ३ सू ७६०
चारित्र धर्म के दो भेद	२०	१ १५	ठा २ उ १ सू. ७२

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
चारित्र परिणाम	७४६	३ ४२८	ठा. १० उ ३ मू. ५१३, ५५. प. १३ मू. १८२
चारित्र पुलाक	३६७	१ ३८२	ठा. ५ मू. ४४६, भज २१३२
चारित्रभेदिनी विकथा	५३२	२ २६७	ठा. ७ उ ३ मू. ५६६
चारित्र मोहनीय	२८	१ २०	ठा. २३, ४ मू. १०६, कर्म भा. १
चारित्र मोहनीय के दो भेद	२६	१ २०	कर्म भा. १ गा. १०
चारित्र विनय	४६८	२ २३०	उ. मू. २०, भज २६ उ ३ मू. ८००, ज. ७ उ ३ मू. ६८५, ५ अभि ३२ गा. ५४ टी. पू. १४१
चारित्र विराधना	८७	१ ६३	मम. ३
चारित्राचार	३२४	१ ३३२	ठा. ६ उ. २ मू. ४३२, भ. अभि ३ श्लो. ५४ मू. १४०
चारित्रात्मा	५६३	३ ६६	भ. ज. १० उ १० मू. ६६७
चारित्राराधना	८६	१ ६३	ठा. ३ उ. ४ मू. १४४
चारित्रार्य	७८५	४ २६७	मू. उ १ नि. गा. २०००
चारित्रेन्द्र	६२	१ ६६	ठा. ३ उ. १ मू. ११२
चारित्रोपघान	६६८	३ २५७	ठा. १० उ ३ मू. ७३८
चार्याक दर्शन	४६७	२ १३०	
चालीम दाता दायक दोष	६८८	७ १४६	नि. नि. गा. ६००
से दूषित			
चालीम भेद स्वर पृथ्वी के	६८७	७ १४५	प. म. प. १ मू. १८
चिकित्सा दोष	८६६	५ १६५	प्र. ज. ६ मू. अभि ३००० टी. पू. २०, नि. नि. गा. २०००, नि. नि. गा. ६००, प. गा. १३ गा. १८
चिन्त के आठ दोष	६०३	३ १२०	क. भा. २ गा. १२० १५१

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
चित्तसमाधि के दस स्थान ६७४	३ २६२	सम १०, दशा द. ५
चिन्तन के सात फल ५०७	२ २३५	आ प्र. गा. ३६३
चिन्ता स्वप्न दर्शन ४२१	१ ४४४	भश १६ उ ६ सू ५७७
चिलाती पुत्र की सम्यक्त्व-८२१	४ ४३४	नवपद गा १४टी सम्यक्त्वा- धिकार, ज्ञा अ १८
प्राप्ति की कथा		
चिह्न छः नकारे के ४६१	२ १०२	उत्त अ १८गा ४१नमुचिकुमार की कथा (हस्तलिखित)
चुलनीपिता के व्रतभंग का ६८५	३ ३१३	उपा अ० ३ टी
कारण रक्षा-परिणाम नहीं पर हिंसा व क्रोध हैं		
चुलनी पिता श्रावक ६८५	३ ३११	उपा अ ३
चुल्लशतक श्रावक ६८५	३ ३१५	उपा० अ० ५
चूर्ण दोष ८६६	५ १६५	प्रव गा ४६८, ध अधि ३२लो २२टी पृ. ४०, पि नि गा ४०६, पि वि गा ४६, पचा १३ गा १६
चूर्ण भेद ७५०	३ ४३३	ठा १० सू ७१३टी, पन्न प १३
'चेइय' शब्द पर टिप्पण परिशिष्ट ३	४५७	उपा (अ) व हस्तलिखित प्रतिया
चेटक निधान की कथा ६४६	६ २७६	न सू २७ गा ६५ टी.
श्रौतपत्तिकी बुद्धि पर		
चोरी का स्वरूप ४६७	२ १६७	
१ चोर की प्रसूति अठारह ८६६	५ ४१५	प्रश्न आश्रवद्वार ३ सू. १२ टी
चौतीस अतिशय अरिहत के ६७७	७ ६८	सम ३४, स श द्वा ६७
चौतीस अस्त्राध्याय ६६८	७ ३५	ठा ४ सू २८५, ठा १० सू ७१४, प्रव द्वा २६८ गा १४५०-७१, व्यव. भाष्य उ. ७ गा २६६- ३१६, आव ह अ ४ गा १३२१-६०

१ चोर को चोरी के लिए दोस्साह्न देना तथा अन्य किसी प्रकार से सहायता देना।

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
चौतीस क्षेत्र जंबूद्वीप में तीर्थङ्करोत्पत्ति के	६७८ ७ ७१	मम. ३८
चौदह अनिचार ज्ञान के	८२४ ५ १४	आम. ३ अ. १ पृ ७३०
चौदह गुणस्थान	८४७ ५ ६३	कर्म भा २, १, प्रारम्भ. ८८, १०, २०५, गुण भा
चौदह जीव देवलोक में उत्पन्न होते हैं	८४८ ५ ११५	म. ज. १ उ-मृ. २५
चौदह द्वार चरमाचरण के	८४३ ५ ४२	म. ज. १८ उ १ मृ. १०६
चौदह द्वार पठमापठम के	८४२ ५ ३८	म. ज. १८ उ १ पृ ६१३
चौदह द्वार समदर्शी अपदर्शी के	८४१ ५ ३४	म. ज. १८ उ १ मृ. २३६
चौदह नाम माया के	८३६ ५ ३१	मम. ४०
चौदह नाम लोभ के	८३७ ५ ३२	मम. ४०
चौदह नियम श्रावक के	८३१ ५ २३	जिज्ञासा भाग २० पृ ३४१, ३४२
चौदह पर्व	८२३ ५ १२	म. ज. १८ उ १ मृ. १०५
चौदह प्रकार का उपकरण	८३३ ५ २८	पञ्चव. भा ३३१-३३६
चौदह प्रकार का दान	८३२ ५ २६	जिज्ञासा भाग २० पृ ३४३
चौदह प्रकार से अशुभ नाम	८३६ ५ ३३	आम. १०० उ १ मृ. १०५
कर्म भोगा जाता है		
चौदह प्रकार से शुभ नाम	८३८ ५ ३३	पञ्चव. भा ३३३ मृ. ३४३
कर्म भोगा जाता है		
चौदह चार्ते माधु के लिए	८३४ ५ २६	उ ३३ मृ. १०५
अपलपनीय		
चौदह भेद श्रमाव के	८२७ ५ १६	पञ्चव. भा ३३३ मृ. ३४३

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
चौदहभेद आभ्यन्तरपरिग्रह	८४० ५ ३३	वृ० उ० १ गा ८३१
चौदह भेद जीवों के	८२५ ५ १७	सम १४, आबह अ ४८ ६४६
चौदह भेद श्रुतज्ञान के	८२२ ५ ३	नसू ३८-४४, विशेष गा ४५४
चौदह महानदियाँ	८४४ ५ ४५	सम० १४
चौदह महाखमतीर्थद्वार व	८३० ५ २२	भ श १६३ ६ सू ५७८, ज्ञा
चक्रवर्ती के जन्म सूचक		अ० सू ६६, कल्प सू ४
चौदह मार्गणास्थान	८४६ ५ ५५	कर्म भा ४ गा ६-१४
चौदह रत्न चक्रवर्ती के	८२८ ५ २०	सम० १४
चौदह राजू परिमाण लोक	८४५ ५ ४५	प्रव द्वा० १४३, तत्त्वार्थ अध्या ३ सू ६टी, भ श ६ उ ६ सू २२६, भ श १३ उ ४ सू ४७६-४८०
चौदह लक्षण अविनीत के	८३५ ५ ३०	उत्त० अ ११ गा ६-६
चौदह खम मोक्षगामी आत्मा के	८२६ ५ २०	भ० श० १६ उ० ६ सू० ६८०
चौपन उत्तम पुरुष	१००६ ७ २७७	सम० ६४
१ चौमासी अनुद्घातिक	३२५ १ ३३४	ठा ६ उ० २ सू० ४३३
२ चौमासी उद्घातिक	३२५ १ ३३४	ठा० ६ उ० २ सू० ४३३
चौमासे के पिछले सित्तर	३३७ १ ३४७	ठा० ६ उ० २ सू० ४१३
दिनों में विहार के प्रकार		
चौमासे के प्रारंभिक पचास	३३६ १ ३४७	ठा० ६ उ० २ सू० ४१३
दिनों में विहार के प्रकार		
चौबीस गाथा विनय समाधि	३३३ ६ २०१	दश० अ० ६ उ० २
अध्ययन के दूसरे उद्देश की		
चौबीस गाथा समाधि	३३२ ६ १६७	सुय० श्रु० १ अ० १०

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
छः अप्रमाद प्रतिलेखना	४४८ २ ५२	ठा ६सू ५०३, उत्त अ २६गा २४
छः अप्रशस्त वचन	४५६ २ ६२	ठा ६ उ. ३सू ४२७, प्रव द्वा २३६गा १३२१, वृ(जी) उ ६
छः आगार पोरिसी के	४८३ २ ६७	आव ह. अ ६पृ ८४२, प्रव द्वा ४
छः आगार समकित के	४५५ २ ५८	उपा अ १सू ८, आव ह अ. ६पृ ८१०, ध अधि २श्लो. २२पृ. ४१
छः आभ्यन्तर तप	४७८ २ ८६	उवसू २०, उत्त अ. ३० गा ३०, प्रव द्वा ६गा २७१, ठा ६सू ५११
छः आरे अवसर्पिणी के	४३० २ २६	जवत्त २सू १६-३६, ठा ६ उ ३ सू ४६२, भश उ. ६सू २८७
छः आरे उत्सर्पिणी के	४३१ २ ३५	जवत्त २सू ३७-४०, ठा ६ उ ३ सू ४६२, विशेषे गा २७०८-१०
छः आवश्यक	४७६ २ ६०	आव ह.
छः इत्वरिक अनशन	४७७ २ ८७	उत्त अ ३० गा ६-११
छः उपक्रम	४२७ २ २५	अनु सू ७०
छः ऋतुएं	४३२ २ ४०	ठा ६ उ ३ सू ५२३ वृ हो
छः ऋद्धि प्राप्त आर्य	४३८ २ ४२	ठा ६सू ४६१, पन्न. प १ सू ३७
छः कर्त्तव्य आचार्य के	४५१ २ ५५	ठा ७ उ ३ सू ६७० टी
१ छः कल्प पलिमन्थु	४४४ २ ४७	ठा ६ उ ३ सू ५२६, वृ (जी) उ ६
छः कल्पस्थिति	४४३ २ ४५	ठा ३ उ ४सू २०६, ठा. ६ उ ३ सू ५३०, वृ (जी) उ ६
छः काय	४६२ २ ६३	ठा ६ उ ३ सू ४८०, दश अ ४, कर्म भा ४ गा. १०
छः काय का अल्पबहुत्व	४६४ २ ६५	जी प्रति २सू ६२, पन्न प ३ द्वा ४
छः काय की कुलकोटियाँ	४६३ २ ६४	प्रव द्वा १५० गा ६६३-६६७

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
लः कारण ज्ञानावर्णीय कर्म बाँधने के	४४० २ ४४	भ. ज. = ३६ सू. ३१
लः कारण दर्शनावर्णीय कर्म बाँधने के	४४१ २ ४४	भ. ज. = ३६ सू. ३१
लः कारण मोक्षनीय कर्म बाँधने के	४४२ २ ४४	भ. ज. = ३६ सू. ३१
लः कारण साधु के आहार करने के	४४४ २ ६८	पि. नि. भा. ६६२, उ. ज. भा. २१ गा. ३२
लः कारण साधु के आहार न्याग के	४४५ २ ६८	पि. नि. भा. ६६६, उ. ज. भा. २६ गा. ३८
लः कारण हिंसा के	४६१ २ ६३	ज्ञानाधु. १ भा. १३, २ सू. ११
लः कुलसोटीजीवनिकायकी	४६३ २ ६४	प्र. ज. भा. ११ गा. ६६३ गा. ११
लः लुद्र प्राणी	४६७ २ ६७	ठा. १३०३ सू. ११२
लः गुण गणधारक के	४७० २ ५४	ठा. १३०३ सू. ११२
लः गुण आवक के	४७२ २ ५६	प्र. ज. भा. ३३४ गा. २२
लः विह नकार के	४८१ २ १०२	ठा. भा. १२ गा. ११ गा. ११२ श्री महाप्रज्ञावर्तिनी
लः जीवनिकाय	४६२ २ ६३	ठा. १३३ सू. १२० गा. ११, १२ कर्म भा. ४ गा. १०
लः जीवनिकायकी कुलसोटी	४६३ २ ६४	प्र. ज. भा. ११ गा. ६६३ गा. ११
लः दर्शन	४८७ २ ११५	ठा. भा. १२ गा. ११ गा. ११२ श्री महाप्रज्ञावर्तिनी
लः दुर्लभ बोल	४३६ २ ४३	ठा. १३३ सू. १२०
लः द्रव्य	४२४ २ ३	प्र. ज. भा. ११ गा. ६६३ गा. ११

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
छः पर्याप्ति	४७२ २ ७७	पञ्च प १ सू १२टी., भ श ३ उ १सू १३०, प्रव द्वा २३२गा १३१७-१८, कर्म भा १गा ४६
छः पर्व अधिक तिथि वाले	४३४ २ ४१	ठा ६ सू ६२४, चन्द्र प्रा १२
छः पर्व न्यून तिथि वाले	४३३ २ ४०	ठा ६ उ ३सू ५२४, चन्द्र प्रा १२, उत्त अ. २६ गा १५
छः प्रकार का अवधिज्ञान	४२८ २ २७	ठा ६सू ६२६, न.सू ६-१५
छः प्रकार का आयुबन्ध	४७३ २ ७६	भ श ६ उ ८, ठा ६ उ ३सू ५३६
छः प्रकार का प्रश्न	४६४ २ १०३	ठा ६ उ ३सू ० ५३४
छः प्रकार का भोजन परिणाम	४८६ २ ६८	ठा ६ उ ३सू ५३३
छः प्रकार का विवाद	४६३ २ १०३	ठा ६ उ ३सू ५१२
छः प्रकार की गोचरी	४४६ २ ५१	ठा ६सू ५१४, उत्त अ ३०गा १६, प्रव द्वा ६७गा ७४५, ध. अधि ३ श्लो २२टी पृ ३७ ठा ६ उ ३सू ४६०
छः प्रकार के मनुष्य	४३७ २ ४१	बृ (जी) उ ६ सू २
छः प्रकार से झूठा कलंक लगाने वाले को प्रायश्चित्त	४६० २ ६२	ठा. ६ उ ३सू ५३८
छः प्रतिक्रमण	४८० २ ६४	भ श. ८ उ ८ सू ३३६
१ छः प्रत्यनीक	४४५ २ ४६	आव ह नि. गा १५८६पृ ८६६,
छः प्रत्याख्यान विशुद्धि	४८१ २ ६५	ठा ५ उ ३सू ४६६ टी
छः प्रमाद	४५६ २ ५६	ठा ६ उ ३सू ५०२
छः प्रमाद प्रतिलेखना	४४६ २ ५३	ठा ६सू ५०३, उत्त अ २६गा २६
छः प्रश्न परदेशी राजा के	४६६ २ १०७	रा सू ६३-७७
छः वार्ते छद्मस्थ के अगोचर	४८६ २ १०१	ठा ०६ उ ३सू ४७८

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
श्रुः वादर वनस्पतिकाय	४६६ २ ६६	दन्.म.४ सू० १
श्रुः वाण तप	४७६ २ ८५	वन्.म.३० गा.८, डा. १ सू. ११ उत्त.म. १६, प्र. ३, गा. २, ३०
श्रुः बोल उन्माद के	४५७ २ ६०	डा. ६ उ० ३ सू० १०१
श्रुः बोल दुर्लभ	४३६ २ ४३	डा. ६ उ. ३ सू० ४८६
श्रुः बोल में कोई समर्थ नहीं	४६० २ १०१	डा. ६ उ० ३ सू० ४८६
श्रुः भाव	४७४ २ ८१	अनु. म. १२६, डा. ६ उ. ३ सू. १३३, धर्म भा. ४ गा. ६, ८-९, १० म. भाषि. २, ३, २४ टी. १०
श्रुः भावना समकित की	४५४ २ ५८	प्र. १, डा. ६ उ. ३ गा. २४०
श्रुः भेद अर्थाविग्रह के	४२६ २ २८	न.म. ३०, डा. ६ उ. ३ सू. १०१, म. भाषि. २, ३, २४ टी. १०
श्रुः भेद अविच्छेदोपलब्धि स्व हेतु के	४६५ २ १०४	मन्ता. १, ३ सू. ६८८०
श्रुः भेद पुद्गल के	४२६ २ ८५	दन्.म. ४ भाष्य गा. १० टी.
श्रुः भेद पृथ्वी के	४६५ २ ६५	जी. प्रति ३ सू. १०१
श्रुः भेद प्रतिलेखनाविधि के	४४७ २ ५०	उत्त. म. २, गा. २४
श्रुः भेद प्राकृत भाषा के	४६२ २ १०२	प्र. १, भाषा १०
श्रुः मनुष्य भेद	४३६ २ ४१	डा. ६ उ० ३ सू. ४६०
श्रुः अभि चंदना से होनेवाले	४७५ २ ८४	प्र. १, डा. २ गा. १००
श्रुः लेखा	४७१ २ ७०	न. म. १ उ. ३, उत्त. म. ३४, प. म. १ उ. ३, उत्त. म. १ उ. ३, १०१ २८२, ३८२, म. भा. २ गा. ३३ १५, ३३, भाष्य म. १५, १६
श्रुः विषयिणाम	४८७ २ १००	डा. ६ उ. ३ सू. ४३३
श्रुः संस्थान अर्जीव के	४६६ २ ६६	म. म. २ उ. ३ सू. १२४, प्र. १, १ सू. १, जी. प्रति, १

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
छः संस्थान जीव के	४६८ २ ६७	ठा ६सू. ४६६, कर्म. भा. १ गा. ४०
छः संहनन	४७० २ ६६	पञ्च प २३सू. २६३, ठा ६उ ३ सू. ४६४, कर्म भा १ गा. ३८, ३९
छः सामान्य गुण	४२५ २ १६	द्रव्य त. अध्या ११, आगम
छः स्थान अनात्मवान् (सक-४५८ २ ६१ पाय) के लिए अहितकर		ठा ६उ ३सू. ४६६
छः स्थान समकित के	४५३ २ ५७	ध अधि २२श्लो २२टी. पृ. ४६, प्रव द्वा १४८ गा. ६४१
छड्डियदोष (आहारकादोष) ६६३ ३ २४६		प्रव द्वा ६७ गा ६६८, पि नि गा ६२०, ध अधि ३ श्लो २२टी पृ ४१, पचा १३ गा २६
छत्तीस गाथाधर्माध्ययन की ६८१ ७ ८७		सूय अ. ६
छत्तीस गुण आचार्य के ६८२ ७ ६४		प्रव द्वा ६४ गा ४४१-४४६
छत्तीस प्रश्नोत्तर	६८३ ७ ६८	
छद्मस्थ आठवार्तेन ही देखता ६०२ ३ १२०		ठा ८उ ३सू. ६१०
छद्मस्थ के परिपह उपसर्ग ३३१ १ ३४०		ठा. ६उ १सू. ४०६
सहने के पाँच स्थान		
छद्मस्थ छः वार्ते नही देखता ४८६ २ १०१		ठा ६उ ३सू. ४७८
छद्मस्थ जानने के ७ स्थान ५२३ २ २६०		ठा ७उ ३सू. ६५०
छद्मस्थ दस वार्तो को नहीं ७१६ ३ ३८६		ठा १० उ ३सू. ७६४, म. श ८ उ २सू. ३१७
देख सकता		
छद्मस्थ पाँच बोल साक्षात् ३८६ १ ४०६		ठा ६उ ३सू. ६५०
नहीं जानता		
छद्मस्थ सात वार्ते जानता ५२५ २ २६१		ठा. ७ उ ३सू. ६६७
और देखता नहीं है		

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
लङ्गस्थ मरण	८७६ ५ ३८३	नन १७, प्राज्ञा १६७ गा १००७
लन्द के तीन भेद	५४० २ २७५	अनु. सू. १२७ गा १२, ठा. ७ उ अनु १४३ गा २७
लन्दणा समाचारी	६६४ ३ २५०	भन २६३ अनु ८०, ठा १० उ ३ सू. ७४६, जिनम २६ गा ३, प्र. द्वा. १०१ गा ७६०
लपन अन्तर द्वीप	१०११ ७ २७७	पत्र ५ १ सू. ३७३, पत्र. द्वा २६७ गा १४२० से १४२८, श्री. प्रति. ३ सू. १०८-११२
लक्ष्मीस बोलों की मर्यादा	६४३ ६ २२५	उपा. अ १ सू. १, भा. परि २७० ३४ टी. पृ. ८०, भा. प्रति
लक्ष्मीस वैमानिक देव	६४४ ६ २२७	पत्र. ५ १ सू. ३८, उपा. अ ३६ गा २०७-२१४, भन ८३३, १
ल्लियालीस भेद गणित	६६८ ७ २६३	भन ६३७ सू. २४७, अनु सू. ११४
ल्लियालीस परिमाण के		
ल्लियालीस मातृकाक्षर	६६६ ७ २६४	गम. ४१
ब्राह्मी लिपि के		
लेद मृत्र चार	२०५ १ १८०	
लेदोपस्थापनिक चारित्र	३१५ १ ३१७	ठा. ५ ठ. २ सू. ४२८, अनु सू. १४४, दिशे गा १०१-१०२००
लेदोपस्थापनीय कल्प-	४४३ २ ४५	ठा. ३३ सू. २०१, ठा. ६२, ३
स्थिति		सू. ४३०, द्वा. (११) ३३६
लोटी गतागत के १८ द्वार	८८८ ५ ३६८	१७७. ६ से साधार १०

ज

जतपीलगाकम्पेकर्मि-	८६० ५ १४५	दवा म. १ सू. २, भा. म. ८ ठ. ५
दान		सू. ३३०, भा. म. ५, १२, ८३८

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
जड़कर्म कैसे फल देता है?	५६० ३ ४८	कर्म भा १ भूमिका
जनपद सत्य	६६८ ३ ३६८	ठा. १० सू. ७४१, पन्न प ११ सू. १६६, घ अघि ३ श्लो ४१ पृ १२१
जन्म की व्याख्या और भेद	६६ १ ४६	तत्त्वार्थ अध्या २ सू ३२
जमाली की कथा और उसका	५६१ २ ३४२	विशे गा २३०६-२३३२, भ
मत शंका समाधान सहित		श ६३ ३३, माव. ङ. अ. १ पृ ३१२, भ श. १ उ १ सू० ७
जम्बूद्वीप	४ १ २	ठा १ सू ६२, तत्त्वार्थ अध्या ३ सू ६
जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति का वर्णन	७७७ ४ २२५	
जम्बूद्वीप में चन्द्र सूर्यादि	७६६ ४ ३००	सूर्य प्रा १६
जम्बूद्वीप में छः अकर्म भूमि	४३५ २ ४१	ठा ६ उ ३ सू ५२२
जम्बूद्वीप में तीर्थङ्करोत्पत्ति	६७८ ७ ७१	सम. ३४
के चौतीस क्षेत्र		
जम्बूद्वीप में महानदियाँ सात	५३६ २ २७०	ठा ७ उ. ३ सू० ६६६
पश्चिम की ओर जाने वाली		
जम्बूद्वीप में महानदियाँ सात	५३८ २ २७०	ठा ७ उ ३ सू. ६६६
पूर्व की ओर जाने वाली		
जम्बूद्वीप में मेरु पर्वत पर	२७३ १ २५१	ठा० ४ उ० २ सू० ३००
चार वन हैं		
जम्बूद्वीप में वर्षा धर ७ पर्वत	५३७ २ २७०	सम ७, ठा ७ उ ३ सू. ६६६
जम्बूद्वीप में सात क्षेत्र	५३६ २ २६६	ठा ७ उ. ३ सू ६६६, सम ७, तत्त्वार्थ अध्या. ३ सू १०
जलचर	४०६ १ ४३५	पन्न प १ सू ३३, उत अ. ३६
जल प्रवेश मरणा	७६८ ४ २६६	भ. श २ उ १ सू ६१
जलौषधि लब्धि	६५४ ६ २६०	प्रव द्वा २७० गा. १४६२

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
१ जांगमिक वस्त्र	३७४	१	३८६	डा० १ उ० ३ म० ४४६
जागरिका तीन	६२४	३	१६८	म. न. १२ उ. १ म० २३६
जातिकी व्याख्या और भेद	२८१	१	२५६	म. न. २३ उ. २ म० २६३, प्र. डा १८७ मा. १०६६-११०४
जाति नाम निश्चत्तायु	४७३	२	७६	म. न. ६ उ० म० २६०, डा ६ उ. ३ म० २३६
जातिमद	७०३	३	३७४	डा. १० म० ७१०, डा. ८ म० ६०१
जातिस्मरणसे समकितपासि	२१	४	४२३	न. ५६ मा. १०८
जात्याय	७८५	४	२६६	सु. ३१ नि. मा. ३०१३
२ जान्युत्तर चौबीस	६३६	६	२०६	प्र. मी. म. १ मा. २ म० २८, न. मा. प्र. म. ५ मा. ४, न. मा. ४ मा. ५ मा. १
जितेन्द्रियता	७६३	३	४४५	डा १० उ० ३ म० ७६८
जिनकल्प	५२२	२	२५३	वि. मा. ७
जिनकल्प स्थिति	४४३	२	४७	डा. म० २०६, १३०, सु. (पी. १) ३१
जिनकल्पी की प्रभावनाएं	५२२	२	२५५	वि. मा. ७
जिनकल्पी गथालिन्दिक	५२२	२	२६०	वि. मा. ७
जिन तीन	७४	१	५३	डा. १ उ० म० २०
जिनदत्त, मागरदत्तकी कथा	६००	५	४३६	म. म. ३
जिनदाम कुमार की कथा	६१०	६	५६	म. म. १४
जिनपाल, जिनरत्नकी कथा	६००	५	४५३	म. म. १
३ जीन व्यवहार	३६३	१	३७७	डा १ म० ४२१, म. म. ८ उ० म० २०, म. म. १३ उ० मा. १, १

१ प्रम भी है क रोम मे बना हुआ वस्तु । २ पृष्ठ १३२ का टिप्पणी देखें ।

३ अनेक जीवार्थ मुनियों द्वारा की हुई मर्कटों का प्रतिमादन करने वाला मन्त्र जीन वद्वत्त है । उसमे प्रसिद्ध व्यवहार जीनवद्वत्त है ।

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
जीव के संयम पर ७ गाथा	६६४	७ २१२	
जीव	७७ १	४	ठा २सू १०१, तत्त्वार्थ अध्या २
जीव	१३० १	६८	ठा. ४सू ४३०, भ श २३ १सू ६१
जीव और कर्म का संबन्ध	५६० ३	४७	विशे गा १६३५-१६३६
जीव और पुद्गल के लोक से	२६८ १	२४७	ठा. ४उ० ३सू ३३७
बाहर न जाने के ४ कारण			
जीव और शरीर के भेदा-	७७५ ४	३४	विशे गा १६४५-१६८६
भेद के विषय में गणधर वायु-			
भूति का शंका समाधान			
जीव कर्म का अनादि संबंध	५६० ३	५१	विशे गा १८१३-१८१४
जीव के चौदह भेद	८२५ ५	१८	सम. १४, आव इ अ. ४पृ ६४६
जीव के चौदह भेदों का	८२५ ५	१८	पत्र प ३द्वा. ३, १८, १९, जी प्रति
अल्पबहुत्व			४सू. २२५ प्रसं भा २
जीव के छः नाम	१३० १	६८	भ श २३ १सू ६१
जीव के तीन भेद	६६ १	५०	भ श. ६ उ ३सू २३७
जीव के पाँच भाव	३८७ १	४०७	कर्म भा ४गा ६४-६८, अतु
			सू १२६, प्रवद्वा २२१ गा०
			१२६० से १२६८
जीव के संस्थान छः	४६८ २	६७	ठा ६सू ४६५, कर्म भा १गा ४०
जीव तत्त्व के ५६३ भेद	६३३ ३	१७८	पत्र प. १, उत्त अ ३६, जी
जीव दस प्रकार के	७२६ ३	४१४	ठा १० उ ३सू ७७१
जीव दस प्रकार के	७२७ ३	४१५	ठा. १० उ ३सू ७७१
जीव द्रव्य	४२४ २	३	आगम, उत्त अ ३६
जीवन की अस्थिरता पर	६६४ ७	२२५	
दस गाथाएं			

विषय	वोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
जीवनिकाय छः	४६२	२ ६३	टा. ६ उ. ३ मू. ४८०, दज. म. १, कर्म. भा. ४ गा. १०
जीवनिकाय ६ की कुल कोड़ी	४६३	२ ६४	प्रव. ता. ११० गा. ६६३-६१७
जीव परिणाम दस	७४६	३ ४२६	पत्र. १. १३, टा. १० मू. ७१३
जीव प्रादेशिक दृष्टि निहव	५६१	२ ३५३	विशे. गा. २३३३-२३४४
जीवमिश्रिता सत्यामृषा	६६६	३ ३७०	टा. १० मू. ७४१, पत्र. ११ मू. १६६, प. म. वि. ३ भा. ४१४ १२०
जीव सभी सात प्रकार के	५५०	२ २६२	टा. ७ उ. ३ मू. ४६२
जीवहन्का भारी कैसे होता है	६६८	३ १२०	म. १३६ मू. ७९
जीवाजीवमिश्रिता सत्या-मृषा	६६६	३ ३७१	टा. १० मू. ७४१, पत्र. ११ मू. १६६, प. म. वि. ३ भा. ४१४ १२०
जीवाजीवाभिगम सूत्र का	७७७	४ २१६	
संक्षिप्त विषय वर्णन			
जीवादिनातत्त्वों के ज्ञान से	११	४ ३५२	दज. म. १ गा. ११ ३४
१२ बोलों की परम्परा मासि			
जीवाधिकरण	५०	१ ३०	न. प. अ. म. १६ मू. ७
जीवाम्निकाय के ५ प्रकार	२७७	१ २५६	टा. ६ उ. ३ मू. ४४१
जीवों की समानता	४२४	२ ८	भा. म.
जीवों के चौदह भेद	८२५	५ १७	म. १३, मा. १६, म. ८१ १८
जीवों के चौबीस दण्डक	६३४	६ २०४	टा. १ मू. ६१३, म. १३, १३१
जम्भक देवों के दस भेद	७४२	३ ४२०	म. १४ उ. ३ मू. ६३३
जैन दर्शन	४६७	२ १५६	
जैन धर्म की चार विशेषताएं	४६७	२ २१०	
जैन साधु	४६७	२ २०८	

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
जैन साधु के लिए मार्ग-	७८१	४ २५५	उत्त अ २१ गा. १३-२४
प्रदर्शक वारह गाथाएं			
ज्ञात, ज्ञातपुत्र	७७०	४ ४	जैनविद्या बोल्यूस १ न १
ज्ञाता के नौ भेद	६४१	३ २१२	आचा.श्रु १ अ २७ सू ८८
ज्ञाताधर्मकथांगकी १६ कथा ६००	५	४२७	
ज्ञाताधर्मकथांग के दोनों	७७६	४ १८५	
श्रुतस्कन्धों का विषयवर्णन			
ज्ञान	११	१ १०	पन्न प २६ सू ३१२
ज्ञान कुशील	३६६	१ ३८४	ठा ५ उ ३ सू ४४५
ज्ञान के चौदह अतिचार ८२४	५	१४	आच.ह अ ४ पृ ७३०
ज्ञान के दो भेद	१२	१ १०	ठा २ उ १ सू ७१, न सू २
ज्ञान के पाँच भेद	३७५	१ ३६०	ठा ५ उ ३ सू ४६३, कर्म भा १ गा ४, न० सू १
ज्ञान गर्भित वैराग्य	६०	१ ६५	क भा २ श्लो ११८-११६
ज्ञान नारकियों में	५६०	२ ३३७	जो प्रति ३ सू ८८
ज्ञानपरिणाम	७४६	३ ४२७	ठा १० उ ३ सू ७१३, पन्न प १३
ज्ञान पुलाक	३६७	१ ३८२	ठा ५ सू ४४५, भश २५ उ ६
ज्ञान मार्गणा और भेद	८४६	५ ५८	कर्म भा ४ गा. ११
ज्ञान विनय	४६८	२ २२६	उव सू २०, भश २५ उ ७ सू ८०२, ठा ७ उ ३ सू ५८६, ध. अधि. ३ श्लो ५४ टी पृ १४१

ॐ ज्ञान के चौदह अतिचारों में सुदुदुदिन दुदुदुपडिच्छिय दो अतिचार हैं । इनका अर्थ इस प्रकार है—

सुदुदुदिन—शिष्य में शास्त्र ग्रहण करने की जितनी शक्ति है उससे अधिक पढ़ाना ।
यहां सुदुदु शब्द का अर्थ है शक्ति या योग्यता से अधिक ।

दुदुदुपडिच्छिय—आगम को बुरे भाव से ग्रहण करना

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
ज्ञान विराधना	८७ १ ६३	सम ३
ज्ञान वृद्धि के दस नक्षत्र	७६२ ३ ४४४	मम. १०, डा. १०३ ३ सू. ७८१
ज्ञान संख्या	६१६ ३ १४३	अनुसू. १४६
ज्ञानाचार	३२४ १ ३३२	डा. ५३ २ सू. ४३०, अ. अधि ३ श्लो ४४ पृ. १४०
ज्ञानाचार आठ	५६८ ३ ५	ध. अधि. १ श्लो १६ टी पृ. १८
ज्ञानातिशय	१२६ ख १ ६७	स्या का. १ टी.
ज्ञानात्मा	५६३ ३ ६६	भ. श. १२ उ १० सू. ४६७
ज्ञानाराधना	८६ १ ६३	डा. ३ उ ४ सू. १६५
ज्ञानार्थ	७८५ ४ २६६	वृ. उ १ नि गा. ३०६३
ज्ञानावरणीय कर्म का अनुभाव	५६० ३ ५६	पत्र प २३ सू. २६२
ज्ञानावरणीय कर्म के भेद	३७८ १ ३६३	डा. ५ सू. ४६४, कर्म. भा. १ गा. ६
ज्ञानावरणीय कर्म के भेद	५६० ३ ५६	कर्म. भा. १ गा. ६, ४४, भ. श.
और उसके बन्ध के		८ उ ६ सू. ३५१, पत्र प २३ सू.
छः कारण		२६३-६४, तत्त्वार्थ ग्रन्था. ८ सू. ६
ज्ञानावरणीय कर्म बाँधने	४४० २ ४४	भ. श. ८ उ ६ सू. ३५१
के छः कारण		
ज्ञानेन्द्र	६२ १ ६६	डा. ३ उ. १ सू. ११६
ज्ञानोपघात	६६८ ३ २५७	डा. १० उ ३ सू. ७३८
ज्येष्ठ कल्प	६६२ ३ २३६	पत्रा. १७ गा. २६-३१
ज्योतिषशास्त्र की तरह क्या	६८३ ७ १२६	ज्ञा. भ. ८ सू. ६६
जैनशास्त्रों में भी पुण्यनक्षत्र		
की श्रेष्ठता का वर्णन है ?		
ज्योतिषी देव के पाँच भेद	३६६ १ ४२३	डा. ५ सू. ४०१, जी. प्रति ३ सू. १००
ज्वलन प्रवेश मरण	७६८ ४ २६६	भ. श. २ उ १ सू. ६१

भ

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
भूठ बोलने के आठ कारण	५८२ ३ ३७	साधुप्र. महाव्रत २
भूठा कलंक लगाने वाले	४६० २ ६२	वृ (जी) उ. ६ सू २
को प्रायश्चित्त		

ठ

ठाणांग (स्थानांग) सूत्र	७७६ ४ ७६-११४
का संक्षिप्त विषय वर्णन	

ड

ढाई द्वीप में चन्द्र सूर्यादि	७८६ ४ ३०२ सूर्य प्रा १६
ज्योतिषी देवों की संख्या	

ण

णाय, णायपुत्त	७७० ४ ४	जैनविद्या बोल्युम १ न१
---------------	---------	------------------------

त

१ तज्जात दोष	७२२ ३ ४०६	ठा १० उ. ३ सू ७४३
१ तज्जात दोष	७२३ ३ ४११	ठा. १० उ ३ सू ७४३
२ तज्जात संसृष्ट कल्पिक	३५३ १ ३६८	ठा ४ उ १ सू. ३६६
तत्काल उत्पन्न देव ४ कारणों	१३६ १ १०१	ठा ४ उ ३ सू ३०२
से मनुष्य लोक में आता है		

१ शास्त्रार्थ के समय प्रतिवादी के जाति, कुल आदि के दोषों को निकाल कर उस पर व्यक्तिगत आक्षेप करना ।

२ अभिग्रह विशेष, जिसके अनुसार साधु तभी आहार लेता है जब कि दिये जाने वाले आहार विशेष से दाता के हाथ और भाजन खरडे हुए हों ।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
तत्काल उत्पन्नदेव ४ कारणों १३८	१	१०१	अ. ३ उ ३ सू ३२३	
सेमनुष्यलोक में नहीं आता है				
तत्काल उत्पन्न नैरयिक चार १४०	१	१०१	अ० ४ उ० १ सू २४६	
बोलों से मनुष्य लोक में				
नहीं आ सकता				
तत्त्व की व्याख्या और भेद ६३	१	४४	ध. अ. वि. २ श्लो २१-२० पृ ३१, यो प्रका २ श्लो ४-११	
तत्त्व नौ	६३३	३	१७७	नव० गा १, अ. ६ उ ३ सू. ६६६
तथाकार समाचारी	६६४	३	२५०	भ. श. २४ उ. ७ सू. ८०१, अ १० उ. ३ सू ७४६, उत्त अ २६ गा ३, प्रव द्वा १०१ गा ७६०
१ तथाज्ञानानुयोग	७१८	३	३६५	अ १० उ ३ सू ७२७
तदुभयधर पुरुष	८४	१	६२	अ ३ उ. ३ सू १६६
तदुभयागम	८३	१	६१	अनु. सू १४४
तदुभयाचार	५६८	३	६	ध अ. वि. १ श्लो. १६ टी. पृ १८
तद्धितज भावप्रमाण नाम ७१६	३	४०२	अनु सू १३०	
,, के. ८ भेद ७१६	३	४०२	अनु सू १३०	
तद्भव मरण	७६८	४	२६६	भ. श. २ उ १ सू ६१
तद्भव मरण	८७६	५	३८३	मम १७, प्रव द्वा १७७ गा १००६
तन्दुलवेयालियपइण्णा	६८६	३	३५४	२ प.
तप	३५१	१	३६६	अ ५ सू ३६६, प्र. गा. ५५४, ध अ. वि. ३ श्लो ४६ पृ. १२७
तप	६६१	३	२३४	न. गा. २३, मम. १०, गा. भा १ प्र. ८

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
तप आचार	३२४ १ ३३३	ठा.५ उ.२ सू.४३२, अ अवि ३ श्लो ५४ पृ १४०
तप आदि के फल की दस	६६७ ३ २५३	ठा १० उ ३ सू. ७५६
प्रकार की इच्छा		
तपः कर्म	७६० ३ ४४३	आचा.अ २ उ १ नि गा १८३
तप के बारह भेद	४७६, २ ८५, ४७८ ८६	उत्त अ ३०, उव सू १६, २०, ठा.६ उ ३ सू ५११, प्रव. द्वा ६ गा २७०-२७१
तप के विषय में ११ गाथा	६६४ ७ २०२	
तप धर्म	१६६ १ १५५	भ.श २५ उ ७, उत्त अ ३० गा ८
तप मद	७०३ ३ ३७४	ठा १० सू ७१०, ठा ८ सू ६०६
तप समाधि के चार भेद	५५३ २ २६४	दश अ ६ उ. ४
१ तयालीस प्रवचन संग्रह	६६४ ७ १५१	उत्त, दश, आचा, सूय, प्रश्न., दप., भ.ज्ञा, दश, पि नि, धर., विशे, आव ह, उव, ध, आगम, समय, वृ, पंचव, प्रतिमा
तरु पतन मरण	७६८ ४ २६६	भ.श २ उ १ सू ६१
तर्क	३७६ १ ३६५	रत्ना परि ३ सू ७
तापसश्रमण	३७२ १ ३८७	प्रव द्वा ६४ गा ७३१
तिथियों के पन्द्रह नाम	८५७ ५ १४२	चन्द्र प्रा १० प्रा प्रा १४
२ तिन्तिणक	४४४ २ ४८	ठा ६ सू ५२६, वृ (जी) उ ६
३ तिरीडपट्ट वस्त्र	३७४ १ ३८६	ठा.५ उ ३ सू ४४६

१ भिन्न भिन्न तयालीस विषयों पर आगम तथा धर्म ग्रन्थों की गाथाएँ एवं पाठों का सुन्दर संग्रह। यह संग्रह स्वाध्याय प्रेमियों के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

२ चिड़चिड़े स्वभाव वाला व्यक्ति, कल्पलिमन्थु का एक भेद।

३ तिरीड वृक्ष की छाल का बना हुआ वस्त्र।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
तिरोभाव	४४	१	२७	न्याय को.
तिर्यक्लोक	६५	१	४६	लोक भा. २ स. १२, भग ११ उ १० सू ४२०
तिर्यक् सामान्य	५६	१	४१	रत्ना. परि ५ सू ४
तिर्यञ्च आयुबंधके ४ कारण	१३३	१	६६	ठा ४ उ ४ सू ३७३
तिर्यञ्च के अड़तालीस भेद	६३३	३	१७८	उत्त अ. ३६, जी प्रति. १
तिर्यञ्च के अड़तालीस भेद	१००१	७	२६५	पञ्च. प. १ सू १०-३६
तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय के पाँच भेद	४०६	१	४३५	पञ्च प १ सू ३२-३६, उत्त अ ३६ गा १६६-१६२
तिर्यञ्च सम्बन्धी उपसर्ग के	२४२	१	२१६	ठा. ४ उ ४ सू. ३६ १, मृय अ ३ उ. १ टी नि. गा ४८
चार प्रकार				
तिष्यगुप्त निहव का आत्मा	५६१	२	३५३	विशे. गा. २३३३-२३४४
के संबंध में शंका समाधान				
तीन अंग पिता के	१२२	१	८७	ठा. ३ उ. ४ सू. २०६
तीन अंग माता के	१२३	१	८७	ठा ३ उ. ४ सू २०६
तीन अच्छेद्य	७३	१	५३	ठा. ३ उ २ सू १६५
तीन अभिलाषाएं देव की	१११	१	८०	ठा ३ उ ३ सू १७८
तीन अर्थयोगिनि	१२६	१	६०	ठा ३ उ ३ सू १८४ टी.
तीन अवस्था-वत्पादव्यय त्रौव्य	६४	१	४४	तत्त्वार्थ. प्रध्या. ४ सू. २६
तीन आत्मा	१२५	१	८६	परमा. गा १३-१४
तीन आधार विमानों के	११४	१	८१	ठा ३ उ ३ सू १८०
तीन आराधना	८६	१	६२	ठा. ३ उ ८ सू १६४
तीन कथा	६७	१	६६	ठा. ३ उ ३ सू १८६
तीन कर्म	७२	१	५२	जी प्रति ३ उ. १ सू १११, तन्दुल. सू १४-१४ पृ. ८०

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
तीन का प्रत्युपकारदुःशक्व	१२४ १ ८७	ठा ३ उ १ सू १३५
तीन कारण अल्पायु के	१०५ १ ७४	ठा ३ उ १ सू १२५, भश ५ उ ६ सू २०४
तीन कारण अशुभदीर्घायु के	१०६ १ ७४	
तीन कारण जीव की शुभ दीर्घायु के	१०७ १ ७५	भश ५ उ ६ सू २०४, ठा ३ उ १ सू १२५
तीन कारण नवीन उत्पन्न देव के मनुष्य लोक में आने के	११० १ ७६	ठा ३ उ ३ सू १७७
तीन जिन	७४ १ ५३	ठा ३ उ ४ सू २२०
१ तीन दुःसंज्ञाप्य	७५ १ ५४	ठा. ३ उ ४ सू २०३
तीन प्रकार के पुरुष	८४ १ ६१	ठा ३ उ ३ सू १६६
तीन बोल देव के च्यवन ज्ञान के	११३ १ ८१	ठा ३ उ ३ सू १७६
तीन बोल देव के पश्चात्ताप के	११२ १ ८०	ठा ३ उ ३ सू १७८
तीन बोल पृथ्वी के देशतः धूजने के	११६ १ ८२	ठा. ३ उ ४ सू १६८
तीन बोल सारी पृथ्वी धूजने के	११७ १ ८२	ठा. ३ उ ४ सू १६८
तीन भेद अंगुल के	११८ १ ८३	अनु सू १३३
तीन भेद आगम के दो प्रकार से	८३ १ ६०	रत्ना परि. ४ सू १, २, अनु सू १४४
तीन भेद आचार्य ऋद्धि के	१०२ १ ७१	ठा ३ उ. ४ सू २१४
तीन भेद आचार्य के	१०३ १ ७२	रा सू. ७७
तीन भेद ऋद्धि के	६६ १ ७०	ठा ३ उ ४ सू २१४
तीन भेद एपणा के	६३ १ ६६	उत्त अ २४ गा ११-१२

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
तीन भेद करण के	७८	१	५५	आगम, आच.म गा १०६-१० टी, दिने गा १२०२-१२१८, प्रव द्वा २०४ गा १३०२टी, कर्म भा २ गा २ व्याख्या
तीन भेद करण के	६४	१	६७	ठा ३ उ १ सू १२४
तीन भेद गान्ध के	६८	१	७०	ठा ३ उ. ४ सू २१५
तीन भेद गुणव्रत के	१२८(क)	१	६१	आच.ह्रम ६ पृ ८२६-८२६
तीन भेद गुण के	१२८(ख)	१	६२	उत्त अ २४, ठा ३ सु १२६
तीन भेद जन्म के	६६	१	४६	तत्त्वार्थ अध्या २ सू ३२
तीन भेद जीव के	६६	१	५०	भग ६ उ ३ सु २३७
तीन भेद तत्त्व के	६३	१	४४	यो प्रका २ श्लो ४-११, ध अति २ श्लो. २१-२२ टी पृ. ३१
तीन भेद दण्ड के	६६	१	६६	मन ३, आच.श्रु. १ म ४ उ. १ सू १२६ टी, ठा ३ उ १ सु १२
तीन भेद दर्शन के	७७	१	५५	ठा. ३ सू १८४ भग ८ उ २
तीन भेद देवोंकी ऋद्धि के	१००	१	७०	ठा. ३ उ ० ४ सू २१८
तीन भेद द्रव्यानुपूर्वी के	११६	१	८४	भगु सू ६६-६८ टी.
तीन भेद धर्म के	७६	१	५४	ठा ३ उ ३, ४ सू १८८, २०७
तीन भेद पल्लोपम के	१०८	१	७५	अनुसू १३८-१४०, प्रव. द्वा १४८ गा १०१८-१०२६
तीन भेद भाव इन्द्र के	६२	१	६६	ठा. ३ उ ३ १ सू ११६
तीन भेद मनुष्य के	७१	१	५१	ठा ३ उ. १ सू १३०, भग १ सु ३०, जी प्रति. ३ सू. १०७
तीन भेद मोक्षमार्ग के	७६	१	५७	उत्त. अ २८ गा. ३०, तत्त्वार्थ अध्या १ सू १
तीन भेद योग के	६५	१	६८	ठा. ३ सू १२४, तत्त्वार्थ. अध्या

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
तीनभेदयोनि के ३ प्रकार से	६७ १ ४७	ठा ३सू १४०, तत्त्वार्थ, अध्या २
तीनभेद राजा की ऋद्धि के	१०१ १ ७१	ठा० ३ उ० ४ सू० २१४
तीनभेद लक्षणाभास के	१२० १ ८४	न्यायदी प्रका १
तीनभेद लोक के	६५ १ ४५	लोक भा २ स १२, भ श. ११ उ १० सू ४२०
तीन भेद वनस्पति के	७० १ ५०	ठा ३उ १ सू १४१
तीन भेद वेद के	६८ १ ४६	कर्म भा १ गा २२
तीन भेद वैराग्य के	६० १ ६५	क. भा २ श्लो ११८-११९
तीन भेद व्यवसाय के	८५ १ ६२	ठा. ३उ ३ सू १८४
तीनभेद श्रद्धा, प्रतीति, रुचि	१२७ १ ६०	भ श १ उ ६ सू ७६
तीन भेद समकित के दो प्रकार से	८० १ ५८	विशे गा २६७५, द्रव्यलो स ३श्लो ६६८-६७०, ध. अधि २ श्लो २२टी पृ ३६, आ. ग. गा ४६-४०, प्रव द्वा १४६ गा ६४३-६४४, कर्म भा १ गा १५
तीन भेद समारोप के	१२१ १ ८५	रत्ना परि १, न्याय प्र अध्या ३
तीन भेद सागरोपम के	१०६ १ ७८	अनु सू १२८-१४०, प्रव द्वा १५६ गा १०२७ से १०३२
तीन मनोरथ श्रावक के	८८ १ ६४	ठा ३उ ४ सू २१०
तीन मनोरथ साधु के	८६ १ ६४	ठा ३ उ ४ सू २१०
तीन लिंग समकित के	८१ १ ५६	प्रव० द्वा. १४८ गा. ६२६
तीन बल्य	११५ १ ८१	ठा० ३ उ० ४ सू० २२४
तीन विराधना	८७ १ ६३	मम० ३
तीन शून्य	१०४ १ ७३	धअवि ३श्लो २७ पृ ७६, मम ३, ठा० ३उ० ३ सू १८२

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
तीन शुद्धियां समकित की	८२	१	६०	प्रव० द्वा. १४८ गा ६३२
तीन स्थविर	६१	१	६६	ठा ३ उ. ३ सु १५६
तीर्थङ्कर के चौतीस अतिशय	६७७	७	६८	सम० ३४
तीर्थङ्कर के विचरते हुए	६१८	६	१३६	वि० अ० ३ सु २० टी०
पुरिमताल नगर में अभग-				
सेन का वध कैसे हुआ?				
तीर्थङ्कर को उपसर्ग रूप	६८१	३	२७६	ठा १० उ ३ सु ७७७, प्रव. द्वा.
आश्चर्य (अच्छेरा)				१३८ गा. ८८५-८८६
तीर्थङ्कर गोत्र के बीस बोल	५६०	३	७८	} भाव. ह. अ १४ ११८, ज्ञा. म. ८०६४, प्रव. द्वा. १० गा. ३१० से ३१६
” ” ” ”	६०२	६	५	
तीर्थङ्कर गोत्र बाँधने वाले	६२४	३	१६३	
नौ आत्मा भगवान् महावीर				ठा. ६ उ. ३ सु. ६६१
के शासन में				
तीर्थङ्कर, चक्रवर्ती के जन्म	८३०	५	२२	भा. श १६ उ. ६ सु ४७८, ज्ञा. म ८
सूचक महास्वप्न चौदह				सु ६४, कल्प. सु ४
तीर्थङ्कर चौबीस ऐरवत क्षेत्र	६३१	६	१६७	सम १६८, प्रव. द्वा ७ गा.
के आगामी उत्सर्पिणी के				३००-३०२
तीर्थङ्कर चौबीस ऐरवत क्षेत्र	६२८	७	१७६	गम १४६, प्रव. द्वा ७ गा.
के वर्तमान अवसर्पिणी के				२६६-२६८
तीर्थङ्कर चौबीस के गणधर	७७५	४	२३	भाव. ह. नि गा २६६-२६८
तीर्थङ्कर चौबीस भरत क्षेत्र	६३०	६	१६६	गम० १४८, प्रव० द्वा० ७
के आगामी उत्सर्पिणी के				गा० २६३-२६४
तीर्थङ्कर चौबीस भरत क्षेत्र	६२७	६	१७३	प्रव० द्वा ७ गा. २८८-२९०
के गत उत्सर्पिणी के				

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
तीर्थङ्कर चौबीस भरत क्षेत्र ६२६ ६ १७७	सम १५७, आव ह नि गा. २०६	
के वर्तमान अवसर्पिणी के	से ३६०, आव म गा २३१ से	
	३८६, स. श, प्रव द्वा ७-४५	
तीर्थङ्कर दीक्षा लेते समय ६८३ ७ १०२	आचा पु २ च ३ अ २४ सू.	
किसे नमस्कार करते हैं?	१७६, आव ह अ १ पृ १८६	
तीर्थङ्कर नाम कर्म के २० बोल ५६० ३ ७८	} आव ह नि गा १७६-१८१ पृ ११८, आ अ ८ सू ६४, प्रव. द्वा १० गा ३१०-३१६	
तीर्थङ्कर नाम कर्म के २० बोल ६०२ ६ ५		
तीर्थङ्कर सम्बन्धी ५० बोल ६२६ ६ १८८	} सम १५७, आव ह. गा २०६- ३६०, आव म गा २३१- ३८६, स श, प्रव द्वा ७-४५	
तीर्थङ्कर सम्बन्धी २७ बोलों ६२६ ६ १७८		
का लेखा व अन्य २३ बोल		
तीर्थङ्कर सिद्ध ८४६ ५ ११७	पत्र प १ सू ७	
तीर्थङ्करों ने पाँच महाव्रत ६८३ ७ ११६	भण १३ ३ सू ३७ टी, उत्त	
और चार महाव्रत रूप धर्म	अ ०३ गा २३ से २७	
अलग अलग क्यों कहा ?		
तीर्थ की व्याख्या और भेद १७७ १ १३०	अ ४ उ. ४ सू ३६३ टी	
तीर्थ सिद्ध ८४६ ५ ११७	पत्र प १ सू ७	
तीस अकर्म भूमि ६५७ ६ ३०७	पत्र प. १ सू ३७	
तीस द्वार नरकों के ५६० २ ३३८	जी प्रति ३ उ १, २, ३	
तीस नाम परिग्रह के ६५८ ६ ३१०	प्रश्न आश्रवद्वार ५	
तीस प्रकार भिक्षाचर्या के ६५६ ६ ३१०	उवसू १६, भ श २५ उ ७	
तीस महामोहनीय के बोल ६६० ६ ३१०	दशा द ६, सम ३०, उत्त अ ३१ गा १६ टी, आव ह अ ४ पृ ६६०	
तुम्हे का दृष्टान्त ६०० ५ ४४१	ज्ञा० अ० ६	
तृणवनस्पतिकाय आठ ६१२ ३ १२६	अ ८ उ ३ सू ६१३	

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
तृणवनस्पति के दस भेद	७४५	३ ४२२	ठा १०३ ३ सू ७७३
तृतीयसप्तरात्रिदिवसनाम की दशर्वा भिक्खुपडिमा	७६५	४ २६०	सम. १२, दशा ६ ७, भ. रा २ उ १ सू ६३ टी
तृष्णा पर सात गाथाएं	६६४	७ २४२	
तेईसअध्ययनसूयगढांगके	६२४	६ १७३	सूय
तेईसगाथाएं भगवान् महा-	६२२	६ १६६	आचा शु १ अ. ६ उ. १
वीर की चर्या विषयक			
तेईस भेद क्षेत्र परिमाण के	६२५	६ १७३	अनु स १३३ सू १६०-१६२, प्रव द्वा २६४ गा १३६१ टी.
तेईस विषय पाँचइन्द्रियोंके	६२६	६ १७५	ठा सू ६७, ३६०, ४४३, ४६६, पत्र १२३ सू २६३, १ बोल १२, तत्त्वार्थ अध्या २ सू २१
तेईस स्थान साधु के उतरने	६२३	६ १७०	आना शु २ चू १ अ २३ २ योग्य तथा अयोग्य
तेजस्काय	४६२	२ ६४	ठा ६ उ ३ सू १८०, दग अ ४, कर्म. भा ४ गा. १०
तेजोलेश्या	४७१	२ ७४	उत्त अ ३४, कर्म भा ४ गा १३
तेजोलेश्या लब्धि	६५४	६ २६६	प्रव द्वा २७० गा १४६४
तेतलीपुत्र की कथा	६००	५ ४६२	ज्ञा. अ १४
तेतीस आशातनाएं	६७५	७ ६१	सम. २३, दशा. ६. ३, भात द अ. ४ सू ७२४
तेतीस बोल सिद्धों के	६७६	७ ६६	न सू. २० टी. २ १२४
अल्पबहुन्व के			
तेतीस बोलों का कथन करने वाली २१ गाथा	६१७	६ १३०	उत्त. अ. ३१

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
तेरह उपाय क्रोधादि की शान्ति के	८१८	४ ४०२	श्राद्ध प्रका २ पृ ४३५
तेरह (कर्म) काठिया का वर्णन कहाँ है?	६८३	७ १२६	आव ह. नि गा ८४१ ८४२ पृ ३४६
तेरह क्रियास्थान	८१४	४ ३६२	सूय श्रु २ अ २
तेरह गाथा असंस्कृत अ० की	८१६	४ ४०६	उत्त अ ४
तेरह दृष्टान्त समकित प्राप्ति के	८२१	४ ४२२	नवपद सम्यक्त्वाधिकार
तेरह द्वार आहारक और अनाहारक के	८१७	४ ३६८	पन्न प २८ उ २
तेरह भव भ० ऋषभदेव के	८२०	४ ४०६	त्रि प पर्व १
तेरह भेद कायक्लेश के	८१६	४ ३६७	भ श २५ उ ७ सू ८०२, उव० सू १६
तेरह भेद प्रतिसंलीनता के	८१५	४ ३६५	
तेरह भेद विनय के	८१३	४ ३६१	दश अ ६ उ १ नि गा ३२५-३२६, प्रव द्वा ६५ गा ५५०-५५१
तैजस शरीर	३८६	१ ४१४	पन्न प २१ सू २६७, डा ५ उ १ सू ३६५, कर्म भा १ गा ३३
तैजस शरीर बन्धन नाम कर्म	३६०	१ ४१६	कर्म भा १ गा ३५, प्रव द्वा २१६
तैजस समुद्घात	५४८	२ २८६	पन्न प ३६ सू ३३१, डा ७ उ ३ सू ५८६, प्रव द्वा २३१ गा. १३११, द्रव्यलो स. ३ पृ १२५
त्याग	३५१	१ ३६६	डा ५ सू ३६६, अथि ३ श्लो ४६ पृ. १२७, प्रव. द्वा ६६ गा ५५४
त्रस	८	१ ५	डा २ उ ४ सू १०१
त्रस आठ	६१०	३ १२७	दश अ ४, डा. ८ उ. ३ सू. ५६५
त्रस काय	४६२	२ ६४	डा. ६ उ ३ सू. ४८०, दश अ ४, कर्म भा. ४ गा. १०

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
त्रायस्त्रिंश	७२६	३	४१५	तत्त्वार्थ अष्टा ४ सू. ४
त्रिमासिकी भिक्षुपट्टिमा	७६५	४	२८६	सम. १२, भ.श. २ उ. १ सू. ६३ टी. दशा. द. ७
त्रेपननाममोहनीयकर्मके	१००८	७	२७६	सम. ४२, भ.श. १२ उ. ४
त्रैराशिक मत	५६१	२	३७१	विशे. गा. २४४१-२४०८
ज्येष्ठ संस्थान	४६६	२	६६	भ.श. २६ उ. ३ सू. ७२४, पत्र. प. १ सू. ४

द

-दंतवाणिज्जे कर्मादान	८६०	५	१४५	उपा. अ. १ सू. ७, भ.श. ८ उ. ४ सू. ३३०, भावह. अ. ६ पृ. ८२८
दग्धाक्षर पांच	३८५	१	४०६	सरल पिंगल
दण्ड	३	१	२	टा. १ सू. ३
दण्डक चौबीस	६३४	६	२०४	टा. १ सू. ५१ टी. भ.श. १ उ. १ टी.
दण्ड की व्याख्या और भेद	६६	१	६६	भावा. धु. १ म. ४ उ. १ म. १०६ टी. सम. ३, टा. ३ उ. १ सू. १२६
दण्ड की व्याख्या और भेद	२६०	१	२६६	टा. ४ उ. २ सू. ४१८
दण्ड के दो भेद	३६	१	२३	टा. २ उ. १ सू. ६६
दण्ड नीति के सात प्रकार	५१०	२	२३८	टा. ७ उ. ३ सू. ४५७
दण्डायतिक	३५६	१	३७३	टा. ४ उ. १ सू. ३६६
दमपन्ती सती	८७५	५	३५२	भारत गा. ८, त्रि. प. पर्व. ८ न. ३
दया के साठ नाम	६२२	३	१५१	प्रश्न सत्वाद्वा. १ सू. २१
दर्शन	११	१	१०	पत्र. प. २६ सू. ३१२
दर्शन श्राद्ध	५६८	३	१०६	टा. ८ उ. ३ सू. ६१८
दर्शन कुशील	३६६	१	३८४	टा. ४ उ. ३ सू. ४८४

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दर्शन के चार भेद	१६६	१	१५७	ठा ४सू ३६६, कर्म भा ४गा. १२
दर्शन के तीन भेद	७७	१	५५	भ.श. ८३ २सू ३२०, ठा ३सू १८४
दर्शन छः	४६७	२	११५	तत्त्वार्थ, रत्ना., सर्वद, साख्य, योग, न्यायद, सि मु, प्रशस्त, शास्त्र, वेदान्त, ब्रह्म, हि फि.
दर्शन परिणाम	७४६	३	४२७	ठा १०३ ३सू ७१३, पन्न प १३
दर्शन पुलाक	३६७	१	३८२	ठा. ५ सू ४४६, भ.श. २५३ ६
दर्शनभेदिनी विकथा	५३२	२	२६७	ठा० ७ उ० ३ सू० ६६६
दर्शनमार्गणा और भेद	८४६	५	५८	कर्म. भा ४ गा १२
दर्शन मोहनीय	२८	१	२०	ठा. २सू. १०६, कर्म भा १गा १३
दर्शन विनय	४६८	२	२२६	उवसू २०, भ.श. २५३ ७सू ८०२, ठा ७ उ ३सू १८६, ध. अधि ३ श्लो ६४ टी पृ १४१
दर्शनविनय के दस बोल	७०६	३	३८४	भ.श. २५३ ७ सू ८०२
दर्शन विनय के ५५ भेद	१०१०	७	२७७	उव सू २०
दर्शन विराधना	८७	१	६३	सम० ३
दर्शनाचार	३२४	१	३३२	ठा ४उ. २सू ४३२, ध. अधि ३ श्लो ६४ पृ. १४०
दर्शनाचार आठ	५६६	३	६	पन्न प १ सू ३७गा १२८, उत्त. अ २८ गा ३१
दर्शनात्मा	५६३	३	६६	भ० श १२ उ १०सू ४६७
दर्शनाराधना	८६	१	६३	ठा० ३ उ० ४ सू० १६६
दर्शनार्थ	७८५	४	२६७	वृ. उ १ नि गा. ३२६२
दर्शनावरणीय कर्म और	५६०	३	५६	कर्म भा १गा १०-१२, पन्न प.
उसके नौ भेद				२३सू २६३, तत्त्वार्थ-अध्या ८

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दर्शनावरणीय कर्म बाँधने	४४१	२	४४	भ.श. ८३ ६ मू. ३४१
के छः कारण				
दर्शनावरणीय कर्म बाँधने	५६०	३	५६	कर्म भा. १ गा. ४४, पत्र १२३ मू.
के छः कारण और अनुभाव				२६२, भ.श. ८३ ६ मू. ३४१
दर्शनेन्द्र	६२	१	६६	श. ३ उ. १ मू. ११६
दर्शनों का विकास	४६७	२	११६	
दर्शनों की परस्पर तुलना	४६७	२	२१४	
दर्शनोपघात	६६८	३	२५७	श. ० १० उ. ३ मू. ७३८
द्वग्विदावण्या कर्मादान	८६०	५	१४६	उपा. अ. १ मू. ७, भ.श. ८ उ. १ मू. ३३०, आ.व. १ म. ६ पृ. २८
दशवैकालिकसूत्र की दूसरी	८६१	५	१४७	द.ग. चू. २
चूलिका की सोलह गाथाएं				
दशवैकालिकसूत्र की दूसरी	८६१	५	४७८	द.ग. चू. ०
चूलिका की १६ मूलगाथाएं				
दशवैकालिकसूत्र की प्रथम	८६८	५	४२०	द.ग. चू. १
चूलिका की अठारह गाथाएं				
दशवैकालिकसूत्र की प्रथम	८६८	५	४८७	द.ग. चू. १
चूलिका की १८ मूलगाथाएं				
दशवैकालिकसूत्र के चौथे	८११	४	३५२	द.ग. अ. ४ गा. १८-२४
अ. की बारह गाथा का अर्थ				
दशवैकालिकसूत्र के दस	२०४	१	१७२	
अध्ययनों का विषयवर्णन				
दशवैकालिकसूत्र के १०वें	६१६	६	१२६	द.ग. अ. १०
अध्ययन की २१ गाथाएं				

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दशवैकालिकसूत्र के दूसरे ७७१ ४ ११			दश अ २
अ० की ग्यारह गाथाएं			
दशवैकालिकसूत्रकेनवें अ० ५५३ २ २६३			दश. अ ६ उ ४
के चौथे उ० की ७ गाथाएं			
दशवैकालिकसूत्रकेनवें अ० ८५३ ५ १२७			दश. अ ६ उ ३
के तीसरे उ० की १५ गाथाएं			
दशवैकालिकसूत्रके नवें ८५३ ५ ४७६			दश० अ० ६ उ० ३
अध्ययन के तीसरे उ० की			
पन्द्रह मूल गाथाएं			
दशवैकालिकसूत्रकेनवें अ० ६३३ ६ २०१			दश० अ० ६ उ० २
के दूसरे उ० की २४ गाथाएं			
दशवैकालिकसूत्रकेनवें अ० ८७७ ५ ३७७			दश० अ० ६ उ० १
के पहले उ० की १७ गाथाएं			
दशवैकालिकसूत्रके नवें ८७७ ५ ४८२			दश० अ० ६ उ० १
अध्ययन के पहले उद्देशे			
की सत्रह मूल गाथाएं			
दशाश्रुतस्कधदशासूत्रका २०५ १ १८०			
संक्षिप्त विषय वर्णन			
दस अच्छेरे (आश्चर्य)	६८१ ३ २७६		ठा १० उ ३ सू० ७७७, प्रव द्वा १३८ गा ८८५-८८६
दस अजीव परिणाम	७५० ३ ४२६		ठा १० उ ३ सू ७१३, पत्र प १३ सू १८४-१८५
दस अधिपति अग्रिकुमारके ७३५ ३ ४१८			भश ३ उ ८ सू १६६
दस अधिपति असुर ,, ७३१ ३ ४१७			भश ३ उ ८ सू १६६
दस अधिपति उदधि ,, ७३७ ३ ४१६			भश ३ उ ८ सू १६६

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दस अधिपति दिक्कुमार के ७३८	३	४१६	भ.ज. ३ उ.८ सू. १६६	
दस अधिपति द्वीप ,, ७३६	३	४१६	भ.श. ३ उ.८ सू. १६६	
दस अधिपति नाग ,, ७३२	३	४१८	भ.ज. ३ उ.८ सू. १६६	
दस अधिपति वायु ,, ७३६	३	४१६	भ.श. ३ उ.८ सू. १६६	
दस अधिपति विद्युत् ,, ७३४	३	४१८	भ.ज. ३ उ.८ सू. १६६	
दस अधिपति सृपण ,, ७३३	३	४१८	भ.श. ३ उ.८ सू. १६६	
दस अधिपति स्तनित ,, ७४०	३	४२०	भ.ज. ३ उ.८ सू. १६६	
दस अनन्तक	७२०	३	४०३	टा. १० उ. ३ सू. ७३१
दस अनुत्तर केवली के	६५५	३	२२३	टा. १० उ. ३ सू. ७६३
दस अवस्था	६७८	३	२६७	टा. १० उ. ३ सू. ७७०
दस असंक्लेश	७१५	३	३८६	टा. १० उ. ३ सू. ७३६
दस अस्वाध्याय आन्तरिक ६६०	३	३५६	टा. १० उ. ३ सू. ७१४, प्र. द्वा. २६८, व्यव. भाष्य उ. ७	
(आकाश सम्बन्धी)				
दस आनुपूर्वी	७१७	३	३६०	अनु. सू. ७१-११६
दस आशंसा प्रयोग	६६७	३	२५३	टा. १० उ. ३ सू. ७५६
दस इन्द्र वैमानिक देवों के ७४१	३	४२०	टा. १० उ. ३ सू. ७६६	
दस उपघात दोष	६६८	३	२५४	टा. १० उ. ३ सू. ७३८
दस औदारिक अस्वाध्याय ६६१	३	३५८	टा. १० उ. ३ सू. ७१८	
दस कल्प वृक्ष	७५७	३	४४०	सम. १०, टा. १० उ. ३ सू. ७६६, प्र. द्वा. १७१ गा. १०६७ उ. ७
दस कल्प साधु के	६६२	३	२३४	पत्रा. १७ गा. ६-४०
दस कारण दीक्षा लेने के ६६४	३	२५१	टा. १० उ. ३ सू. ७१२	
दस कारण मान के ७०३	३	३७४	टा. १० सू. ७१०, टा. ८ सू. १०६	
दस कुरुक्षेत्र (महाविदेह के) ७५४	३	४३८	टा. १० उ. ३ सू. ७५४	

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
दसकुलकर आगामी उत्सर्पिणी के	७६७ ३ ४५०	ठा. १० उ ३ सू ७६७
दसकुलकर गत उत्सर्पिणी के	७६६ ३ ४४६	ठा १० उ ३ सू ७६७
* दस गणधर भगवान्	५६५ ३ ३	ठा ८ उ ३ सू ६१७ टी, सम ८ टी,
पार्श्वनाथ के		प्रव द्वा १६ गा ३३०, आच. ह गा. २६८-२६६, म श द्वा १११
दस गति	७२५ ३ ४१३	ठा १० उ ३ सू ७४५
दस गुण आलोचना देने	६७१ ३ २५६	म. श २५ उ ७ सू ७६६,
योग्य साधु के		ठा १० उ. ३ सू ७३३
दस गुण आलोचना लेने	६७० ३ २५८	म श. २५ उ ७ सू ७६६,
योग्य साधु के		ठा १० उ ३ सू ७३३
दस चक्रवर्ती ने दीक्षा ली	६८३ ३ २६२	ठा १० उ ३ सू ७१८
दस चित्त समाधि	६७४ ३ २६२	दशा० द०५, सम १०
दस जीव परिणाम	७४६ ३ ४२६	पत्र प १३, ठा १० सू ७१३
दस जम्भक देव	७४२ ३ ४२०	म ग १४ उ ८ सू ५३३
दस दान	७६८ ३ ४५०	ठा १० उ ३ सू ७४५
दस दिशाएं	७५३ ३ ४३७	ठा १० सू ७२०, म श १० उ १ सू ३६४, आच म १ उ. १ सू. २
दस दृष्टान्त मनुष्य भव की दुर्लभता के	६८० ३ २७१	उत्त अ ३ नि गा १६०, आच. ह नि गा ८ उ २ पृ ३४०
दस दोष आलोचना के	६७२ ३ २५६	म श २५ उ ७, ठा १० सू ७३३
दस दोष ग्रहणैषणा के	३६३ ३ २४२	प्रव द्वा ६७ गा ५६८, पि नि गा ५२०, पचा १३ गा २६, ध अधि ३ श्लो. २२ टी पृ ४१

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दस दोष मनके सामायिकमें	७६४	३	४४७	शिक्षा
दस दोष वचनके	७६५	३	४४८	शिक्षा
दस दोष वाद के	७२२	३	४०६	टा. १० उ. ३ सू. ७४२
दस द्रव्यानुयोग	७१८	३	३६१	टा. १० उ. ३ सू. ७२७
दस नक्षत्र ज्ञानवर्धक	७६२	३	४४४	सम १०, टा. १० उ. ३ सू. ७८१
दस नाम आवश्यक के	६८७	३	३५०	विशेष गा. ८७०-७६, अनु. सू. २८
दस नाम क्रोध कपायके	७०२	३	३७४	सम ४२
दस नाम दृष्टिवाद के	६८८	३	३५१	टा. १० उ. ३ सू. ७४२
दस पङ्क्ति	६८६	३	३५३	द. प
दस परंपरा फलपर्युपासनाके	७०८	३	३८३	टा. ३३ अनु. १६०
दस पुत्र	६७७	३	२६५	टा. १० उ. ३ सू. ७६२
दस प्रकार अद्धा पञ्च- क्त्वाण के	७०५	३	३७६	पञ्चा. ४ गा. ८-११, प्र. २३, ४ गा. २-१, भा. ३३ अ. ६ पृ. ८१
दस प्रकार का असंवर	७११	३	३८६	टा. १० उ. ३ सू. ७०६
दस प्रकार का असत्य	७००	३	३७१	टा. १० सू. ७४१, प. ११ सू. १६६, म. अ. ३३, ४१७, १००
दस प्रकार का नाम	७१६	३	३६५	अनु. सू. १३०
दस प्रकार का शस्त्र	६६६	३	३६४	टा. १० उ. ३ सू. ७४३
दस प्रकार का शुद्ध वागनुयोग	६६७	३	३६५	टा. १० उ. ३ सू. ७४४
दस प्रकार का संवर	७१०	३	३८५	टा. १० उ. ३ सू. १०६
दस प्रकार का सत्य	६६८	३	३६८	टा. १० सू. ७४१, प. ११ सू. १६६, म. अ. ३३, ४१७, १००
दस प्रकार का मराग मन्थमन्थन	६६४	३	३६४	टा. १० उ. ३ सू. ७४१, प. ११ सू. ३३०
दस प्रकार की मिश्र (सत्या मृपा) भाषा	६६६	३	३७०	प. ११ सू. १६६, टा. १० सू. ७४१, म. अ. ३३, ४१७, १००

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दस प्रकार के धर्म	६६२	३ ३६१	ठा १० उ ३ सू ७६०
दस प्रकार के नारकी, समय ७४७	३	४२४	ठा १० उ ३ सू ७५७
के अन्तर आदि की अपेक्षा			
दस प्रकार के शब्द	७१३	३ ३८८	ठा १० उ ३ सू ७०५
दस प्रकार के सर्वजीव ७२६-२७	३	४१४-४१५	ठा १० उ ३ सू ७७१
दस प्रकार से संसार की	६७६	३ २६६	
समुद्र से उपमा			
१ दस प्रतिसेवना	६६६	३ २५२	म श २५ उ ७, ठा १० सू ७३३
दस प्रत्याख्यान	७०४	३ ३७५	ठा १० उ ३ सू ७४८, म श ७ उ २ सू २०२
दस प्राण	७२४	३ ४१३	ठा १ सू ४८ टी, प्रव द्वा. १७०
दस प्रायश्चित्त	६७३	३ २६०	म श २५ उ ७, ठा १० सू ७३३
दसवल इन्द्रिय, ज्ञानादि के ६७५	३	२६३	ठा १० उ ३ सू ७४०
दसवार्तेछद्मस्थ के अगोचर ७१६	३	३८६	ठा १० सू ७५४, म श ८ उ २
दस बोल पुण्यवान् के	६५६	३ २२४	उत्त अ ३ गा १७-१८
दसबोल सम्यक्त्वप्राप्तिके ६६३	३	३६२	उत्त अ. २८ गा. १६-२७
दस बोल सातावेदनीय के ७६१	३	४४३	म श ७ उ ६ सू २८६
दस बोलों का विच्छेद	६८२	३ २६२	विशे गा २५६३
दस ब्रह्मचर्य समाधि स्थान ७०१	३	३७२	उत्त. अ १६
दृष्टान्त सहित			
दस भवनपति	७३०	३ ४१६	पत्र प १ सू ३८, ठा. १० उ ३ सू ७३६, म श २ उ. ७ सू ११५, जी प्रति ३ उ १ सू ११५
दस भेद अरूपी अजीव के ७५१	३	४३४	पत्र प १ सू ३, जी प्रति १ सू ४

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दस भेद कर्म के	७६०	३	४४१	आचा अ. २३ १गा. १=३-८४
दस भेद तृणवनस्पति के	७४५	३	४२२	ठा १० उ ३स ७७३
दस भेद दर्शनविनय के	७०६	३	३८४	भ. ज. २५ उ ७ सू ८०२
दस भेद देवों के	७२६	३	४१५	तत्त्वार्थ प्रख्या ४ सू. ४
दस भेद संसार में आने	७२८	३	४१५	ठा १० उ ३स ७७१
वाले प्राणियों के				
दस महद्विक देव	७४३	३	४२१	ठा १० उ ३स ७६४
दस महानदी मेरु से उत्तर में	७५६	३	४४१	ठा. १० उ ३स ७१७
दस महानदी मेरु से दक्षिण में	७५८	३	४४०	ठा १० उ ३स ७१७
दस मिथ्यात्व	६६५	३	३६४	ठा १० उ ३स. ७३४
दस मुण्ड	३६४-३६५	१	३७८-३७९	ठा १० उ ३स ४४३
दस मुण्ड	६५६	३	२३१	ठा. १० उ. ३स ७४६
दस यति धर्म	३५०-	१	३६४-	ठा. १० उ १सू ३०६, भ. अ. धि ३
	३५१		३६६	श्लो ४६टी पृ १०७, प्रव द्वा
				६६ गा ४४४
दस रानियों श्रेणिक की	६८६	३	३३३	अत व ८
दस रुचि	६६३	३	३६२	उत्त अ ८८ गा ११-२७
दस लक्षण श्रावक के	६८४	३	२६२	भ. ज. २३५ सू १०७
दस लब्धि ज्ञानादि की	६५८	३	२३०	भ. ज. ८३२ सू ३००
दस लोकस्थिति	७५२	३	४३६	ठा १० उ. ३सू ७०४
दस वक्खार पर्वत सीता	७५५	३	४३६	ठा १० उ. ३सू ७६८
महानदी के दोनों तटों पर				
दस वक्खार पर्वत सीतोदा	७५६	३	४३६	ठा १० उ ३सू ७६८
महानदी के दोनों तटों पर				

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दस विगय	७०६	३ ३८२	आवहअ ६गा १६०१ पृ ८५३
दसविमानवैमानिकइन्द्रोंके ७४४	३	४२१	ठा १० उ० ३ सू ७६६
दस विशेषण स्थण्डिल के ६७६	३	२६४	उत्त. अ २४ गा १६-१८
दस विशेष दोष	७२३	३ ४१०	ठा १० उ ३ सू ७४३
दस वेदना नारकी जीवों के ७४८	३	४२५	ठा १० उ ३ सू ७५३
दस वेयावच्च (वैयावृत्य)	७०७	३ ३८२	भश २५ उ ७ सू ८०२
दस श्रमण धर्म	६६१	३ २३३	नव गा २३, सम १०, शा भा १ प्रक ८ संवरभावना
दस श्रावक आनन्द आदि ६८५	३	२६४	उपा अ. १-१०
दस संक्लेश	७१४	३ ३८८	ठा १० उ ३ सू ७३६
दस सज्ञा	७१२	३ ३८६	ठा १० सू ७५२, भश ७ उ ८
दस समाचारी	६६४	३ २४६	भश २५ उ ७ सू ८०१, ठा १० उ ३ सू ७४६, उत्त अ. २६ गा २-७, प्रवद्धा १०१ गा. ७६०
दस सुख	७६६	३ ४५३	ठा १० उ ३ सू ७३७
दस सूक्ष्म	७४६	३ ४२३	ठा १० उ ३ सू ७१६
दस स्थविर	६६०	३ २३२	ठा १० उ ३ सू ७६१
दस स्थानभद्रकर्मवोधनेके ७६३	३	४४४	ठा. १० उ ३ सू ७५८
दस स्थानों का अनुभव ५६०	२	३४०	भश. १४ उ ५ सू ५१६,
नारकी जीवों के			
दस स्वप्न भगवान् महावीरके ६५७	३	२२४	भश १६ उ ६, ठा १० सू ७५०
दाता ४० दायक दोष दूषित ६६३	३	२४३	पिनि गा ५२०
दान के चार प्रकार	१६७	१ १५६	घरगा ७० टी
दान के विषय में ७ गाथाएं ६६४	७	२००	
दान दस	७६८	३ ४५०	ठा १० उ ३ सू ७४५

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दान धर्म	१६६	१	१५४	सूय.अ.६ गा.२३, पचा.६ गा.६
दानसाधुयोग्य के १४ भेद	८३२	५	२६	मि.जा. , साव.ह. पृ.८४६
दानान्तर्गत	३८८	१	४१०	कर्म.भा. १ गा. ५२, पत्र. प. २३
दायक दोष (ग्रहणैषणा का छठा दोष)	६६३	३	२४३	प्रव. द्वा. ६७ गा. १६८, पि. नि. गा. ५२०, ध. अ. नि. ३ श्लो. २२
दायक दोष के ४० प्रकार	६६३	३	२४३	पि. नि. गा. ५२०
दायक दोष दूषित ४० दाता	६८८	७	१४६	पि. नि. गा. ५२०
दायद्रव वृत्त का दृष्टान्त	६००	५	४५७	जा. अ. ११
दिवकुमारों के दस अधिपति	७३८	३	४१६	म. ज. ३३ ८ मृ. ११६
दिगाचार्य	३४१	१	३५२	ध. अ. नि. ३ श्लो. ४६ टी. पृ. १२८
दिद्विया क्रिया	२६४	१	२७६	डा. २३ १ मृ. ६०, डा. २ मृ. ११८
दिशाणं दस	७५३	३	४३७	डा. ५० मृ. ७२०, म. ज. १०३ १ मृ. ३६४, आ. चा. अ. १३ १ मृ. २
दिशा परिमाण व्रत	१२८८	१	६१	साव. ह. अ. ६ पृ. ८२६
दिशा परिमाण व्रत के पांच	३०६	१	३०३	उपा. म. १ मृ. ७
अतिचार				
दिशा परिमाण व्रत निश्चय	७६४	४	२८२	आगम
और व्यवहार से				
दिशा मोह आगार	४८३	२	६८	साव. ह. अ. ६ पृ. ८२२, प्र. द्वा. ४
दीक्षा के अयोग्य १८ पुरुष	८६१	५	४०६	{ प्रव. द्वा. १०७-८ गा. ३६०-१ ६० अ. अ. नि. ३ श्लो. ७८२ ३
दीक्षा के अयोग्य बीस स्त्रियाँ	८६१	५	४०६	
दीक्षा के दस कारण	६६५	३	२५१	डा. १०३ ३ मृ. ७१६
दीक्षा देने वाले गुरु के पन्द्रह गुण	८५१	५	१२४	ध. अ. नि. ३ श्लो. ८० ८४२. ७

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दीक्षा पर्याय और सूत्र	५१४	२ २४३	ठा ५३ १ सू ३६६, टा ७ सू
पढ़ाने की मर्यादा			५५४, व्यवभा उ १० सू. २१-३५
दीक्षार्थी के सोलह गुण	८६४	५ १५८	ध अधि ३ श्लो ७३-७८ पृ १
दीक्षालेनेवाले दस चक्रवर्ती	६८३	३ २६२	ठा १० उ ३ सू ७१८
दीपक संकेत पञ्चक्रवाण	५८६	३ ४३	आव ह अ ६ नि गा १५ ७८, प्रव द्वा ४ गा २००
दीपक समकित	८०	१ ५८	विशे गा २६ ७५, द्रव्यलो स ३ श्लो. ६७०, ध अधि २ श्लो २२ टी पृ ३६, आ प्र गा ४०
दीर्घ आयु सुख	७६६	३ ४५३	ठा १० उ ३ सू ७३७
दीर्घ संस्थान	५५२	२ २६३	ठा १ सू ४७, ठा ७ उ ३ सू. ५४८
दीर्घायु-अशुभ के ३ कारण	१०६	१ ७४	{ भ.श ४ उ ६ सू २०४, ठा ३ उ १ सू १२५
दीर्घायु शुभ के तीन कारण	१०७	१ ७५	
दुःखगर्भित वैराग्य	६०	१ ६५	क.भा २ श्लो. ११८-११९
दुःखविपाक की दस कथा	६१०	६ २६	वि अ. १-१०
दुःखशय्या के चार कारण	२५५	१ २४०	ठा ० ४ उ. ३ सू ३२५
१ दुःशीलता	४०२	१ ४२६	उत्त अ ३६ गा २६ १, प्रव. द्वा ७३
दुःसंज्ञाप्य तीन	७५	१ ५४	ठा ३ उ ४ सू २०३
२ दुःपुष्टिच्छिद्यं	८२४	५ १५	आव ह अ ४ पृ ७३०
दुर्गन्धा का उदाहरण	८२१	४ ४५८	नवपद गा १८ टी. सम्यक्त्वा- धिकार
जुगुप्सा दोष के लिये			
दुर्लभ ग्यारह	७७२	४ १७	आव ह नि गा ८३ १ पृ. ३४१
दुर्लभ बोधि	८	१ ७	ठा ० उ २ सू ७६

१ दुष्ट स्वभाव, वन्दर्पभावना का एक भेद।

२ पृष्ठ १४३ पर टिप्पणी देखो

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दुर्लभबोधि के पाँच कारण	२८६	१	२६६	ठा. ५ उ २ सू ४२६
दुर्लभ बोल छः	४३६	२	४३	ठा ६ उ. ३ सू ४८५
दुर्लभ मनुष्य भव के दम	६८०	३	२७१	उत्तम ३ नि गा. १६०, भाव ह नि गा ८३२ पृ ३४०
दृष्टान्त				
दुपमदुपमा आरा अव-	४३०	२	३३	अवज. २ सू ३६, ठा ६ सू ४६२,
सर्पिणी का				भ रा ७ उ ६ सू २८७-२८८
दुपमदुपमा आरा उत्स० का	४३१	२	३६	ज. वज. २ सू ३७, ठा ६ सू. ४६२
दुपमदुपमा आरा अव० का	४३०	२	३२	ज वज. २ सू ३८, ठा. ६ सू ४६२
दुपमदुपमा आरा उत्स० का	४३१	२	३७	ज वज. २ सू ३७, ठा ६ सू ४६२
दुपमा आरा अवसर्पिणी का	४३०	२	३३	ज वज. २ सू ३४, ठा ६ सू ४६२
दुपमा आरा उत्सर्पिणी का	४३१	२	३६	ज. वज. २ सू ३७, ठा. ६ सू ४६२
दुपमा काल जानने के स्थान	५३४	२	२६८	ठा. ७ उ. ३ सू. ६४६
दुष्प्रत्याख्यान	५४	१	३१	भ रा. ७ उ २ सू २७१
दृती दोष (गवेपणैपणा का एक दोष)	८६६	५	१६४	प्रव गा १६७, ध. अभि. ३ ओ. २० पृ ४०, पि. नि गा. १०८, पि वि. गा. १८, पं. वा १३ गा. १८
१ दूषणाभास (जात्युत्तर)	६३६	६	२०६	प्र सी शब्दा १ भा. २ सू. २६, न्यायप्र, न्यायसू शब्दा. ४ भा १
चौबीस				
दूषित दाता चालीस	६८८	७	१४६	पि नि गा ४००
२ दृष्टलाभिक	३५४	१	३६६	ठा ६ उ १ सू ३६६
दृष्टान्त	३८०	१	३६७	स्त्वा परि ३ न्याय दी प्रका ३
दृष्टान्त डक्कीस पारिणा-	६१५	६	७३-	न सू २७ गा. ७१-७५, भाव
मिकी बुद्धि के			१२६	ह नि गा. ६४८-६४९

१ पृष्ठ १३० पर टिप्पणी देखो ।

२ डेनेहुए माहुर की गवेपणा करने वाला अभिप्रदवागी माधु ।

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
दृष्टान्त कमलामेलाकाभाव ७८०	४ २५०	आव ह नि. गा १३४ पृ ६४, वृ पीठिका नि गा १७२
अननुयोग तथा अनुयोगपर		
दृष्टान्त कुब्जा का क्षेत्र अन-७८०	४ २३६	आव ह नि गा १३३ पृ ८८, वृ पीठिका नि गा १७१
नुयोग तथा अनुयोग पर -		
दृष्टान्त कोङ्कणदारक का ७८०	४ २४८	आव. ह नि गा. १३४ पृ ६२, वृ पीठिका नि गा. १७२
भाव अननुयोग, अनुयोगपर		
दृष्टान्त गाय, बछड़े का द्रव्य ७८०	४ २३६	आव ह नि. गा. १३३ पृ ८८, वृ पीठिका नि गा १७१
अननुयोग तथा अनुयोगपर		
दृष्टान्त ग्रामेयक का वचन ७८०	४ २४२	आव ह नि गा १३३ पृ ६४, वृ पीठिका नि गा १७१
अननुयोग तथा अनुयोगपर		
दृष्टान्त तेरह सम्यक्त्व के ८२१	४ ४२२	नवपद द्वा ७ सम्यक्त्वाधिकार
दृष्टान्त दस मनुष्य भव की ६८०	३ २७१	उत्त अ ३ नि गा १६०, आव ह नि गा ८३२ पृ ३४०
दुर्लभता के		
दृष्टान्त नकुल का भाव अन ७८०	४ २४६	आव. ह नि गा १३४ पृ ६३, वृ पीठिका नि. गा १७२
नुयोग तथा अनुयोग पर		
दृष्टान्त वधिरोल्लापका वचन ७८०	४ २४१	आव ह नि गा १३३ पृ ८६, वृ पीठिका नि गा १७१
अननुयोग तथा अनुयोगपर		
दृष्टान्त वारह अननुयोग ७८०	४ २३८	आव ह. नि गा. १३३, १३४, वृ पीठिका नि. गा १७१-१७२
तथा अनुयोग पर		
दृष्टान्त १२ कम्मिया बुद्धि के ७६२	४ २७६	न सू. २७, आव ह नि गा ६४७
दृष्टान्त शम्ब के साहस का ७८०	४ २५२	आव ह नि गा १३३ पृ ६४, वृ पीठिका नि. गा १७२
भाव अननुयोग अनुयोगपर		
दृष्टान्त आवक भार्या का भाव ७८०	४ २४५	आव ह नि गा १३४ पृ ६१, वृ पीठिका नि गा १७२
अननुयोग तथा अनुयोगपर		

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दृष्टान्त श्रेणिक के कोप का भावअननुयोगअनुयोग पर	७८०	४	२५३	भाव.द.नि.गा. १३४ पृ. ६४, वृ पीठिका नि.गा. १७२
दृष्टान्त सत्ताईस औत्प- त्तिकी बुद्धि के	६४६	६	२४२	नं.मृ. २७गा ६२-६४टी.,
दृष्टान्त साप्तपदिक का भाव अननुयोग तथा अनुयोग पर	७८०	४	२४६	भाव.द.नि.गा. १३४ पृ. ६१, वृ पीठिका नि.गा. १७२
दृष्टान्त स्वाध्याय का काल अननुयोग तथा अनुयोग पर	७८०	४	२४०	भाव.द.नि.गा. १३३ पृ. ८६, वृ पीठिका नि.गा. १७१
दृष्टिजा(दिष्टिया) क्रिया	२६४	१	२७६	टा. २.मृ. ६०, टा. १.मृ. ४१६
दृष्टि नारकियों में	५६०	२	३३७	जी प्रति ३स. ८८
दृष्टिवाद के दस नाम	६८८	३	३५१	टा. १०३ ३मृ. ७४२
१ दृष्टिसम्पन्नता	७६३	३	४४५	टा. १० ३.३मृ. ७४८
देव	६३	१	४४	यो प्रका. २२लो ४-११
देव आयुवन्द्य के ४ कारण	१३५	१	१००	टा. ४३.४मृ. ३७३
देवताओं की पहचान के बोल	१३७	१	१०१	टा. ४३.२ मृ. २८० टी.
देवताओं के चार भेद	१३६	१	१०१	उत्त. अ. ३६गा २०२
देवता की ऋद्धि के तीन भेद	१००	१	७०	टा. ३३ ४मृ. २१४
देवता की तीन अभिलाषाएं	१११	१	८०	टा. ३ उ. ३ मृ. १७८
देवता के एक सौ अष्टाणु भेद	६३३	३	१७६	पञ्चम. १मृ. ३८, उत्त. अ. ३६गा. २०३-२१४, जी. प्रति ३
देवता के च्यवन ज्ञान के तीन बोल	११३	१	८१	टा. ३३ ३मृ. १७६
देवता के दो भेद	५७	१	४०	नवार्थ अम्या ४ मृ. १७
देवता के पश्चात्ताप के ३ बोल	११२	१	८०	टा. ३३. ३मृ. १७८

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
देवता के मनुष्यलोक में आने के चार कारण	१३६	१ १०२	ठा ४ उ ३ सू ३२३
देवता के मनुष्यलोक में आने के तीन कारण	११०	१ ७६	ठा ३ उ ३ सू १७७
देवता कौनसी भाषा बोलते हैं?	६८३	७ १२५	भ श ५ उ ४ सू १६१, मम ३४, पत्र प १ सू ३७
देवताचारकारणों से मनुष्यलोक में नहीं आ सकता	१३८	१ १०१	ठा ४ उ ३ सू ३२३
देवदत्ता रानी की कथा	६१०	६ ४७	त्रि अ ६
देव पाँच	४२२	१ ४४५	ठा ५ सू ४०१ भ श १२ उ ६
देवलोक कहाँ स्थित हैं ?	८०८	४ ३१८	पत्र प २ सू ४१, जी प्रति ३ सू २०७
देवलोक की गतिआगति	८०८	४ ३२८	जी प्रति ३ सू २१४, पत्र प. ६
देवलोक की पर्षदारण, पारि-	८०८	४ ३२५	जी प्रति ३ सू २०८
पदों की संख्या और स्थिति			
देवलोक के देवों का उच्छ्वास	८०८	४ ३२६	जी. प्रति. ३ सू २१५
देवलोक के देवों का वर्ण	८०८	४ ३२६	जी प्रति ३ सू २१५
और स्पर्श			
देवलोक के देवों का संस्थान	८०८	४ ३२६	जी प्रति ३ सू २१४
देवलोक के देवों का संहनन	८०८	४ ३२६	जी प्रति ३ सू २१४
देवों के देवों की श्रवणाहना	८०८	४ ३२६	जी प्रति. ३ सू २१३
देवलोक के देवों की वेशभूषा	८०८	४ ३३१	जी. प्रति. ३ सू २१८
देवलोक के देवों के दसभेद	८०८	४ ३३३	तत्त्वार्थ अध्या ४ सू. ४
देवलोक के देवों के मुकुटचिह्न	८०८	४ ३१६	पत्र प. २ सू ५१
देवों के विमानों का आधार	८०८	४ ३२७	जी प्रति ३ सू २०६

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
देव०के विमानोंका विस्तार	८०८	४ ३२७	जी.प्रति ३ सू. २१३
देव०के विमानोंका संस्थान	८०८	४ ३२७	जी.प्रति ३ सू. २१२
देवलोक के विमानों की	८०८	४ ३२७	जी.प्रति ३ सू. २१०-२११
मोटाई और ऊँचाई			
देवलोक के विमानों के	८०८	४ ३२७	जी.प्रति ३ सू. २१३
वर्ण, गन्ध और स्पर्श			
देवलोक वारह	८०८	४ ३१८	पत्र.प. २, ४, ६, जी.प्रति ३ सू. २०७-२०३, तत्त्वार्थ. ग्रन्था ४
देवलोक वारह की स्थिति	८०८	४ ३२४	पत्र.प. ४ सू. ६६
देवलोक वारह के दस इन्द्र	७४१	३ ४२०	टा. १० उ३ सू. ७६६
देवलोक वारह के विमान	८०८	४ ३२३	पत्र.प. २ सू. १३
देवलोक १२में स्थिति आदि	८०८	४ ३३४	तत्त्वार्थ. ग्रन्था. ४ सू. २००
७वाँ उत्तरोत्तर अधिक हैं			
देवलोक में अनुभाव	८०८	४ ३३३	तत्त्वार्थ. ग्रन्था. २ सू. २०
देवलोक में अवधिज्ञान	८०८	४ ३३०	जी.प्रति ३ सू. २११
देवलोक में आहार	८०८	४ ३३५	तत्त्वार्थ. ग्रन्था. ४ सू. २०
देवलोक में उच्छ्वास	८०८	४ ३३५	तत्त्वार्थ. ग्रन्था. ४ सू. २३
देवलोक में उत्पन्न होने	८४८	५ ११५	भग. १ व. २ सू. २४
वाले जीव			
देवलोक में उपपात	८०८	४ ३३६	तत्त्वार्थ. ग्रन्था. २ सू. २०
देवलोक में उपपात विरह	८०८	४ ३३२	पत्र.प. ६, पत्र. द्वा. १६६-२०० गा. १०६७ में १०७०
और उद्घर्तना विरह			
देवलोक में क्षुधा पिपासा	८०८	४ ३३१	जी.प्रति ३ सू. २११
देवलोक में गति आगति	८०८	४ ३३२	पत्र.प. ६, पत्र. द्वा. १६६-२००
देवलोक में चार बातें उत्त-	८०८	४ ३३५	तत्त्वार्थ. ग्रन्था. ४ सू. २३
रोत्तर हीन होनी हैं			

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
देवलोक में ज्ञान	८०८ ४ ३३०	जी प्रति ३ सू २१६
देवलोक में दृष्टि	८०८ ४ ३३०	जी प्रति ३ सू २१४
देवलोक में देवोत्पत्तिसंख्या	८०८ ४ ३२८	जी प्रति ३ सू २१३
देवलोक में प्रवीचार	८०८ ४ ३३३	तत्त्वार्थ अध्या ४ सू ८, ९.
देवलोक में लेशयां	८०८ ४ ३३०	जी प्रति ३ सू २१४
देवलोक में विकुर्वणा	८०८ ४ ३३१	जी प्रति ३ सू २१७
देवलोक में वेदना	८०८ ४ ३३६	तत्त्वार्थ. अध्या ४, उव सू ३८
देवलोक में समुद्घात	८०८ ४ ३३१	जी. प्रति ३ सू २१७
देवलोक में सुख और ऋद्धि	८०८ ४ ३३१	जी प्रति ३ सू २१७
देव वैमानिक के २६ भेद	६४४ ६ २२७	पञ्च प. १ सू ३८, उत्त अ ३६ गा ३०७-१४, अ श ८८, १ सू ३१०
देव सम्बन्धी उपसर्ग चार	२४० १ २१६	ठा ४३ ४ सू ३६१, सू अ ३ उ १ नि गा ४८ टी
१ देवाधिदेव	४२२ १ ४४६	ठा ४३ १ सू ४०१, अ श १२ उ. ६ सू ४६२
देवाभियोग आगार	४५५ २ ५६	उपा अ. १ सू ८, आव ह. अ ६ पृ ८१०, ध म मि २ श्लो २२ पृ ४१
देवार्थ-भ० महावीरकानाम	७७० ४ १०	जैन विद्या बोल्यूम १ नः १
देविदथव पङ्कणा	६८६ ३ ३५५	द प.
देवी (पुष्पवती) की पारिणा-६	१५ ६ ८०	न सू २७ गा ७२, आव ह नि. गा. ६४६
मिकी बुद्धि की कथा		
देवेन्द्रावग्रह	३३४ १ ३४४	अ श १६ उ २ सू ५६७, प्रव द्वा ८५ गा. ६८१, आचा. ५ २ च १ अ ७ उ. २ सू १६२

१ देवों से भी बढकर अतिशय वाले, अतएव उनके भी आराध्य, केवलज्ञान केवल-
दर्शन के धारक अरिहन्त भगवान् देवाधिदेव कहलाते हैं ।

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
देवों की पाँच परिचारणा	३६८	१	४२२	पत्र प ३६, डा ६३ १ मू ४०० टी.
देवों के इन्द्र सामानिक	७२६	३	४१५	तत्त्वार्थ. भा. ५. ४ मू. ४
आदि दस भेद				
देवों के विषय में गणधर मौर्य	७७५	४	५०	विज्ञे. गा १८६ ४-१८८ ४
स्वामी का शंका समाधान				
देश अवसन	३४७	१	३५६	भाव. द. म. ३ नि. गा ११०७, प्र. द्वा २ गा १०३-१०३
देशकथा चार	१५१	१	१०६	डा ४८. २ मू. २८२
देशकथा से होने वाली हानि	१५१	१	११०	डा ४८ २ मू २८२ टी
देश बन्ध	५२	१	३०	कर्म भा. १ गा. ३६ व्याख्या
देश विरत गुणस्थान	८४७	५	७५	कर्म. भा. २ गा २
देश चरित सामायिक	१६०	१	१४४	विज्ञे. गा. २६७३-२६७३
देश विस्तार अनन्तक	४१८	१	४४२	डा ४३. ३ मू १६२
देशावकाशिक व्रत	१८६	१	१४०	पत्रा १ गा २७, भाव. द. म. १
देशावकाशिक व्रत के पाँच	३१०	१	३१०	व्या. भा. १ मू. ६, भाव. द. म. ६ मू. ६ ८३४, प्र. मा. १२ टी. ६ मू ११४
अतिचार				
देशावकाशिक व्रत निश्चय	७६४	४	२८४	भागम.
और व्यवहार से				
दो उपयोग	११	१	१०	पत्र प २६ मू ३१२
दो नियम-उत्सर्ग, अपवाद	४०	१	२५	वृ. गा. ३१६, स्वा. का ११ टी
दो पोरिसी के सात आगार	५१६	२	२४६	भाव. द. म. ६७ ८६२, प्र. द्वा २
दो प्रकार का अवधिज्ञान	१३	१	११	डा २३ १ मू ७१
दो प्रकार का मनःपर्ययज्ञान	१४	१	१२	डा २३ १ मू ७१
दो प्रकार का वस्तु का स्वरूप	४१	१	२६	स्वा. का. ६, स्वा. १६. ६ मू १
सामान्य और विशेष				

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
दो प्रकार जीव के	७ख १ ४	ठा २सू १०१, तत्त्वार्थ अध्या. २
दो प्रकार ज्ञान के प्रमाण, नय ३७	१ २३	रत्ना परि १, ७
दो प्रकार प्रवचन माता के	२२ १ १६	उत्त. अ २४
दो भेद अधिकरण के	५० १ २६	तत्त्वार्थ अध्या ६ सू ७
दो भेद अवग्रह के	५८ १ ४०	नसू २८, कर्म भा. १गा ४, ४
दो भेद आकाश के	३४ १ २२	ठा २ उ. १ सू ७४
दो भेद आधार और आधेय	४८ १ २८	विशेष गा. १४०६
दो भेद आयु के	३० १ २१	तत्त्वार्थ अध्या २सू ५२, भ.श. २० उ १ सू ६८५
दो भेद-आरंभ और परिग्रह	४६ १ २६	ठा. २ उ १ सू ६४
दो भेद-आविर्भाव, विरोभाव	४४ १ २७	न्याय को
दो भेद इन्द्रिय के	२३ १ १७	पञ्च. प. १५सू १६ १टी, तत्त्वार्थ. अध्या. २ सू १६
दो भेद जनोदरी के	२१ १ १६	भ.श. २५ उ ७ सू ८०२
दो भेद कर्म के दो प्रकार से	२७ १ १८	कर्म. भा १गा १ व्याख्या, अष्ट ३०, कम्म. गा १७. ६, वि अ. ३सू २०टी
दो भेद कारण के	३५ १ २३	विशेष गा २०६६
दो भेद-कार्य और कारण	४३ १ २७	न्याय को
दो भेद काल के	३२ १ २३	ठा २ उ ४ सू ६६
दो भेद कालचक्र के	३३ १ २२	ठा २ उ १सू ७४
दो भेद गुण और पर्याय	४७ १ २८	उत्त अ २८ गा ६
दो भेद गुण के दो प्रकार से	५५ १ ३२	सूय. अ १४नि गा १३६, पचा ५ गा २, द्रव्यत अध्या १२ लो ८
दो भेद चारित्रधर्म के	२० १ १५	ठा २ उ १सू ७२
दो भेद चारित्रमोहनीय के	२६ १ २०	पञ्च. प. १४सू १८६टी, कर्म भा. १

विषय	बाल भाग पृष्ठ	प्रमाण
दो भेद ज्ञान के	१२ १ १०	नमू २, डा २३, १ मू. ७१
दो भेद दण्ड के	३६ १ २३	डा २८ १ मू ६६
दो भेद देवता के	५७ १ ४०	तत्त्वार्थ, अध्या. ४ मू. १७
दो भेद-द्रव्य और गुण	४६ १ २८	उत्त अ. २८ गा ६, तत्त्वार्थ, अध्या ४
दो भेद द्रव्य के	६० १ ४२	तत्त्वार्थ अध्या ५ मू ३, ४
दो भेद द्रव्येन्द्रिय के	२४ १ १७	तत्त्वार्थ अध्या. २ मू १७
दो भेद धर्म के	१८ १ १४	दश अ १ गा. १ टी, डा. २३, १ मू ७२, प्र. अधि. १७ लो. ३ टी पृ १
दो भेद नय के	१७ १ १४	रत्ना परि ७ मू ५
दो भेद निगोद के	६ १ ८	भागम.
दो भेद परोक्ष ज्ञान के	१५ १ १२	पद्म प २६ मू ३१२, डा २८ १ मू ७१, भा. शा. ८३, २ मू ३१८, नमू १, कर्म भा १ गा ४ भ ग ७३ २ मू २७१
दो भेद प्रत्याख्यान के	५४ १ ३१	
दो भेद प्रवृत्ति और निवृत्ति के	४५ १ २८	
दो भेद बन्ध के	५२ १ ३०	कर्म भा. १ गा. ३५ व्याख्या
दो भेद बन्धन के	२६ १ १८	डा २८ ४ मू २६
दो भेद भावेन्द्रिय के	२५ १ १७	तत्त्वार्थ अध्या. २ मू १८
दो भेद मरण के	५३ १ ३१	उत्त अ ५ गा २
दो भेद मोहनीय कर्म के	२८ १ १६	डा. २ मू. १०४, कर्म भा १ गा १३
दो भेद रूपी के	६१ १ ४२	भ ग १२ ८ १ मू ८१०
दो भेद लक्षण के	६२ १ ४२	न्यायशी प्रका. १
दो भेद वेदनीय कर्म के	७१ १ ३०	पद्म प २३, कर्म भा १ गा. १२
दो भेद श्रुतज्ञान के	१६ १ १३	नमू ४६, डा. २८ १ मू ७१
दो भेद श्रुतधर्म के	१६ १ १५	डा २३ १ मू ३२

विषय -	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
दो भेद श्रेणी के	५६ १ ३३	कर्म भा २ गा २, द्रव्यलो स ३ श्लो ११६६-१२३४, विशेष. गा १२८४, आव म गा ११६-१२३ ठा. २ सू ७३, ७६, १०१, मश. १३ उ १ सू ४७० टी, आप्र गा ६६- ६७, आप्र गा ४२-४३ प्रव द्वा १४६ गा ६४२ टी, कर्म भा १ गा १४, ठा २ सू ७०, पत्र प- १ सू ३७, तत्त्वार्थ अध्या १ सू ३ रत्ना परि ७ सू १४, १६, रत्ना परि ४ सू ३-४ ठा २ उ. ३ सू ८४ रत्ना परि ३ सू ११, १४ सम १४६ तत्त्वार्थ अध्या ४ सू ३१ ठा. १० उ ३ सू ७४३ प्रव द्वा ४१ गा ४५१-४५३, सश द्वा ६६ गा १६१-१६२, शिक्षा प्रसी अध्या १ आ १ सू. ३३ क भा २ श्लो. १६०-१६१ उत्त अ २४ गा ६-१० आव द्वा ५ गा १४४६-४७, प्रव. द्वा ५ गा २४७, यो प्रका ३ पृ. २४०
दो भेद संसारी जीव के नौ प्रकार से	८ १ ४	
दो भेद सम्यक्त्व के चार प्रकार से	१० १ ८	
दो भेद सामान्य के दो प्रकार से	५६ १ ४१	
दो भेद स्थिति के	३१ १ २१	
दो भेद-हेतु और साध्य	४२ १ २७	
दो राशि,	७(क) १ ४	
दो विवक्षा-मुख्य और गौण	३८ १ २४	
दोष	७२३ ३ ४११	
दोष अठारह दो प्रकार से	८८७ ५ ३६७	
जो अरिहन्त देव में नहीं होते		
दोष अठारह पौषध के	८६४ ५ ४१०	
दोष आठ अनेकान्तवाद पर	५६४ ३ १०२	
दोष आठ चित्त के	६०३ २ १२०	
दोष आठ साधु को वर्जनीय	५८३ ३ ३८	
दोष उन्नीस कायोत्सर्ग के	८६६ ५ ४२५	

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दोष चार	२४४	१	२२१	पिं नि गा. १८२, धमधि ३ श्लो. ६३ टी. पृ १३६
दोष दस आलोचना के	६७२	३	२५६	भ. रा. २५७ ७, टा १० सू ७३३
दोष दस मन के सामायिक के	७६४	३	४४७	जिज्ञा.
दोष दस वचन के,, ,,	७६५	३	४४८	जिज्ञा.
दोष दस वाद के	७२२	३	४०६	टा १० उ ३ सू ७४३
दोष निर्घातन विनय के भेद	२३३	१	२१६	दशा. द ४
दोष पाँच ग्रासैपणा (मांडला) के	३३०	१	३३६	उत्त. प्र. २४ गा १२, उत्त. प्र. २६ गा. ३२, न. ग्रंथि ३ श्लो २३ टी. पृ ४६, पि नि गा ६३६-६६८
दोष वत्तीस तथा गुण आठ	६६७	७	२३	प्रनुम् १३१ टी, जिज्ञे गा ६६६, घृ. गीटिका नि गा. २७८-२८७
सूत्र के				
दोष वत्तीस वन्दना के	६६६	७	३८	प्रावह. अ. ३ गा. १२०७ १२११ पृ ४४३ घृ. उ ३ गा ४१७१- ६४, प्र. हा २ गा १४०-१७३
दोष वत्तीस सामायिक के	६७०	७	४३	जिज्ञा
दोष वयालीस आहारादिके	६६०	७	१४६	पिं. नि गा. ६६६
दोष १२ काया के सामायिक के	७८६	४	२७३	जिज्ञा.
दोष विशेष दस	७२३	३	४१०	टा. १० उ ३ सू ७४३
दोष शवल इक्कीस	६१३	६	६८	दशा. ६०२, तम. ३१
दोष सैंनालीस आहार के	१०००	७	२६५	पिं. नि. गा. ६६६
दोस्वरूप वस्तु के-निश्चय	३६	१	२५	जिज्ञे गा ३६८६, श्रव्य. त.
आर. व्यवहार				ग्रन्था. ८ श्लो. १
द्युत (जूआ) प्रमाद	४५६	२	६०	टा. ६३, ३ सू ४००
द्रव्य	४६	१	२८	उत्त. प्र. २८ गा. ६, तत्तार्थ. ग्रन्था. ६ सू. ४० टी.

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
द्रव्य	२१० १ १८६	न्यायप्र अध्या ७, रत्ना परि. ८
द्रव्य अनन्तक	४१७ १ ४४१	ठा ५ उ ३ सू ४६२
द्रव्य ऊनोदरी	२१ १ १६	भ.श. २५ उ ७ सू ८०२
द्रव्य और भावमनका क्या ६८३ ७ १२२		पत्र १ १५ सू २००, भ.श. १३
स्वरूप है? क्या वे एक दूसरे		उ १ सू ४७२ टी, लोक स ३
के बिना भी होते हैं?		श्लो० ५७०
द्रव्य कर्म	७६० ३ ४४१	आचा अ २ उ १ नि गा १८३
द्रव्य के दो भेद	६० १ ४२	तत्त्वार्थ, अध्या ५ सू ३, ४
द्रव्य के सात लक्षण	५२७ २ २६३	विशे गा २८
द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव-इनमें ६८३ ७ १२४		आव ह नि गा ३६-३७ पृ ३१
कौन किससे सूक्ष्म है?		
द्रव्य छद्म	४२४ २ ३	आगम., उत्त अ ३६
द्रव्यत्व गुण	४२५ २ १६	आगम द्रव्य त अध्या ११ श्लो २
द्रव्य नय और भाव नय	५६२ २ ४१६	न्यायप्र अध्या ५
द्रव्य निक्षेप	२०६ १ १८७	अनु सू १५०, न्यायप्र अध्या. ६
द्रव्य पुद्गल परावर्तन सूक्ष्म ६१८ ३ १३६		कर्म भा ५ गा ८६-८८
और बादर का स्वरूप		
द्रव्य प्रतिक्रमण	४७६ २ ६२	आव ह. अ ४
द्रव्य प्रत्युपेक्षणा	४५६ २ ६०	ठा ६ उ ३ सू ५०२
द्रव्य लेश्या का स्वरूप	४७१ २ ७१	भ.श. १ उ २, उत्त अ ३४, पत्र
तथा उसके सम्बन्ध में		प १ उ ४ सू २२५ टी, कर्म भा ४
तीन मत		गा. १३, आव ह अ ४ पृ ६४४
		द्रव्यलो स. ३ श्लो. २८४-३८२
द्रव्य सम्यक्त्व	१० १ ८	प्रव द्वा १४६ गा ६४२ टी.

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
द्रव्य द्विसा में द्विसा का	६८३	७	१२१	भ.त. १ उ. ३ मू. ३७ टी.
लक्षण नहीं घटता फिर वह				
द्विसा क्यों कही गई?				
द्रव्यात्मा	५६३	३	६६	भ.त. १० उ. १० मू. ६६ उ.
द्रव्यानुपूर्वी	७१७	३	३६१	अनु. मू. ७१
द्रव्यानुपूर्वी के तीन भेद	११६	१	८४	अनु. मू. ६६-६८ टी. पृ. ३३
द्रव्यानुयोग	२११	१	१६०	दश. नि. गा. ३ पृ. ३
द्रव्यानुयोग	५२६	२	२६३	विशेष. गा. १३८५-१३८६
द्रव्यानुयोग	७१८	३	३६२	टा. १०३ उ. ३ मू. ५२७
द्रव्यानुयोग दस	७१८	३	३६१	टा. १०३ उ. ३ मू. ७०७
द्रव्यार्थिक नय	१७	१	१४	रत्ना परि. ७ मू. ५
द्रव्यार्थिक नय के दस भेद	५६२	२	४२०	द्रव्य त. मू. पा. ५, आगम.
द्रव्यार्थिक नय के मतान्तर	५६२	२	४१२	नय १.
से तीन और चार भेद				
द्रव्यार्थ	७८५	४	२६६	मृ. ३.१ नि. गा. ३०१ उ.
द्रव्यावश्यक के विशेषण	८७२	५	१७६	अनु. मू. १३, विशेष. गा. ८४१-४२
द्रव्येन्द्रिय	२३	१	१७	प. १११ मू. १८१ टी., न. ११ मू. १८१
द्रव्येन्द्रिय के दो भेद	२४	१	१७	तत्त्वार्थ. मू. पा. २ मू. १७
द्रव्यों का परिणाम	४२४	२	१५	आगम
द्रव्यों का पारस्परिक संबंध	४२४	२	१४	अ. गम.
द्रव्यों का स्व द्रव्य क्षेत्रकाल	४२४	२	१२	आगम
भाव की अपेक्षा वर्णन				
द्रव्यों की अर्थक्रिया	४२५	२	१८	आगम

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
द्रव्यों की संख्या	४२५ २ १६	आगम.
द्रव्यों के गुण पर्यायों की	४२४ २ ७	आगम.
नित्यानित्यता		
द्रव्यों के चार चार गुण	४२४ २ ४	आगम.
द्रव्यों के चार चार पर्याय	४२४ २ ४	आगम.
द्रव्यों में आठ पक्ष	४२४ २ ७	आगम.
द्रव्यों में गुण पर्याय आदि	४२४ २ ७	आगम.
की एकता और अनेकता		
द्रव्यों में गुण पर्यायों की	४२४ २ १०	आगम.
वक्तव्यता अवक्तव्यता		
द्रव्यों में नित्य अनित्य	४२४ २ ७	आगम.
आदि आठ पक्ष		
द्रव्यों में नित्य अनित्य	४२४ २ ११	आगम.
पक्ष की चौभंगी		
द्रव्यों में परस्पर समानता	४२४ २ ५	आगम
और भिन्नता		
द्रव्यों में सत् असत् पक्ष	४२४ २ ६	आगम
द्रुमपत्रक अ० की ३७ गाथा	६८४ ७ १३३	उत्त अ १०
द्रौपदी	८७५ ५ २७५	हा अ. १६, त्रिष पर्व ८
द्वार १८ छोटी गतागत के	८८८ ५ ३६८	पत्र प ६ के आधार से
द्वार बीस परिहार विशुद्धि	६०५ ६ १६	पत्र प १ सू ३७ टी
चारित्र के		
द्वार सत्रह शरीर के	८८१ ५ ३८५	पत्र प २१
द्वितीय सप्तरात्रिदिवस	७६५ ४ २६०	सम १२, दशा. ६७, भ श २
नामक नवीं भिक्षुपट्टिमा		उ. १ सू ६३ टी.

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
द्विधा अनन्तक	४१८	१	४४२	अ. ४३ सू. ४६०
द्विमासिकी भिक्षुपट्टिमा	७६५	४	२८६	मम १२, दशाद ७, भ.श. २ उ १ सू. ६३टी
१ द्विष्ट दुःसंज्ञाप्य	७५	१	५४	अ. ३३. सू. २०३
द्वीपकुमारों के दस अधिपति	७३६	३	४१६	भ.ज. ३ उ= सू. १६६
द्वेप निःसृत असत्य	७००	३	३७२	अ. १० सू. ७४१, पतप ११ सू. १६६, ध.प्रधि ३. ४५४ १२०
द्वेप प्रत्यया क्रिया	७६६	१	२८२	अ. २३. १ सू. ६०, अ. ४३ सू. ४१६, आ. १६. अ. ४ सू. ११६
द्वेप बन्धन	२६	१	१८	अ. २३ सू. ६४-६६
द्वैक्रियनामक पाँचवाँ निहव	५६१	२	३६६	विशे गा. २४०४-०४६०

ध

धनदत्त की पारिणामिकी	६१५	६	८३	न.सू. २७गा. ७२, अ. १८, आ. १६, गा. २४६
धुद्धि की कथा				वि. अ. १६
धनपति कुमार की कथा	६१०	६	५६	वि. अ. १६
धनसार्थवाह की कथा	८२१	४	४४६	नवपद गा. १६ गम्यारवागि २४
सम्यक्त्व प्राप्त पर				
धनुष के जीवों की तरह क्या	६८३	७	१२८	भ.श. ४ उ= सू. ००७टी.
पात्रादिके जीवों को भी जीव-				
रक्षा कारणक पुण्यबन्ध होता है?				
धन्ना कुमार की कथा	७७६	४	२०४	मणुव ३ म. १
धन्नासार्थवाह और विजय	६००	५	४३४	अ. अ. २
घोर की कथा				

१ नगर या व्यापारिक क प्रति द्वेप होने न द्वेपन की शतावार न समेताजा जी ॥

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
धर्म	६३ १ ४४	यो प्रका २१लो ११, ध अंधि २ श्लो २१-२२टी. पृ ३१
धर्म कथा	६७ १ ६६	ठा ३३.३ सू १८६
धर्म कथा	३८१ १ ३६८	ठा ५ उ.३ सू ४६५
धर्म कथा की व्याख्या, भेद	१५३ १ ११२	ठा ४ उ २ सू. २८२
धर्म कथानुयोग	२११ १ १६०	दश० नि गा ३ पृ ३
धर्म की व्याख्या और उसके भेद	१८ १ १४	दश अ १ गा. १ टी, ठा २ उ १ सू. ७२, ध अवि १ श्लो ३ टी पृ १
धर्म के चार प्रकार	१६६ १ १५४	स श द्वा १४१ गा २६६ पृ ७०
धर्म के तीन भेद	७६ १ ५४	ठा ३ सू १८८, ठा ३ सू २१७
धर्म के बाईस विशेषण	६१६ ६ १५६	ध अंधि ३ श्लो २७ टी पृ ६१
धर्म के बारह विशेषण	८०४ ४ ३०६	शा भा २ प्रक १० धर्म भावना.
धर्म दस	६६२ ३ ३६१	ठा १० उ ३ सू ७६०
धर्मदान	७६८ ३ ४५२	ठा १० उ ३ सू. ७४५
धर्मदेव	४२२ १ ४४५	ठा ५ उ १ सू ४०१, भ श, १२ उ ६
धर्म द्रव्य	४२४ २ ३	आगम, उत्त. अ ३६ गा ५
धर्म ध्यान	२१५ १ १६५	सम ४, ठा ४ उ १ सू २४७, दश. अ १ नि गा ४८ टी, आव, ह अ. ४ ध्यान शतक गा ६८
धर्म ध्यान की चार भावनाएं	२२३ १ २०७	ठा ४ सू २४७, भ श २५ उ ७
धर्म ध्यान के चार आलंवन	२२२ १ २०६	ठा ४ उ १ सू २४७
धर्म ध्यान के चार प्रकार	२२० १ २०१	ठा ४ उ १ सू २४७
धर्म ध्यान के चार भेद	२२४ १ २०८	ज्ञान प्रक ३७-४०, यो प्रका ७- १०, क भा २ श्लो २०७-२०६
धर्म ध्यान के चार लिंग	२२१ १ २०५	ठा ४ सू २४७, भ श २५ उ ७ सू ८०३, आव ह, अ ४ पृ ६०४

विषय	वोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
धर्म बोधि आदि ग्यारह	४६ १ २६	ठा २३.१ सू ६४-६५
बोलों की प्राप्ति		
धर्म भावना	८१२ ४ ३७३,	शा भा. २ प्रक १०, भावना, ज्ञान
	३८६	प्रक २, प्रव द्वा. ६७ गा. ५७३,
		तत्त्वार्थ ग्रन्था ६ सू ७
धर्म रुचि	६६३ ३ ३६३	उत्त प्र २८ गा. २७
धर्मरुचि-धर्मभावना	८१२ ४ ३८६	ज्ञा प्र १६
धर्म विषय पर आठ गाथाएं ६६४	७ १५१	
धर्माचार्य	१०३ १ ७२	रा. सू. ७७
धर्माध्ययन की ३६ गाथा ६८१	७ ८७	सूय प्र ६
धर्मास्तिकाय के पाँच प्रकार २७७	१ २५४	ठा. ५८३ सू ४४१
धातु की खण्ड मैचन्द्रमूर्यादि ७६६	४ ३०१	सूर्य. प्रा १६
ज्योतिषी देवों की संख्या		
धातुन भावप्रमाण नाम ७१६	३ ४०१	अनु. सू १३०
धात्री दोष	८६६ ५ १६४	प्रव. द्वा. ६७ गा. ५७३, प्र वि. ३
		जलो २०७४०, पि. नि गा. ४०८,
		पि. पि. गा. ५८, पचा १३ गा. १८
धात्री (धाय) पाँच	४०८ १ ४३४	भावा. अनु. २५. ३ प्र. २. अनु. १७६,
		अ. ग. ११३ ११ सू ४२६
धान्य के चौबीस प्रकार	६३५ ६ २०५	दण. ०५६ नि गा. २०५-२५३
धाय (धात्री) पाँच	४०८ १ ४३४	भावा. अनु. २५. ३ प्र. २. अनु. १७६,
		अ. ग. ११३ ११ सू ४२६
धारणा	२०० १ १५६	ठा ४३४ सू ३६४
धारणा	६०१ ३ ११८	गो. सा गो.
धारणा व्यवहार	३६३ १ ३७६	ठा ४२१, अ. ग. ८३. ८ सू ३६०

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
धार्मिक पुरुष के ५ आलंवन	३३३	१ ३४३	ठा ५ उ ३सू ४४७
धूम दोष	३३०	१ ३४०	ध अघि ३श्लो २३टी पृ ५५, पि. नि गा. ६३५ ६८, उत्त अ २४गा १२, उत्त अ २६गा. ३२
धैवत या रैवत स्वर	५४०	२ २७१	अनुसू १२७गा २५, ठा ७सू ५५३
धौवन पानी इक्कीस प्रकार का	६१२	६ ६३	आचा शु २अ १उ. ७-८सू ४१- ४२, पि नि गा १८-२१, दश अ. ५ उ १गा ७५-७६
ध्मात वायु	४१३	१ ४३८	ठा ५ उ ३सू ४४४
ध्यान	४७८	२ ८६	उवसू २०, उत्त अ ३०गा. ३०, ठा ६सू ५११, प्रव द्वा ६गा २७१
ध्यान	६०१	३ ११६	यो, रा यो.
ध्यान की व्याख्या और उसके भेद	२१५	१ १६३	ठा ४ उ १सू २४७, सम ४, दश अ १नि गा ४८टी, प्रव द्वा. ६गा २७१टी, आच ह अ ४ ध्यानशतक पृ ५८०, आगम.
ध्यान के अड़तालीस भेद	६३३	३ १६५	उवसू २०, भ श २५ उ ७सू ८०३
ध्यान के अड़तालीस भेद	१००२	७ २६६	उवसू २०, भ. श २५ उ ७सू ८०३
ध्यान में विघ्न रूप आठ दोष	६०३	३ १२०	क भा २ श्लो १६०-१६१
ध्रुवबन्धिनी प्रकृतियाँ	८०६	४ ३३७	कर्म भा ५ गा १-२
ध्रुवसत्ताक प्रकृतियाँ	८०६	४ ३४२	कर्म भा ५ गा. १, ८, ६
ध्रुवोदया प्रकृतियाँ	८०६	४ ३४१	कर्म भा ५ गा १-६
ध्रौव्य	६४	१ ४५	तत्त्वार्थ अध्या ५ सू २६

न

नकारे के छः चिह्न	४६१	२ १०२	उत्त. अ १८गा ४१ नमुचि- कुमार की कथा (हस्तलिखित)
-------------------	-----	-------	--

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
नकुल का दृष्टान्त भाव	७८०	४	२४६	आर. द. गा. १३, ४५, ५१, ५५
अननुयोग पर				पीठिका नि. गा. १७०
नक्षत्र अष्टाईस	६५३	६	२८८	जै. व. ल. ७५, १६५, म. न. २७
नक्षत्र दस ज्ञान वर्धक	७६२	३	४४४	सम. १०, डा. १०७, ३५, ७८१
नक्षत्र प्रमाण संवत्सर	४००	१	४२५	डा. ६७, ३५, ४६०, प्र. डा. १४५
नक्षत्र संवत्सर	४००	१	४२५	डा. ६७, ३५, ४६०, प्र. डा. १४५ गा. ६०१
नक्षत्र संवत्सर	४००	१	४२७	
नगर धर्म	६६२	३	३६१	डा. १०७, ३५, ७६०
नन्दमणियार की कथा	८२१	४	४४४	जा. प्र. १३, ता. प. द. गा. १६५, ४३
नन्दमणियार की कथा	६००	५	४६०	जा. ० अ. १३
नन्दिनी पिता श्रावक	६८५	३	३३१	उपा. ० अ. ६
नन्दी फल का दृष्टान्त	६००	५	४६४	जा. ० अ. १६
नन्दीवर्द्धनकुमार की कथा	६१०	६	४३	वि. म. ६
नन्दीपेण की पारिणा-	६१५	६	८२	नं. सु. २७ गा. ७७, शाय. द.
मिकी बुद्धि की कथा				गा. ६४६
नन्दी सूत्र का विषय वर्णन	२०४	१	१७८	न
नपुंसकलिंग मित्र	८४६	५	११६	पञ्च. १५, ७
नपुंसक वेद	६८	१	४६	कर्म गा. १ गा. ७७
नमस्कार का स्वामी नम-	६८३	७	१०१	वि. म. गा. २८७, २८८, २८९
स्कार कर्ता है या पूज्य है?				
नमस्कार के उत्पादक	६८३	७	१००	वि. म. गा. २८०, २८१, २८२
निमित्त क्या है?				
नमस्कार पुण्य	६२७	३	१७३	डा. ७३, ३, ५, ६, ७
नमस्कार महिमा पर गाथा	६६४	७	१५३	

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
नमस्कारसूत्र में सिद्ध और	६८३ ७ ६८	म. मंगलाचरण टी. विशेष. गा.
साधु दो ही पद न कहकर		३२०१ से ३२०६
पाँच पद क्यों कहे ?		
नमस्कारसूत्र में सिद्ध से	६८३ ७ ६८	म. मंगलाचरण टी. विशेष गा
पहले अरिहन्त को नम-		३२१०-३२२१
स्कार क्यों किया गया ?		
नमिराजर्षि-एकत्वभावना	८१२ ४ ३८१	उत्त० अ. ६
नमुक्कार सहिय, पोरिसी	७०५ ३ ३७६	प्रव० द्वा ४ गा २०१-२०२,
आदि दस पञ्चखाण		आवह अ. ६ नि गा १५६७,
पाठ सहित		पंचा ६ गा. ८-११
नय	३७ १ २४	रत्ना. परि ७ सू. १
नय	४६७ २ १७१	
नय के दो भेद	१७ १ १४	रत्ना० परि. ७ सू. ५
नय के भेद प्रभेद	४६७ २ १७४	
नय सात	५६२ २ ४११	अनुसू. १५२, प्रव० द्वा. १२४ गा ८४७-८४८, विशेष गा २१८०- २२७८, रत्ना परि ७, तत्त्वार्थ अध्या १, आगम, द्रव्य त अध्या ५-८, न्यायप्र अध्या ५, नय, नयप्र., नयवि, नयो., आलाप,
नयों का विषय	५६२ २ ४२५	रत्ना० परि. ७
नयों के अपेक्षा विशेष से	५६२ २ ४२६	प्रव० द्वा १२४ गा ८४८ टी.
दो सौ से सात सौ भेद		
नयों के तीन दृष्टान्त	५६२ २ ४२७	अनु सू. १४५
नयों के दूसरी अपेक्षा से	५६२ २ ४२७	
सात सौ भेद		

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
नरकायुञ्जय के ४ कारण १३२	१	६६	छ. ४ उ ४ मृ. ३७३	
नरक के विषय में गणधर अंक-७७५	४	७२	विद्ये गा १८=५-१६०८	
स्मित स्वामी कार्णकासमाधान				
नरक के तीस द्वार	५६०	३	३३६ जी. प्रति. ३ उ. १-३	
नरक के दुःखों का वर्णन ६४१	६	२१६	मृ. ० अ ४ उ. ३	
करनेवाला पचीस गाथाएं				
नरक के दुःखों का वर्णन ६४७	६	२३६	मृ. ० अ ४ उ. १	
करनेवाली २७ गाथाएं				
नरक गति में अन्तर काल ५६०	२	३२०	प्रव. डा. १७७ गा १०८१ =	
नरक में वेदना	५६०	२	३१६ जी. प्रति. ३ मृ. ८६, प्रव. डा. १७४, प्रव. ० अर्धमंदा १	
नरक सात	५६०	२	३१४ जी. प्रति. ३, प्रव. डा. १७२ = ८६, अ. न. १४ उ ६ = ८, अ. न. ३०३ १ मृ. ५ = ०, अ. न. अर्धमंदा १	
नरकावासमान नारकी के ५६०	२	३१६	जी. प्रति. ३ मृ. ७०, प्रव. डा. १७२	
नरकावासों का विस्तार ५६०	२	३३६	जी. प्रति. ३ मृ. ८६	
नरकावासों का संस्थान ५६०	२	३३४	जी. प्रति. ३ मृ. ८६	
नरकों का परस्पर अन्तर ५६०	२	३४१	अ. न. १४ उ ६ = मृ. ५७३	
नरकों की मोटाई (बाह्य) ५६०	२	३२८	जी. प्रति. ३ मृ. ८६	
नरकों के कण्ठ	५६०	२	३२८ जी. प्रति. ३ मृ. ८६	
नरकों के नाम और मोत्र ५६०	२	३१५	जी. प्रति. ३ मृ. ८७, प्रव. डा. १७२ गा. १०७२	
नरकों में प्रवेश (पाथड़े) ५६०	२	३२८	जी. प्रति. ३ मृ. ७० जी	
नरकों में संस्थान	५६०	२	३४१ अ. न. २४ उ ३ मृ. ७७३	
नरदेव	४२२	१	४४५ डा. १७७ मृ. ७०१, अ. न. १२३	

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
नरयविभक्ति अध्ययन के	६४१	६	२१६	सूय० अ ५ उ २
दूसरे उ० की २७ गाथाएं				
नरय विभक्ति अध्ययन के	६४७	६	२३६	सूय० अ ५ उ १
पहले उ० की २७ गाथाएं				
नवतत्त्व	६३३	३	१७७	नव गा १, ठा ६ उ ३ सू ६६५
नव वाङ्मयीन की	६२८	३	१७३	सम ६, ठा ६ उ ३ सू ६६३
नवीन उत्पन्न देवता के मनुष्य	११०	१	७६	ठा ३ उ ३ सू १७७
लोक में आने के तीन कारण				
नाक के ४ मण्डल और उन	५५६	२	३०७	यो० प्रका. ५, राज, हठ,
में रहने वाली वायु के भेद				
नाग कुमार के दस अधिपति	७३२	३	४१८	भ० श ३ उ ८ सू १६६
नाग सुवर्ण मद	७०३	३	३७४	ठा १० उ ३ सू ७१०
नाणक की कथा औत्प-	६४६	६	२७५	न० सू २७ गा ६५टी
त्तिकी बुद्धि पर				
नाम	४२७	२	२६	अनु. सु ७०
नाम अनन्तक	४१७	१	४४१	ठा ५ उ. ३ सू ४६२
नाम कर्म	७६०	३	४४१	आचा अ २ उ १ नि. गा १८३
नाम कर्म अशुभ भोगने के	८३६	५	३३	पन्न० प २३ सू २६२
चौदह प्रकार				
नाम कर्म और उसके वया-	५६०	३	६८	कर्म भा १ गा २३-२७, पन्न०
लीस मूल भेद				प २३ उ २ सू २६३
नाम कर्म की १४ पिंड प्रकृति	५६०	३	६६	पन्न० प २३ सू २६३-२६४, कर्म
के ६५ उत्तर भेद व व्याख्या				भा० १ गा ३३-४३
नाम कर्म की ६३, १०३ और ५६०		३	७७	कर्म० भा. १ गा. ३१ व्याख्या
६७ प्रकृतिगों				

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
नाम कर्म की ४२ प्रकृतियाँ ६६१	७	१४६	पन० प २३३.२ सू २६३
नामकर्म के बन्ध के कारण ५६०	३	७८	भ० ज ८३६ सू ३५१
नामकर्म-शुभ और अशुभ ५६०	३	७८	पन० प २३ सू २६२
का १४ प्रकार का अनुभाव			
नामकर्म-शुभ चौदह प्रकार ८३८	५	३३	पन १.०३ सू २६२
से भोगा जाता है			
नाम ११ भ० महावीर के ७७०	४	३	जैन विद्या बोल्ड्युम १ न. १
नाम दम प्रकार का	७१६	३ ३६५	अनुसू १३०
नाम नरकों के	५६०	२ ३१५	नी प्रति. ३, प्रस्ता १७२ गा १०७३
नाम निक्षेप	२०६	१ १८७	अनुसू १३०, न्यायप्र अ० या. ६
नाम सत्य	६६८	३ ३६६	टा १० सू ७४५, पन. १.११ सू ११४, घ. प्रति ३००. ८१५ १०१
नाम सत्रह माया के	८८०	५ ३८५	सम. ४२
नाम से नाम	७१६	३ ३६८	अनुसू १३०
नामानुपूर्वा	७१७	३ ३६०	अनुसू. ७१
नामानुयोग	५२६	२ २६२	विज्ञे गा १३८३-१३८२
नामार्य	७८५	४ २६६	सू ३१ नि गा ३२६३
नारकी की आगति	५६०	२ ३२७	प्रय द्वा. १८२ गा १०६१-६३
नारकी के दम प्रकार समय ७४७	३	४२४	टा १०३.३ सू ७४७
के अन्तर आदिकी अपेक्षा			
नारकी जीवों का आयु बन्ध ५६०	२	३४१	भज ३०३.१ सू २०४
नारकी जीवों का आहार	५६०	२ ३४०	भज १८३.१ सू ४१६
नारकी जीवों का गन्ध	५६०	२ ३३६	जी प्रति ३ सू. ८७
नारकी जीवों का वर्ण	५६०	२ ३३६	जी. प्रति ३ सू ८७

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
नारकीजीवोंकाश्वासोच्छ्वास	५६०	२ ३३७	जी.प्रति ३ सू.८८
नारकी जीवोंका संस्थान	५६०	२ ३३७	जी प्रति ३ सू.८७
नारकी जीवों का संहनन	५६०	२ ३३७	जी प्रति.३ सू.८७
नारकी जीवों का स्पर्श	५६०	२ ३३६	जी.प्रति ३ सू.८७
नारकीजीवोंकीअवगाहना	५६०	२ ३१६	जी प्रति ३सू.८६,प्रव द्वा १७६
नारकी जीवों की उद्वर्तना	५६०	२ ३२६	प्रव.द्वा.१८१,पन्नप २०सू.२६३
नारकी जीवोंकीविग्रहगति	५६०	२ ३४०	भ.श. १४उ.१ सू.४०२
नारकी जीवों की स्थिति	५६०	२ ३१६	जी प्रति ३सू.६०टी, प्रव द्वा १७६गा १०७६-१०७६
नारकीजीवों केअवधिज्ञान	५६०	२ ३२३	जी प्रति ३सू.८८,प्रव द्वा १७६
नारकी जीवों के चौदहभेद	६३३	३ १७८	पन्नप १सू.३१,उत्त.अ. ३६ गा १६६-१६६, जी प्रति ३
नारकीजीवों केवेदनादस	७४८	३ ४२५	ठा १०उ ३ सू.७६३
नारकी जीवों में उपयोग	५६०	२ ३३७	जी प्रति ३ सू.८८
नारकी जीवों में ज्ञान	५६०	२ ३३७	जी प्रति ३ सू.८८
नारकी जीवोंमेंदस स्थानों	५६०	२ ३४०	भ.श. १४उ.४ सू. ४१६
का अनुभव			
नारकी जीवों में दृष्टि	५६०	२ ३३७	जी प्रति ३ सू.८८
नारकीजीवोंमेंपरिचारणा	५६०	२ ३३६	पन्नप ३४
नारकी जीवों में युग्म	५६०	२ ३४१	भ.श. १८उ.४सू.६२४
नारकी जीवों में योग	५६०	२ ३३७	जी प्रति ३ सू.८८
नारकी जीवों में लेश्या	५६०	२ ३२१	जी प्रति ३सू.८८,प्रव.द्वा १७८
नारकी०मेंवेदना, निर्जरा	५६०	२ ३३६	भ.श. ७उ ३ सू.२७६
नारकीजीवों में समुद्घात	५६०	२ ३३८	जी प्रति ३ सू.८८
नारद नौ	६५२	३ २१६	सेन उल्ला.३ प्रश्न ६६

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
नागच संहनन	४७० २ ७०	पद्म २३म्, २८३, डा ६३.३ मृ. ४६४, नर्म. भा १मा. ३८
निर्शक्ति दर्शनाचार	४६६ ३ ७	पद्म १म् ३७, उत्तम. २८मा ३१
१ निकाचना करण	४६२ ३ ६५	कम्म. गा २
निकाचितकीव्याख्या, भेद २५२	१ २३६	डा. ४३ २ मृ २६६
निखिखत्तदोष (ग्रहणपणा ६६३)	३ २४३	ग्रन्. डा. ६७मा ४६८, वि. नि. गा ४२०, ५ मधि ३५लो. २१
का तीसरा दोष)		पृ ४१, पंचा. १३मा २६
निक्षिप्त चरक	३५२ १ ३६७	डा ४३ १म्. ३६६
निक्षेप चार	२०६ १ १८६	ग्रन्. मृ १६०, न्याय प्र. मध्या. ६
निक्षेपमात अनुयोग के	४२६ २ २६२	वि. गा १३८६-१३६२
निगमन	३८० १ ३६७	स्ता. परि ३ मृ ४१
निगोद	६ १ ८	मागम.
निगोद का वर्णन	४२५ २ १६	मागम
निगोद के दो भेद	४२५ २ २१	मागम
२ निग्रह दोष	७२२ ३ ४१०	डा १०३.३ मृ १०३
३ निग्रहस्थान चार्डिस	६२१ ६ १६२	प्र. मी. मा. १म्. ३२, न्यायप्र. न्यायमृ. अ. म्या. ४ मा. २
नित्य अनित्यपक्ष की	४२४ २ ११	मागम.
चौभंगी लः द्रव्यों में		
नित्य दोष	७२३ ३ ४१२	डा १० ३. ३म् ७४३

१ कर्मों की अपर्यवर्तता, उदीयमाना आदि सभी वर्णों के प्रयोग एवं प्रत्ययबोध करने वाले भाषा ज्ञान का योग्य विशेष निमित्तत्वकारण समझाया है। २ मूल ज्ञान आदि में ४३ में पर्याप्त ज्ञान। ३ मूल पद ही विज्ञान पर सुझने के कारण सभी क प्रतिपत्ति की पर हो जाता।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
नित्यानित्यता छःद्रव्यों में	४२४	२	७	आगम
निदान कर्त्ता	४४४	२	४८	ठा ६३ ३सू १२६, वृ (जी) उ ६
निदान (नियाणा) नौ	६४४	३	२१५	दशा द १०
निदान शून्य	१०४	१	७४	ठा ३३ ३सू १८२, सम ३, ध. अधि ३ श्लो २७ पृ. ७६
निद्रा	४१६	१	४४३	कर्म भा १गा ११-१२, पत्र प २३
निद्रा के पाँच भेद	४१६	१	४४३	कर्म भा १गा ११-१२, पत्र प. २३
निद्रानिद्रा	४१६	१	४४३	कर्म भा १गा ११-१२, पत्र प २३
निद्रा प्रमाद	२६१	१	२७५	ठा ६३ ३सू ५०२, ध अधि २ श्लो ३६ पृ. ८१, पचा १गा २३टी.
निद्रा से जागने के प्रकार	४२०	१	४४४	ठा ५३ २ सू ४३६
निधत्तकी व्याख्या और भेद	२५१	१	२३६	ठा ४३ २सू २६६
१ निधत्ति करण	५६२	३	६५	कम्म गा २
निधि के पाँच प्रकार	४०७	१	४३३	ठा ५३ ३सू ४४८
निन्दा पर कथा	५७६	३	२८	आव. ह्र अ ४ नि गा १२४२
निमन्त्रणा समाचारी	६६४	३	२५०	भ श २६३ ७सू ८०१, ठा १० सू ७४६, प्रव द्वा १० १गा ७६०
निमित्त	४०४	१	४३१	उत्त. अ ३६गा २६२, प्रव द्वा ७३
निमित्त कथन	४०५	१	४३२	उत्त अ ३६गा २६४, प्रव द्वा ७३
निमित्त कारण	३५	१	२३	विशे गा २०६६
निमित्त दोष	८६६	५	१६४	प्रव द्वा ६७गा ६६७, ध अधि ३ श्लो २२ पृ ४०, पि नि गा ४०८, पि नि गा ५८, पचा १३गा, १८

१ जिससे कर्म उद्धर्तना और अपवर्तना करण के सिवाय जेष्ठ करणों के अयोग्य हो जाय ऐसा जीव का वीर्य विशेष ।

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
नियद्विवादर गुणस्थान	८४७	५	७६	कर्म भा. २ गा २
नियत वादी	५६१	३	६४	ठा. ८ उ ३ सू ६०७
नियति	२७६	१	२५७	आगम., कारण, सम्मति भा ५ काण्ड ३ गा. ५३
नियम	६०१	३	११५	यो. रा यो.
नियम चौदह श्रावक के	८३१	५	२३	शिक्षा, ध अधि. २ श्लो ३ पृ ७६
नियाना नौ	६४४	३	२१५	दशा द १०
निरनुकम्पता	४०५	१	४३२	उत्त अ ३६ गा. २६४, प्रव. द्वा ७३ गा ६४५
निरयावलिका सूत्र के दस	३८४	१	४००	निर
अध्ययनों का विषय वर्णन				
निरयावलिका सूत्र के दस ७७७	४	२३२	निर	
अध्ययनों का विषय वर्णन				
निरयावलिका सूत्र के ५ वर्ग ३८४	१	३६६	निर	
निरयावलिका सूत्र के पाँच ३८४	१	४००		
वर्गों के ५२ अध्ययन				
निरुपक्रम आयु	३०	१	२१	तत्त्वार्थ अध्या २ सू. ५२, भ. श २० उ १० सू. ६८५
निरुपक्रम कर्म	२७	१	१६	वि. अ ३ सू २० टी.
निर्ग्रन्थ	३६६	१	३८१	ठा. ५ मृ ४४५, भ श २५ उ ६
निर्ग्रन्थ के पाँच भेद	३७०	१	३८५	ठा ५ उ ३ सू. ४४५, भ श २५
निर्ग्रन्थ पाँच	३६६	१	३७६	उ. ६ सू ७५१
निर्ग्रन्थ प्रवचन पर ३ गाथा ६६४	७	१५५		
निर्ग्रन्थ श्रमण	३७२	१	३८७	प्रव द्वा ६८ गा ७३१

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
निर्जरा -	४६७ २ २०६	
निर्जरा, वेदना नैरयिकों में ५६० २ ३३६		भश ७ उ ३सू २७६
निर्जरा के वारह भेद ४७६ २ ८५		उत्त अ. ३० गा. ८, ३०, उवसू १६, २०, प्रव द्वा ६ गा २७०-
निर्जरा के वारह भेद ४७८ २ ८६		२७१, ठा ६ उ ३ सू ५११
निर्जरा तत्त्व के वारह भेद ६३३ ३ १८४		नव, उवसू १६-२०, भश. २५ उ ७ सू ८०२ से ८०४
निर्जरा भावना ८१२ ४ ३६६, ३८६		शा भा १ प्रक ६, भावना, ज्ञान प्रक २, प्रव द्वा ६७ गा ५७२, तत्त्वार्थ. अध्या ६ सू ७
निर्मितवादी ५६१ ३ ६३		ठा ८ उ ३ सू ६०७
निर्याण मार्ग पाँच २८० १ २५६		ठा ५ उ ३ सू ४६१
निर्विकृतिक (णिव्वियते) ३५५ १ ३७०		ठा ५ उ १ सू ३६६
निर्विचिकित्सदर्शनाचार ५६६ ३ ७		पन्न ५ १ सू ३७, उत्त अ २८ गा ३१, प्र र. भा २ पृ ८१४,
निर्विशमान कल्पस्थिति ४४३ २ ४६		ठा ३ उ ४ सू २०६ ठा ६ उ ३
निर्विष्टकायिक कल्पस्थिति ४४३ २ ४६		सू ५ ३०, वृ (जी) उ ६
निवृत्तिद्रव्येन्द्रिय २४ १ १७		तत्त्वार्थ अध्या. २ सू १७
निर्वेद २८३ १ २६४		ध अवि २२ लो २२ टी पृ ४३
निर्वेदनी कथा के भेद १५७ १ ११५		ठा ४ उ २ सू २८२
निर्लंछण कस्मे कर्मादान ८६० ५ १४६		उपा. अ १ सू ७, भश ८ उ ५ सू ३३०, आवह अ ६ पृ ८२८
निवृत्ति ४५ १ २८		
निवृत्ति पर कथा ५७६ ३ २६		आवह अ. ४ नि गा. १२४२
निव्विगइ पच्चक्खाण ७०५ ३ ३८१		प्रव द्वा. ४ गा २०१-२०२, आव. ह अ ६ नि गा. १५६७३. ८५१, पचा ५ गा ८-११

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
निर्व्विगडपञ्चकेनौ आगार	६२६	३	१७४	आवह अ ६४ = ४४, प्रव द्वा. ४
निशीथमूत्रकाविषयवर्णन	२०५	१	१८२	निशीथ.
निश्चय	३६	१	२५	विशे गा ३६ = ६, द्रव्य त, अध्या ८
निश्चय और व्यवहार नय	५६२	२	४१६	न्यायप्र अध्या ५, द्रव्य त अध्या ८
निश्चय और व्यवहार से	७६४	४	२८०	आगम
श्रावक के बारह भाव व्रत				
निश्चय नय के दो भेद	५६२	२	४२०	रत्ना परि ७ सू ५, न्यायप्र अध्या ५
निश्चय सम्यक्त्व	१०	१	६	कर्म भा १ गा १५, प्रव द्वा. १८८
निषद्या के पाँच भेद	३५८	१	३७२	डा ५ सू ३६ टी, डा. ५ सू ४००
निपाद स्वर	५४०	२	२७१	अनु सू. १२७ गा २५, डा ७ सू ४५३
१ निषेक	४७३	२	७६	अश ६ उ = सू २५० टी, डा ६ उ ३ सू ५३६ टी
निष्कांतित दर्शनाचार	५६६	३	७	परम १ सू. ३७, उत्त अ = गा ३१
२ निष्कृपता	४०५	१	४३२	उत्त अ ३६ गा २६४, प्रव द्वा ७३
निष्क्रमण सुख	७६६	३	४५४	डा १० उ ३ सू ७३७
निसर्गरुचि	६६३	३	३६२	उत्त अ. २-गा. १७-१८
निसीहिया (नैपेधिकी)	६६४	३	२५०	अज २५ उ, ७ सू ८०१, डा १०
समाचारी				उ ३ सू ७६६, उत्त अ = ६ गा. २-७, प्रव द्वा १०१ गा ७६०
निहव आठवां (शिवभूति	५६१	२	३६६	विशे गा २५४०-२६०६, डा ७ उ ३ सू ५८७
अथवा बोटिक)				
निहव चौथा (अश्वमित्र)	५६१	२	३५८	विशे. गा. २३ = ६-२ ८२३
निहव छठा (रोहगुप्त)	५६१	२	३७१	विशे. गा. २८४१-२९०८

१ फल भोग के लिए होने वाली कर्म पुटला की रचना विशेष । २ रथावादि जीवों पर दयाभाव न रखना तथा निना उपयोग गमनादि क्रिया करना ।

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
निहवतीसरा (अव्यक्तदृष्टि) ५६१ २ ३५६		विशे गा-२३५६-२३८८
निहव दूसरा (तिष्यगुप्त) ५६१ २ ३५३		विशे २३३३-२३५५
निहव पहला (जमालीया ६६१ २ ३४२ बहुरत)		विशे गा २३०६-२३३२, म श १३ १, म श ६३ ३३, आव ह अ १ पृ ३१२
निहव पाँचवाँ (आर्यगंग) ५६१ २ ३६६		विशे गा २४२४-२४५०
निहव सात ५६१ २ ३४२		विशे. २३००-२६२०, ठा. ७ सू ५८७, म. श. १३. १, म श ६३ ३३, आव ह अ १ गा ७७८-७८८
निहवसातवां-गोष्ठामाहिल ५६१ २ ३८४		विशे गा २५०६-२५४६
नील लेश्या ४७१ २ ७३		उत्त अ ३४, कर्म. भा ४ गा १३
नैगमनय और उसके दो ५६२ २ ४१२		रत्ना परि ७ सू ७, तत्त्वार्थ. अध्या. १, न्यायप्र अध्या. ५, द्वय त अध्या ६
तथा तीन भेद		
नैपुणिक नौ ६४२ ३ २१३		ठा ६३ ३ सू ६७६
नैरयिकचारबोलोंसेमनुष्य १४० १ १०३		ठा ४७ १ सू २४५
लोक में आने में असमर्थ है		
नैरुक्त भाव प्रमाण नाम ७१६ ३ ४०१		अनुसू १३०
नैपद्यिक ३५७ १ ३७२		ठा ५३ १ सू ३६६
नैपेधिकी (निसीहिया) ६६४ ३ २५०		म श २५३ ७ सू ८०१, ठा १० उ ३ सू ७४६, उत्त अ २६ गा २-७, प्रव. द्वा १०१ गा ७६०
समाचारी		
नैसर्गिक सम्यक्त्व १० १ ६		ठा २३ १ सू ७०, पत्र प १ सू ३७, तत्त्वार्थ. अध्या १ सू. ३
नैसर्प निधि ६५४ ३ २२०		ठा. ६३ ३ सू ६७३
नैसृष्टिकी (नेसत्थिया) २६५ १ २८०		ठा २३ १ सू. ६०, ठा ५३ २ सू ४१६, आव. ह. अ. ४ पृ ६१३
क्रिया		

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
नोउत्सर्पिणी अवसर्पिणी	४३१	२	३८	विजेगा २७०८-२७१०
नोउत्सर्पिणी अवसर्पिणी	४३१	२	३६	विशे.गा. २७०८-२७१०
कालकेक्षेत्रकी अपेक्षा ४ भाग				
नोकपाय मोहनीय	२६	१	२१	कर्म भा १ गा १७
नोकपाय वेदनीय नौ	६३५	३	२०३	ठा ६३, ३ सू ७००
नोगौण नाम	७१६	३	३६५	अनुसू १३०
नौ अनृद्धि प्राप्त आर्य	६५३	३	२१६	पत्र १ सू ३७
नौ आगार निव्विगई पच्च	६२६	३	१७४	आवह.अ ६ पृ ८४, प्र. द्वा ४
कखाण के				गा २०६
नौ आचार्यों के नाम (वल)	६५१	३	२१६	सम १४८
देव, वासुदेवों के पूर्वभव के)				
नौ आत्मा ने भ० महावीर के	६२४	३	१६३	ठा ६३ ३ सू ६६१
शासन में तीर्थङ्कर गोत्र बाँधा				
नौ आयु परिणाम	६३६	३	२०४	ठा ६३ ३ सू ६८६
नौ काव्यरस	६३६	३	२०७	अनुसू १२६ गा. ६३-१२६
नौ कोटि भिक्षा की	६३१	३	१७६	ठा ६३ ६८१, आवा. अ २७ ५
नौ गण भगवान् महावीर के	६२५	३	१७१	ठा ६३ ३ सू. ६८०
नौ नारद	६५२	३	२१६	सेन उद्गा ३ प्र. ६६
नौ निमित्त स्वप्न के	६३८	३	२०६	विजेगा १७०३
नौ नियाणा (निदान)	६४४	३	२१५	दशान १०
नौ नैपुणिक	६४२	३	२१३	ठा ६३ ३ सू ६७६
नौ नोकपाय वेदनीय	६३५	३	२०३	ठा ६३ ३ सू ७००
नौ परिग्रह	६४०	३	२११	आवह.अ ६ पृ ८४
नौ पाप धन	६४३	३	२१४	ठा. ६३ ३ सू. ६७८

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
नौ पुण्य	६२७	३ १७२	ठा ६३ ३सू ६७६
नौ प्रकार की वसति	६२३	६ १७०	आचा श्रु २चू १अ २उ २
नौ प्रतिवासुदेव	६४८	३ २१८	सम. १५८, प्रव द्वा २११गा. १२१३, आव ह. अ १पृ. १५६
नौ बलदेव	६४६	३ २१७	सम १५८, प्रव द्वा २०६गा १२११, आव ह अ. १पृ १५६
नौ बलदेवों के पूर्व भव के नाम	६४६	३ २१८	सम १५८
नौ वार्ते मनः पर्यय ज्ञान के	६२६	३ १७२	नसू १७
लिए आवश्यक हैं			
नौ ब्रह्मचर्य गुप्ति	६२८	३ १७३	ठा ६३ ३सू ६६३, सम ६
नौ भेद काल के	६३४	३ २०२	विशे गा २०३०
नौ भेद ज्ञाता के	६४१	२ २१२	आचा. श्रु. १अ. २उ. ५ सू ८८
नौ महानिधियां चक्रवर्ती की	६५४	३ २२०	ठा ६ उ ३ सू. ६७३
नौ लौकान्तिक देव	६४५	३ २१७	ठा ६ उ ३ सू ६८४
नौ वासुदेव	६४७	३ २१७	आव ह. अ १गा ४० पृ १५६, प्रव द्वा २१०गा १२१२
नौ वासुदेवों के पूर्व भव के नाम	६५०	३ २१८	सम १५८
नौ विगय	६३०	३ १७५	ठा ६उ. ३ सू ६७४, आव ह अ ६गा १६०१ टी
नौ स्थान रोग उत्पन्न होने के	६३७	३ २०५	ठा ६उ ३सू ६६७
नौ स्थान संभोगी को	६३२	३ १७६	ठा ६उ ३ सू ६६१
विसंभोगी करने के			
न्यग्रोध परिमंडल संस्थान	४६८	२ ६८	ठा ६सू ४६५, कर्म. भा. १गा ४०
न्याय दर्शन	४६७	२ १३२	
न्यून तीर्थ वाले पर्व छः	४३३	२ ४०	ठा ६उ ३सू ५२४, चन्द्र. प्रा १२, उत्त. अ २६गा १५

प

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पङ्कणा दस	६८६	३	३५३	द. प.
पंच कल्याणक	२७५	१	२५३	पंचा. ६गा. ३०-३१, दशा. द. ८
पंच परमेष्ठी	२७४	१	२५२	भ. मंगलाचरण
पंचम स्वर	५४०	२	२७१	अनु. मृ. १२७, डा. ७ सू. ६४३
पंचमासिकी भिक्षुपट्टिमा	७६५	४	२८६	सम. १२, भ. श. २३. १, दशा. द. ७
पंचास्तिकाय	२७६	१	२५३	उत्त. अ. २८गा. ७, डा. ६ सू. ४४१
पंचेन्द्रियजीवों का समारंभ	२६८	१	२८५	डा. ४३ २ सू. ४२६, ४३०
न करने से पाँच संयम				
पंचेन्द्रियजीवों के आरंभ से	२६७	१	२८४	डा. ६३ २ सू. ४२६
पाँच प्रकार का असंयम				
पक्षाभास के सात भेद	५४६	२	२६१	रत्ना. परि. ६ सू. ३८-४६
पक्षी चार	२७२	१	२५१	डा. ४ व. ४ सू. ३५०
पचपनभेददर्शनविनयके	१०१०	७	२७७	उव. सू. २०
पचास भेद प्रायश्चित्तके	१००४	७	२७१	भ. श. २४३. ७ सू. ८०२, डा. १० व. ३ सू. ७३३, उव. सू. २०
पचीस क्रिया	६४०	६	२१८	डा. २ सू. ६०, डा. ६ सू. ४१६, पग. प. २२, भाव. ह. म. ४४६ १११
पचीसगाथासूयगङ्गासूत्र	६४१	६	२१६	सूय. अ. ५३. २
के पाँचवें अ० के दूसरे उ० की				
पचीस गुण उपाध्याय के	६३७	६	२१५	प्रव. द्वा. ६६-६७ गा. ४४२-४६६, ध. अ. वि. ३ ग्लो. ४७ पृ. १३०
पचीस प्रतिलेखना	६३६	६	२१८	उत्त. अ. २६ गा. २४-२७
पचीस भावनाएं पाँच महा-	६३८	६	२१७	सम. २४, आचा. भू. २ चू. ३ अ. २४ सू. १७६, भाव. ह. म. ४४६
व्रत की				६३८, प्रव. द्वा. ७२ गा. ६३६-६४०, ध. अ. वि. ३ ग्लो. ४६ टी. पृ. १२६

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पञ्चक्खाण के दस प्रकार ७०४	३	३७५	ठा. १० सू. ७८, भ. श. ७८ २
पञ्चक्खाण में आठ तरह ५८६	३	४२	भाव. ह. अ. ६ निगा. १५७, का संकेत (चिह्न)
पट की कथा औत्पत्तिकी ६४६	६	२६२	प्रव. द्वा. ४ गा. २००
बुद्धि पर			न. सू. २७ गा. ६३ टी.
पडिमा ग्यारह श्रावक की ७७४	४	१८	दशा. द. ६, सम. ११
पडिमा बारह भिक्षु की ७६५	४	२८५	सम. १२, दशा. द. ७, भ. श. २३ १
पडिलेहणा पचीस ६३६	६	२१८	उत्त. अ. २६ गा. २४-२७
पडुच्चमक्खिएणां-निव्विगइ ६२६	३	१७४	भाव. ह. अ. ६ पृ. ८५४, प्रव. द्वा. ४ गा. २०५
पञ्चक्खाण का आगार			भ. श. १८३. १ सू. ६१६
पढमापढम के चौदह द्वार ८४२	५	३८	न. सू. २७ गा. ६३ टी.
पणित की कथा औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२५६
पण्डित मरण ८७६	५	३८३	सम. १७, प्रव. द्वा. १५७ गा. १००६
पण्डित वीर्यान्तराय ३८८	१	४११	कर्म भा. १ गा. ५२, पत्र प. २३
१ पण्य वस्तु चार २६४	१	२४६	ज्ञा. अ. ८ सू. ६६
पतंग वीथिका गोचरी ४४६	२	५१	ठा. ६ सू. ५१४, उत्त. अ. ३० गा. १६, प्रव. द्वा. ६७ गा. ७४५, अ. अधि. ३ श्लो. २२ टी. पृ. ३७
पति की कथा औत्पत्तिकी ६४६	६	२६६	न. सू. २७ गा. ६३ टी.
बुद्धि पर			
पदवियों सात ५१३	२	२३६	ठा. ३३ सू. १७७ टी.
पद श्रुत ६०१	६	४	कर्म भा. १ गा. ७

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पद समास श्रुत	६०१	६	४	कर्म.भा १गा.७
पदस्थ धर्मध्यान	२२४	१	२०८	ज्ञान प्रक ३८, यो प्रका. ८, क भा ० ओ २०७-२०६
पदानुसारिणी लब्धि	६५४	६	२६६	प्रव द्वा. २७० गा. १४६४
पदार्थ की तीन अवस्था	६४	१	४४	तत्त्वार्थ ग्रन्था ५ सू २६
पद्म लेश्या	४७१	२	७४	उत्त अ ३४, र्म. भा ४गा १३
पद्मावती	८७५	५	३६६	आव ह गा १३११
पद्य के आठ गूण	५४०	२	२७५	अनु ७ १२७गा ६१, डा ७सू ४३
पन्द्रह अंग मोक्ष के	८५०	५	१२१	पच व गा १६६-१६३
पन्द्रह कर्म भूमि	८५८	५	१४२	पत्र प १, भ ज २०८ ८सू ६७४
पन्द्रह कर्मदान	८६०	५	१४४	उपा अ. १सू ७, भ ज ८८ ४ सू ३३०, आव ह अ ६पृ ८२८
पन्द्रह गाथा अनाथता की	८५४	५	१३०	उत्त. अ. २० गा ३८-६२
पन्द्रहगाथा पूज्यता प्रदर्शक	८५३	५	१२७	दश अ ६उ ३
पन्द्रहगुण दीक्षा देनेवाले के	८५१	५	१२४	ध अधि ३ग्लो ८०-८४पृ ७
पन्द्रह नाम तिथियों के	८५७	५	१४२	चन्द्र प्रा. १० प्रा प्रा १८
पन्द्रह परमाधार्मिक	८५६	५	१४३	सम १२
पन्द्रह प्रकार के मिद्ध	८४६	५	११७	पत्र प १सू ७
पन्द्रह भेद बंधन नाम कर्म के	८५६	५	१४०	कर्म भा १गा ३७, र्म्म गा १टी
पन्द्रह योग	८५५	५	१३८	पत्र प १६सू २०२, भ ज. २४उ १
पन्द्रह लक्षण विनीत के	८५२	५	१२५	उत्त अ ११गा १०-१३
पन्नवणा सूत्र के छत्तीस पदों	७७७	४	२२१	पत्र प १-३६
का संक्षिप्त विषय वर्णन				
परदेशी राजा की कथा	७७७	४	२१६	रा
परदेशी राजा के छः प्रश्न	४६६	२	१०७	रासू ६३-७७

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
परपाषंडी प्रशंसा	२८५	१ २६५	उपा अ १ सू ७, आव द अ
परपाषंडी संस्तव	२८५	१ २६५	६४ ८१०
परमाणु	६	१ ३	ठा १ सू ४५
परमाणु	७३	१ ५३	ठा ३ उ २ सू १६५
परमात्मा	१२५	१ ६०	परमा गा १५
परमाधार्मिक देव पन्द्रह	५६०	२ ३२४	प्रव. द्वा १८० गा १०८५-१०८६
परमाधार्मिक पन्द्रह	८५६	५ १४३	सम १५
परमावधिज्ञानी क्या चरम	६८३	७ १०३	भ ज ७ उ ७ सू. २६१
शरीरी होते हैं ?			
परमेष्ठी पाँच	२७४	१ २५२	भ मगलाचरण
परम्परागम	८३	१ ६१	अनु सू १४४
परलोक के विषय में गणधर	७७५	४ ५६	विशे गा १६४६-१६७१
मैतार्यस्वामी का शंका समाधान			
परलोक नास्तित्ववादी	५६१	३ ६४	ठा ८ उ ३ सू ६०७
परलोक भय	५३३	२ २६८	ठा ७ उ ३ सू ५४६, सम ७
परविस्मयोत्पादन	४०२	१ ४३०	उत्त अ ३६ गा २६१, प्रव द्वा ७३
पर सामान्य	५६	१ ४१	रत्ना परि ७ सू १५, १६
परार्थानुमान	३७६	१ ३६६	रत्ना परि ३ सू २३
परार्थानुमान के पाँच अङ्ग	३८०	१ ३६६	रत्ना परि ३, न्याय दी. प्रमा. ३
परावर्तमान प्रकृतियाँ	८०६	४ ३५१	कर्म भा ५ गा १-१६
परिकर्मोपघात	६६८	३ २५५	ठा १० उ ३ सू ७३८
परिकुंचना प्रायश्चित्त	२४५ ख	१ २२४	ठा ८ उ १ सू २६३
परिक्रम संख्यान	७२१	३ ४०४	ठा १० उ ३ सू ७४७
परिग्रह	४६	१ २६	ठा २ उ १ सू ६४

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
परिग्रह आभ्यन्तरके १४ भेद	८४०	५	३३	वृत्त. १ ना ८३१
परिग्रह का स्वरूप	४६७	२	१६८	
परिग्रह के तीस नाम	६५८	६	३१०	प्रश्न. आश्रमद्वार ४
परिग्रह त्याग पर ११ गाथा	६६४	७	१८१	
परिग्रह नौ	६४०	३	२११	भाव ह. अ. ६४ ८२५
परिग्रह परिमाण व्रत	३००	१	२६०	भाव ह. अ. ६४ ८२५, अ. ५५. ३८६, उपा. अ. १ सू. ६, ध. अधि. २५० २६४ ६७
परिग्रह परिमाण व्रत के पाँच अतिचार	३०५	१	३००	उपा. अ. १ सू. ७, भाव ह. अ. ६४. ८२५, ध. अधि. २५० १०५
परिग्रह परिमाण व्रत निश्चय और व्यवहार से	७६४	४	२८२	भागम
परिग्रह विरमण रूप पाँचवें ३२१ महाव्रत की पाँच भावनाएं	१	३२६		भाव ह. अ. ६४ ६५८, प्रव. द्वा. ७२ गा. ६४०, गम. २५, आचा. धु. २५ ३५ २४ सू. १०६, ध. अधि ३२५. ६४ टी. पृ. १२५
परिग्रह संज्ञा	१४२	१	१०५	ठा. ४३. ४ सू. ३५६, प्रव. द्वा. १४५
परिग्रह संज्ञा	७१२	३	३८७	ठा. १० सू. ७५२, भ. न. ७३. ८
परिग्रह संज्ञा चार कारणों से उत्पन्न होती है	१४६	१	१०६	ठा. ४३. ४ सू. ३५६, प्रव. द्वा. १४५ गा. ६२३
परिचारणानारकी जीवों में ५६०	२	३३६		पत्र प. ३४ सू. ३२०
परिचारणा पाँच देवों की ३६८	१	४२२		पत्र प. ३४, ठा. ५ सू. ४०२ टी.
१ परिज्ञा पाँच	३६२	१	३७५	ठा. ४३ सू. ४२०
परिहावणियागार	५१७	२	२४७	भाव ह. अ. ६४ ८२५, प्रव. द्वा. ४

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
परिणामिया बुद्धि	२०१ १ १६०	ठा ४३४ सू ३६४, नसू २६
परिणामिया (पारिणामि-६१५ ६ ७३		नसू २७गा ७१-७४, आवह
की) बुद्धिके इक्कीस दृष्टान्त		नि गा ६४८-६५१, निर अ १, उत्त अ १गा ३टी. (कथा)
परित्त संसारी	८ १ ६	ठा २३ २सू ७६, आतुर गा ४३,
परिमंढल संस्थान	४६६ २ ६६	भश २५उ ३सू ७२४, पत्र प १
परिमाणसंख्या के दो भेद ६१६ ३ १४२		अनु सू १४६
परिमित पिण्डपातिक	३५५ १ ३७०	ठा. ५उ. १सू ३६६
१ परिवर्तना	३८१ १ ३६८	ठा. ५ उ ३ सू ४६५
परिवर्तित दोष (गवेषणै- ८६५ ५ १६३		प्रव द्वा ६७गा ५६६, ध अघि ३
षणा का एक दोष)		श्लो २२ टी पृ ३८, पि नि गा ६३, पि वि. गा ४, पचा १३गा ६
परिषह बाईस	६२० ६ १६०	सम २२, उत्त अ २, प्रव द्वा ८६ गा ६८५-८६, तत्त्वार्थ अध्या ६
परिहरण दोष	७२२ ३ ४०७	ठा. १०उ ३सू ७४३
परिहरणा पर कथा	५७६ ३ २४	आवह अ ४नि गा. १२४२
परिहरणोपघात	६६८ ३ २५५	ठा. १० उ ३ सू ७३८
परिहार विशुद्धि चारित्र ३१५ १ ३१८		ठा ५उ. २सू ४२८, अनु सू १४४, विशेष गा १२७०-१२७६
परिहार विशुद्धि चारित्र ६०५ ६ १६		पत्र प १सू ३७ टी
के बीस द्वार		
परुष वचन	४५६ २ ६२	ठा. ६उ ३सू ५२७, प्रव द्वा. २३५ गा. १३२१, वृ (जी.) उ ६
परोक्षज्ञान	१२ १ ११	नसू २, ठा २उ १ सू ७१

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
परोक्ष ज्ञान के दो भेद	१५	१	१२	डा २ उ १ सू ७१, पन. प २६ सू. ३१२, भ. श. ८३ २ सू ३१८, कर्म भा. १ गा ४, न. मू. १
परोक्ष प्रमाण के पाँच भेद ३७६	१	३२५		रत्ना परि. ३, ४
पर्यङ्का (निपद्या का भेद) ३५८	१	३७२		डा. ५ सू ३६६ टी., डा. ५ सू ४००
पर्याप्तिक	८	१	५	डा २ उ २ सू ७६
पर्याप्ति छः	४७२	२	७७	पद्म १ १ सू १२ टी., भ. श. ३३ १ सू १३०, प्रव. द्वा २३२ गा १३१७- १३१८, कर्म भा १ गा ४६
पर्याप्तियों के पूर्ण होने का क्रम ४७२	२	७६		पद्म १ १ सू १२ टी., प्रव. द्वा २३२
पर्याय	४७	१	२८	उत्त. अ. २८ गा ६
पर्याय, पर्याय समास श्रुत ६०१	६	३		कर्म भा. १ गा ७
आदि श्रुत ज्ञान के बीस भेद				
पर्याय श्रुत	६०१	६	३	कर्म भा १ गा ७
पर्याय समास श्रुत	६०१	६	३	कर्म भा १ गा ७
पर्यायार्थिक नय	१७	१	१४	रत्ना परि ७ सू ४
पर्यायार्थिक नय के छः भेद ५६२	२	४२१		ज्ञानन, द्रव्य त. भा. भा ५
पर्यायामना के परस्पर फल ७०८	३	३८३		डा ३ उ ३ सू १६०
पर्यायसना कल्प	६६२	३	२४१	पद्म १ ७ गा ३८-४०
पर्ये छः अधिक तिथि वाले ४३४	२	४१		डा ६ उ २ सू ४२६, चन्द्र. प्रा. १३
पर्ये छः न्यून तिथि वाले ४३३	२	४०		डा ६ उ २ सू ४२६, चन्द्र. प्रा. १२, उत्त. अ. २६ गा १४
पर्ये बीज	४६६	२	६६	दश. अ. ४ सू १
पर्ययोपम	३२	१	२२	डा २ उ. ६ सू ६६

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
षण्योपम की व्याख्या और उसके भेद	१०८ १ ७५	अनुसू-१३८-१४०, प्रवद्वा. १५८गा १०१८-१०२६
पञ्चानुपूर्वी	११६ १ ८४	अनु सू ६६-६८
पाँच अङ्ग परार्थानुमान के	३८० १ ३६६	रत्ना परि ३, न्यायदी. प्रका ३
पाँच अणुव्रत	३०० १ २८८	आव ह अ. ६ पृ ८७, डा ५ सू ३८६, उपा. अ १ सू ६, ध अधि. २२लो २३-२६ पृ ५७-६७
पाँच अतिचार अचौर्याणु-व्रत के	३०३ १ २६६	उपा अ १ सू ७, आव ह पृ ८२१, ध अधि २२लो ८५ पृ १०२
पाँच अतिचार अथितिसंवि-भाग व्रत के	३१२ १ ३१३	उपा अ १ सू ७, आव ह अ ६ पृ ८३६
पाँच अतिचार अनर्थदंड विरमण व्रत के	३०८ १ ३०७	उपा अ १ सू ७, प्रव द्वा ६ गा २८२, आव ह अ ६ पृ ८२६
पाँच अतिचार अपश्चिम मारणान्तिकी संलेखना के	३१३ १ ३१४	उपा. अ १ सू ७, ध अधि २२लो. ६६ पृ २३०
पाँच अतिचार अहिंसाणु व्रत के	३०१ १ २६०	उपा अ १ सू ७, ध अधि. २२लो. ४३ पृ १००, आव ह अ. ६ पृ ८१८
पाँच अतिचार उपभोगपरि-भोग परिमाण व्रत के	३०७ १ ३०५	उपा. अ १ सू ७, प्रव द्वा ६ गा २८१
पाँच अतिचार दिशा परिपाण व्रत के	३०६ १ ३०३	उपा. अ. १ सू ७
पाँच अतिचार देशावकाशिक व्रत के	३१० १ ३१०	उपा अ १ सू ७, आव ह अ ६ पृ. ८३४, व अधि २२लो ५६ पृ ११४
पाँच अतिचार परिग्रह परिमाण व्रत के	३०५ १ ३००	उपा. अ १ सू ७, आव ह अ. ६ पृ ८२५, ध अधि २२लो ४७-४८ पृ १०५-१०७

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पाँच अतिचार प्रतिपूर्णा	३११	१	३११	उपा. अ. १सू. ७
पौषध व्रत के				
पाँच अतिचार संलेखना के	३१३	१	३१४	उपा. अ. १सू. ७, ध. अ. धि. २श्लो. ६६ टी. पृ. २३०
पाँच अतिचार सत्याणु व्रत के	३०२	१	२६४	उपा. अ. १सू. ७, ध. अ. धि. २श्लो. ४४ पृ. १०१, भाव. ह. अ. ६पृ. ८२०
पाँच अतिचार समकित के	२८५	१	२६५	उपा. अ. १सू. ७, भाव. ह. पृ. ८१०
पाँच अतिचार सामायिक व्रत के	३०६	१	३०६	उपा. अ. १सू. ७, भाव. ह. पृ. ८३१
पाँच अतिचार स्वदार	३०४	१	२६८	उपा. अ. १सू. ७ टी.
संतोष व्रत के				
पाँच अतिशय आचार्य उपाध्याय के	३४२	१	३५३	ठा. ६उ. २ सू. ४३८
पाँच अनन्तक	४१७	१	४४१	ठा. ६उ. ३ सू. ४६२
पाँच अनन्तक	४१८	१	४४२	ठा. ६उ. ३ सू. ४६२
पाँच अनुत्तर केवली के	३७६	१	३६१	ठा. ६उ. १ सू. ४१०
पाँच अनुत्तर विमान	३६६	१	४२०	पत्र. १सू. ३८, भ. श. १४उ. ७
१ पाँच अभिगम श्रावक के	३१४	१	३१५	भ. श. २ उ. ६ सू. १०६
पाँच अवग्रह	३३४	१	३४४	भाव. भू. २च. १ अ. ७उ. १सू. १६२, भ. श. १६उ. २सू. ६६७ प्रव. द्वा. ८६गा. ६८१
पाँच अवन्दनीय साधु	३४७	१	३५७	भाव. ह. अ. ३ नि. गा. ११०७, पृ. ६१६, प्रव. द्वा. २गा. १०३-२३
पाँच अशुभ भावना	४०१	१	४२८	प्रव. द्वा. ७३गा. ६४१, उत्त. अ. ३६गा. २६१-२६४

१ साधु के सामने जाते समय मचित्त द्रव्यादित्याता रूप पाले जाने वाले नियम ।

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पाँच असंयम	२६७	१ २८३	ठा ६३ सू. ४२६, ४३०
पाँच अस्तिकाय	२७६	१ २५३	उत्त. अ. २८गा ७-१२, ठा ६ उ ३ सू. ४४१
१ पाँच आचार	३२४	१ ३३२	ठा ६३ सू. ४३२, ध अधि ३ श्लो ६४ पृ १४०
पाँच आचार्य	३४१	१ ३५२	ध अधि ३ श्लो ४६टी पृ १२८
पाँच आलंबनस्थान धार्मिक के	३३३	१ ३४३	ठा ६३ सू. ४४७
पाँच आश्रव	२८६	१ २६८	ठा ६३ सू. ४१८, सम ६
पाँच इन्द्रियों	३६२	१ ४१८	पन्न प १६ सू. १६१, ठा ६३ ३ सू. ४४३टी, जै प्र.
पाँच इन्द्रियों का विषय	३६४	१ ४१६	पन्न प १६ सू. १६४
परिमाण			
पाँच इन्द्रियों के तेईस विषय	६२६	६ १७५	ठा सू. ४७, ३६०, ६६६, पन्न प. २३३ सू. २६३, प. बोल १२, तत्त्वार्थ अध्या २ सू. २१
पाँच इन्द्रियों के संस्थान	३६३	१ ४१६	पन्न प १६, ठा. ६ सू. ४४३टी
पाँच कलहस्थान गच्छ में	३४४	१ ३५५	ठा ६३ सू. ३६६
आचार्य उपाध्याय के			
पाँच कल्याणक	२७५	१ २५३	पचा ६गा. ३०-३१, दशा. ६, ८
२ पाँच कामगुण	३६५	१ ४२०	ठा ६३ सू. ३६०
पाँच कारण अवधिज्ञान या	३७७	१ ३६२	ठा ६३ सू. ३६४
अवधिज्ञानी के चलित होने के			
पाँच कारण आचार्य उपा-	३४३	१ ३५४	ठा. ६ उ. २ सू. ४३६
ध्याय के गण से निकलने के			

१ मोक्ष प्राप्ति के लिये किये जाने वाला ज्ञानादि आसेदन रूप अनुष्ठान विशेष ।

२ काम अर्थात् अभिलाषा को उत्पन्न करने वाले गुण, शब्दादि ।

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पाँच कारण चौमासे के	३३७	१	३४७ अ ५ उ २ सू ४१३
पिछले सित्तर दिनों में			
विहार करने के			
पाँच कारण चौमासे के	३३६	१	३४७ अ ५ उ २ सू ४१३
प्रारंभिक पचास दिनों में			
विहार करने के			
पाँच कारण दुर्लभ बोधि के	२८६	१	२६६ अ ५ उ २ सू ४२६
पाँच कारण निद्रासे जागने के	४२०	१	४४४ अ ५ उ २ सू ४३६
पाँच कारण पारंचित	३४६	१	३५६ अ ५ उ १ सू ३६८
प्रायश्चित्त के			
पाँच कारण मोक्ष प्राप्ति के	२७६	१	२५७ आगम, कारण,, सम्मति भा. ५ कांड ३ गा ५३
पाँच कारण शिक्ता में बाधक	४२३	१	४४६ उक्त अ ११ गा ३
पाँच कारण संभोगी साधु	३४५	१	३५६ अ ५ उ १ सू ३६८
को अलग करने के			
पाँच कारण साधु द्वारा	३४०	१	३५१ अ ५ उ २ सू ४३७
साध्वी को ग्रहण करने या			
सहारा देने (स्पर्श करने) के			
पाँच कारण साधु साध्वी	३३६	१	३४६ अ ५ उ २ सू ४१७
के एकजगह स्थान, शय्या,			
निपट्टा आदि के			
पाँच कारण सुलभ बोधि के	२८७	१	२६६ अ ५ उ २ सू ४२६
पाँच कारण मूत्र की वाचना के	३८२	१	३६८ अ ५ उ ३ सू ४६८
पाँच कारणों से साधु मास	३३५	१	३४६ अ ५ उ २ सू ४१२
में दो या तीन बार पाँच महा-			
नदियों को पार कर सकता है			

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पाँच कारणों से साधुराजा	३३८	१ ३४८	ठा ५उ २ सू ४१६
के अन्तःपुर में प्रवेश कर सकता है			
पाँच क्रिया	२६२	१ २७६	} ठा २सू ६०, ठा ५सू ४१६,
पाँच क्रिया	२६३	१ २७७	
पाँच क्रिया	२६४	१ २७८	} ठा २सू ६०, ठा ५सू ४१६,
पाँच क्रिया	२६५	१ २८०	
पाँच क्रिया	२६६	१ २८२	ठासू ६०, ४१६, आव० ह अ ४
			पृ ६१४, सुय शु २ अ २गा १६८
पाँच गति	२७८	१ २५७	ठा ५उ ३ सू ४४२
पाँच जाति	२८१	१ २५६	पन्न० प २३उ २सू २६३, प्रव
			द्वा १८७गा. १०६६-११०४
१ पाँच दग्धाक्षर	३८५	१ ४०६	सरलपिगल
पाँच देव	४२२	१ ४४५	ठा ५सू ४०१, म०श १२उ ६
पाँच दोष मांडला (ग्रासै-	३३०	१ ३३६	उत्त अ २६ गा ३२, पि नि गा
पणा) के			६३६-६६८, ध अधि ३शलो
			२३पृ ५५, उत्त अ २४गा १०,
पाँच धाय (धात्री)	४०८	१ ४३४	म श ११उ ११सू ४२६, आचा
			अ २चू ३ अ २४सू १७६
पाँच निद्रा	४१६	१ ४४२	कर्म भा १गा ११-१२, पन्न० प २३
पाँच निर्ग्रन्थ	३६६	१ ३७६	ठा ५सू ४४६, म श २५उ ६
पाँच निर्याण मार्ग	२८०	१ २५६	ठा ५उ ३ सू ४६१
पाँच परमेष्ठी	२७४	१ २५२	म मंगलाचरण
पाँच परिचारणा देवों की	३६८	१ ४२२	पन्न० प ३४, ठा ५सू १०० टी
पाँच पग्निज्ञा	३६२	१ ३७५	ठा ५उ २सू ४२०

विषय	शाल भाग पृष्ठ	प्रमाण
पाँच पाँचभावनाएं अदत्ता-३१६	१ ३२६	सम २५, आचा भु २चु ३अ २४सू १७६, आव.इ.अ ४ पृ ६६८, प्रव द्वा ७२गा ६३६ से ६४०, अ अवि, ३ श्लो. ४५ टी पृ १२५
दानविरमण व्रत,		
परिग्रह विरमण व्रत, ३२१	१ ३२६	
प्राणातिपात विरमण व्रत, ३१७	१ ३२४	
मृषावाद विरमण व्रत और ३१८	१ ३२५	
मैथुन विरमण व्रत रूप ३२०	१ ३२७	
पाँच महाव्रतों की		
पाँच पाँचभेद अस्तिकाय के २७७	१ २५४	अ ५३ ३सू. ४४१
पाँच प्रकार आभियोगिकी ४०४	१ ४३१	उत्त.अ ३६गा २६२, प्रव द्वा ७३गा ६४४
भावनाना के		
पाँच प्रकार आसुरी भावनाना के ४०५	१ ४३१	{ उत्त म. ३६गा २६४, २६१, प्रव द्वा ७३गा ६४५, ६४२
पाँच प्रकार रुन्दर्ष भावनाना के ४०२	१ ४२८	
पाँच प्रकार का आचार प्रकल्प ३२५	१ ३३३	अ ५३ २ सू ४३३
पाँच प्रकार का दण्ड २६०	१ २६६	अ ५३ २ सू ४१८
पाँच प्रकार का प्रत्याख्यान ३२८	१ ३३६	अ ५ सू ४६६, आव.इ.पृ ८७७
पाँच प्रकार का स्वप्न दर्शन ४२१	१ ४४४	भज १६उ ६ सू ५७७
पाँच प्रकार किंल्वपी भावनाना के ४०३	१ ४३०	उत्त म ३६गा. २६३, प्रव द्वा ७३
पाँच प्रकार की अचित्त वायु ४१३	१ ४३८	अ ५३. ३सू ४४४
पाँच प्रकार के मच्छ ४१०	१ ४३६	अ ५३ ३ सू ४५३
पाँच प्रकार के मुण्ड ३६४	१ ३७८	अ ५३ ३ सू ४४३
पाँच प्रकार के मुण्ड ३६५	१ ३७६	अ. ५३ ३ सू ४४३
पाँच प्रकार के वनीपक ३७३	१ ३८७	अ. ५३ ३ सू ४४४
पाँच प्रकार के श्रमण ३७२	१ ३८७	प्रव द्वा ७४ गा ७३१

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
पाँच प्रकार सम्मोही भाषना के	४०६ १ ४३२	उत्त अ३६गा २६५टी, प्रव द्वा ७३ गा. ६४६
पाँच प्रतिक्रमण	३२६ १ ३३७	ठा ५उ ३ सू ४६७, आव ह अ ४ गा १२५०-१२५१
पाँच प्रतिघात	४१६ १ ४४०	ठा ५उ १ सू ४०६
पाँच प्रमाद	२६१ १ २७०	पचा १गा २३टी, ध अघि २३लो ३६टी पृ ८१, ठा ६उ ३सू ५०२, अष्ट १६श्लो. १टी
पाँच बोल छद्मस्थ साक्षात् नहीं जानता	३८६ १ ४०६	ठा ५उ ३ सू ४५०
पाँच बोल पास जा कर वंदना करने के असमय के	३४८ १ ३६३	प्रव द्वा २गा १२४, आव ह अ ३ निगा ११६८ पृ ५४०
पाँच बोल पास जा कर वंदना करने योग्य समय के	३४६ १ ३६४	प्रव द्वा २गा १२५, आव ह अ ३ निगा ११६६ पृ ५४१
पाँच बोल भगवान् महावीर से उपदिष्ट एवं अनुमत	३५०, १ ३६४, ३५१ १ ३६५	{ ठा ५ सू ३६६, प्रव द्वा ६६ गा ५५४, ध अघि. ३ श्लो. ४६ पृ १२७
पाँच बोल भगवान् महावीर से उपदिष्ट एवं अनुमत	३५२ १ ३६७	ठा ५उ १ सू ३६६
पाँच बोल महानिर्जरा और महापर्यवसान के	३६० १ ३७४	ठा ५उ १ सू ३६७
पाँच बोल महानिर्जरा और महापर्यवसान के	३६१ १ ३७४	ठा ५ उ १ सू ३६७
पाँच भाव जीवों के	३८७ १ ४०७	कर्म भा. ४गा. ६४-६८, अनु सू १२६, प्रव द्वा. २२१ गा. ६०-६८

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
पाँचभिक्षुकमच्छकीउपमासे ४११	१ ४३७	ठा ५७ ३ सू ४५३
पाँचभूपण समकित के २८४	१ २६४	घ अवि २२० २२टी ४ ८३
पाँचभेद अन्तराय कर्म के ३८८	१ ४१०	पत्र १. २३, कर्म भा १ गा ५२
पाँचभेद आगोपणा के ३२६	१ ३३४	ठा ५३ २ सू ४३३, सम २८टी.
पाँचभेद कुशील के ३६६	१ ३८४	ठा ५३ ३ सू ४४६
पाँच भेद चारित्र के ३१५	१ ३१५	ठा ५३ ४२८, अमु १४६, विशे गा १२६०-१२८०
पाँचभेद ज्ञान के ३७५	१ ३६०	ठा ५३ ४६३, कर्म भा १, तं ५
पाँच भेद ज्ञानावगणीय के ३७८	१ ३६३	ठा ५३ ४६४, कर्म भा १ गा ६
पाँच भेद ज्योतिषी देवों के ३६६	१ ४२३	अ ५३ ४७१, जी प्रति ३ सू. १२०
पाँचभेद तिर्यच पंचेन्द्रिय के ४०६	१ ४३५	पत्र १ १, उत्त अ. ३६ गा १६६-२२
पाँचभेद निर्ग्रन्थ के ३७०	१ ३८५	ठा. ५३ ३ सू ४४६
पाँच भेद निपद्या के ३५८	१ ३७२	ठा ५३ ३६६ टी, ठा ५३ ४००
पाँचभेद परोक्ष प्रमाण के ३७६	१ ३६५	स्तो परि ३, १
पाँच भेद पुलाक के ३६७	१ ३८२	ठा. ५३. ४४५ भा. २५३६
पाँच भेद वकुश के ३६८	१ ३८३	ठा ५३ ३ सू ४४५
पाँचभेद बन्धन नामकर्म के ३६०	१ ४१५	कर्म भा १ गा ३५, प्र ४ २१६
पाँच भेद वस्त्र के ३७४	१ ३८६	ठा ५३ ३ सू ४४६
पाँचभेद वेदिका प्रतिलेखना के ३२२	१ ३२६	ठा ५३. ३ सू ४०३ टी.
पाँच भेद शरीर के ३८६	१ ४१२	ठा ५३ १ सू ३६५, पत्र १. २१ सू २६७, कर्म भा १ गा. ३३
पाँच भेद संवातनामकर्म के ३६१	१ ४१६	कर्म भा १ गा ३६ प्र ४ २१६
पाँच भेद संसारी निषि के ४०७	१ ४३३	ठा. ५३ ३ सू ४४८
पाँच भेद समकित के २८२	१ २६१	कर्म भा १ गा. १५

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पाँच भेद स्नातक के	३७१	१	३८६	ठा. ५ सू. ४४५, म. श. २५ उ. ६
पाँच भेद स्वाध्याय के	३८१	१	३६८	ठा. ५ उ. ३ सू. ४६५
पाँच महानदियों को १ मास ३३५	१	३४६		ठा. ५ उ. २ सू. ४१२
में दो, तीन बार साधु द्वारा				
पार करने के पाँच कारण				
पाँच महाव्रत	३१६	१	३२१	दश. म. ४, ठा. ५ उ. १ सू. ३८६, प्रव. द्वा. ६६ गा. ५५३, ध. अधि. ३ श्लो. ३६-४४ पृ. १२०
पाँच मिथ्यात्व	२८८	१	२६७	कर्म भा. ४ गा. ५१, ध. अधि. २ श्लो. २२ टी. पृ. ३६
पाँच रस	४१५	१	४३६	ठा. ५ उ. १ सू. ३६०
पाँच लक्षण समकित के	२८३	१	२६३	ध. अधि. २ श्लो. २२ टी. पृ. ४३
पाँच वर्ग निरयावल्लिका के	३८४	१	३६६	निर.
पाँच वर्ण	४१४	१	४३६	ठा. ५ उ. १ सू. ३६०
पाँच व्यवहार	३६३	१	३७५	ठा. ५ सू. ४२१, म. श. ८ उ. ८ सू. ३०४, व्यवभा. पीठिका गा. १-२
पाँच शौच (शुद्धि)	३२७	१	३३५	ठा. ५ उ. ३ सू. ४४६
पाँच संयम	२६८	१	२८४	ठा. ५ उ. २ सू. ४२६-४३०
पाँच संवत्सर	४००	१	४२४	ठा. ५ सू. ४६०, प्रव. द्वा. १४२
पाँच संवर	२६६	१	२८५	ठा. ५ सू. ४१८, ४२७, प्रश्न धर्मद्वार
पाँच सभाएं इन्द्रस्थान की	३६७	१	४२१	ठा. ५ उ. ३ सू. ४७२
पाँच समिति की व्याख्या	३२३	१	३३०	सम. ५, उत्त. अ. २४ गा. २, ठा. ५ सू. ४५७, ध. अधि. ३ श्लो. ४७ पृ. १३०
और उसके भेद				
पाँच स्थान के वली के परिपह	३३२	१	३४२	ठा. ५ उ. १ सू. ४०६
उपसर्ग सहन करने के				

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पाँचस्थानछद्मस्थकेपरिपह	३३१	१	३४०	ठा ५७ १ सू ४०६
उपसर्ग सहन करने के				
पाँचस्थानभगवान् महावीर	३५३-१	३६७-		{ ठा ५७ १ सू ३६६
से उपदिष्ट एवं अनुमत	३५७ १ ३७३			
पाँचस्थानभगवान् महावीर	३५६ १ ३७३			ठा ५७.१ सू. ३६६
से उपदिष्ट एवं अनुमत				
पाँच स्थान सूत्र सीखनेके	३८३ १ ३६६			ठा. ५७ ३ सू. ४६८
पाँच स्थावरकाय	४१२ १ ४३७			ठा. ५७. १ सू ३६३
पाखण्ड धर्म	६६२ ३ ३६१			ठा १०७. ३ सू ७६०
पाणिप्राण विशोधन	४४८ २ ५३			ठा. ६७. ३ सू ५०३, उत्तम २६
प्रतिलेखना				गा २४
१ पाण्डुक निधि	६५४ ६ २२१			ठा ६७ ३ सू ६७३
पात्र परिकर्मोपघात	६६८ ३ २५५			ठा १०७. ३ सू ७३८
पादपोषगमन मरण	८७६ ५ ३८५			सम १७, प्रवद्धा. १६७ गा. १००७
पान पुण्य	६२७ ३ १७२			ठा ६७ ३ सू ६७६
पानी(धोवन) इक्कीस	६१२ ६ ६३			आचा. भु २ प्र. १७७ ८ सू ४१,
प्रकार का				४३, पि नि गा १८-२१, दग.
				अ. ५३ १ गा. ७४-७६
पानैपणा के सात भेद	५२० २ २५०			आचा. भु २ चू. १ प्र १७ ११
				सू ६२, ठा. ७३. ३ सू ४४४ टी.
				ध अ धि ३ श्लो २२ टी पृ ४४
पाप प्रकृतियों वयासी	८०६ ४ ३५१			{ कर्म भा. ५ गा. १६-१७,
पाप प्रकृतियों वयासी	६३३ ३ १८२			
				नग गा. १३-१४

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
पापवोधनेके अठारहप्रकार ६३३	३ १८२	दशा. ६, डा. १ सू. ४८, भ. श. १३. ६
पापभोगनेके वयासी प्रकार ६३३	३ १८२	नव. कर्म भा. १ गा. १६-१७
पाप श्रुत के उनतीस भेद ६५६	६ ३०५	सम २६, उत्त अ. ३१ गा. १६ टी., आव. ह. अ. ४ पृ. ६६०.
पाप श्रुत नौ	६४३ ३ २१४	डा. ६३. ३ सू. ६७८
पाप स्थानक अठारह	८६५ ५ ४१२	डा. १ सू. ८८, प्रव. द्वा. २३७ गा. १३६१-१३६३, दशा. ६६, भ. श. १३ ६, भ. श. १२ उ. ६
पारंचित प्रायश्चित्त के ५ बोल ३४६	१ ३५६	डा. ४ उ. १ सू. ३६८
पारिग्रहिकी क्रिया	२६३ १ २७८	डा. २ उ. १ सू. ६०, डा. ५ उ. २ सू. ८१६, पत्र प. २२ सू. २८४
पारिणामिक भाव की	३८७ १ ४०६	कर्म भा. ४ गा. ६६, अनुसू. १२६, प्रव. द्वा. २२१ गा. १२६४
व्याख्या और उसके तीन भेद		
पारिणामिकी बुद्धि	२०१ १ १६०	डा. ४ उ. ४ सू. ३६४, न. सू. २६
पारिणामिकी (परिणामि-	६१५ ६ ७३	न. सू. २७ गा. ७१-७४, आव. ह. गा. ६४८-६५१
या) बुद्धि के इक्की सट्टान्त		
पारितापनिकी क्रिया	२६२ १ २७७	डा. २ उ. १ सू. ६०, डा. ५ उ. २ सू. ८१६, पत्र प. २२ सू. २७६
पारिषद्य	७२६ ३ ४१६	तत्त्वार्थ अध्या. ४ सू. ४
१ पार्श्वनाथ भगवान् के ५६५	३ ३	डा. ८ उ. ३ सू. ६१७, सम ८
गणधर आठ		
पास जाकर वन्दना करने ३४८	१ ३६३	प्रव. द्वा. २ गा. १२४, आव. ह. अ. ३ नि. गा. ११६८ पृ. ५४०
के पाँच असमय		
पास जाकर वन्दना करने ३४६	१ ३६४	प्रव. द्वा. २ गा. १२५, आव. ह. अ. ३ नि. गा. ११६६ पृ. ५४१
योग्य समय पाँच		

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पासन्थ(पार्श्वस्थ)साधु	३४७	१	३५७	प्रव द्वा २गा. १०४-१०५, आन. ह. अ. ३निगा. ११०७-११०८
पिंगल निधि	६५४	३	२२१	ठा ६३ ३सू ६७३
पिण्डस्थ धर्मध्यान	२२४	१	२०८	ज्ञानप्रक ३७, यो प्रका ७, क भा २ श्लो २०७
पिण्डैषणाएं सात	५१६	२	२४६	आचा. धु. २ चू १अ १३ ११ सू ६२, ठा. ७८, ३सू. ६४६टी ध अधि ३श्लो. २२टी. पृ ४४
पिता के तीन अङ्ग	१२२	१	८७	ठा ३३ ४सू २०६
पिहिय दोष(ग्रहणैषणा का एक दोष)	६६३	३	२४३	प्रव द्वा ६७गा ६६८, पि नि. गा. ४२०, ध अधि ३श्लो २२टी. पृ ४१, पचा १३गा. २६
पीड़ित वायु	४१३	१	४३६	ठा ६३ ३सू ४६४
पुण्डरीक, कुण्डरीक की कथा	६००	५	४७२	ज्ञा. अ १६
पुण्य की तीन अवस्थाएं	६३३	३	२०१	नव. गा. १ व्याख्या
पुण्य के नौ भेद	६२७	३	१७२	ठा. ६ ३ ३सू ६७६
पुण्यपाप विषयक गणधर	७७५	४	५४	विशे. गा १६०६-१६४८
अचल भ्राता का शंका समाधान				
पुण्य प्रकृतियाँ	८०६	४	३५०	} कर्म भा ६ गा १, १४, १५, नव. गा १०-१२
पुण्य प्रकृतियाँ बगालीस	६३३	३	१८२	
पुण्य प्रकृतियाँ बगालीस	६६३	७	१५०	
पुण्य बाँधने के नौ प्रकार	६३३	३	१८१	नव, ठा. ६३. ३सू. ६७६
पुण्य भोगने के ४२ प्रकार	६३३	३	१८२	नव, कर्म भा ६ गा १४-१५
पुण्यवान् को प्राप्त दस वोल	६५६	३	२२४	उत्त अ. ३गा १७-१८
पुत्र की कथा आत्पत्तिकी	६४६	६	२७१	नं सू २७ गा. ६३ टी
बुद्धि पर				

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पुत्र के दस प्रकार	६७७	३ २६५	ठा १०७ ३ सू. ७६२
पुद्गल के छः भेद	४२६	२ २५	दश अ. ४ भाष्य गा ६० टी
पुद्गलछः की इन्द्रियविषयता	४२६	२ २५	दश अ. ४ भाष्य गा ६० टी
पुद्गल द्रव्य	४२४	२ ३	आगम, उत्त अ ३६ गा १०
पुद्गल परमाणुओं की वर्गणा आठ	६१७	३ १३४	विशे गा ६३१-६३७
पुद्गल परावर्तन आठ	६१८	३ १३६	कर्म भा ५ गा ८६-८८
पुद्गल परावर्तन सात	५४६	२ २८४	ठा ३७ ४ सू. १६३ टी, भश १२ उ ४ सू. ४४६, कर्म भा ५ गा. ८७- ८८, प्रव द्वा. १६२ गा १०३६ से १०५२, पच द्वा २ गा ३६ टी.
पुद्गल परिणाम चार	२६६	१ २४७	ठा ४७.१ सू २६५
पुद्गलास्तिकाय के ५ प्रकार	२७७	१ २५६	ठा ५७ ३ सू ४४१
पुद्गलों के शुभाशुभ परिणाम	६००	५ ४५८	ज्ञा. अ १२
पुष्पचूलिया सूत्र के दस	३८४	१ ४०३	निर०
अध्ययनों का विषय वर्णन			
पुष्पचूलिया सूत्र के दस	७७७	४ २३४	निर०
अध्ययनों का विषय वर्णन			
पुष्पिया सूत्र के दस अध्य-	३८४	१ ४०१	निर०
यनों का संक्षिप्त विषय वर्णन			
पुष्पिया सूत्र के दस अध्य-	७७७	४ २३३	निर०
यनों का संक्षिप्त विषय वर्णन			
पुरिमड्ड (दो पहर) अवड्ड	७०५	३ ३७७	प्रव द्वा. ४ गा २०१-२, आव द्वा अ ६ गा १४६७, पचा ५ गा ८-११
(तीन पहर) का पञ्चखाण			
पुरिमड्ड (दो पोरिसी) के ५	१६	२ २४६	आव द्वा अ ६ पृ ८४२, प्रव द्वा ४ गा २०३
सात आहार			

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पुरुषकार(उच्चारण)	२७६	१	२५७	आगम, कारण, सम्मति भा ५ कांड ३ गा. ५३
पुरुष के तीन प्रकार	८४	१	६१	ठा ३३ ३ सू १६६
पुरुष लिंग सिद्ध	८४६	५	११६	पञ्च प १ सू ७
पुरुष वेद	६८	१	४६	वृ ३ ४, कर्म भा. १ गा. २०
पुरुषार्थ	२७६	१	२५७	आगम, कारण, सम्मति भा ५ कांड ३ गा ५३
पुरुषार्थ के चार भेद	१६४	१	१५१	पुरुषा
पुलाक	३६६	१	३७६	} ठा. ५३ ३ सू ४४५, भाग २४ उ ६ सू ७५१
पुलाक (प्रतिसेवा पुलाक) के पाँच भेद	३६७	१	३८२	
पुलाक लब्धि	६५४	६	२६७	प्रव द्वा २७० गा १ ६६४
पुष्करचरद्वीपमें चन्द्रमूर्यादि	७६६	४	३०१	सूर्य प्रा. १६ सू. १००
ज्योतिषी देवों की संख्या				
पुष्करोदधिसमुद्रमें चन्द्रमूर्यादि	७६६	४	३०२	सूर्य प्रा १६ सू १००
दि ज्योतिषी देवों की संख्या				
पुष्पचूला	८७५	५	३६४	आव ह नि गा १०८४
पुष्पवती देवी की कथा	६१५	६	८०	न. सू २७ गा ७२, आ १८ नि. गा ६६६
पारिणामिकी बुद्धि पर				स्या. का १ टी
पूजातिशय	१२६	ख १	६७	
पूजा प्रशंसा के त्याग पर	६६४	७	१६०	
दस गाथाएं				
पूज्यता प्रदर्शक १५ गाथाएं	८५३	५	१२७	दज अ. ६ उ ३

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
पूति कर्मदोष	८६५ ५ १६२	प्रव द्वा ६७गा ५६५, ध अघि. ३श्लो २२टी पृ ३८, पि नि गा ६२, पि. वि गा ३, पचा १३गा ५
पूरक प्राणायाम	५५६ २ ३०३	यो प्रका ५ श्लो ७
पूरिमाणं वारह	८०० ४ ३०२	सूर्य प्रा १० प्रा प्रा ६ सू ३८
पूर्वकृत कर्म क्षय	२७६ १ २५७	आगम, कारण, सम्मति. भा ५ काड ३ गा ५३
पूर्व चौदह	८२३ ५ १२	न सू ५७, सम १४, १४७
पूर्वधर लब्धि	६५४ ६ २६४	प्रव द्वा २७० गा १४६३
पूर्वमीमांसा दर्शन	४६७ २ १५२	
पूर्वश्रुत	६०१ ६ ५	कर्म भा. १ गा ७
पूर्वसमास श्रुत	६०१ ६ ५	कर्म भा १ गा ७
पूर्वानुपूर्वी	११६ १ ८४	अनु सू ६६-६८
पूर्वाह्निक (पुरिमद्धी)	३५५ १ ३७०	ठा ५८ १ सू ३६६
१ पृच्छना	३८१ १ ३६८	ठा ५८ ३ सू ४६५
पृथक्त्व वितर्क सविचारी	२२५ १ २०६	ठा ४८ १ सू २४७, ज्ञान प्रक ४२, शुक्लध्यान आव ह अ ४ ध्यानशतक गा ७७-७८, क. भा २ श्लो ०१२
पृथुल संस्थान	५५२ २ २६३	ठा १ सू ४७, ठा ७ सू ५४८
पृथ्वीयां आठ	६०८ ३ १२६	ठा: ८३ ३ सू ६४८
पृथ्वीआदिभूतोंके विषयमें	७७५ ४ ३६	विशे गा १६८७-१७६६
व्यक्तस्वामीकाशंकासमाधान		
पृथ्वीकाय	४६२ २ ६४	ठा ६३ ३ सू ४८०, दश अ ४, कर्म. भा ४ गा १०

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पृथ्वीकाय के चालीस भेद	६८७	७ १४५	पत्र प १ सू. १६
पृथ्वीकाय के सात भेद	५४५	२ २८४	पत्र प. १ सू १४
पृथ्वी के छः भेद	४६५	२ ६५	जी. प्रति ३ सू १०६
पृथ्वी के देशतः भूजने के ३ बोल	११६	१ ८२	ठा ३७ ४ सू १६८
पृथ्वी ३ बल्यों से बलियित है	११५	१ ८१	ठा ३७.४ सू २०४
पृथ्वी सारी भूजने के ३ बोल	११७	१ ८२	ठा ३३.४ सू १६८
१ पृष्ठ लाभिक	३५४	१ ३६६	ठा ४८.१ सू. ३६६
पृष्ठिजा (पुष्टिया) क्रिया	२६४	१ २७६	ठा. २ सू ६०, ठा ४ सू ४१६
पेटा गांचरी	४४६	२ ५१	ठा ६३. ३ सू ११४, उत्तम ३० गा १६, प्रव द्वा ६७ गा ७४५, व अवि ३१ मो २ २ टी पृ ३७
पेंतालीस आगम	६६७	७ २६०	जैन, अभि. ग भा. १ प्रस्तावना
पेंतालीस गाथा उत्तराध्ययन	६६६	७ २५४	उत्तम ३५
सूत्र के पचीसवें अध्ययन की			
पेंतीस गुण गृहस्थधर्म के	६८०	७ ७४	यो. प्रका १५ लो ४७-५६ पृ ४०
पेंतीस वाली के अतिशय	६७६	७ ७१	सम. ३५ टी, राम ४ टी, अव सू १० टी.
पोटिल अनगार	६२४	३ १६४	ठा. ६ सू ६६१, मणु व. ३ म १
२ पोतक वस्त्र	३७४	१ ३८६	ठा ४८ ३ सू ४४६
पोरिसी का प्रमाण चारह	८०३	४ ३०४	उत्तम २६ गा १३-१४
महीनों का			
पोरिसी के छः आगार	४८३	२ ६७	{ प्रव द्वा ४ गा २०१-२०३, आव द्वा अ. ६ नि गा १४६ पृ. ८५१-४२, पना ६ गा ८-११
पोरिसी साठ पोरिसी का	७०५	३ ३७७	
पचक्रवाण			

१ माहार आदि के लिए पृष्ठने वाले दाता में ही भिक्षा लेने वाला अभिप्रदारी साधु।

२ चराम का बना हुआ वस्त्र।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पौद्गलिक सम्यक्त्व	१०	१	१०	प्रव द्वा १४६ गा ६४२ टी.
पौषध के अठारह दोष	८६४	५	४१०	शिक्षा.
पौषध के पाँच अतिचार	३११	१	३११	उपा.अ १ सू ७
पौषध व्रत निश्चय और	७६४	४	२८४	आगम.
व्यवहार से				
पौषधोपवास व्रत	१८६	१	१४०	पंचा १गा २६, आव.ह अ ई पृ ८३६
१ प्रकीर्णक	७२६	३	४१६	तत्त्वार्थ.अध्या ४ सू ४
प्रकीर्ण तप	४७७	२	८८	उत्त.अ ३० गा ११
प्रकृति बन्ध	२४७	१	२३१	ठा.४५.२६६, कर्म.भा १गा २
प्रकृतियों २८ मोहनीय कर्म की	६५१	६	२८४	कर्म.भा १गा १३-२२, सम २८
प्रकृतियों ४१ उदीरणाविना	६८६	७	१४६	कर्म भा ६गा ५४-६६
उदय में आने वाली				
प्रकृतियों ४२ नाम कर्म की	६६१	७	१४६	पञ्च.प २३३.२ सू २६३
प्रकृतियों ४२ पुण्य की	६६३	७	१५०	कर्म.भा.५गा १६, १७
प्रचला	४१६	१	४४३	} कर्म भा १गा.११, पञ्च.प २३ उ २ सू २६३
प्रचला प्रचला	४१६	१	४४३	
प्रच्छन्न काल आगार	४८३	२	६८	आव.ह अ ई पृ ६८२, प्रव द्वा.४
२ प्रज्ञा अवस्था	६७८	३	२६८	ठा १० उ ३ सू ७७२
प्रतर तप	४७७	२	८७	उत्त अ ३० गा १०
प्रतर नरकों में	५६०	२	३२८	जी प्रति.३ सू ७० टी
प्रतर भेद	७५०	३	४३३	ठा १० सू ७१३ टी, पञ्च.प १३

१ वे देव जो नगरनिवासी अथवा साधारण जनता की तरह रहते हैं।

२ दस अवस्थाओं में से एक अवस्था, इस अवस्था को प्राप्त होने पर पुरुष को अपने अभीष्ट की सिद्धि एवं कुटुम्बवृद्धि की बुद्धि उत्पन्न होती है।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
प्रतान स्वप्न दर्शन	४२१	१	४४४	भ.श. १६३ ६ सू. ५७७
प्रतिक्रमण आवश्यक	४७६	२	६१	आव.ह.अ. ४
प्रतिक्रमण कल्प	६६२	३	२४०	पचा. १७ गा. ३२-३४
प्रतिक्रमण के आठ भेद और उन पर दृष्टान्त	५७६	३	२१	आव.ह.अ. ४ नि. गा. १२३३-१२४२
प्रतिक्रमण के छः भेद	४८०	२	६४	ठा. ६३ ३ सू. ५३८
प्रतिक्रमण क्या व्रतरहित को भी करना चाहिए?	६१८	६	१४४	आव.ह.अ. ४ नि. गा. १०७० टी. पृ. ५६८, पंच प्र. (वदित्ता सूत्र)
प्रतिक्रमण पर कथा	५७६	३	२२	आव.ह.अ. ४ नि. गा. १२४२
प्रतिक्रमण पाँच	३२६	१	३३७	ठा. ५३ ३ सू. ४६७, आव.ह.अ. ४ नि. गा. १०४०-१०५१
प्रतिघात पाँच	४१६	१	४४०	ठा. ५३ १ सू. ४०६
१ प्रतिचरणा पर कथा	५७६	३	२३	आव.ह.अ. ४ नि. गा. १२४२
प्रतिज्ञा	३८०	१	३६६	रत्ना. परि. ३, न्यायदी. प्रका. ३
प्रतिपत्ति श्रुत	६०१	६	४	कर्म. भा. १ गा. ७
प्रतिपत्ति समास श्रुत	६०१	६	४	कर्म. भा. १ गा. ७
प्रतिपाती अवधिज्ञान	४२८	२	२८	ठा. ६ सू. ५२६, जं. सू. १४
प्रतिपूर्ण पौषध व्रत के पाँच अतिचार	३११	१	३११	उपा. अ. १ सू. ७
२ प्रतिपृच्छा समाचारी	६६४	३	२५०	भ.श. २५३ ७ सू. ८०१, टी. १० उ. ३ सू. ७८६, उत्त. अ. २६ गा. २, प्रव. द्वा. १०१ गा. ७६०

१ समय का सावधानता पूर्वक निर्दोष गालन करना प्रतिचरणा है ।

२ गुरु ने पहले जिस कार्य के लिए निषेध कर दिया है उसी कार्य में आवश्यकता-नुसार फिर प्रवृत्त होना हो तो विनय पूर्वक गुरु से प्रार्थना ।

विषय बोल भाग पृष्ठ प्रमाण

१ प्रतिमास्थायी : ३५७ १ ३७२ ठा ५७ १ सू. ३६६

प्रतिलेखनाकीविधिकेद्वःभेद ४४७ २ ५२ उत्त अ २६ गा. २४

प्रतिलेखना के पचीसभेद ६३६ ६ २१८ उत्त अ २६ गा. २४-२७

प्रतिवासुदेव नौ ६४८ ३ २१८ सम १५८, प्रव द्वा २११ गा.

१२१३, आव ह. भाष्यगा ४२४ १५६

प्रतिसंलीनता तप ४७६ २ ८६ उत्त अ ३० गा. ८, ठा ६ सू. ५११,

उव सू. १६, प्रव द्वा ६ गा. २७०

प्रतिसंलीनतातपकेतेरहभेद ८१५ ४ ३६५ भ.श. २५ उ ७ सू. ८० उव सू. १६

प्रतिसंलीनता तप के भेद ६३३ ३ १६२ उव सू. १६, भ.श. २५ उ ७

चार और अवान्तरभेद तेरह सू. ८०

प्रतिसेवना कुशील ३६६ १ ३८१ ठा ५ सू. ४४५, भ.श. २५ उ ६

प्रतिसेवना कुशील के ५ भेद ३६६ १ ३८४ ठा ५ उ ३ सू. ४४५

प्रतिसेवना दस ६६६ ३ २५२ भ.श. २५ उ ७ सू. ७६६, ठा. १०

उ ३ सू. ७३३

प्रतिसेवना प्रायश्चित्त २४५ ख १ २२३ ठा ४ उ १ सू. २६३

प्रतिसेवा पुलाक ३६६ १ ३८० ठा ५ सू. ४४५, भ.श. २५ उ. ६

प्रतिस्रोतचारी भिक्षु ४११ १ ४३७ ठा ५ उ ३ सू. ४५३

प्रतिस्रोतचारी मच्छ ४१० १ ४३६ ठा ५ उ ३ सू. ४५३

प्रतीत सत्य ६६८ ३ ३६६ ठा १० सू. ७४१, पत्र प ११ सू.

१६५, ध अधि ३ ग्लो ४१४ १२१

प्रतीत साध्य धर्म विशेषण ५४६ २ २६१ रत्ना परि ६ सू. ३६

पक्षाभास

प्रतीति १२७ १ ६० भ.श. १ उ ६ सू. ७६

प्रतीति निराकृतवस्तुदोष ७२३ ३ ४११ ठा. १० उ ३ सू. ७४३ टी

१ एक रात्रि आदि की पडिमा अंगीकार कर कायोत्सर्ग में स्थिर रहने वाला साधु।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
प्रत्यक्ष ज्ञान	१२	१	११	ठा २७ १ सू ७१, तं सू २
प्रत्यक्ष निराकृत वस्तु दोष	७३३	३	४११	ठा १०७.३ सू ७४३ टी
प्रत्यक्ष निराकृत साध्यधर्म	५४६	२	२६१	रत्ना परि. ६ सू ४१
विशेषण पक्षाभास				
प्रत्यक्ष प्रमाण	२०२	१	१६०	भ.श. ४७ ४ सू १६३, प्रनु सू १६४
प्रत्यक्ष व्यवसाय	८५	१	६२	ठा ३३ ३ सू १८६
प्रत्यक्ष के छः प्रकार	४४५	२	४६	भ.श. ८ उ. ८ सू ३३६
प्रत्यक्षिज्ञान	३७६	१	३६५	रत्ना परि ३ सू ६
प्रत्याख्यान आवश्यक	४७६	२	६३	भाव ह. अ. ६
प्रत्याख्यान के दो भेद	५४	१	३१	भ.श. ७ उ. २ सू २७१
प्रत्याख्यान दस	७०४	३	३७५	ठा १० सू ७४८, भ.श. ७ उ. २
प्रत्याख्यान पाँच प्रकारका	३२८	१	३३६	ठा ५ सू. ४६६, भाव ह. पृ. ८४७
प्रत्याख्यान पालने के छः	४८२	२	६६	भाव. ह. अ. ६ नि गा १६६३ पृ
अङ्ग				८५१, ध. अ. धि. २ श्लो. ६३ पृ. १६२
प्रत्याख्यान विशुद्धि के छः	४८१	२	६५	ठा ५ उ. ३ सू ४६६ टी, भाव ह.
प्रकार				अ. ६ नि गा. १६८६ पृ ८४६
प्रत्याख्यानावरण कषाय	१५८	१	११६	पत्र प. १४ सू. १८८, ठा ४ उ १ सू
				२४६, कर्म भा १ गा १७, १८
प्रत्याहार (योग का एक अंग)	६०१	३	११८	यो०, रा० यो०
प्रत्याहार प्राणायाम	५५६	२	३०३	यो. प्रका ५ श्लो. ८
प्रत्युत्पन्न दोष	७२३	३	४१२	ठा. १० उ ३ सू ७४३
प्रत्युपकार तीनों का दुःशक्य है	१२४	१	८७	ठा. ३ उ १ सू १३४
प्रत्युपेक्षणा प्रमाद	४५६	२	६०	ठा. ६ उ. ३ सू १०२
प्रत्येक बुद्ध सिद्ध	८४६	५	११८	पत्र प. १ सू ७
प्रत्येक मिश्रिता सत्यामृषा	६६६	३	३७१	ठा. १० सू. ७४१, पत्र प. ११,
				ध. अ. धि. ३ श्लो. ४१ टी. पृ. १२०

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
प्रथमसप्तर्गात्रिदिवसनामक ७६५	४	२६०	सम १२, दशा द ७, भ श २३ १
आठवीं भिक्षु पट्टिमा			सू ६३ टी.
प्रथम समय निर्ग्रन्थ	३७०	१ ३८५	ठा ५३ ३ सू ४४५
१ प्रदेश	५	१ ३	ठा. १ सू ४५
प्रदेश	७३	१ ५३	ठा ३३ २ सू १६६
प्रदेश अनन्तक	४१७	१ ४४१	ठा ५३ ३ सू ४६२
प्रदेश नाम निश्चत्तायु	४७३	२ ८०	भ श ६३ ८, ठा ६ सू ५३६ टी.
प्रदेश बन्ध	२४७	१ २३२	ठा ४ सू २६६, कर्म भा १ गा २
प्रदेश चत्त्व गुण	४२५	२ १६	द्रव्य त अध्या ११ श्लो ४
प्रधान (मुख्य)	३८	१ २४	तत्त्वार्थ, अध्या ५ सू ३१
प्रधानतापद नाम	७१६	३ ३६७	अनु० सू १३०
२ प्रपञ्चा अवस्था	६७८	३ २६८	ठा १०३ ३ सू ७७२
३ प्रभावक आठ	५७२	३ १०	प्रव द्वा १४८ गा ६३४
प्रभावती	८७५	५ ३६५	भाव. ह निगा १२८४
प्रभावना दर्शनाचार	५६६	३ ८	पन्न प १ सू ३७, उत अ २८ गा ३१
प्रभासस्वामी कीमोक्ष विषयक शका और समाधान	७७५	४ ६०	विशे गा १६७२-२०२४
प्रमत्त संयत गुणस्थान	८४७	५ ७६	कर्म भा २ गा २
प्रमाण	३७	१ २३	रत्ना० परि १ सू. २
प्रमाण	४२७	२ २६	अनु० सू ७०
प्रमाण और नय	४६७	२ १७०	
प्रमाणा चार	२०२	१ १६०	भ श. ५३ ४ सू १६३, अनु सू १४४

१ स्वन्ध या देश में मिला हुआ द्रव्य का अति सूक्ष्म विभाग ।

२ इस अवस्था को प्राप्त होने पर पुरुष का स्वास्थ्य गिरने लगता है ।

३ जो धर्म के प्रचार में सहायक होते हैं वे प्रभावक कहलाते हैं ।

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
प्रमाण नाम	७१६ ३ ३६६	अनु० सू १३०
प्रमाण नाम के चार भेद	७१६ ३ ४००	अनु० सू १३०
प्रमाण संवत्सर की व्याख्या और उग के पाँच भेद	४०० १ ४२५	ठा १ उ ३ स ४६०, प्र ४, १४२ गा ६०१
प्रमाणांगुल	११८ १ ८३	अनु० सू १३३
प्रमाद आठ	५८० ३ ३६	प्र १३ २०७ गा १२००-८
प्रमाद आश्रय	२८६ १ २६८	ठा ६ उ २ सू ४१८, गम ४
प्रमाद छः	४५६ २ ५६	ठा ६ उ ३ सू ६००
प्रमाद पाँच	२६१ १ २७०	ठा ६ सू ६०२, घ अगि, ३५ लो ३६ टी पृ ८१, पता १ गम ३१, अष्ट १६ जो १ टी
प्रमाद प्रतिलेखना	५२१ २ २५१	उत्त. अ २६ गा २७
प्रमाद प्रतिलेखना छः	४४६ २ ५३	ठा ६ सू ६०३, उत्त. अ. २६ गा २६
प्रमाद प्रतिलेखना सात	५२१ २ २५१	उत्त. अ. २६ गा २७
प्रमाद विषयक दस गाथाएँ ६६४	७ २३१	
प्रमेयत्व गृण	४२५ २ १६	आगत प्रमेयन का गा. ११५ लो.
प्रमोद भावना	२४६ १ २२६	गाथा, च, उ गा. २५ लो. ४३
प्रयत्न आदिके योग्य स्थान ६०६	३ १२४	ठा ८ उ ३ स ६१८
प्रयोग कर्म	७६० ३ ४४२	आगत गा २३ अगि गा १८३
प्रयोग गति के पन्द्रह भेद ८५५	५ १३८	पता १ गा २००, गम ११ उ १ सू ७१६
१ प्रयोग गति सम्पदा	५७४ ३ १४	उत्त. अ ४, ठा ८ उ ३ सू ६०१
प्रलम्ब प्रमाद प्रतिलेखना	५२१ २ २५१	उत्त. अ २६ गा २७

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
१ प्रवचन उद्भावनता	७६३	३	४४६	ठा १० उ ३ सू ७४८
प्रवचन माता	२२	१	१६	उत्त. अ २४ गा. १-२
प्रवचन माता आठ	५७०	३	८	उत्त. अ २४ गा १-२, सम ८
प्रवचन वत्सलता	७६३	३	४४६	ठा. १० उ ३ सू ७४८
प्रवचन संग्रह तयालीस	६६४	७	१५१	उत्त, दश, आचा, मूय, प्रश्न, द प, भ, जा, विज्ञे, आव ह, उव., ध., आगम, ममय, वृ, प्रतिमा., पचव., फि नि, पि वि, ध र, दशा
प्रवर्तक पदवी	५१३	२	२४०	ठा ३ उ. ३ सू १७७ टी
प्रवृत्ति	४५	१	२८	
प्रव्रज्या के दस कारण	६६५	३	२५१	ठा. १० उ ३ सू ७१२
प्रव्रज्या दस	६६५	३	२५१	ठा १० उ ३ सू ७१२
प्रव्रज्या प्राप्त पुरुष चार	१७६	१	१३०	ठा ४ उ ४ सू ३२७
प्रव्रज्या स्थविर	६१	१	६६	ठा ३ उ ३ सू १५६
२ प्रव्राजकाचार्य	३४१	१	३५२	ध अधि. ३ लो ४६ टी प्र १२८
प्रशस्त काय विनय सात	५०३	२	२३२	{ भश २४ उ ७ सू ८०२, ठा ७ उ ३ सू ६८६, उवे सू २०
प्रशस्त मन विनय सात	४६६	२	२३१	
प्रशस्त वचन विनय सात	५०१	२	२३२	भश २४ उ ७, ठा ७ सू ६८६
प्रशान्त रस	६३६	३	२११	अनु सू १२६ गा ५०-८१
प्रशास्त दोष	७२२	३	४०७	ठा १० उ ३ सू ७८३
प्रशिक्षित प्रमाद प्रतिलेखना	५२१	२	२५१	उत्त अ. २६ गा २५१

१ द्वादशांग रूप प्रवचन का वर्णवाद एव गुण कीर्तन काना प्रवचन उद्भावनता है ।

२ सामायिक व्रत आदि का आरोपण करने वाले आचार्य ।

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
प्रश्न(आभियोगीकीभावना४०४ १ ४३१ का एक भेद)		उत्त.अ. ३६गा. २६२, प्रव. द्वा. ७३गा. ६४४
प्रश्न छः परदेशी राजा के	४६६ २ १०७	सामू. ६३
प्रश्न छः प्रकार का	४६४ २ १०३	ठा. ६३ ३ सू. ५३४
प्रश्न व्याकरण सूत्र के दस	७७६ ४ २०८	
अध्ययनों का विषय वर्णन		
प्रश्नाप्रश्न	४०४ १ ४३१	उत्त.अ. ३६गा. २६२, प्रव. द्वा. ७३
*प्रश्नोत्तर इक्कीस	६१८ ६ १३३	
*प्रश्नोत्तर छत्तीस	६८३ ७ ६८	
प्रस्थापिता आरोपणा	३२६ १ ३३५	ठा. ५३ २ सू. ४३३
प्रस्फोटना प्रतिलेखना	४४६ २ ५४	ठा. ६५ ४०३, उत्त. अ. २६गा. २६
प्राकृतआदि १२ भेद भाषा के	७७६ ४ २३८	प्रग्न धर्मद्वार २ सू. २४टी.
प्राकृत भाषा के छः भेद	४६२ २ १०२	प्रा. प्र. भाषा
प्राक्पश्चात्सस्तव दोष	८६६ ५ १६५	प्रव. द्वा. ६७गा. ४६८, ध. अ. धि. ३२लो २२पृ. ८०, पिं नि गा. ४०६, पिं वि गा. ६६, पना १३ गा. १६
प्राग्भारा अवस्था	६७८ ३ २६८	ठा. १०३ ३ सू. ७७२
प्राजापत्य स्थावरकाय	४१२ १ ४३८	ठा. ५३. १ सू. ३६३
प्राण	१३० १ ६७	ठा. ५३. ४३०, अ. न. २३ १ सू. ८८
प्राण	५५१ २ २६२	ज. व. न. २ सू. १८
प्राण अपानादि पाँच वायु	५५६ २ ३०४	यो. प्रा. ५, राज. १४३
प्राण अपानादि पाँच वायु	५५६ २ ३०५	यो. प्रा. ५, राज. १४३
फो जीतने का फल		
प्राण दम	७२४ ३ ४१३	ठा. १ सू. ४८टी., प्र. द्वा. १७० गा. १०६६, न. ३.

* पृथक् पृथक् नामों एवं धर्म ग्रन्थों में से चुन कर लिखे हुए प्रग्न तथा उनके उत्तर ।

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाणा
प्राणातिपात विरमण व्रत ३१७	१	३२४	आव.ह अ ४४ ६४८, प्रव.द्वा.
रूप प्रथम महाव्रत की पाँच			७२गा ६३६-६४०, सम २५,
भावनाएं			आचा भ्र. २चु ३अ. २४सू १७६,
			ध अघि ३श्लो. ४५टी पृ १२५
प्राणातिपात विरमण व्रत ७६४	४	२८०	आगम.
निश्चय और व्यवहार से			
प्राणातिपातिकी क्रिया	२६२	१ २७७	ठा. २. उ १सू ६०, ठा ४ उ २सू.
			४१६, पन्नप २२सू. २७६
प्राणायाम	६०१	३ ११८	यो०, रा० यो०
प्राणायाम सात	५५६	२ ३०२	यो प्रका. ५, रा-यो, हठ
प्रातीत्यिकी क्रिया	२६४	१ २७६	ठा २सू ६०, ठा ४सू ४१६
प्रात्ययिक व्यवसाय	८५	१ ६२	ठा ३उ. ३ सू १८५
मादुष्करण दोष	८६५	५ १६३	प्रव. द्वा ६७गा ५६५, ध अघि
			३श्लो २२टी पृ ३८, पि. निगा.
			६२, पि वि गा ३, पचा १३गा ५
प्राद्वैपिकी क्रिया	२६२	१ २७७	ठा २उ १सू ६०, ठा ४ उ २सू
			४१६, पन्नप २२ सू २७६
१ प्रान्त चरक	३५२	१ ३६७	ठा ४ उ १सू ३६६
प्रान्ताहार	३५६	१ ३७१	ठा ४ उ. १ सू ३६६
प्राप्यकारी इन्द्रियाँ चार	१२१४	१ १६३	ठा ४सू ३३६, रत्ना परि २सू ५
प्राभृतप्राभृत श्रुत	६०१	६ ४	कर्म भा १गा ७
प्राभृतप्राभृत समास श्रुत	६०१	६ ४	कर्म भा १गा. ७
प्राभृत श्रुत	६०१	६ ४	कर्म भा. १गा. ७
प्राभृत समास श्रुत	६०१	६ ५	कर्म भा १गा. ७

१ भोजन से अवशिष्ट तुच्छ एवं हल्के आहार का गवेषक अभिप्रदधारी साधु ।

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
प्राभृतिका दोष	३४७ १ ३५६	आवह अ. नि. गा. ११०७ = पृ ६१६, प्रव. द्वा. २ गा. १०३-२३
प्राभृतिका दोष	८६५ ५ १६३	प्रव. द्वा. ६७ गा. ६६४, ध. अधि ३२लो २२टी पृ ३८, पि. नि. गा. ६०, पि. वि. गा. ३, पचा. १३ गा. ६
प्राप्तित्य दोष	८६५ ५ १६३	
प्रायश्चित्त	४७८ २ ८८	उव. सू. २०, उत्त. अ. ३० गा. ३०, डा. ६ सू. ४११, प्रव. द्वा. ६ गा. २७१
प्रायश्चित्त आठ	५८१ ३ ३७	डा. ८३ ३ सू. ६०४
प्रायश्चित्त के अन्यचार भेद २४५ ख १	२२३	डा. ८३. १ सू. २६३
प्रायश्चित्त के पचास भेद	६३३ ३ १६३	भ. ज. २२४ ७ सू. ८०२, उव. सू. २०, डा. १०३ ३ सू. ७३३
प्रायश्चित्त के पचास भेद १००४ ७	२७१	भ. ज. २२४ ७ सू. ८०२
प्रायश्चित्त चार	२४५ क १ २२२	डा. ८३ १ सू. २६३
प्रायश्चित्त भूठा कलंक	४६० २ ६२	वृ. (जी.) उ. ६
लगाने वाले को		
प्रायश्चित्त दस	६७३ ३ २६०	भ. ज. २२४ ७, डा. १० सू. ७३३
प्रायोगिकी क्रिया	२६६ १ २८२	डा. २३. १ सू. ६० डा. ८३ ३ सू. ४१६, आवह अ. ८ पृ. ६१६
प्रियसेन कृष्णारानी	६८६ ३ ३४७	अत. व. = अ. ६
प्रेम निःसृत असत्य	७०० ३ ३७२	डा. १० सू. ७६१, पचा. १. ११ सू. १६६, ध. अधि. ३२लो. ८१ पृ. १२२
प्रेम प्रत्यया (पेज्जवत्तिया) २६६ १	२८२	डा. २३ १ सू. ६०, डा. ८३. ३ सू. ४१६, आवह अ. ८ पृ. ६१६
क्रिया		

फ

फूल की उपमा से पुरुषचार १७१ ? १२७ डा. ८३. ४ सू. ३२०

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
फूल के चार प्रकार	१७० १ १२६	ठा. ४३४ सू. ३२०
फोड़ी कम्से कर्मादान	८६० ५ १४५	उपा अ १सू ७, म श. ८४ ६सू. ३३०, आव ह अ ६पृ ८२८

ब

बकुश	३६६ १ ३८०	ठा ६सू. ४४५, म श २४८. ६
बकुश के पाँच भेद	३६८ १ ३८३	ठा ४३ ३ सू. ४४५
बत्तीस अस्वाध्याय	६६८ ७ २८	ठा ४३ २सू. २८५, ठा १०३ ३ सू. ७१४, प्रव द्वा २६८गा. १४५०- १८७१, व्यव. भा उ ७गा. २६६- ३१६, आव ह अ. ४गा १३२१-६०
बत्तीस उपमा शील की	६६४ ७ १५	प्रज्ञ धर्मद्वार ४ सू २७
बत्तीस गाथा अकाम मर-	६७२ ७ ४६	उत्त अ ५
णीय अध्ययन की		
बत्तीस गाथा बहुश्रुत पूजा	६७३ ७ ५१	उत्त अ ११
अध्ययन की		
बत्तीस गाथा स्रगगङ्गांगमूत्र	६७४ ७ ५६	सुय अ २३ २
केदूसरे अ० केदूसरे उ० की		
बत्तीस दोष तथा आठ	६६७ ७ २३	अनुसू १६१टी, विगे गा ६६६ टी, वृ गा २८७-२८८पीठिका
गुण सूत्र के		
बत्तीस दोष वन्दना के	६६६ ७ ३८	आव ह अ ३गा १२०७-११९ ६४३, वृ उ. ३गा ४४७१-६४, प्रव द्वा २गा १४०-१७३ शिजा०
बत्तीस दोष सामायिक के	६७० ७ ४३	
बत्तीस योग संग्रह	६६५ ७ १६	उत्त अ ३१, प्रज्ञ धर्मद्वार ५ सू २८, मम ३२, आव. ह अ ४ गा. १०७-४७८ पृ. ६६३

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
वत्तीस विजय	६७१	७	४३	ज.वत्स ४, लोक भा. २म ११
वत्तीस सूत्र	६६६	७	२१	
वधिरोल्लाप का दृष्टान्त	७८०	४	२४१	आव ह गा. १३३, दृ पीटिका
वचन अननुयोग पर				नि गा. १७१
वन्ध	२५३	१	२३७	कर्म भा २गा १ व्याख्या
वन्ध	४६७	२	२०१	
वन्ध का स्वरूप समझाने के लिये मोदक का दृष्टान्त	२४८	१	२३२	ठा ४उ २मू २६६, कर्म भा १ गा २
वन्ध की व्याख्या और भेद	२४७	१	२३१	ठा ४मू २६६, कर्म भा १गा २
वन्ध के कारण आठ कर्मों के	५६०	३	४३	भश ८उ ६ मू ३४१
वन्ध के दो भेद	५२	१	३०	कर्म. भा. १ गा ३४ व्याख्या
वन्ध के भेद	४६७	२	२०४	
वन्ध तत्त्व के चार भेद	६३३	३	१६७	कर्म भा १गा २, नय, ठा ४मू २६६
वन्धन करण	५६२	३	६५	वम्म गा २
वन्धन की व्याख्या और भेद	२६	१	१८	ठा २उ ४ मू ६६
वन्धन नामकर्म का स्वरूप और उमके पाँच भेद	३६०	१	४१५	कर्म भा १गा ३४, प्राव द्वा २-१६ गा. १२७२
वन्धन नामकर्म के पन्द्रह भेद	८५६	५	१४०	कर्म भा. १गा. ३७, वम्म. गा. १टी.
वन्धन परिणाम	७५०	३	४३०	ठा १०मू ७१३, पल ५ १३
वन्धन प्रतिघात	४१६	१	४४०	ठा ४ उ. १ मू. ४०६
वन्ध मोक्षविषयक गणधर	७७५	४	४४	विज्ञे. गा १८०२-१८६३
मंडितस्वामी का शंकासमाधान				
वन्धाधिकार कर्म प्रकृतियों	८४७	५	८८	कर्म. भा. २गा. ३-१२
का गणस्थान में				

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
बयालीसदोषआहारादिके	६६०	७ १४६	पिं निगा ६६६
बयालीस पुण्य प्रकृतियाँ	६६३	७ १५०	कर्म भा ५ गा. १६-१७ ।
बयालीस प्रकृतिनाम कर्म की	६६१	७ १४६	पत्र प २२२ ३ सू २६३
बयालीस भेद आश्रव के	६६२	७ १४६	नव० गा १६
बयासी पाप प्रकृतियाँ	६३३	३ १८२	कर्म भा ५ गा १५-१७, नव०
बलदस इन्द्रिय, ज्ञानादिके	६७५	३ २६३	ठा. १०७ ३ सू ७४०
बलदेव	४३८	२ ४२	ठा ६ सू ४६१, पत्र. प १ सू ३७
बलदेव नौ	६४६	३ २१७	आव. ह पृ १५६, प्रव द्वा. २०६ गा १२११, सम. १५८
बलदेव और वासुदेवों के	६५१	३ २१६	सम १५८
पूर्व भव के आचार्य नौ			
बलदेव लब्धि	६५४	६ २६४	प्रव द्वा २७० गा १४६३
बलदेवों के पूर्व भव के नाम	६४६	३ २१८	सम १५८
बलमद	७०३	३ ३७४	ठा १० सू ७१०, ठा ८ सू ६०६
बल वीर्य पुरुषाकार परा-	४१६	१ ४४१	ठा ५७ १ सू ४०६
क्रम का प्रतिघात			
१ बला अवस्था	६७८	३ २६८	ठा १०७ ३ सू ७७२
बलाभियोग आगार	४५५	२ ५६	उपा अ. १ सू ८, आव. ह अ ६ पृ ८१०, ध अधि २ श्लो २२ पृ ४१
बहिरात्मा	१२५	१ ८६	परमा गा १३
२ बहुमानाचार	५६८	३ ६	ध अधि १ श्लो १६ टी पृ १८
बहुमत निहव का मत शंका	५६१	२ ३४२	विशे गा २३०६-२३३२, म
समाधान सहित			श ६७ ३३, म श. १७ १, आव. ह भाष्य गा १२५-१२६ पृ ३१२

१ दम अवस्थाओं में से चौथी अवस्था ।

२ ज्ञानाचार का एक भेद, ज्ञानी और गुरु के प्रति भक्ति एवं श्रद्धा रखना ।

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
बहुश्रुतपूजा अ० की ३२ गाथा ६७३	७ ५१	उत्त अ ११
बहुश्रुतसाधु की १६ उपमाणं ८६३	५ १५५	उत्त अ. ११ गा १४-३०
वाईस निग्रह स्थान	६२१ ६ १६२	प्र.मी. अख्या १ या १ सु ३४, न्यायप्र, न्यायसु अख्या ४ या २
वाईस परिषद	६२० ६ १६०	सम २२, उत्त अ २, प्रम द्वा ८३ गा ६ ८६-८८, तत्त्वार्थ अख्या, ६
वाईस विशेषण धर्म के	६१६ ६ १५६	ध अवि ३४० २७ टी. पृ. ६१
वादर	८ १ ५	टा २३ १ सू ७३
वादर पुद्गल	४२६ २ २५	दश. अ. भाष्य गा. ६० टी.
वादर वादर पुद्गल	४२६ २ २५	दश अ ४ भाष्य गा ६० टी
वादर वनस्पतिकाय छः	४६६ २ ६६	दश० अ. ४ सू. १
वादर सूक्ष्म पुद्गल	४२६ २ २५	दश अ ४ भाष्य गा ६० टी.
वारह अमावस्याएं	८०१ ४ ३०३	सूर्य प्रा १० प्रा. प्रा ६ सू ३८
वारह आगार कायोत्सर्ग के ८०७	४ ३१६	भाष द. अ ४ सू. ७७८
वारह उपमाणं साधु की	८०५ ४ ३०६	अनु० सू १४० गा १३१
वारह उपयोग	७८६ ४ २६७	पद्म. २६ सू ३१०
वारह उपांग सूत्र	७७७ ४ २१५	
वारह गाथा दशवैकालिक ८११	४ ३५२	दश० अ ६ गा ११-२५
सूत्र के चौथे अध्ययन की		
वारह गाथाएं ममुद्रपालीय ७८१	४ २५५	उत्त. अ. २१
अध्ययन की		
वारह गाथाएं साधु के लिये ७८१	४ २५५	उत्त. अ. २१
मार्ग प्रदर्शक		
वारह गुण अरिहन्त देव के ७८२	४ २६०	मन ३४, म ज द्वा. ६६, म्या गा. १

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
वारह ग्लान प्रतिचारी	७६७ ४ २६७	प्रवद्वा ७१गा. ६२६से६३६, नवपद गा १२६ पृ ३१६
* वारह चक्रवर्ती	७८३ ४ २६०	ठा ८३ ३सू. ६३३, ठा २३ ४सू ११२, सम. ६४, १५८, आव ह अ १निगा. ३६७, वि ष
वारह चक्रवर्ती आगामी	७८४ ४ २६५	सम. १५६
उत्सर्पिणी के		
वारह दृष्टान्त अननुयोग	७८० ४ २३८	आवह गा १३३-१३४, वृ
तथा अनुयोग के		पीठिका नि गा १७१-१७२
वारह दोषकाया के सामायिक के	७८६ ४ २७३	शिक्षा.
वारह द्वार कर्म प्रकृतियों के	८०६ ४ ३३६	कर्म भा ५ गा १-१६
वारह नाम ईषत्प्राग्भारा के	८१० ४ ३५२	सम १२
वारह नाम मान के	७६० ४ २७५	भ.श १२३ ५सू ४४६
वारह पूर्णिमाएं	८०० ४ ३०२	सूर्य प्रा १० प्रा प्रा ६सू ३८
वारह प्रकार का तप	४७६, २ ८५, {	उत्त अ ३०, उवसू १६-२०,
(निर्जरा)	४७८ २ ८६ {	ठा ६सू ५११. प्रवद्वा. ६गा २७०
वारह प्रकार के आर्य	७८५ ४ २६६	वृ ७ १नि. गा ३२६३
वारह बाल मरणा	७६८ ४ २६८	भ.श २३ १सू ६१
वारह भावना (अनुपेक्षा)	८१२ ४ ३५५	शा भा १, २, भावना ज्ञान. प्रक २, प्रवद्वा ६७गा ५७२-५७३, तत्त्वार्थ. अध्या ६ सू ७

: हरिभद्रीयावश्यक निर्युक्ति गाथा ४०१ में सुभूम और वृद्धदत्त चक्रवर्ती का सातवीं नरक में जाना, मधवा और सनत्कुमार चक्रवर्ती का तीसरे सनत्कुमार देवलोक में उत्पन्न होना एवं शेष आठ चक्रवर्तियों का मित्र होना वतशाया है ।

विषय	शोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
वारह भावना पर दोहे	८१२	४	३७६	
वारह भावव्रत श्रावक के	७६४	४	२८०	भागम.
निश्चय और व्यवहार से				
वारह भिक्षु पद्धिमा	७६५	४	२८५	मम १२, दशा ६७, भश. २३ १
वारह भेद अप्रशस्त मन	७६१	४	२७५	अ मृ २०
विनय के				
वारह भेद अवग्रह ज्ञान के	७८७	४	२६६	ठा ६७ ३ मृ ५१० टी, विशे. गा. ३०७, तत्त्वार्थ अध्या १ मृ. १६
वारह भेद असत्यामृपाभापा के	७८८	४	२७२	पत्र प ११ मृ १६५ टी.
वारह भेद कल्पोपपन्न	८०८	४	३१८	पत्र प. २, ४, ६, जी प्रति. ३ मृ.
देवों के				२०७-२२३, तत्त्वार्थ अध्या ४
वारह भेद भाषा के	७७६	४	२३८	प्रश्न धर्मद्वार २ मृ. २४ टी
वारह भेद सूत्र के	७७८	४	२३५	वृ ३ १ गा १२२१
वारह महीनों में पोरिसी	८०३	४	३०४	उत्तम २६ गा १३-१४
का परिमाण				
वारह मान्यताएं चन्द्र और	७६६	४	३००	सूर्य प्रा. १६ मृ. १००
सूर्यों की संख्या के विषय में				
वारह मास	८०२	४	३०३	सूर्य प्रा १० प्रा. प्रा. १६
वारह विशेषण धर्म के	८०४	४	३०६	शा. भा २ प्रक १० (धर्मभाषना)
वारह विशेषण सापेक्ष	८०६	४	३१४	ध मि. मृ. ३६६
यति धर्म के				
वारह व्रत श्रावक के				
(पाँच अगुव्रत)	३००	१	२८८	श्रावक म. ६ पृ ८१७-३६, उपा म. १ मृ ६, ठा. मृ. ३८६, पचा १ गा ७-३२, म. मधि. २ ज्यो. २३-४० पृ ४३-६४
(तीन गृणव्रत)	१२८८	१	६१	
(चार शिक्ताव्रत)	१८६	१	१४०	

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
चारह श्रमणोपासक	७६३	४	२७६	भ श ८३ ६सू ३३०
आजीवक के				
चारह संभोग	७६६	४	२६२	निजी. उ. १, सम १२, व्यव. भा उ ६
बाल अवस्था	६७८	३	२६७	ठा १० उ ३ सू ७७२
बाल पण्डित मरण	८७६	५	३८३	सम १७, प्रव द्वा १६७ गा १००६
बाल पण्डित वीर्यान्तराय	३८८	१	४१२	कर्म भा १ गा. ६२, पत्र. प. २३
बाल मरण	८७६	५	३८३	सम १७, प्रव द्वा १६७ गा. १००६
बाल मरण के चारह भेद	७६८	४	२६८	भ श. २ उ १ सू ६१
बाल वीर्यान्तराय	३८८	१	४११	कर्म भा १ गा ६२, पत्र. प. २३
बावन अनार्चीर्ण साधु के	१००७	७	२७२	दश अ. ३
बावन भेद विनय के	१००६	७	२७२	प्रव द्वा ६६ गा ६६१
बाह्य (मोटाई) नरकोंकी	५६०	२	३२८	जी प्रति ३ सू. ६८
बाह्य तप छः	४७६	२	८५	उत्त. अ ३० गा ८, ठा. ६ सू ६११, उव सू १६, प्रव द्वा ६ गा २७०
१ बाह्याबाह्यानुयोग	७१८	३	३६४	ठा १० उ ३ सू ७२७
बीज बुद्धि लब्धि	६५४	६	२६६	प्रव द्वा २७० गा १४६४
बीजरुचि (समाकृतकाभेद)	६६३	३	३६३	उत्त अ २८ गा. २२
२ बीज रूह	४६६	२	६६	दश अ. ४
बीभत्स रस	६३६	३	२०६	अनुसू १२६ गा. ७४-७४
बीस असमाधि स्थान	६०६	६	२१	सम २०, दशा. द. १
बीस आश्रव	६०७	६	२५	सम ६, प्रश्न. नि. गा २ पृ ३, ठा. ६ सू ४१८, ४२७, ७०६

१ द्रव्यानुयाग का भेद, बाह्य (विलक्षण) और अवाह्य (समान) का विचार ।

२ बीज से उगने वाली वनस्पति, जैसे शालि आदि ।

विषय	वोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
वीस कल्प	६०४ ६ ६	वृ३१
वीसगाथाचतुरंगीयअ०की	६०६ ६ २६	उत्त०अ ३
वीस वोल तीर्थङ्करगोत्र	६०२ ६ ५	भाव द नि. गा. १७६-१८१ पृ
वाँधने के		११८, शा अ मसू. ६४, प्रव द्वा. १० गा ३१३-३१६
वीस भेद श्रुत ज्ञान के	६०१ ६ ५	कर्म भा १ गा. ७
वीस विहरमान	६०३ ६ ८	ठा. मसू ६३७ टी., विहर., विलोक
वीस संवर	६०८ ६ २५	ठा. ६ मसू ४१८, ४२७, ठा. १० मसू. ७०६, प्रश्न मकरद्वार, सम ६
वीस स्त्रियाँ दीक्षा के	८६१ ५ ४०६	प्रव द्वा १०८ गा. ७६२, ध.
अयोग्य		अभि. ३ श्लो ७८ टी पृ ३
बुद्ध बांधित सिद्ध	८४६ ५ ११६	पत्र १ मसू ७
बुद्धि औत्पत्तिकी (उत्पा-	६४६ ६ २४२	न० मसू २७
तिया) के सत्ताईस दृष्टान्त		
बुद्धि कम्पिया के १२ दृष्टान्त	७६२ ४ २७६	न० मसू २७, भाव द नि गा ६४७
बुद्धि के चार भेद	२०१ १ १५६	न० मसू. २६, ठा ४३ मसू ३६४
बुद्धि पारिणामिकी (परि-	६१५ ६ ७३	न० मसू २७ गा. ७१-७४, भाव.
णामिया) के डक्कीस दृष्टान्त		द नि गा ६४८-६४९
बृहत्कल्पमूत्रकाविषयवर्णन	२०५ १ १८१	व.
बृहस्पतिदत्तकुमार की कथा	६१० ६ ४१	नि०अ ६
बोटिकनामक आठवाँ निहव	५६१ २ ३६६	दिने गा २४४०-२६०६
बांधि दुर्लभ भावना	८१२ ४ ३७१,	गा. भा. २ प्रक १२ ठा. ७३ मसू
	३८८	६८७, भावना. ज्ञान पत्र ३, प्रा. ठा ६६ गा. ६७३, तत्पर्य अख्या ६
बाँद्ध दर्शन	४६७ २ ११७	

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
ब्रह्मचर्य	६६१ ३ २३४	नव,मम १, शा.भा. १ प्रक. ८
ब्रह्मचर्य की बत्तीस उपमा	६६४ ७ १५	प्रश्न धर्मद्वार ४ सू २७
ब्रह्मचर्य के अठारह भेद	८६२ ५ ४१०	सम. १८, प्रव. द्वा. १६८ गा. १०६१
ब्रह्मचर्य के असमाधिस्थान	७०१ ३ ३७२	उत्त० अ १६
ब्रह्मचर्यगुप्ति नौ	६२८ ३ १७३	ठा ६३ ३ सू. ६६३, सम ६
ब्रह्मचर्य पर सोलह गाथाएं	६६४ ७ १७७	
ब्रह्मचर्य महाव्रत की पाँच भावनाएं	३२० १ ३२७	भाव. ह. अ ४४ ६६८, प्रव. द्वा. ७२ गा. ६३६, सम २६, आचा. ध्रु २ चू. ३ अ २४ सू. १७६, ध. अधि ३ श्लो ४५ टी पृ १२६
ब्रह्मचर्य वास	३५१ १ ३६६	ठा. ६३. १ सू. ३६६, ध. अधि ३ श्लो ४६ पृ १२७, प्रव. द्वा. ६६
ब्रह्मदेवलोक का वर्णन	८०८ ४ ३२२	पत्र प २ सू. ५३
ब्रह्म स्थावर काय	४१२ १ ४३८	ठा ६३ १ सू. ३६३
१ ब्राह्मण वनीपक	३७३ १ ३८८	ठा ६३ ३ सू. ४४४
ब्राह्मी	८७५ ५ १८५	भाव. ह. गा. १६६, त्रि. प. पर्व १, २
ब्राह्मी लिपि के ४६ मातृकाक्षर	८८६ ७ २६४	सम. ४६

भ

भंग उनपचास श्रावक के	१००३ ७ २६७	भ. ग. ८३ ६ सू. ३२६
प्रत्याख्यान के		
भंग छब्बीस सान्निपातिक	४७४ २ ८१	अनु. मृ १२६, ठा. ६३ ३ सू. ६३७, कर्म भा. ४ गा. ६४-६६
भाव के		
भंग सात (सप्तभंगी)	५६३ २ ४३५	सूय. ध्रु २ अ ६ गा. १०, आगम, सप्त, रत्ना परि. ४, स्या. का. २३

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
भगवती मूत्र के इकतालीस ७७६ ४ १३८		
शतकों का विषय वर्णन		
१ भगवान् पार्श्वनाथ के ५६५ ३ ३		ठा ८८ ३ सू ६१७ टी., सम ८
दस गणधर		टी श्रावद नि गा २६८-६८, ग.
		गद्दा १११, प्रवद्दा १४ गा ३३०
भगवान् मल्लिनाथ आदि ७५३ २ २७७		ठा. ७३ ३ सू ४६०
एकसाथ दीक्षालेनेवाले सात		
भगवान् महावीर की चर्या ६२२ ६ १६६		श्रावा० ध्रु १ अ ६३. १
विषयक गाथाएं तेईस		
भगवान् महावीर की तप- ८७८ ७ ३८०		श्रावा० ध्रु १ अ ६३ ४
श्रय्या विषयक सत्रह गाथाएं		
भगवान् महावीर की वसति ८७४ ५ १८२		श्रावा० ध्रु. १ अ ६३ ०
विषयक सोलह गाथाएं		
भगवान् महावीर के ११ नाम ७७० ४ ३		जैन विद्या बोलवूम १ न० १
भगवान् महावीर के दस स्वप्न ६५७ ३ २२४		भ. ग १६३. ६ सू ४७६, ठा. १०
		उ ३ सू ७४०
भगवान् महावीर के नौ गण ६२५ ३ १७१		ठा. ६३. ३ सू ६८०
भगवान् महावीर के पाँच ५६६ ३ ३		ठा ८३ ३ सू १२१
आठ राजा दीक्षित हुए		
भ० महावीर के शासन मंत्री ६२४ ३ १६३		ठा ६३. ३ सू ६८१
कुसंगोत्र वर्णनेवाले नौ आत्मा		
भगवान् महावीर से उपदिष्ट ३५०-१ ३६४-		ठा ६३. १ सू ३८६, ग. प्रशि
एवं अनुमन पाँच पाँच बोल ३५७ ३७२		३-नी ४६ टी ५ १२७, प्रग,
		ठा ६६ गा ४४४

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
भगवान् महावीरसे उपदिष्ट ३५६	१	३७३	ठा ४८ १ सू ३६६
एवं अनुमत पाँच स्थान			
भक्त कथा चार	१५०	१	१०८ ठा ४३ २ सू २८२
भक्त कथा से होने वाली हानि	१५०	१	१०६ ठा. ४३ २ सू २८२ टी
भक्त प्रत्याख्यान मरण	८७६	५	३८४ सम १७, प्रव द्वा १५७ गा. १००७
भक्त परिणाम पड़ना	६८६	३	३५३ द० प०
भद्र कर्म बंधने के दो स्थान	७६३	३	४४४ ठा १०३ ३ सू ७६८
भद्र नन्दी कुमार की कथा	६१०	६	५८ वि० अ १२
भद्र नन्दी कुमार की कथा	६१०	६	६० वि० अ १८
भद्रोत्तर प्रतिमा तप की	६८६	३	३४७ अत० व ८
विधि और उसका यत्र			
१ भयदान	७६८	३	४५१ ठा १०३ ३ सू ७४६
भय निःसृत असत्य	७००	३	३७२ ठा १० मू ७४१, पत्र १११ सू १६६, ध अ वि ३ श्लो ४१७ १२२
भय संज्ञा	१४२	१	१०५ ठा ४३ ४ मू ३६६, प्रव द्वा १४५
भय संज्ञा	७१२	३	३८६ ठा १० मू ७४२, अ श ७८८
भय संज्ञा चार कारणों से उत्पन्न होती है	१४४	१	१०६ ठा ४८ ४ स ३६६, प्रव द्वा १४५ गा ६२३
भय स्थान सात	५३३	२	२६८ ठा ७३ २ सू ४८, नम ७
भग्न क्षेत्र की आगायी उत्स- ६३०	६	१६६	नम १६८, प्रव द्वा ७ गा
पिंणी के चौबीस तीर्थंकर			२६३-२६६
भरत क्षेत्र की गत उत्स- ६२७	६	१७६	प्रव द्वा ७ गा २८८-२९०
पिंणी के चौबीस तीर्थंकर			

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
भरतक्षेत्र के वर्तमान अवस-६२६	६	१७७	मम १६७, भाव द गा २०६-२६०,	
पिंणी के चौबीस तीर्थद्वार			भाव म गा २३१-३८६, स रा.,	
			प्रव द्वा ७ से ४५,	
भरतचक्रवर्ती अनित्य भावना ८१२	४	३७८	त्रि प. पर्व १ स ६	
भरतशिला की कथा औत्प-६४६	६	२४३	नं मृ २७ गा. ६२ टी.	
चित्ती बुद्धि पर				
भव तेरह भ० ऋषभदेव के ८२०	४	४०६	त्रि प. पर्व १	
भवनपति देवों के दस	७३१-	३	४१७-	
दस अधिपति	७४०	३	४२०	
			{ भ. रा ३ उ ८ सू १६६	
भवनवासी (भवनपति)	७३०	३	४१६	
देव दस			पञ्च प. १ सू ३८, अ १० उ ३ सू.	
			७३६, भ. रा. उ ७ सू. ११५,	
			जी प्रति. ३ उ १ सू ११५	
भवपुद्गल परावर्तन	६१८	३	१४०	
			कर्म भा. ५ गा ८६-८८	
भवप्रत्यय अवधि ज्ञान	१३	१	११	
			अ २ उ १ सू ७१	
भव सिद्धिक	८	१	७	
			अ २ उ २ सू ७६, भा प्र गा ६६	
भव स्थिति	३१	१	२२	
			अ २ उ ३ सू ८५	
भव्य अर्भव्य स्त्री पुरुषों में ६५४	६	२६८	प्रा द्वा २०० गा. १५०४ सं	
कितनी लब्धियां हो सकती हैं?			१५०८	
भव्य जीवों के मिद्ध हो जाने ६१८	६	१३६	भ. रा. १ उ २ सू ८४३	
पर क्या लोक भव्यों से शून्य				
हो जायगा?				
भव्यत्व मार्गणा और	८४६	५	५८	
उसके भेद			कर्म भा. ६ गा. १३	

विषय	वोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
१ भव्य द्रव्य देव	४२२	१ ४४५	ठा ५सू ४०१, भ श १२३ ६
२ भांगिक वस्त्र	३७४	१ ३८६	ठा ५उ ३ सू ४४६
भांगे सोलह आश्रव आदिके ८६८	५	१६८	भ श १६उ. ४ सू ६५४
भाढी कम्मे कर्मादान	८६०	५ १४५	उपा अ १सू ७, भ श ८उ ५सू. ३३०, आव ह अ ६पृ ८२८
भाण्ड (पण्यवस्तु) चार	२६४	१ २४६	ज्ञा अ. ८ सू ६६
भार प्रत्यवरोहणता विनय २२८	१	२१८	दशा ६. ४
के चार प्रकार			
भाव	२१०	१ १८६	न्यायप्र अध्या ७, रत्ना. परि ४
भाव इन्द्र के तीन भेद	६२	१ ६६	ठा. ३उ १सू ११६
भाव ऊनोदरी	२१	१ १६	भ श २५उ ७सू ८०२
भाव कर्म	७६०	३ ४४३	आचा अ २उ १ नि गा. १८४
भाव छः	४७४	२ ८१	अनु सू १२६, ठा ६उ ३सू ५३७, कर्म भा. ४ गा. ६४-६६
भाव दुःख शय्या के ४ प्रकार २५५	१	२४०	ठा. ४उ ३ सू ३२५
भाव देव	४२२	१ ४४६	ठा ५सू ४०१, भ श. १२३ ६
भावना अशुभ पाँच	४०१	१ ४२८	प्रव द्वा. ७३ गा ६४१, उत्त अ. ३६
भावना चार	१४१	१ १०३	उत्त अ ३६ गा २६१-२६४
भावना चार	२४६	१ २२४	भावना, क भा २श्लो ३५-४५, च.
भावना चार	४६७	२ १८८	
भावना छः समकित फी ४५४	२ ५८		प्रव द्वा १४८ गा ६४०, घ. अधि २श्लो २२ टी. पृ ४६
भावना धर्म	१६६	१ १५६	घ. अधि ३श्लो. ४७ टी पृ १३१

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
भावना २५ पाँच महाव्रतकी ६३८ ६ २१७		आचा. अ २ चू ३ अ २४ सु १७६, सम २४, आच ह अ. ४५.
भावना पचीस पाँच महा- ३१७-१ ३२४-		६४८, पच द्वा ७२ गा ६ ३६-४०.
व्रतों की ३२१ ३२६		ध अवि ३६ लो ४४ टी पृ. १२६
भावना बारह ८१२ ४ ३५५		शा भा १, २, भावना ज्ञान प्र २, प्रव द्वा ६७ गा ४७०-६७३ तत्त्वार्थ. अध्या ६ सु ७
भाव निक्षेप २०६ १ १८८		अनुसु १४०, न्याय. प्र. अध्या ६
भाव पाँच जीव के ३८७ १ ४०७		अनुसु १२६, पच द्वा २२१ गा. १२६०-६८, कर्म भा. ४ गा. ६४-६८
भाव पुद्गल परावर्तनमृक्षम ६१८ ३ १३६		कर्म. भा ४ गा ८६-८८
और बादर का स्वरूप		
भाव प्रतिक्रमण ३२६ १ ३३६		डा ४३ ३ सु. ४६७, आच ह अ. ४ गा १२४०-१२४१ पृ ३६८
भाव प्रत्यनीक ४४५ २ ५१		भ न. ८ उ८ सु ३३६
भाव प्रत्युपेक्षणा ४५६ २ ६०		डा ६३ ३ सु २०२
भाव प्रमाणनामके चार भेद ७१६ ३ ४०१		अनु स १३०
भाव प्रमाणकी व्याख्या, भेद १६८ १ १५७		पा प. १ सु १ टी.
भाव लेश्या ४७१ २ ७२		भ न. १३ २, उा अ ३ ०, पच प १ ७३ ४, कर्म भा ४ गा १३२ गा पृ ३६, आच ह अ. ४ पृ ६४६, प्रत्युपेक्ष ३० गा, २८८-३८२
भाव शुद्ध प्रत्याख्यान ३२८ १ ३३७		डा ४३ ३ सु ४६६, आच ह अ ६ पृ ८८७
भाव श्रावणके मन्त्रदत्तगुण ८८३ ५ ३६२		ध मणि. ३५ लो. २२ टी पृ. ४८
भाव सन्ध ६६८ ३ ३७०		डा १०५ २१, पच प. ११ सु. १६४, अ अवि ३५ लो ४१ पृ. १२१

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
भाव सम्यक्त्व	१०	१ ८	प्रव. द्वा. १४६ गा ६४२ टी.
१ भावानुपूर्वो	७१७	३ ३६१	अनु सू ७१
२ भाविताभावितानुयोग	७१८	३ ३६४	ठा १०८.३ सू ७२७
भावेन्द्रिय	२३	१ १७	पत्र प १६, तत्त्वार्थ ग्रन्था २ सू १६
भावेन्द्रिय के दो भेद	२५	१ १७	तत्त्वार्थ ग्रन्था २ सू १८
भाषा के चार भेद	२६६	१ २४८	पत्र प ११ सू १६१
भाषा के बारह भेद	७७६	४ २३८	प्रज्ञा सवस्त्रार २ सू २४ टी
भाषा पर्याप्ति	४७२	२ ७८	पत्र प १ सू १० टी., भ.श. ३३. १ सू १३०, प्रव. द्वा २३२ गा १३१७, कर्म भा. १ गा ४६
भाषार्थ	७८५	४ २६६	वृत्त १ नि. गा ३२६२
भाषा समिति	३२३	१ ३३१	सम ५, ठा ५ सू ४४७, उत्त अ २४, ध अवि ३ जलो. ४७ टी पृ १३०
भिक्षु पद्धिमा वारह	७६५	४ २८५	सम १२, भ.श. २३ १ टी, दशा द ७
भिक्षा की नौ कोटियाँ	६३१	३ १७६	ठा ६३ ३ सू ६८१, आचा अ. २ उ. ५ सू ८८ टी
भिक्षाचर्या	४७६	२ ८६	उत्त अ ३० गा ८, ठा ६ सू ५११, उव सू १६, प्रव. द्वा ६ गा. २७०
भिक्षाचर्या के तीस भेद	६३३	३ १८६	} उव सू १६, भ.श. २५ उ ७ सू ८०२
भिक्षाचर्या के तीस भेद	६५६	६ ३१०	
भिक्षुक ४ मञ्ज की उपमा से	४११	१ ४३७	ठा ५ उ ३ सू ४५३
भिक्षुक का स्वरूप बताने	८६२	५ १५२	उत्त अ १६
वाली सोलह गाथाएं			

१ श्रौतारिक परिणाम आदि भागों का क्रम, परिपाटी ।

२ द्रव्यानुयोग का एक भेद

विषय	शोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
भिक्षु की कथा औत्पत्तिकी ६४६	६	२७६	नं.सू. २७गा ६७टी.	
बुद्धि पर				
भिक्षु प्रतिमा (पडिमा)	६८६	३	३४३ अत०व. ८अ. ५	
१ भिन्न पिण्डपातिक	३५५	१	३७० डा १३१ सू ३६६	
२ भुज परिसर्प	४०६	१	४३६ पप्र.प. १सू ३५, उत्त.प्र. ३६	
३ भूत (जीव)	१३०	१	६८ डा ५सू ४३०, अ.ग. २३. १सू. ८८	
भूतग्राम (जीवों) के १४ भेद	८२५	५	१७ सम. १४, घात द.अ. ४ पृ ६४६	
भूति कर्म	४०४	१	४३१ उत्त.प्र. ३६गा २६२, प्रव.द्वा. ७३	
भेद तेईस क्षेत्र परिमाण के	६२५	६	१७३ अमसू १३३, प्रव.द्वा २५४	
भेद परिणाम	७५०	३	४३३ डा १०८. ३सू ७१३, पप्र.प. १३	
भेद प्रभेद आठ कर्मों के	५६०	३	४३ पप्र.प. २३, उत्त.प्र. ३३, कर्म. भा. १, न.वार्थ मध्या ८, अ.ग. ८ उ.६, अ.ग. १८ ६, ६, विज्ञे.गा १६०६-४ इत्या १६४२-४५	
भेद ब्यालीस आश्रव के	६६२	७	१४६ नव गा. १६	
भोग प्रतिघात	४१६	१	४४० डा. ६३ १ सू ४०६	
भोग सुख	७६६	३	४५४ डा. १०३ ३ सू ७१७	
भोगान्तराय	३८८	१	४११ कर्म. भा १गा ६२, पप्र.प. २३	
भोजन परिणामद्वयः प्रकारका	४८६	२	६६ डा ६३. ३सू ६३३	
भ्रमर वृत्ति पर चार गाथाएं	६६४	७	१८५	

म

मंगल रूप लोकोत्तमतया	१२६क१	६४	आश्र.प्र. ४ पृ ६६६
शरण रूप चार हैं			

- १ पूरी वस्तु न लेकर टुकड़े की हुई वस्तु को ही लेने वाला अभिमहवागी नाथ।
- २ भुजामों से चलने वाले जीव, चूरे आदि।
- ३ भूत, भविष्यत और वर्तमान तीनों कालों में विद्यमान होने से जीव भूत कहलाता है।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
मक्खिय दोष (ग्रहणै- पणा का एक दोष)	६६३	३	२४२	प्रव द्वा ६७ गा १६८ पृ १४८, पि नि गा ५२०, व अघि ३२लो. २२टी पृ ४१, पचा १३ गा. २६
मच्छ की उपमा से प्रयुक्त	४११	१	४३७	ठा. ५३ ३ सू ४५३
मच्छ के पाँच प्रकार	४१०	१	४३६	ठा ५३. ३ सू ४५३
मणि का दृष्टान्त पारिणा- मिकी बुद्धि पर	६१५	६	११३	नं सू २७ गा ७४, आव. ह गा ६५१
मण्डितस्यामीगणधरकाबंध	७७५	४	४४	त्रिशे० गा १८०-२-१८६३
मोक्षविषयक शंका समाधान				
मतिज्ञान	१५	१	१२	पत्र. प. २६ सू ३१२, ठा २ सू ७१
मतिज्ञान	३७५	१	३६०	ठा ५३ ३ सू ४६३, नं सू. १, कर्म भा १ गा ४ व्याख्या
मतिज्ञान के अठाईस भेद	६५०	६	२८३	सम. २८, कर्म भा. १ गा ४-५
मतिज्ञान के चार भेद	२००	१	१५८	ठा ४३ ४ सू ३६४
मतिज्ञानावरणीय	३७८	१	३६४	कर्म. भा १ गा ६, ठा ५ सू ४६४
१ मतिभंग दोष	७२२	३	४०६	ठा १०३. ३ सू ७४३
मति सम्पदा	५७४	३	१४	दगा द ४, ठा ८३ सू. ६०१
मत्यज्ञान साकारोपयोग	७८६	४	२६८	पत्र० प २६ सू. ३१२
मद दस	७०३	३	३७४	ठा १० सू. ७१०, ठा ८ सू ६०६
मद्य प्रमाद	२६१	१	२७१	ठा ६३ ३ सू ५०२, ध अघि २ श्लो. ३६टी पृ ८१, पंचा १ गा २३टी, अष्ट १६ श्लो १टी.
मधुसिक्थ की कथा	६४६	६	२७२	न सू २७ गा ६४ टी.
श्रौतपत्तिकी बुद्धि पर				

१ वाद या शालग्रार्थ के समय अपनी जानी हुई बात को भी भूल जाना अथवा समय पर उमका याद न आना ।

विषय	घोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
मध्यग्रामकी मूर्धनाएं ५४०	२	२७३	अनुसू. १२७ गा ४०, डा ७ सू ५६३
१ मध्यचारी भिक्षु	४११	१	४३७ डा ४७.३ सू ४६३
मध्यचारी मच्छ	४१०	१	४३७ डा ४७.३ सू ४६३
मध्यम स्वर	५४०	२	२७१ अनुसू. १२७ गा २६, डा ७ सू ५६३
मनःपर्ययज्ञान	३७५	१	३६१ डा ४७.३ सू ४६३, कर्म भा १ गा ४, न० सू १
मनःपर्ययज्ञान का विषय	६८३	७	१०४ विशेष गा ८१२-८१४
क्या है ?			
मनःपर्ययज्ञान की अवधि	६१८	६	१३७ भज १३ अ० ३७ टी, तत्त्वार्थ
ज्ञान से विशेषता			अध्या १ सू २१
मनःपर्ययज्ञान की व्याख्या, भेद	१४	१	१२ डा. २३ १ सू ७१
मनःपर्यय ज्ञान के लिये	६२६	३	१७२ न० सू १७
आवश्यक नौ बातें			
१ मनःपर्ययज्ञान साकारो-	७८६	४	२६८ पग. १०६ सू ३१०
प्रयोग			
मनःपर्ययज्ञानावरणीय	३७८	१	३६४ डा ४७.४ सू ४६३, कर्म भा १ गा ६
मनःपर्यय ज्ञानी जिन	७४	१	५३ डा. ३७.४ सू २२०

॥ श्री जैन सिद्धान्त घोल सप्तम भाग २ पृष्ठ २७३ पर मध्य ग्राम की दो मूर्धनाएं दृष्टी में वे वर्गीत नाम नानक ग्रन्थ में ली हुई हैं। अनुयोगद्वारा तथा आनाम सूत्र में मध्य ग्राम की मूर्धनाओं के नाम दूसरी तरह हैं। उनकी भाषा इस प्रकार है—

उत्तरमंदा रयणी, उत्तरा उत्तरासमा ।

समोक्कंता य सोवीरा, अभिरूवा होइ कत्तमा ॥

अर्थ—उत्तरमंदा, उत्तरा, उत्तरायमा, समानता, सुदीर्घा और अभिरूपा ।

१ तबल घांच घीन के घरो में निवा लेने वाला अभिप्रदारी गा ३ ।

२ लट् द्वीप ओर सुनुगे में गेहुए की पंचेन्द्रिय जीवों के मनोगत भावों को जानना ।

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
मनःपर्यय दर्शन नहीं है फिर ६८३ ७ १०५	न० सु. १८टी, विशेषे गा ८१५		
मनःपर्यय ज्ञानी अनन्त प्रदेशी			
स्कन्ध जानता और देखता			
है यह कैसे कहा ?			
मनःपर्याप्ति	४७२ २ ७८	पत्र. प १ सू १२टी, भ. श. ३३ १ सू १३०, प्रव. द्वा २३२, कर्म भा १ गा ४६	
मनःपुण्य	६२७ ३ १७२	ठा ६३ ३ सू ६७६	
मनःशिला पृथ्वी	४६५ २ ६६	जी प्रति ३ सू १०१	
मनकेदसदोपसामायिकके ७६४ ३ ४४७	शिक्षा०		
मन विनय	४६८ २ २३०	उव सू २०, भ. श. २५३. ७ सू. ८०२, ठा ७३ ३ सू ५८५, ध. अधि ३ श्लो ५४टी पृ. १४१	
मन विनय (अप्रशस्त) के ७६१ ४ २७५	उव सू २०		
चारह भेद			
मनविनय (अप्रशस्त) सात ५०० २ २३१	भ. श. २५३. ७ सू ८०२, ठा ७३ ३ सू ५८५, ध. अधि ३ श्लो ५४टी पृ. १४१		
मन विनय (प्रशस्त) सात ४६६ २ २३१			
मनुष्य आयुबन्धके ४ कारण १३४ १ १००	ठा ४३ ४ सू ३७३		
मनुष्य के छः प्रकार	४३७ २ ४१	ठा ६३ ३ सू ४६०	
मनुष्य के तीन भेद	७१ १ ५१	ठा ३३ १ सू १३०, पत्र. प १ सू ३७, जी. प्रति ३ सू १०७	
मनुष्य के तीन सौ तीन भेद ६३३ ३ १७६	पत्र. प. १, उत्त. अ. ३६, जी. प्रति ३		
मनुष्य क्षेत्र छः	४३६ २ ४१	य. ६३ ३ सू ४६०	
मनुष्य भव आदि ११ दुर्लभ ७७२ ४ १७	आव. ह. नि. गा ८३ १ पृ. ३४१		
मनुष्य भव आदि ४ अद्भुतों की ६०६ ६ २६	उत्त. अ. ३		
दुर्लभता वताने वाली बीस गाथा			

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
मनुष्य भव की दुर्लभता के ६८० दस दृष्टान्त	३	२७१	उत्त. अ. ३ नि. गा १६०, भाव ह. नि. गा ८३२ पृ ३४०
मनुष्य संसृद्धि के चौदह उत्पत्ति स्थान	८२६	५ १८	पञ्च. प. १ सू. ३७, अनुसू. १३३ पृ १६६
मनुष्य सम्बन्धी उपसर्ग चार	२४१	१ २१६	ठा. ४ सू. ३६१, मूय. अ. ३ उ. १ टी
मनो गुप्ति	१२८ ख	१ ६२	उत्त. अ. २४, ठा. ३ सू. २१६
मनो योग	६५	१ ६८	ठा. ३ सू. १२४, तत्त्वार्थ. सध्या. ६
मनोरथ तीन श्रावक के	८८	१ ६४	ठा. ३ उ. ४ सू. २१०
मनोरथ तीन साधु के	८६	१ ६४	ठा. ३ उ. ४ सू. २१०
मन्त्र दोष	८६६	५ १६५	प्राज्ञा ६७ गा ४६८, ध. अधि. ३ ग्लो २२ पृ ४०, पि. नि. गा ८०६, पि. वि. गा ६६, पना. १३ गा १६
मन्दा अवस्था	६७८	३ २६७	ठा. १० उ. ३ सू. ७७२
मयूराण्ड और नार्थवाह की कथासम्यक्त्वमें शंका के लिए	८२१	४ ४५३	नवपद. गा १८ टी. मय्यस्त्या-दिता. र. शा. अ. ३
मरण के दो भेद	५३	१ ३१	उत्त. अ. १ गा २
मरण (बाल) के बारह भेद	७६८	४ २६८	भ. म. २ उ. १ सू. ६१
मरण के सत्रह प्रकार	८७६	५ ३८२	गम. १७, प्राज्ञा १४७ गा. १००६
मरण भय	५३३	२ २६८	ठा. ७ उ. ३ सू. ४४९, गम. ७
मरण समाधि पडण्णा	६८६	३ ३५७	द. १०
मर्यादा छत्वीस बोलों की	६४३	६ २२५	उपा. अ. १ सू. १, भा. प्रति. ग. अधि. ग्लो. ३ टी. पृ ८०
मल्लिनाथ आदि एक साथ दर्शना लेने वाले मान	५४३	२ २७७	ठा. ७ उ. ३ सू. ४६४
मल्लिनाथ भगवान् और उन के शिष्यों का पूर्व भव	५४३	२ २७७	ठा. ७ उ. ३ सू. ४६४

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
मल्लिनाथ भगवान् की कथा	६००	५ ४४४	ज्ञा० अ० ८
मल्लिनाथ भगवान् के छः	८१२	४ ३८०	ज्ञा० अ० ८
मित्रराजा (संसार भावना)			
मल्लिनाथ भ० के साथ दीक्षा	५४३	२ २७८	ठा ७३ ३ सू ५६४
लेनेवाले छः राजाओं की कथा			
मसि कर्म	७२	१ ५२	जी प्रति ३३ १ सू १११, तन्दुल सू १४-१५ पृ ४०
महति'वीर (महावीर)	७७०	४ ६	जैन विद्या बोल्युम ११ १
महत्तरागार	५१६	२ २४७	आव ह अ ६ पृ ८५ ३ टी, प्रव. द्वा ४ गा २०४
महर्द्धिक देव दस	७४३	३ ४२१	ठा १०३, ३ सू ७६४
महाकाल निधि	६५४	३ २२१	ठा ६३ ३ सू ६७३
महाकाली रानी	६८६	३ ३४१	अत० व ८ अ ३
महा कृष्णा रानी	६८६	३ ३४४	अत० व ८ अ ६
महाग्रह आठ	६०४	३ १२१	ठा ८३ ३ सू ६१२
महा चन्द्र कुमार की कथा	६१०	६ ६०	वि० अ० १६
महानदियाँ चौदह	५३८-५३६	२ २७०	ठा ७३, ३ सू ५६५
महानदियाँ चौदह	८४४	५ ४५	सम १४
महानदियाँ दस मेरु से उत्तर में	७५६	३ ४४१	ठा १०३ ३ सू ७१७
महानदियाँ दस मेरु से दक्षिण में	७५८	३ ४४०	ठा १०३ ३ सू ७१७
महानदियाँ सात सात	५३८-५३६	२ २७०	ठा ७३ ३ सू ५६५
महानदियों को साधु द्वारा	३३५	१ ३४६	ठा ५३ २ सू ४१२
एक मास में दो, तीन बार			
पार करने के पाँच कारण			
महानिधि नौ चक्रवर्ती की	६५४	३ २२०	ठा. ६३, ३ सू ६७३

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
महानिमित्त आठ	६०५	३	१२१	ठा ८८, ६०८, प्रवृत्ता २५७
महानिर्ग्रन्थीय अध्ययन	८५४	५	१३०	उत्त अ २० गा. ३८-४२
की पन्द्रह गाथाएं				
महा निर्जरा और महापर्य-३६०, १	३७४			ठा ४३ १ मृ. ३६७
वर्मान के पाँच पाँच बोल	३६१			
महा पञ्चकवाण पड़णा	६८६	३	३५३	६०९०
महा पञ्चनिधि	६५४	३	२२१	ठा ६३ ३ मृ. ६७३
महाप्रातिहार्य अरिहन्त के ७८२	४	२६०		सम ३४, स ग द्वा. ६७
महाबलकुमार की कथा	६१०	६	५६	वि० अ. १७
महामोहनीय कर्म के तीस ६६०	६	३१०		दगा द ६, सम ३०, उत्त. अ ३१
स्थान				गा १८०, भाव द ८, ३८ ६६०
महा युग्म सोलह	८७१	५	१७२	अ ग. ३४३, १ स ८४४
महाविदेह क्षेत्र के बत्तीस ६७१	७	४३		अ ग. ४५५ ६३-१००, लोक.
विजय				भा २ स १७
महावीर	७७०	४	४	अ ग. ४५५ ६३-१००, लोक.
महावीर भगवान् की चर्या ६२२	६	१६६		आना अ १ स ६३१
विषयक तेईस गाथाएं				
महावीर भगवान् की तप-	८७८	५	३८०	आना अ १ स ६३१
श्रगी विषयक सत्रह गाथाएं				
महावीर भगवान् की वसति ८७४	५	१८२		आना अ १ स ६३१
विषयक सोलह गाथाएं				
महावीर भगवान् के ग्या- ७७५	४	२३		विजे गा. १४४२ २०२१, सम.
रुद्र गणधर				११, आना द ८, ३४ ६३१
				आना अ १ स ६३१

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
महावीरभगवान् के ११ नाम ७७०	४	३	जैनविद्या बोल्युम १ नं १
महावीरभगवान् के दस	६५७	३ २२४	भश १६८.६सू ४७६, ठा १०
स्वप्न और उनका फल			उ ३सू ७६०
महावीरभगवान् के नौ गण ६२५	३	१७१	ठा ६३ ३सू ६८०
महावीरभगवान् के पास	५६६	३ ३	ठा ८३.३सू ६२१
दीक्षित आठ राजा			
महावीरभ० के शासन में तीर्थ-६२४	३	१६३	ठा ६३ ३सू ६६१
झुरगोत्र बाँधने वाले नौ आत्मा			
महावीर स्तुति अध्ययन की ६५५	६	२६६	सूय० अ ६
उन तीस गाथाएं			
महाव्रत की व्याख्या और	३१६	१ ३२१	दश अ ४, ठा ४३ १सू. ३८६,
उसके भेद			प्रवद्धा ६६गा ६४ ३, घ. अथि ३ श्लो. ३६-४४ पृ १२०
महाव्रत चार	१८०	१ १३५	ठा ४३ १ सू २६६
महाव्रत पाँच की पचीस	३१७-	१ ३२४-	{ आचाथु २ चू ३अ २४सू १७६, आवह. अ. ४पृ ६६८, सम २४, प्रव द्वा ७२ गा. ६३६-६४०, घ अथि ३ श्लो. ४४टी पृ १२४
भावनाएं	३२१	१ ३२६	
महाव्रत पाँच की पचीस	६३८	६ २१७	
भावनाएं			
महाव्रतों की पचीस भावनाएं ४६७	२	१८४	
महाशतक श्रावक	६८५	३ ३२७	उपा० अ. ८
महाशुक्रदेव लोक का वर्णन ८०८	४	३२२	पग प २सू ४३
महासर्वतोभद्रतपयंत्र सहित ६८६	३	३४५	अंत० व. ८अ. ७
महा सामान्य	५६	१ ४१	रत्ना परि ७ सू १४
महासिंहनिष्क्रीडिततप यंत्र ६८३	३	३४१	अत० व = अ. ४

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
महासेन कृष्णा रानी	६८६ ३ ३४६	भेत० व. ८ अ. १०
महास्वप्न चौदह	८३० ५ २२	भ.स. १६३. ६ सू ४७८, शा. भ. ८ सू. ६५, कल्पसू ४
महेश्वरदत्तकीकथासम्यक्त्व	८२१ ४ ४५६	नवपद. गा १८टी सम्यक्त्वा-
के विचिकित्सा दोषकेलिण		धिकार
मांगलिक पदार्थ आठ	५६४ ३ ३	उव सू ४टी, रा० सू. १४
मांडला (ग्रासैपणा) के पाँच	३३० १ ३३६	ध अथि ३७लो. २३ टी पृ ५५, पि. नि. गा ६३५-६८, उत्त भ २४
१ माणवक निधि	६५४ ३ २२२	ठा ६३. ३ सू ६७१
माता के तीन अङ्ग	१२३ १ ८७	ठा ३३ ४ सू २०६
मातापितास्वामीधर्माचार्य	१२४ १ ८७	ठा. ३३ १ सू १३५
का प्रत्युपकार दुःशक्य है		
मातृकात्तर ४६ ब्राह्मीलिपि के	६६६ ७ २६४	सम. ४६
२ मातृकानुयोग	७१० ३ ३६२	ठा १०३. ३ सू ७२७
माध्यस्थ भावना	२४६ १ २२८	भाषा (परिशिष्ट), क. भा. १ ७लो. ५१-५५, न०
मान के चार भेद और	१६० १ १२१	पञ्चप. १ सू. १८८, ठा ४३ २ सू. २६३, कर्म भा. १ गा. १६
उनकी उपमाएं		
मान के दस कारण	७०३ ३ ३७४	ठा. १० सू. ७१०, ठा ८ सू ६०६
मान के बारह नाम	७६० ४ २७५	भ.स. १०३ ५ सू ४४६
मान दोष	८६६ ५ १६५	प्रव. दा ६ गा ५६०, ध अथि ३ ७० २२ टी पृ ४०, पि. नि. गा. ६०८, पि नि. गा ४८, पचा. १३ गा. १८

१ चरवर्ती की नौ मातृनिधियों में से एक निधि ।

२ उत्पाद, व्यय और प्रौढ्य इन तीन पदों को मातृमाद कहते हैं । इन्हें बीयादि
पद्यों में पढ़ाना मातृकानुयोग है ।

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
मान निःसृत असत्य	७०० ३ ३७१	ठा. १०३. ३सू ७४१, पन्न ११ सू १६६, ध. अधि ३श्लो. ४१५. १२२
मानसंज्ञा	७१२ ३ ३८७	ठा १०३ ३सू ७६२, भ. न. ७३. ८
माया का फल	५७८ ३ १६	ठा ८३ ३सू ५६७
माया की आलोचना के	५७७ ३ १६	ठा ८३ ३सू ५६७
आठ स्थान		
माया की आलोचना न	५७८ ३ १८	ठा ८३ ३सू ५६७
करने के आठ स्थान		
माया के चार भेद और	१६१ १ १२१	पन्न. १४सू १८८, ठा ४३ २
उनकी उपमाएं		सू २६३, कर्म. भा १गा. २०
माया के चौदह नाम	८३६ ५ ३१	सम ५२
माया के सत्रह नाम	८८० ५ ३८५	सम ५२
माया दोष	८६६ ५ १६५	प्रव द्वा ६७गा ६६७, ध. अधि ३ श्लो २२पृ ४०, पि नि गा ४०८, पि वि. गा. ४८. पंचा १३गा १८
माया निःसृत असत्य	७०० ३ ३७१	ठा. १०३. ७४१, पन्न ११सू १६६, ध. अधि ३श्लो ४१५ १२२
१ मायाप्रत्यया क्रिया	२६३ १ २७८	ठा २३ १सू ६०, ठा ६३ २सू. ४१६, पन्न १२२ सू २८४
मायावी भावना	४०३ १ ४३०	उत्त अ ३६गा. २६३, प्रव द्वा ७३ गा ६४३
माया शून्य	१०४ १ ७३	सम ३, ठा ३३ ३सू १८२, ध. अधि ३श्लो २७ती पृ. ७६
माया संज्ञा	७१२ ३ ३८७	ठा १०३. ३सू ७६२, भ. न. ७३. ८

१ छल एवं माया द्वारा दूसरों को ठगने के व्यापार से लगने वाली क्रिया ।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
मारणान्तिक समुद्घात	५४८	२	२८८	पत्र १, ३६, डा ७३ ३५६=६, द्रव्यलो.म. ३५ १२४, प्रव द्वा. २३१
मार्ग की कथा औत्पत्तिकी	८४६	६	२६७	न० मू २७ गा. ६ ३टी
बुद्धि पर				
मार्गणा चौदह और उसके	६३३	३	१६६	नव गा. ३४, कर्म भा ४ गा ६
अवान्तर भेद				
मार्गणा स्थान के अवान्तर	८४६	५	५७	कर्म भा ४ गा १०-१४
भेद वासठ				
मार्गणा स्थान चौदह	८४६	५	५५	कर्म भा. ४ गा. ६-१४
१ मार्ग दूषण	४०६	१	४३३	उत्त अ ३६ गा २६ ४टी, प्रव द्वा. ७३ गा ६४६
२ मार्गविप्रतिपत्ति	४०६	१	४३३	उत्त अ ३६ गा २६ ४टी, प्रव द्वा. ७३ गा ६४६
मार्दव (मृदुता)	३५०	१	३६५	डा ५ मू ३६६, प्रव द्वा ६६ गा ५४ ४, अ अति ३५ लो ४६ पृ १२७
मार्दव (मृदुता)	६६१	३	२३३	नव. गा २३, मम १०, गा भा. १ प्रव ८० मम भा ३ गा
३ मालापहृत टोप	८६५	५	१६३	प्रव द्वा. ६७ गा. ४६६, अ. मधि. ३ ५ लो. २-३टी पृ ३८, पि नि गा ६३, पि नि गा. ४, पंचा १३ गा. ६
४ माम कल्प	६६३	३	२४०	पत्रा १७ गा ३६-३७

१ ज्ञान, दर्शन, चारित्र्य रूप सत्य धर्म में तथा उसके पालन करने वाले मात्सुर्गों में स्वरूपित रूप का लाना । २ ज्ञान दर्शन चारित्र्य रूप सत्य धर्म को छोड़ कर विपरीत मार्ग की प्रवृत्ति करना । ३ ऐसी जगत् जहाँ आत्मानों ने दाव न पहुँच गये वहाँ पंजापर मरे लेख मा नि मार्गी आदि लगाकर प्रवृत्ति देना । ४ मात्सुर्गों के लिए चतुर्मास या किसी दूसरे कारण के बिना एक मास में अविशेषतः ध्यान पर न रहना मान्य व्यवहार होता है।

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
मास चारह	८०२ ४ ३०३	सूर्य प्रा १० प्रा. प्रा. १६
१ मासिक अनुद्घातिक	३२५ १ ३३३	ठा. ५७ २ सू ४३३
२ मासिक उद्घातिक	३२५ १ ३३४	ठा ५७ २ सू ४३३
माहण का अर्थ क्या थावक ६८३	७ १२६	भ श १७ ७ सू ६२ टी, भ श. २
भी होता है ?		उ ५ सू ११२ टी
माहेन्द्र देवलोक का वर्णन	८०८ ४ ३२१	पत्र प २ सू ५३
मिच्छाकार (मिथ्याकार)	६६४ ३ ३५०	भ ग २५७ ७ सू ८०, गा १०
समाचारी		उ ३ सू ७४६, उत्त अ २६ गा ३, प्रव द्वा १०१ गा ७६०
३ मितवादी	५६१-३ ६२	ठा ८७ ३ सू ६०७
मिथ्यात्व आश्रव	२८६ १ २६८	ठा ५७ २ सू ४१८, सम ५
मिथ्यात्व दस	६६५ ३ ३६४	ठा १०७ ३ सू ७३४
मिथ्यात्व पाँच	२८८ १ २६७	ध अ धि २१ लो २२ टी पृ ३६, कर्म भा ४ गा ५१
मिथ्यात्व प्रतिक्रमण	३२६ १ ३३८	ठा ५७ ३ सू ४६७, आव. ह अ. ४ गा. १२५ ०-१२५ १ पृ ५६४
मिथ्या दर्शन	७७ १ ५५	भ ग ८७ २ सू ३२०, ठा ३ सू १८४
४ मिथ्या दर्शन प्रत्यया	२६३ १ २७८	ठा २७. १ सू. ६०, ठा ५७ २ सू ४१६, पत्र. प २२ सू २८४
क्रिया		
मिथ्या दर्शन शल्य	१०४ १ ७४	सम ३, ठा. ३७ ३ सू. १८२

१ जिम प्रायश्चित्त का भाग न हो गानि गुरु प्रायश्चित्त ।

२ जो प्रायश्चित्त विभाग करके दिया जाय यानि लघु प्रायश्चित्त ।

३ जीवों के अनन्तानन्त होने पर भी उन्हें परिमित बताने वाले अक्रियावादी ।

४ मिथ्या दर्शन अर्थात् तत्त्व में अश्रद्धान या विपरीत श्रद्धान से लगने वाली क्रिया मिथ्या दर्शन प्रत्यया क्रिया कहलाती है ।

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
मिथ्या दृष्टि गुणस्थान	८४७	५	७२	कर्म भा २ गा २ व्याख्या
मिथ्या श्रुत	८२२	५	७	न० मृ. ४२, विशेष. गा. ४ २७-३६
मिश्र गुणस्थान	८४७	५	७३	कर्म भा २ गा. २ व्याख्या
१ मिश्र जात दोष	८६५	५	१६२	प्रवृत्ता ६७ गा ४६४, धर्मणि ३ श्लो २२ टी पृ ३८, पि नि गा ६२, पि वि गा ३, पचा १३ गा ४
मिश्र दर्शन	७७	१	५५	भ श ८८ २, डा ३३, ३ मृ १८४
मिश्र भाषा	२६६	१	२४६	पचा ११ मृ. १६१
मिश्र भाषा के दस प्रकार	६६६	३	३७०	डा १०८ ३ मृ. ७५१, पचा. ११ मृ ५६२, म अवि ३ श्लो ४१ पृ १२२
२ गुंमुही अवस्था	६७८	३	२६८	डा १०८, ३ मृ ७७२
मुख्य (प्रधान)	३८	१	२४	तत्त्वार्थ प्रकाश ४ मृ ३१
मुण्ड दस	६५६	३	२३१	डा १०८ ३ मृ ७४६
मुक्तावली तप यंत्र सहित	६८६	३	३४८	अंग. त ८ अ. २
मुक्ति	३५०	१	३६५	डा ४ मृ ३२६, प्र. डा. ६१ गा. ४४५, म अवि ३ श्लो. २६ पृ १२४
मुक्ति	६६१	३	२३३	नग गा २० मम १०, गा ना १ पर ८ अंतरभाषा
मुनि(मुणि)मादण(ब्राह्मण) ७७०	४	७		निर्दिष्टा शोच्य १ न १
मुद्रिका की कथा रीति पत्तिका ८४६	६	२७२		न मृ. २ गा. १४ टी.
बुद्धि पर				
मुहूर्त	५५१	२	२६३	निबन्ध. २ मृ १८ बालाविरस

१ अपने और मातु के लिए मुक्त माय पराया दुष्टा आचार १०

२ इस माय्याओं में से नई अवस्था, इस आचार को प्राप्त होकर मुक्त जायगी
राज्यो में समस्तान्त होकर अपने जीवन के प्रति नो उद्योग हो जायों दे ।

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
मुष्टि संकेत पञ्चक्खाण	५८६ ३ ४३	आवह अ ६ नि गा १४७८, प्रव.द्वा ४ गा २००
मूढ	७५ १ ५४	ठा.३८४ सू २०३
*मूर्च्छना २१तीनग्रामोंकी	५४० २ २७३	अनुसु १२७, ठा ७सू ६४३, सगीत
मूर्त कर्म का अमूर्त आत्मा	५६० ३ ४७	विशे अमिसूतिगणधरवाद पर प्रभाव
मूल गुण	५५ १ ३२	सय अ १४ नि गा १२६, पचा ६ गा २
मूलगोत्र सात	५४२ २ २७६	ठा. ७ उ ३ सू ५५१
मूल कर्म दोष	८६६ ५ १६६	प्रव द्वा ६७ गा ५६८, ध अवि ३ श्लो २२ टी पृ ४०, पि नि गा ४०६, पि वि गा ६६, पचा १३ गा १६

॥ श्री जैन सिद्धान्त बोलसंग्रह भाग २ पृष्ठ ७३ पर पङ्ज, मध्यम और गान्धार ग्रामों की जो इक्कीस मूर्च्छनाएँ कृपी त्रै वे सगीतशास्त्र नामक ग्रन्थ से ली हुई हैं। अनुयोगद्वारा तथा स्थानाग सूत्र में इन तीनों ग्रामों की मूर्च्छनाओं के नाम दूसरी तरह दिये हैं। उनही गाथा इस प्रकार है —

मन्गी कोरविआ हरिया, रयणी अ सारकंता य ।

छट्टी अ सारसी नाम, सुद्ध सज्जा य सत्तमा ॥३९॥

उत्तरमंदा रयणी, उत्तरा उत्तरासमा ।

समोक्कंता य सोवीरा, अभिरुवा होइ सत्तमा ॥४०॥

नंदी अ खुदिआ पुरिमा य, चच्छथी अ सुद्धगंधारा ।

उत्तरगंधारा वि अ, सा पंचमिआ हवह मुच्छा ॥३१॥

सुट्टुत्तरमायामा सा छट्टी सज्जथो य णायन्वा ।

अह उत्तरायया कोडिमाय, सा सत्तमी मुच्छा ॥४२॥

अर्थ - पङ्ज ग्राम की सात मूर्च्छनाएँ—मार्गी, वोरवी, हरिता, रत्ना, सारकंता, मारसी और सुद्धपङ्ज । मध्यम ग्राम की सात मूर्च्छनाएँ—उत्तरमंदा, रत्ना, उत्तरा, उत्तरासमा, समकंता, सुवीरा और अभिरुवा । गान्धार ग्राम की सात मूर्च्छनाएँ—नंदी, खुदिमा, पुरिमा, सुद्धगान्धारा, उत्तरगान्धारा, सुट्टुत्तरमायामा और उत्तरगयनकोटिमा ।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
१ मूल बीज	४६६	२	६६	दश अ. ४
मूल सूत्र चार	२०४	१	१६३	
मूलातिशयअरिहन्तदेवके	१२६	ख	१	६६ स्या. का १ टी.
मृगचर्या पर नौ गाथाएं	६६४	७	१८६	
मृगापुत्र (अन्यत्वभावना)	१२	४	३८२	उत्त अ १६
मृगापुत्र की कथा	६१०	६	२६	वि अ १
मृगावती	८७५	५	३०३	आव ह नि गा १०४८, दश अ १ नि गा. ७६
मृदुकारुणिकी विकथा	५३२	२	२६७	ठा. ७ उ ३ सू ६६६
मृपावाद चार प्रकार का	२७०	१	२४६	दश अ ४ दूसरे महात्म की टीका
मृपावाद दस प्रकार का	७००	३	३७१	ठा. १० सू ७४१, पत्र प. ११ सू १६४, ध. अभि ३ ग्लो ४१ टी पु १२२
मृपावाद विरमण रूप द्वितीय	३१८	१	३२५	मम २५, माचा पु. २ सू ३ अ. २४ मृ १७६, आव ह अ ४ सू ६६८, प्रव. द्वा ७ अ गा ६३६-४०, ध. अभि ३ अ. ४४ टी पु. १२४
महाव्रत की पाँच भावनाएं				
मृपावाद विरमण व्रत	७६४	४	२८१	आगम.
निश्चय और व्यवहार से				
मेघ की उपमा से ४ दानी पुरुष	१७५	१	१२६	ठा ४३.४ सू ३४६
मेघ की उपमा से पुरुष चार	१७३	१	१२७	ठा ४३.४ सू ३४६
मेघ कुमार की कथा	६००	५	४२६	आम. १
मेघ की उपमा से वक्ता	१७४	क	१२८	ठा ४८.४ सू ३४७
और दाता के चार प्रकार				

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
मेघ के अन्य चार भेद	१७४ख १ १२६	ठा. ४ उ ४ सू. ३४६
मेघ चार	१७२ १ १२७	ठा. ४ उ ४ सू. ३४६
मेतार्यस्वामी का परलोक	७७५ ४ ५६	विशे. गा. १६४६-१६७१
के विषयमें शंका समाधान		
मेरुपर्वत के चार वन	२७३ १ २५१	ठा. ४ उ. २ सू. ३०२
मेरुपर्वत के सोलह नाम	७० ५ १७१	सम. १६, ज. व. च. ४ सू. १०६
मैत्री, प्रमोद, करुणा और	४६७ २ १८८	
माध्यस्थ्य भावनाएं		
मैत्री भावना	२४६ १ २२४	भावना, च, क. भा. २ श्लो. ३५-४२
मैथुन विरमण रूप चतुर्थ	३२० १ ३२७	सम. २५, आचा श्रु. २ चृ. ३ अ. २४
महाव्रत की पाँच भावनाएं		सू. १७६, प्रव. द्वा. ७२ गा. ६३६, आव. ह. अ. ४ पृ. ६५८, ध. अ. वि. ३ श्लो. ४५ टी. पृ. १२५
मैथुन विरमण व्रत निश्चय	७६४ ४ २८२	आगम
और व्यवहार से		
मैथुन संज्ञा	१४२ १ १०५	ठा. ४ सू. ३५६, प्रव. द्वा. १४५
मैथुन सज्ञा	७१२ ३ ३८७	ठा. १० उ. ३ सू. ७५२, भ. श. ७ उ. ८
मैथुन संज्ञा चार कारणों से	१४५ १ १०६	ठा. ८ उ. ४ सू. ३५६, प्रव. द्वा. १४५
उत्पन्न होती है		गा. ६२३
मोक्ष	४६७ २ २०६	
मोक्ष के पन्द्रह अंग	८५० ५ १२१	पंच व. गा. १५६-१६३
मोक्षगामी आत्मा के	१४ स्वम. ८२६ ५ २०	भ. ग. १६ उ. ६ सू. ५८०
मोक्षतत्त्व कानों द्वारा	से वर्णन ६३३ ३ १६८	न. ग. ३२-३३
मोक्ष प्राप्ति के काल	स्वभाव २७६ १ २५७	आगम, कारण, सम्मति भा. ५
आदि पाँच कारण		काण्ड उगा ४३

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
मोक्षमार्ग के चार भेद	१६५	१	१५३	उत्त अ २८ गा २
मोक्षमार्ग के तीन भेद	७६	१	५७	उत्त अ २८ गा ३०, तत्त्वार्थ, प्रध्या १
मोक्षमार्ग पर १५ गाथाएं	६६४	७	१६५	
मोक्षविषयक गणधर प्रभास	७७५	४	६०	विशे. गा १६७२-२०२४
स्वामीका शंका समाधान				
मोसली प्रतिलेखना	४४६	२	५४	टा. ६ मृ ४०३, उत्त. अ. २६ गा. २६
मोह (सम्प्लोही भावना)	४०६	१	४३३	उत्त अ. ३६, प्रव द्वा ७३ गा. ६४७
मोह गर्भित वैराग्य	६०	१	६५	क भा २ श्लो. ११८
मोह जनन	४०६	१	४३३	उत्त. अ ३६, प्रव द्वा. ७३ गा. ६४६
मोहनीय कर्म और उसके भेद	५६०	३	६२	कर्म भा १ गा. १३-२२, तत्त्वार्थ प्रध्या ८, पत्र प २ मृ २६३
मोहनीय कर्म की २८ प्रकृति	६५१	६	२८४	कर्म भा १ गा १३-२०, सम २८
मोहनीय कर्म की व्याख्या, भेद २८	१	१६		टा. २ मृ १०६, कर्म भा. १ गा. १३
मोहनीय कर्म के ५३ नाम	१००८	७	२७६	तम ४२, भज १०८ मृ ४६०
मोहनीय कर्म बाँधने के छह कारण	४४२	२	४४	भज. ८ व ६ मृ ४११
मोहनीय कर्म बाँधने के प्रकार	५६०	३	६३	भज ८ मृ ३४१, पत्र प. २३ मृ २६२
और उसका अनुभाव				
मोहनीय कर्म वेदता हुआ जीव	६८३	७	१२०	अमृ ३८८
क्या मोहनीय कर्म बाँधता है				
या वेदनीय कर्म बाँधता है?				
मौखिक	४४४	२	४८	अ ६३ मृ ४२६, मृ (जी.) ३६
१ गोन चरक	३५३	१	३६८	टा ४३.१ मृ. ३६६
मौख्य पुत्र गणधर का देवों के	७७५	४	५०	विशे गा १८६४ १८८४
विषय में शंका समाधान				

विषय	घोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
योग का चौथा अङ्ग (प्राणा-५५६ २ ३०२ यो प्रमा ५, रा यो, हृद, पी प, याम)				गीता अध्याय ६
योग का साधन करने के ५५६ २ ३१४				गीता अध्याय ६
लिये नियमित आहार विहारादि				
योग की व्याख्या और भेद ६५ १ ६८				ठा. ३ मू. १२४, तत्त्वार्थ अध्या १
योग के कुछ आसन ५५६ २ ३१०				पी० प०
योग के पन्द्रह भेद ८५५ ५ १३८				पत्र प १६ मू २०२, भ श. २४३, १
योग दर्शन ४६७ २ १४६				
योग दोष ८६६ ५ १६५				प्रव. द्वा. ६७ गा ५६८, ध. अधि ३
				ज्यो २२ मू. ४०, पि. नि गा. ४०६, पि. नि गा. ४६, पला. १३ गा १६
योग नारकियों में ५६० २ ३३७				जी० प्रति ३ मू ८८
योग परिणाम ७४६ ३ ४२७				टा १०३ ३ मू ७१३, पत्र प. १३
योग प्रतिक्रमण ३२६ १ ३३८				टा ४८. ३ मू ४६७, माप. ६ म. ४ गा. १२४०-१२४१ मू ४६४
योग मार्गणा और उसके भेद ८४६ ५ ५८				कर्म भा ४ गा १०
१ योग वाहिता ७६३ ३ ४४५				टा १०३. ३ मू ७४८
योग संग्रह वक्तृस ६६५ ७ १६				उत्तम ३१ गा. २० टी., प्रज्ञ धर्म-द्वारा १ मू २८ टी., मग. ३२, मार. ह म ४ गा. १२७४-७८७ ६६३
योग सत्य ६६८ ३ ३७०				टा. १० मू ७४९, पत्र. प. ११ मू. १६४, ध अधि ज्यो ६ १ टी. मू. १२१
योगांग याठ ६०१ ३ ११४				यो०, रा० यो०
योगात्मा ५६३ ३ ६६				भन १२७ १० मू. ४६७

१ भद्रकर्म साधने का कारण, सामाजिक पदार्थों पर से राग दृष्टा कर भावों का पटल पाउन करना, इसने शुभ कर्मों का बन्ध होता है ।

विषय बोल भाग पृष्ठ

प्रमाण

योनि की व्याख्या और भेद	६७	१	४७	तत्त्वार्थ अध्या २, ठा. ३ सू. १४०
योनि संग्रह आठ	६१०	३	१२७	दश० अ ४, ठा. ८३ सू. ५६५

र

रज्जु की व्याख्या	८४५	५	४६	प्रव द्वा १४३ गा ६१७, तत्त्वार्थ. अध्या १ सू ८ टिप्पणी
१ रज्जु संख्यान	७२१	३	४०४	ठा १०३ ३ सू. ७४७
रति अरति पर छः गाथाएं	६६४	४	१६०	
रत्न चौदह चक्रवर्ती के	८२८	५	२०	सम १४
रत्नावली आदि तप काली	६८६	३	३३५	अत० व ८
आदि रानियों के				
रत्नावली तप यंत्र सहित	६८६	३	३३६	अत० व ८
रस गौरव (गारव)	६८	१	७०	ठा ३३४ सू २१४
रस घात	८४७	५	७८	कर्म भा २ गा २
रसना के संयम पर ७ गाथा	६६४	७	२१२	
रसनेन्द्रिय	३६२	१	४१८	पन्न प १५३ १ सू १६१, ठा ५ उ ३ सू ४४३, जै प्र.
रस नौ काव्य के	६३६	३	२०७	अनु० सू १२६ गा. ६३-८१
रस परिणाम	७५०	३	४३४	ठा १०३ ३ सू ७१३ टी., पन्न प १३ सू १८४-१८५
रस परित्याग	४७६	२	८६	उत्त. अ ३० गा ८, ठा ६ सू ५११, उवमू १६, प्रव द्वा ६ गा २७०
रस परित्याग के नौ भेद	६३३	३	१८६	उवमू १६, भ श २५ उ ७ सू ८२
रस पाँच	५१५	१	४३६	ठा ५ उ १ सू ३६०

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
रस वाणिज्जे कर्मादान	८६०	५ १४५	उपाध १ सू ७, भग. ८३ ५५. ३३०, भाव द म ६५ ८२८
राग द्वैपविषयकदसगाथाएं	६६४-७	२३३	
राग बन्धन	२६	१ १८	ठा २३, ४ सू ६६
राजकथा चार	१५२	१ ११०	ठा. ४३ २ सू २८२
राजकथासे होनेवाली हानि	१५२	१ १११	ठा ४३ २ सू २८२ टी.
१ राजपिण्ड कल्प	६६२	३ २३७	पंचा १७ गा २०-२२
राजमती रहनेमि की कथा	७७१	४ १३	दश० म २ टी.
राजमती सती	८७५	५ २४६	दश. म ३, वि. प. प. ८, उक्त म. २२, राजमती (पुत्र्य श्रीजगदिरानाथ)
राजा की ऋद्धि के तीन भेद	१०१	१ ७१	ठा ३३ ६ सू. ११४
राजा के अन्तःपुरमें माधु के	३३८	१ ३४८	ठा ४३.२ सू ४१५
प्रवेश करनेके पाँच कारण			
राजाभियोग आमार	४५७	२ ५८	उपा म १ गा. ८, भाव. द म. ६५ ८१०, भग. १२, २०० २२५ ४९
२ राजावग्रह	३३४	१ ३४४	भग. १६३ २ सू ६६७, प्रा. ३. ८६ गा ६८१, माना भू. २ सू १ म. ७३ २ म १६२
राजा श्रेणिक के कोप का	७८०	४ २५३	भा. द. गा १३६, बु. कीटिका नि. गा १७२
दृष्टान्न भाव अननुयोग पर			
रात्रिभोजनन्यागपर प्रमाथा	६६४	७ १८४	

१ राजा क गदा में आहमति न लेने के विषय में बताया गया गा. १० भा. १००५
२ अन्तर्गत आदिमता मिलने के बाद के राजाओं में उक्त क्षेत्र में रहते हुए गा. १००
के भा. १० की गा. १० सेना राजागम ३ ।

विषय	बोल, भाग	पृष्ठ	प्रमाण
राम कृष्णारानी	६८६	३ ३४६	अतः ११८ सू०
रायप्पसेणी (राजप्रश्नीय)	७७७	४ २१६	
सूत्र का संक्षिप्त विषयवर्णन			
राशि की व्याख्या और भेद	७८१	१ ४	सम १४६
१ राशि संख्यान	७२१	३ ४०४	ठा १०३३ सू० ७४७
राष्ट्र धर्म	६६२	३ ३६१	ठा. १०३३ सू० ७६०
रुचक प्रदेश आठ	६०७	३ १२५	आचाधु १ अ १३ १ निगा ६२ टी, आगम, भश ८३ सू० ३४७ टी, ठा ८३ सू० ६२४
२ रुचि	१२७	१ ६१	भश १३ सू० ७६१
रुचि दस	६६३	३ ३६२	उत्त. अ २८ गा १६-२७
रूप मद	७०३	३ ३७४	ठा १० सू० ७१०, ठा ८ सू० ६०६
३ रूप सत्य	६६८	३ ३६६	ठा १० सू० ७४१, पन्नप ११ सू० १६५, ध अधि ३ श्लो ४१ नी पृ १२१
रूपस्थ धर्म ध्यान	२२४	१ २०८	ज्ञान प्रक ३६, यो प्रका ६, कभा २ श्लो २०६
रूपातीत धर्म ध्यान	२२४	१ २०६	ज्ञान प्रक ४०, यो प्रका १०, कभा २ श्लो २०६
रूपी	६०	१ ४२	तत्त्वार्थ अध्या ५ सू० ४
रूपी अजीव के ५३० भेद	६३३	३ १८१	पन्नप १ सू० ३, उत्त अ. ३६ गा ४६
रूपी के दो भेद	६१	१ ४२	भश १२३ सू० ४१०

१ धान आदि के ढेर का नाप करवा तोल कर परिमाण जानना ।

२ श्रद्धा पूर्वक ज्ञान दर्शन चारित्र आदि के सेवन की इच्छा ।

३ वास्तविकता न होने पर भी रूप विशेष को धारण करने, से किसी व्यक्ति या वस्तु को उस नाम से पुकारना रूपसत्य है ।

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
रेचक प्राणायाम	५५६	२	३०३	यो.प्रका.१.श्लो.६, रा.यो., ६४.
रेचकादिप्राणायामकाफल	५५६	२	३०४	यो.प्रका.१.श्लो.१०-१२
रेवती	६२४	३	१७०	ठा.६३.३ सू.६६१
रैवत या धैवत स्वर	५४७	२	२७१	अनुसू.१२.७गा.२६, ठा. ७ सू.१६३
रोग उत्पन्न होने के नौ स्थान	६३७	३	२०५	ठा.६३.३ सू.६६७
१ रोचक समकित	८०	१	५८	विशे.गा.२.६७६, द्रव्यलो.स.३ श्लो.६६६, घ.अधि.२२श्लो.२२ टीपू.३६, आ.प्र.गा.४६
रोहक की औत्पत्तिकी	६४६	६	२४३	न.सू.२७ गा.६४
बुद्धि के चौदह दृष्टान्त				
गोहगुप्तिनापकल्लटेनिहवका	५६१	२	३७१	विशे.गा.२.४६१-२४८०
त्रैराशिकमत समाधान सहित				
रौद्रध्यान	२१५	१	१६४	सग.४, प्रव.द्वा.६गा.२७१टी, दत्त.म.१नि.गा.४८ टी.
रौद्रध्यान के चार प्रकार	२१८	१	१६८	ठा.६३.१सू.२४७
रौद्रध्यान के चार लक्षण	२१६	१	२००	ठा.४३.१सू.२४७, न.ज.२६३ ७ सू.८०३, भाष.द.म.४-पा.१ अन.गा.२.६४.४६०
रौद्र रस	६३६	३	२०६	अनुसू.१२.६गा.७०-७१

ल

लक्ष्मणाणिज्जे कर्मादान	८६०	५	१४५	उगा.म.१ध.७, न.ज.८३.१सू. ३३०, भाष.द.म.६४.८२८
लक्षण स्त्री व्याख्या व भेद	६२	१	४३	न्यायटी.प्रका.१

१ जिस समझने के होने पर जीव मनुष्य में मिले वही रसवा है किन्तु मान-
रस नहीं पर पाता वह रसवा समझने है ।

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
लक्षण दस श्रावक के	६८४	३ २६२	भ.श. २३ सू. १०७
१ लक्षण दोष	७२२	३ ४०८	ठा. १०३ सू. ७४३
लक्षण पन्द्रह विनीत के	८५२	५ १२५	उत्त. अ. ११ गा. १०-१३
लक्षणसंवत्सर की व्याख्या	४००	१ ४२७	ठा. ५ उ. ३ सू. ४६०, प्र. द्वा. १४२ गा. ६०१
और उसके पाँच भेद			
लक्षण सत्रह श्रावक के	८८३	५ ३६२	ध. अधि. २२ लो. २२ टी. पृ. ४६
लक्षणाभास की व्याख्या	१२०	१ ८४	न्यायदी. प्रका. १
और भेद			
२ लगण्डशायी	३५६	१ ३७३	ठा. ५ उ. १ सू. ३६६
लघुसर्वतोभद्रतपयंत्रसहित	६८६	३ ३४५	अंत. व. ८ अ. ६
लघुसिंहक्रीड़ातपयंत्रसहित	६८६	३ ३४१	अंत. व. ८ अ. ३
लघुसिंह निष्क्रीडित तप	६८६	३ ३४१	अंत. व. ८ अ. ३
लज्जादान	७६८	३ ४५१	ठा. १०३ सू. ७४६
लब्धि दस	६५८	३ २३०	भ.श. ८३ सू. ३२०
लब्धि पुलाक	३६६	१ ३८०	ठा. ५ उ. ३ सू. ४४६, भ.श. २६ उ. ६ सू. ७५१ टी.
लब्धि प्रत्यय वैक्रिय शरीर	३८६	१ ४१३	पद्म. प. २१ सू. २६७, ठा. ५ उ. १ सू. ३६६, कर्म भा. १ गा. ३३
लब्धि भावेन्द्रिय	२५	१ १७	तत्त्वार्थ अध्या. २ सू. १८
लब्धि मद	७०३	३ ३७४	ठा. १० सू. ७१०, ठा. ८ सू. ६०६
लब्धियाँ अठाईस	६५४	६ २८६	प्र. द्वा. २७० गा. १४६२-१६०८
लयन पुण्य	६२७	३ १७२	ठा. ६ उ. ३ सू. ६७६

१ वाद का एक दोष, इसके अन्यासि, अतिव्याप्ति और असम्भव तीन भेद हैं ।

२ दु सन्धित या बाकी लकड़ी की तरह कुबड़ा होकर मस्तक और कोहनी को जमीन पर लगाते हुए एवं पीठ से जमीन को स्पर्श न करते हुए सोने वाला साधु ।

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
लव (७स्तोक का एक लव)	५५१ २ २६३	जंघन, २सू. १८
लवणसमुद्रमें चन्द्रसूर्यादि ७६६	४ ३००	सूर्य प्रा १६सू १००
ज्योतिषी देवों की संख्या		
लाघव	३५० १ ३६५	ठा. ५सू ३६६, प अवि ३लो. ४६पृ १२७, प्रव द्वा ६६गा. ४४४
लान्तकदेवलोक का वर्णन ८०८	४ ३२२	पग प २सू. ५३
लाभान्तराय	३८८ १ ४१०	कर्म भा. १गा. ४०, पग प ०३
लिंगकुशील	३६६ १ ३८४	ठा ५उ. ३सू. ४४६
लिंग तीन समकित के	८१ १ ५६	प्रव द्वा १४८गा ६०६
लिंग पुलाक	३६७ १ ३८२	ठा. ५सू १४६, भा. ला २४३ ६
लित्त दोष (दायक दोष का ६३३	३ २४७	प्रव द्वा ६७ गा. ४६८पृ १८८, पि नि गा ४२०, १ अवि २२लो ००टी पृ ४१, पन्ना. १३गा २६
एक भेद)		
लिपियाँ अठारह	८८६ ५ ४०१	पग प. १ सू ३७, गम. १८
* लूत्त चक्र	३५२ १ ३६७	ठा ५उ १सू ३८१
* लूत्ताहार	३५६ १ ३७१	ठा ५उ १सू ३८१
लेवालेवेणं आगार (आयं-५८८	३ ४२	भा. ह अ ६पृ ८४१, प्रा प्रा. ३ भा २०६
विल का)		
लेश्या का स्वरूप समझाने ४७१	२ ७४	कर्म भा ६ प. ३३ भाग ह म ४ पृ ३६
के लिए दो दृष्टान्त		
लेश्या छः	४७१ २ ७०	म भा. १३२ उत म. ३१, पग प १७, कर्म भा ४गा. १३लापृ. ३३, भा. ह म. ४पृ १४८ उत लो म ३८लो ०८६-३८३

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
लेश्या नारकी जीवों में	५६० २ ३२१	जीवति ३सू. ८८, प्रवृद्धा १७८
लेश्या परिणाम	७४६ ३ ४२७	टा १०८ ३सू ७१३, पत्र ११३
लेश्या मार्गणा और भेद	८४६ ५ ५८	कर्म भा ४ गा. १३
लोक का नक्शा	८४५ ५ ५३	
लोककानक्शावतानेकीविधि	८४५ ५ ४८	प्रवृद्धा १४३ गा. ६०६-६०७
लोक का संस्थान	८४५ ५ ४७	तत्त्वार्थ-अध्या ३सू ६, प्रवृद्धा १४३ गा. ६०६
लोक की व्याख्या और भेद	६५ १ ४५	लोक भा २स १२, स रा ११ उ १०सू ४२०
लोककीव्यवस्था ४ प्रकारसे	२६७ १ २४७	टा ४ उ. २ सू २८६
लोक के भेद	८४५ ५ ४६	तत्त्वार्थ-अध्या ३ सू. ६ टी
लोक चौदह राजूपरिमाण	८४५ ५ ४५	प्रवृद्धा १४३ गा. ६०२-६१७, तत्त्वार्थ अध्या. ३सू ६ टी, भ ग. ५ उ ६ सू २६, भ ग. १३ उ ४ सू ४७६-४८०
लोक निराकृत साध्य धर्म	५४६ २ २६१	रत्ना परि ६सू ४४
विशेषण पक्षाभास		
१ लोकपाल	७२६ ३ ४१६	तत्त्वार्थ अध्या ४ सू ४
लोक भावना	८१२ ६ ३७०	शा भा २प्रक ११, भावना ज्ञान, प्रक २, प्रवृद्धा ६७ गा ४७३, तत्त्वार्थ अध्या ६ सू ७
लोक में अन्धकार कितने	६१८ ६ १५६	टा ४ उ ३ सू ३२४
कारणों से होता है?		

१ गीमा (नरदह) की रक्षा करने वाले देव लोकपाल कहलाते हैं ।

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
१ लोल प्रमाद प्रतिलेखना ५२१	२ २५१	उत्त अ २६ गा २७
लौकान्तिक देव आठ और ६१५	३ १३२	भ श ६७ ५ सू २४३, ठा ८७ ३
उनके विमान		सू ६२३
लौकान्तिक देव नौ	६४५ ३ २१७	ठा ६७ ३ सू ६८४
लौकिक फल के लिए यज्ञ ८१८	६ १४६	भ श २३ ५ सू १०७, आद्ध प्रति
यक्षिणी की पूजा करने में		(रत्नशेखरसूत्रितविवरण) पृ
क्या दोष है?		३३, ध अधि २३ श्लो २२ पृ ३६

व

वक्खार पर्वत दस सीता महा ७५५	३ ४३६	ठा १०३.३ सू ७६८
नदी के दोनों तटों पर स्थित		
वक्खार पर्वत दस सीतोदा ७५६	३ ४३६	ठा १०३ ३ सू ७६८
महानदी के दोनों तटों पर स्थित		
वक्तव्य अवक्तव्य	४२४ २ १०	आगम, उत्त अ ३६१
वक्तव्यता	४२७ २ २६	अनु सू ७०
वचन के दस दोष सामायिक के ७६५	३ ४४८	शिक्षा.
वचन के सोलह भेद	८६६ ५ १७०	पत्र प ११ सू १७३, आचा. शु २ चू १ अ १३ उ १
वचन गुप्ति	१२८ ख १ ६२	उत्त. अ २४, ठा. ३७ १ सू १२६
वचन पुण्य	६२७ ३ १७२	ठा ६७ ३ सू ६७६
वचन योग	६५ १ ६८	ठा ३ सू १२४, तत्त्वार्थ अध्या ६
वचन विकल्प सात	५५४ २ २६५	ठा ७७ ३ सू ६८४
वचन विनय	४६८ २ २३०	ख सू २०, भ श २४ उ ७ सू. ८०२, ठा. ७७ ३ सू ६८६, ध. अधि ३ श्लो ६४ टी पृ ४१

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
वन्दना के वत्तीस दोष	६६६ ७ ३८	आव ह गा १२०७-१२११ पृ. ४४३, वृत्त ३गा ४४७१-६४, प्रव द्वा २गा १५०-१७३
वन्दना योग्य समय के पाँच बोल	३४६ १ ३६४	आव ह अ ३निगा, ११६६ पृ ४४१, प्रव द्वा २गा १२५
‘वमनक्रिये हुए को ग्रहण नह करना’ विषय पर छः गाथाएं	६६४ ७ १८६	
१ वय स्थविर	६१ १ ६६	ठा ३३ ३सू १५६
वरदत्त कुमार की कथा	६१० ६ ६०	वि अ २०
वर्गणा आठ	६१७ ३ १३४	विशे गा ६३१-६३७
वर्ग तप	४७७ २ ८८	उत्त० अ ३० गा १०
वर्ग वर्ग तप	४७७ २ ८८	उत्त अ ३० गा ११
वर्ग वर्ग संख्यान	७२१ ३ ४०६	ठा १०३ ३ सू ७४७
वर्ग संख्यान	७२१ ३ ४०६	ठा १०३ ३ सू ७४७
वर्ण नारकी जीवों का	५६० २ ३३६	जी प्रति ३सू ८७
वर्ण परिणाम	७५० ३ ४३३	ठा. १०३ ३सू ७१३, पत्र ११३
वर्ण पाँच	४१४ १ ४३६	ठा ५३ १ सू ३६०
वर्ण संज्वलनतादिनय चार	२३७ १ २१७	दगाद ४
वर्णादि के भेद से स्त्रियों का स्वर भेद	५४० २ २७५	अनु सू १२७ गा ४४, ठा ७ उ ३सू ५४३
वर्तमान अवसर्पिणी के कुल- करी की भार्याओं के नाम	५०६ २ २३८	सम १५७, ठा ७३ ३सू ५५६
वर्तमान अवसर्पिणी के चौबीस तीर्थङ्कर	६२६ ६ १७७	सम १५७ आव ह नि गा. २०६- ३६०, आव स गा २३१-३६६, स. ज, प्रव द्वा ७ मे ५५

विषय	बाल भाग पृष्ठ	प्रमाण
वर्तमान अवसर्पिणी के मान कुलकर	५०८ २ २३७	टा.७३ ३ मू. ४१६, मन. १४७, अ. भा. २४. ३६२
वर्धमान (महावीर)	७७० ४ ३	जैन विद्या बोलूम १ नं. १
१ वर्धमान अवधिज्ञान	४२८ २ २७	टा. ६८. ३ मू. ४२६, नं. मू. १२
वर्धमान पर्यंत मात	५३७ २ २७०	टा. ७३ ३ मू. ४१६, मन. ७
बलन्मरण	७६८ ४ २६८	मन. २३. १ मू. २१
बलन्मरण	८७६ ५ ३८३	मन. १०, मन. दा. १४७ मा. १००६
बलान्तीन	११५ १ ८१	टा. ३३. १ मू. २२४
अवशर्तमरण	८७६ ५ ३८३	मन. १०, मन. दा. १४७ मा. १००६
अवमट्ट मरण	७६८ ४ २६८	मन. २३. १ मू. २१
वसति के नौ भेद	६२३ ६ १७०	मान. १० मू. ११२ ३३. २
वसति परिकर्माधिघात	६६८ ३ २५५	टा. १०३. ३ मू. ७३८
वसुमती (चन्द्रनवान्ता)	८७५ ५ १६७	मान. १ नि. मा. १००-४२१, वि. १११०, नन्दा.
वस्तु का लक्षण	४६७ २ १८२	
वस्तु के स्वपर चतुष्टय के चार भेद	२१० १ १८८	न्यायप्र. अ. भा. १, मन्ता परि. ८ म. ११ टी.
वस्तुत्व गुण	४२५ २ १६	ममान. प्रमाण. अ. भा. ११ मती २
+ वस्तुदोष	७२२ ३ ४१०	टा. १०३ ३ मू. ७३८
+ वस्तु दोष	७२३ ३ ४११	टा. १०३. ३ मू. ७३८

१ गुण अन्तर्भावों के कारण जो आदिमान अन्तर्भाव बदला जाता है।

२ दोष निरास का निरास माने वाले धर्मियों के सम्बन्ध इन्द्रियों के समीपून प्राप्ति

के बाद उत्पन्न अवस्था माना कहता है।

+ १०१ मन्त्र की मन्त्रों के मन्त्रों के वस्तु बदले हैं। वस्तु के दोष वस्तु

दोष ४६७ १६६।

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
वस्तु श्रुत	६०१ ६ ५	कर्म भा १ गा ७
वस्तु समास श्रुत	६०१ ६ ५	कर्म भा. १ गा ७
चस्त्र के पाँच भेद	३७४ १ ३८६	ठा ५७ ३ सू. ४४६
चस्त्र पुण्य	६२७ ३ १७२	ठा ६७ ३ सू. ६७६
चह्निदशा सूत्र के १२ अ० ७७७, ४ २३४,	३८४ १ ४०५	} निर्यावस्तिका सूत्र
का संक्षिप्त विषय वर्णन		
चाक् कौत्कुच्य	४०२ १ ४२६	उत्त अ ३६ गा २६ १, प्रवद्धा ७३
चागतिशय	१२६ख १ ६७	स्या का १ टी.
वाचना	३८१ १ ३६८	ठा ५७ ३ सू ४६४
वाचना के चार अपात्र	२०७ १ २८५	ठा ५७ ३ सू ३२६
वाचना के चार पात्र	२०६ १ २८५	ठा. ५७ ३ सू ३२६
वाचना देने के पाँच बोल	३८२ १ ३६८	ठा. ५७ ३ सू ४६८
१ वाचना सम्पदा	५७४ ३ १४	दशा द ४, ठा ८७ ३ सू. ६०१
वाणी के पैतीस अतिशय	६७६ ७ ७१	सम ३६ टी, रा सू ४ टी, उव. सू. १० टी.
२ वात्सल्य दर्शनाचार	५६६ ३ ८	पत्र ०५ १ सू ३७ गा. १२८, उत्त. अ २८ गा ३१
वाद के दस दोष	७२२ ३ ४०६	ठा १०७ ३ सू ७४३
वादी के चार भेद	१६१ १ १४४	भ श ३०७ १ सू ८२४ टी, आचा अ १७ १ सू ३ टी, सूय अ. १२
वादी चार	१६२ १ १४६	आचा अ १७ १ सू ६
३ वामन संस्थान	४६८ २ ६८	ठा. ६ सू ४६६, कर्म भा १ गा. ४०

१ गणि की एक सम्पदा, जिन्यों को शास्त्र पढाने की योग्यता ।

२ अपने धर्म से तथा स्वधर्मियो से प्रेम रखना । ३ जिग जरीर मे ज्ञाती, पेट पीठ आदि अवयव पूरे हों किन्तु हाथ पैर आदि अवयव छोटे हों ।

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
विगत मिश्रितासत्यामृपा ६६६	३ ३७०	ठा १०सू ७४१, पत्र १ ११सू. १६६, ध अग्नि ३श्लो ४१पृ १२०
विगय दस	७०६ ३ ३८२	आवह अ ६गा १६० १ पृ ८५३
विगय नौ	६३० ३ १७५	ठा ६७ ३सू ६७४, आवह अ ६गा १६० १ पृ ८५३ टी.
विग्रहगति नारकी जीवों की ५६०	२ ३४०	भश १४७ १सू ६०२
१ विचिकित्सा	२८५ १ २६५	उपा अ. १सू ७, आवह अ ६
विच्छिन्न बोल दस	६८२ ३ २६२	विशे ०गा २५६३
विजयकेविषयमें ८गाथाएं ६६४	७ १६८	
विजय वत्तीस	६७१ ७ ४३	जंबज ४सू ६३-१०२, लोक भा २ स १७
विज्ञ (जीव का एक नाम) १३०	१ ६८	भश २७.१ सू ८८
विणीया (वैनयिकी) बुद्धि २०१	१ १५६	नसू २६गा ६१, ठा. ४सू ३६४
विदेह, विदेहदिन्न (महावीर) ७७०	४ ४	जैनविद्याबोल्च्युम १ न १
विद्यमान पदार्थ की अनु-	६१४ ६ ७१	विशे गा. १६८३ टी
पलब्धि के इक्कीस कारण		
२ विद्या दोष	८६६ ५ १६५	प्रवद्वा ६७गा ४६८, ध अग्नि ३ श्लो ०२टी. पृ ४०, पि नि गा ४०६, पि वि गा ६६, पचा. १३गा १६
३ विद्याधर	४३८ २ ४३	ठा ६सू ४६ १, पत्र १ १सू. ३७
विद्युत्कुमारों के दस अधिपति ७३४	३ ४१८	भश. ३७ ८सू १६६

१ आगम तथा युक्ति संगत क्रिया विषय में फल के प्रति संदेह करना ।

२ स्त्री रूप देवता अविष्टित जप होमादि से सिद्ध होने वाली विद्या का प्रयोग परके आहारादि लेना । ३ वैताज्य पर्वत अविवासी प्रज्ञति आदि विद्याओं को धारण करने वाले विदित शक्ति सम्पन्न व्यक्ति ।

विषय

बोल भाग पृष्ठ

प्रमाण

विनय	४७८ २ ८६	उपसृ २०, उवाच ३० गा. ३०, प्रवदा. ईगा २७१, टी. ईसू. ४११
विनय के तेरह भेद	८१३ ४ ३६१	द्वज. अ ६ उ १ नि गा ३८८- ३२६, प्रवदा. ई ई गा. ४६०-४१
विनय के चावन भेद	१००६ ७ २७२	पवदा ६६ गा ६४१, म. अधि ३ श्लो ४४ पृ १४१
विनय के मूल भेद सात और १३४ अवान्तर भेद	६३३ ३ १६३	उा सू २०, म न २६ उ. ७ सू ८०२
विनय के विषय में ११ गाथाएं ६६४ ७ १६५		
विनय के सात भेद	४६८ २ २२६	उपसृ २०, म न २६ उ ७ सू ८०२, टी उ उ ३ सू ४८६, म. अधि ३ श्लो ४४ टी पृ. ४१
विनय प्रतिपत्तिके ४ प्रकार	०३४ १ २१६	द्वजा ६४
विनय प्रतिपत्ति चार	२२६ १ २१३	द्वजा ६४
विनयवार्ता की व्याख्या	१६१ १ १४७	म न ३० उ. १ सू ८०२ ४ टी., माता. पु १ अ १ उ १ सू ३ टी., सू १०१ म १०
और उसके वृत्तीय भेद		
विनय शुद्ध प्रत्याख्यान	३२८ १ ३३७	उा सू ४१, टी. अ ६ अ. ६ पृ ८४०
विनय समाधि अध्ययन	६३३ ६ २०१	द्वज. अ ६ उ. ३
की चौदावें नाभाएं		
विनय समाधिसंकीर्ण गाथा ८७३ ५ १२७		द्वज. अ ६ उ. ३
विनय समाधिसंकीर्ण गाथा ८७७ ५ ३७७		द्वज. अ ६ उ. ३
विनय समाधिसंकीर्ण गाथा ८७३ २ २६३		द्वज. अ ६ उ. ३
विनय समाधि के चार भेद ८७३ २ २६३		द्वज. अ ६ उ. ३
विनय समाधि के चार भेद ८७३ २ २६४		द्वज. अ ६ उ. ३

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
१ विनयाचार	५६८	३ ६	ध अधि १२लो. १६टी पृ १८
विनीत के पन्द्रह लक्षण	८५२	५ १२५	उत्तउ ११गा १०-१३
२ विपक्ष पद नाम	७१६	३ ३६६	अनुसू १३०
विपरीत स्वप्न दर्शन	४२१	१ ४४५	भ श १६उ ६ सू. ५७७
विपर्यय	१२१	१ ८६	रत्ना परि १, न्यायप्र मध्या. ३
विपाक विचय धर्मध्यान	२२०	१ २०४	ठा ४उ १सू २४७
विपाकसूत्र की बीस कथाएं	६१०	६ २६	वि
विपाकसूत्र के दोनों श्रुत-७७६	४	२१३	
स्कन्धों का संक्षिप्त विषयवर्णन			
विपुलमति मनःपर्ययज्ञान	१४	१ १२	ठा २उ. १सू ६७१
विपुलमति लब्धि	६५४	६ २६१	प्रव द्वा २७० गा १४६२
विप्रद्वौषधिलब्धि	६५४	६ २६०	प्रव द्वा २७० गा १४६२
विभंगज्ञान साकारोपयोग	७८६	४ २६८	पत्र प २६सू ३१२
विभंगज्ञान सात	५५८	२ ३०१	ठा ७उ ३सू ५४२
विभक्तियों आठ	५६५	३ १०५	सिंकारकप्रकरण, अनुसू १२८, ठा ८उ ३ सू ६०६
विमान दस बारह देवलोक	७४४	३ ४२१	ठा १०उ ३सू ७६६
के दस इन्द्रों के			
विमानों के तीन आधार	११४	१ ८१	ठा ३उ ३ सू १८०
विरसाहार	३५६	१ ३७१	ठा ४उ. १ सू ३६६
विराधना की व्याख्या, भेद	८७	१ ६३	मम ३
विरुद्ध हेतुवाचाम	७२२	३ ४१०	ठा १०उ. ३सू ७४३टी
विरुद्धोपलब्धि हेतुके ७ भेद	५५५	२ २६६	रत्ना परि. ३सू ८३-६२

१ ज्ञानाचार का एक भेद, ज्ञानदाता गुरु का विनय रत्ना विनयाचार है ।

२ विवक्षित वस्तु में जो धर्म है उससे विपरीत धर्म बनाने वाला पद ।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण	
विशेष दोष	५६४	३	१०३	प्रमी प्रख्या. १ भा १ सू. ३३	
विवाद के लः प्रकार	४६३	२	१०३	डा. ६३.३ सू. ५१२	
विविक्तचर्या की १६ गाथा	८६१	५	१४७	दश चर	
विविधगुण विशिष्ट श्रावक ८८३	७	११४	उपम ४१		
अन्त समय आलोचना प्रति-					
क्रमण कर संधारा पूर्वक काल					
कर कहाँ उत्पन्न होते हैं?					
विविध गुण सम्पन्न अन-	६८३	७	११५	उपम. ४१	
गार महान्मा इस भवकी स्थिति					
पूरी कर कहाँ उत्पन्न होते हैं?					
विनृतयोनि	६७	१	४८	सम्बन्ध मन्त्रा २, डा. ३ सू. १४०	
विशेष	४१	१	२६	सन्तापि ४ सू. १, २, ३, ४, ५	
विशेषण चाईस धर्म के	६१६	६	१५६	धर्म १. ३३ लो. २. ३ टी. सू. १	
विशेषण १६ द्रव्यावयव के ८७२	५	१७६	निग. ८४१-८४२, उपम. १३		
विशेष दोष दस	७२३	३	४१०	डा. १०३.३ सू. ७४३	
विशुद्धि दस	६६६	३	२५७	डा. १०३ उपम. १३८	
विश्राप चार	१८७	१	१४१	डा. ४३३ सू. ११४	
विश्राप चार श्रावक के	१८८	१	१४२	डा. ४३३ सू. ११४	
विष परिणाम लः	४८७	२	१००	डा. ४३३ सू. १३३	
विष भक्षणा परमा	७६८	४	२६६	मन्त्र. २३.१ सू. २१	
विषय तेडेग पान इन्द्रियो के ६२६	६	१७५	अ. सू. ४५, ३६०, ४४३, ४४६, ५०५, ५३३ उपम. २६३, प. पं. १०० १००. नवार्थ मन्त्रा २ सू. २१		
विषय प्रमाद	२६१	१	२७२	डा. ४५ सू. २००, धर्म १. ३३ लो. ३६ टी. सू. ८५, मन्त्रा. १ भा. ३. ३ टी. नवार्थ मन्त्रा ३ टी. मन्त्र. १४५	
विष्णुकुमार का दृष्टान्त ८२१	४	४८५			
सम्बन्ध सर्वोपभावना के लिये					

विषय बोल भाग पृष्ठ प्रमाण

विसंभोगीकरनेके नौस्थान	६३२	३	१७६	ठा ६३ ३ सू ६६१
विस वाणिज्जे कर्मादान	८६०	५	१४५	उपा.अ. १मू ७, भ.श. ८३. ५सू. ३३०, आव ह अ ६ पृ ८२८
विस्तार नरकावासों का	५६०	२	३३६	जी.प्रति ३सू ८४
विस्तार रुचि	६६३	३	३६३	उत्त अ २८ गा. २४
विहरमान वीस	६०३	६	८	त्रिलोक, विहर, ठा. ८सू ६३७
विद्यायोगति के सत्रह भेद	८२२	५	३८६	पत्र प १६ सू २०५
वीर कृष्णा रानी	६८६	३	३४५	अंत व. ८ अ ७
वीर रस	६३६	३	२०७	अनु.सू १२६गा ६४-६६
वीरस्तुति अ० की २६ गाथा	६५५	६	२६६	सूय अ ६
१ वीरासनिक	३५७	१	३७२	ठा ५३ १सू ३६६
२ वीर्याचार	३२४	१	३३३	ठा. ५३ २सू ४३२, ध अ धि ३ श्लो ४४ पृ १४०
वीर्यात्मा	५६३	३	६६	भ ग १२ उ १०सू ४६७
वीर्यान्तराय के तीन भेद	३८८	१	४११	कर्म भा १गा ६२, पत्र प २३
वृत्त की कथा औत्पत्तिकी	६४६	६	२५७	नसू. २७ गा ६३ टी
बुद्धि पर				
वृत्त संस्थान	४६६	२	६६	भश २५ उ ३सू ७२४, पत्र प. १
वृत्तिकान्तार आगार	४५५	२	५६	उपा अ. १मू ८, आव ह अ. ६५. ८१०, ध अ धि २श्लो २२ पृ ४१
वृद्धि छः प्रकार की	४२५	२	२४	आगन.
वृषभ स्वर	५४०	२	२७१	अनुसू १२७गा २६, ठा ७सू ६६

१ पैर जमीन पर रख कर सिंहासन पर बैठे हुए पुरुष के नीचे से सिंहासन निकाल लेने पर जो अवस्था रहती है उग अवस्था से बैठने वाला साधु ।

२ धर्म कार्यों में यथाशक्ति मन वचन काया द्वारा प्रवृत्ति करना वीर्याचार है ।

विषय	शील भाग	पृष्ठ	प्रमाण.
वेसालिय(महावीर)	७७०	४ ६	जैनविद्या बोल्यूम १ न १
वैकुर्विक देह लब्धि	६५४	६ २६७	प्रव.द्वा २७० गा १४६५
वैक्रिय काययोग	५४७	२ २८६	भ.ग २५७ १सू.७१६,कर्म भा. ४गा २४,द्रव्यलो स ३पृ ३५८
वैक्रिय मिश्रकाययोग	५४७	२ २८७	भ.ग २५७ १सू.७१६,कर्म भा. ४गा २४,द्रव्यलो स ३पृ ३५८
वैक्रिय शरीर	३८६	१ ४१३	ठा. ५७ १ सू. ३६५, पञ्च.प. २१ सू. २६७, कर्म भा १गा ३३
वैक्रियशरीरबंधननामकर्म	३६०	१ ४१६	कर्म भा १गा ३५, प्रव द्वा २१६
वैक्रिय समुद्घात	५४८	२ २८६	पञ्च प ३६५ सू. ३३१, ठा ७७ ३सू. ५८६, द्रव्यलो स ३ पृ. १२४, प्रव द्वा २३१ गा. १३११
वैदारिणी (वेयारणिया) क्रिया	२६५	१ २८१	ठा २३ १सू. ६०, ठा ५७ २सू. ४१६, यावद्व अ ४पृ ६१३
वैदिक दर्शनों की सत्रह	४६७	२ २१४	
वातो से परस्पर तुलना			
वैनयिकी (विणीया) बुद्धि	२०१	१ १५६	न.सू. २६, ठा ४७ ४सू. ३६४
वैभाविक गुण	५५	१ ३३	द्रव्य.त अध्या १०७लो ८
वैमानिक इन्द्रों के दस विमान	७४४	३ ४२१	ठा १०७ ३ सू. ७६६
वैमानिक देवों के छव्वीस	६४४	६ २२७	पञ्च प १सू. ३८, उत्त अ. ३६गा.
भेद			२०७-२१४, भ.ग ८७ १सू. ३१०
वैमानिक देवों के दस इन्द्र	७४१	३ ४२०	ठा १०७ २सू. ७६६
वैयधिकरण्य दोष	५६४	३ १०३	प्र.नी.अध्या १आ १सू. ३३
वैयाचर्य	४७८	२ ८६	उच.सू. २०, उत्त य ३० गा ३०, प्रव द्वा ६गा २७१, ठा ६सू. ५११

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	ममाण
वैयावृत्य के दस बोल	३६०	१	३७४ टा १ उ १ मु ३२७
वैयावृत्य के दस बोल	३६१	१	३७४ टा १ उ १ मु ३२७
वैयावृत्य के दस भेद	६३३	३	१६५ उ १ मु २०, भज. २५३ उ १ मु ८००
वैयावृत्य दस	७०७	३	३८२ भज. २१३ उ १ मु ८००
वैराग्य की व्याख्या और भेद ६०	१	६५	कभा २८०, ११८-११६
वैराग्य पर बारह गाथाएँ ६६४	७	२२८	
वैशेषिक दर्शन	४६७	२	१४४
वैश्रमणकुमार की कथा	६१०	६	५६ वि अ १६
* वैदानस मरण	७६८	४	२६६ भज २३१ मु २१
* वैदायस मरण	८७६	५	३८४ भज १७, ११३ टा १७ उभा. १०००
व्यक्तस्वाधीगणधर की पृथ्वी ७७५	४	३६	विंशति १६८०, ११३, १२६
आदिभूतों के अस्मिन् विषयमें			
शंका और उसका समाधान			
१ व्यञ्जनाचार	५६८	३	६ भजति. १७०, १८६ टा १८
व्यञ्जनावग्रह	५८	१	४० भज २८, १७० टा १८ ४८
व्यतिकर दोष	५६४	३	१०४ प्रती १८ टा १८ १८ ३१
व्यतिकर	२४४	१	२२१ विंशति १८०, भजति. १७० ५३ टा १८ १८
व्यन्तर देव शाठ	६१४	३	१३०
व्यन्तर देवों का स्थान और ६१४	३	१३१	<div style="display: inline-block; vertical-align: middle;"> भजति. १८०, भजति. १८० १८ १८, १८ १८, १८ १८, १८ १८ श्री. १८, १८, १८ १८ १८ </div>
उनकी स्थिति			
व्यन्तर देवों के उद्भूत	६१४	३	१३१ श्री. १८ १८ १८
व्यंग्य	६४	१	४५ भजति. १८०, १८ १८

१. १८ में जो जो लक्षण हैं वे भजति. की उक्त पर लक्ष्मण से होने जाते हैं।

१. १८ पर जो जो लक्षण हैं वे भजति. की उक्त पर लक्ष्मण से होने जाते हैं।

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
१ व्यवशमित वचन	४५६ २ ६२	ठा.६३ ३सू ६२७, प्रव.द्वा. २३६ गा. १३२१, घृ.(जी.) ठ.६
व्यवसाय की व्याख्या, भेद ८५	१ ६२	ठा ३३ ३ सू १८६
व्यवसाय सभा	३६७ १ ४२२	ठा ६३ ३ सू ४७२
व्यवहार	३६ १ २५	विशे.गा. ३६८६, द्रव्य.त.अध्या. ८
व्यवहार और निश्चय पर	६६४ ७ १६३	
दो गाथाएं		
व्यवहार नय और उसके	५६२ २ ४१५	अनुसू १६२ गा. १३७, द्रव्य त
दो भेद		अध्या ६५७ १३
व्यवहार नय के असद्भूत, ५६२	२ ४२४	द्रव्य.त. अध्या. ७
असद्भूत आदि भेद		
व्यवहार पाँच	३६३ १ ३७५	ठा ६सू ४२१, म.श ८३ ८सू. ३४०, व्यव पीठिकाभाष्य गा. १-२.
व्यवहार भाषा	२६६ १ २४६	पत्र प ११सू १६१
व्यवहार भाषा के वारह भेद ७८८	४ २७२	पत्र प ११सू. १६६
व्यवहार राशि	६ १ ८	आगम.
व्यवहार राशि	४२५ २ २१	आगम
व्यवहार संख्यान	७२१ ३ ४०४	ठा १०३ ३सू ७४७
व्यवहार सत्य	६६८ ३ ३६६	ठा १०३ ३सू ७४१, पत्र प ११सू. १६६, ध अधि ३५७ ४१पृ. १२१
व्यवहार सम्यक्त्व	१० १ ६	कर्म भा. १गा. १६, प्रव.द्वा १४६ गा ६४२ टी
व्यवहार सूत्र का विषय वर्णन २०५	१ १८२	
व्यसन सात	६१८ ६ १५५	गौकु, झा.अ. १८ स १३७, घृ ठ १ गा. ६४०

१ एक वक्त जान्त हुए कलह को फिर से उभाड़ने वाले वचन कहता ।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र के इक- ७७६	४	१३८		
नालीम शतकोंका विषयवर्णन				
व्याधि चार	२६५	१	२४७	आ.४३ ४ मू ३४३
१ व्युत्सर्ग	४७८	२	८६	उत्तम १० गा. ३०, प्र. १६ गा. २७१, आ. ६ मू ६११
व्युत्सर्ग तप के भेद, प्रभेद	६३३	३	१६६	आ. २०, म. २३६, ७ मू ८०४
व्युत्सर्ग सात	५५७	२	३००	आ. २००
२ व्युद्ग्राहित	७५	१	५४	आ. ३३, ४ मू २०३
व्रत कच्चा	६६२	३	२३६	परा १७ गा. २६-२८
व्रत धारणन करने वाले के १८	६	१४४		आ. ८ मू, ७ गा. १०७० टी ७
निये भी क्या प्रतिक्रमण				४६८, पनप (अदिना मू)
करना आवश्यक है?				
व्रतधारी नियोज विधि पूर्वक ८८३	७	११७		आ. ४१
कालकर कष्टों उन्मज्जना है?				
ब्राह्म रम	६३६	३	२०६	मनु मू १२४ गा. १२-१३

श

शंका (समर्पितका अतिचार) २८५	१	२६५	आ. १ मू १, गा. ६ मू १९८१
शंका प्रमाद प्रतिज्ञेखना ५२१	२	२५१	आ. २६ गा. २०
शंख श्रीर पोखली आवक ६२४	३	१६४	आ. ६ मू ६०१, म. ११३१
शंख निधि ६५४	३	२२२	आ. ४३ मू ६०३
शब्द कुमार की कथा ६१०	६	३६	वि. म. ४
शक्रेन्द्र की सेना तथा सेना-५४१	२	२७६	आ. ७३ मू ६८३
पति मात			

१ मम - यः मम मम मम । यः मम मम मम मम का भेद है ।

२ मम - यः मम मम मम मम । यः मम मम मम मम का भेद है ।

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
शत सहस्र की कथा औत्पत्तिकी की बुद्धि पर	६४६ ६ २८२	नसू २७गा ६५ टी
शनैश्चर संवत्सर	४०० १ ४२८	ठा. ५८ ३सू ४६०, प्रवद्वा १४२
१ शवल दोष इक्कीस	६१३ ६ ६८	दशा. द २, सम २१
शब्द के दस प्रकार	७१३ ३ ३८८	ठा १०८ ३सू ७०५
शब्द नय	५६२ २ ४१७	अनुसू १५२, रत्ना परि ७सू ३२
शब्द परिणाम	७५० ३ ४३४	ठा १०८ ३सू ७१३, पञ्च प १३ सू १८४-१८५
शम्भ के साहस का दृष्टान्त भाव अननुयोग पर	७८० ४ २५२	आवद्. नि गा १३४, धृ पीठिका नि गा १७२
२ शम्भूकावर्त्ता गोचरी	४४६ २ ५२	ठा ६८ ३सू ५१४, उत्तम ३० गा १६, प्रवद्वा ६७गा ७४५, ध अघि ३श्लो २२ टी पृ ३७
शयन पुण्य	६२७ ३ १७२	ठा ६८ ३ सू ६७६
शय्यातर पिण्ड कल्प	६६२ ३ २३७	पचा १७ गा १७-१६
शय्यादाता अवग्रह	३३४ १ ३४५	भय १६८ २सू ५७६, प्रवद्वा ८५गा ६८१-६८४, आचा. धृ २च १अ ७८ २सू १६२
शरट (गिरगिट) की कथा औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६ ६ २६२	नसू २७गा ६३ टी
शरीर, आत्मा की भिन्नता	४६६ २ १०७	रासू ६३-७७
विषयक परदेशी राजा के छः प्रश्न		
शरीर की व्याख्या और उसके भेद	३८६ १ ४१२	ठा. ५८. १सू ३६५, पञ्च प २१सू २६७, कर्म भा १गा ३३

१ जिन कार्यों से चारित्र्य की निर्मलता नष्ट हो जाती है उन्हें शवलदोष कहते हैं।

२ गल के आवर्त्त की तरह घृत (गोल) गति वाली गोचरी।

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
शिल्प स्थावर काय	४१२ १ ४३८	ठा ५३ १सू ३६३
शिल्पाचार्य	१०३ १ ७२	रासू ७७
शिल्पार्य	७८५ ४ २६६	वृ ३ १नि गा. ३२६३
शिवभूतिनामक ऽर्वेनिह्वय ५६१	२ ३६६	विशे गा. २४५०-२६०६,
कामतशंकासमाधानसहित		ठा ७३ ३सू ६८७
शिवराजर्षि(लोकभावना)	८१२ ४ ३८७	भश ११७ ६सू ४१७-४१८
शिवा सती	८७५ ५ ३४६	आव ६.अ नि गा १२८४
शीत योनि	६७ १ ४८	तत्त्वार्थ अध्या २, ठा. ३सू १४०
शीतलेश्या लब्धि	६५४ ६ २६७	प्रवद्धा २७० गा १४६४
शीतोष्ण योनि	६७ १ ४८	तत्त्वार्थ अध्या २, ठा ३सू १४०
शील की नववाङ्	६२८ ३ १७३	ठा ६७ ३सू ६६३, सम ६
शील की बत्तीस उपमा	६६४ ७ १५	प्रग्न धर्मद्वार ४सू २७
शील के अठारह भेद	८६२ ५ ४१०	सम १८, प्रवद्धा १६८ गा. १०६१
शील धर्म	१६६ १ १५५	ध अवि २२लो २८, टी पृ ६६
शील पर सोलह गाथाएं	६६४ ७ १७७	
शुक्लध्यान	२१५ १ १६६	सम ४, ठा ४ उ १ सू. २४७, आगम, क भा २श्लो २११
शुक्लध्यान के ४ आलम्बन	२२७ १ २११	ठा ४३ १सू २४७, आव ६ अ ४ ध्यानशतक गा ६६, उव सू २०
शुक्लध्यान के चार भेद	२२५ १ २०६	आव ६ अ ४ ध्यानशतक गा ७७- ८२, ठा ४३ १सू २४७, ज्ञान प्रक. ४२, क भा २श्लो. २११-२१६
शुक्लध्यान के चार लिंग	२२६ १ २११	आव ६ अ. ४ ध्यानशतक गा ६० पृ. ६०६, ठा. ४ उ १सू २४७, भ.श २६ उ. ७ सू. ८०३

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
शुद्धध्यानी की ४ भावनाएं २२८	१ २१२	अ ४३, १ मू २४७, आन २ म, ४ १ भागनतर मा ८२ प ६०८, म. म २४३, अ ८२३, उ ३ म २०
१ शुद्धध्यानी	८	१ ७ म न १३३ १ मू ४७०, अ २ मू ३५
शुद्धलेख्या	४७१	२ ७४ उ म २४ मा ३१, म १ मा ४ मा १३
शुद्ध पृथ्वी	४६५	२ ६६ श्री प्रति ३ मू १-१
शुद्धवागनुयोगकेद्रमप्रकार ६६७	३ ३६५	अ १०३ अ मू १४४
शुद्धि पर कथा	५७८	३ ३६ आ ४ म, ४ नि, मा ५० २०
शुद्धि पांच	३२७	१ ३३५ अ १३३ मू ४५
शुद्धि पाणि	३५४	१ ३६६ अ १३१ मू ३५
शुभकर्मवाचनेकेद्रमस्थान ७६३	३ ४४४	अ १०३ ३ मू ७४८
शुभदीर्घायु के तीन कारण १०७	१ ७५	अ ३ मू १२३, म न, १३, ६ मू २०४
शुभनामकर्म चौदह प्रकार ८३८	५ ३३	म १५, १० मू २२०
मं भोगा जाना है		
शुभ भोग सूत्र	७६८	३ ४५४ अ १०३, ३ मू २२३
शुभ पुरुष के चार प्रकार १६३	१ १५०	अ ४३, ३ मू २११
शृंगार रस	६३६	३ २०८ म न मू १२ मा ११-१२
शैलक गजपति की कथा ६००	५ ४३८	म ३५
शौच (अथवा धर्म)	६६१	३ २३४ मा मा २३, म न, १०, मा मा १ मा २
शौच पांच	३२७	१ ३३५ अ १३, ३ मू ४५
श्रद्धा	१२७	१ ६० म न, १३, ३ मू ७१
श्रद्धान शुद्ध मत्यास्थान ३२८	१ ३३६	म ४६, ६ मा न म म १ म २२३
श्रमण (महोदर)	७७०	४ ३ जैन विद्या जे मू ११ म १

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
श्रमण (समण, समन) की	१७८	१ १३१	दश अ. २ नि. गा १५४-१५७,
चार व्याख्याएं			अनुसू १५० गा. १२६-१३२
श्रमण की बारह उपमाएं	८०५	४ ३०६	अनुसू १५० गा १३१
श्रमण के पाँच प्रकार	३७२	१ ३८७	प्रव द्वा ६४ गा ७३१
श्रमण को सर्प पर्वत आदि	१७८	१ १३१	दश अ २ नि. गा. १५४-१५७,
बारह बोलों की उपमा			अनुसू १५० गा १२६-१३२
श्रमण धर्म दस	६६१	३ २३३	नव गा २३, सम १०, शा भा १ प्रक ८
१ श्रमण बनीपक	३७३	१ ३८६	ठा ४ उ ३ सू. ४५४
श्रमणोपासक श्रावक के	८८	१ ६४	ठा. ३ उ ४ सू २१०
तीन मनोरथ			
श्रामणपूर्विका अध्ययन	७७१	४ ११	दश अ २
की व्याख्यान गाथाएं			
श्रावक का सूत्र पढ़ना क्या	६१८	६ १५१	नसू ५२, सम. १४२, उत्त अ.
शास्त्र सम्मत है ?			२१ गा २, उत्त अ २२ गा ३२,
			ज्ञा अ १२ सू ६२, उव सू ४१,
श्रावक की आदर्श, पताका,	१८५	१ १३६	ठा ४ उ ३ सू ३२१
स्थाणु, खरकण्टक से समानता			
श्रावक की ग्यारह पट्टिमाएं	७७४	४ १८	दशा द ६, सम ११
श्रावक के अणुव्रत पाँच	३००	१ २८८	भाव ह अ ६ पृ ८१७-८२६,
			ठा ४ सू ३८६, उपा अ. १ सू ६,
			ध अ धि २ श्लो २३-२६ पृ ६७ ६७
श्रावक के अन्य चार प्रकार	१८५	१ १३६	ठा ४ उ ३ सू ३२१
श्रावक के डक्कीस गुण	६११	६ ६१	प्रव द्वा २३६ गा १३४६-४८,
			ध अ धि १ श्लो २० पृ २८

१ जो दाता श्रमणों का भक्त है उसका आगे प्रमणदान की प्रशंसा कर भिक्षा लेने वाला श्रावक श्रमण बनीपक कहलाता है ।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
श्रावक के चार प्रकार	१८४	१	१३८	अ ४३.३ मू. ३२१
श्रावक के चार विश्राम	१८८	१	१४२	अ ४३.३ मू. ३१४
श्रावक के चार शिक्षाव्रत	१८६	१	१४०	श्रावह अ. ६ पृ. ८३१-८३६, पंचा १ गा. ०५-३२
श्रावक के चौदह नियम	८३१	५	२३	शिक्षा., ध अधि २ श्लो ३४ पृ ७६
श्रावक के छः गुण	४५२	२	५६	ध ०२ गा ३३
श्रावक के तीन गुण व्रत	१२८८	१	६१	श्रावह अ ६ पृ. ८२६-८२६
श्रावक के तीन मनोरथ	८८	१	६४	अ ३३ ४ मू. २१०
श्रावक के दस लक्षण	६८४	३	२६२	भ ग २३.५ मू. १०७
श्रावक के पाँच अणुव्रत	३००	१	२८८	भावह अ. ६ पृ. ८१७-८२६, अ ५ मू. ३८६, उपा अ १ मू. ६, ध अधि २ श्लो. २३-२६ पृ. ५७ ६७
श्रावक के पाँच अभिगम	३१४	१	३१५	भ ग २३ ५ मू. १०६
श्रावक के पैंतीस गुण	६८०	७	७४	यो प्रका १ श्लो ४७-५६
श्रावक के प्रत्याख्यान	१००३	७	२६७	भ ग ८३ ५ मू. ३२६
के उनचास भंग				
श्रावक के बारह भावव्रत	७६४	४	२८०	भागम
निश्चय और व्यवहार से				
श्रावक के बारह व्रत				
(तीन गुणव्रत)	१२८८	१	६१	श्रावह अ ६ पृ. ८१७-८३६, उपा. अ १ मू. ६, ध अधि. २ श्लो. २३-४० पृ. ५३-६४, अ ५ मू. ३८६, पंचा. १ गा ७-३२
(चार शिक्षा व्रत)	१८६	१	१४०	
(पाँच अणुव्रत)	३००	१	२८८	
श्रावक के बारह व्रत	४६७	२	२००	
श्रावक के बारह व्रतों के	३०१-१	२६०-		उपा अ १ मू. ७, भाव. ह अ ६ पृ. ८१७, ध अधि २ श्लो. ४३-५८ पृ. १००-११६
साठ अतिचार	३१२	३१४		

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
आवक के सत्रह लक्षण	८८३ ५ ३६२	व.अधि २ श्लो. २२ टी. प्र. ४६
आवक के सातवें उपभोग	६४३ ६ २२५	उपा. अ. १ सू. ६, व.अधि. २ श्लो.
परिभोग परिमाण व्रत में		३८ टी. पृ. ८०, आप्रति.
मर्यादा के छव्वीस बोल		
आवक को माता पिता, भाई, १८४ १ १३८		ठा. ४३. ३ सू. ३२१
मित्र और सौत से उपमा		
आवक दस	६८५ ३ २६४	उपा. अ. १-१०
आवक भार्या का दृष्टान्त	७८० ४ २४५	भाव ह गा. १३४, वृ. पीठिका
भाव अननुयोग पर		नि. गा. १७२
आवक भार्या की पारिणा-	६१५ ६ ८४	न. सू. २७ गा. ७०, आवे. ह.
मिकी बुद्धि की कथा		गा. ६४६
आवकों के अप्पारंभा अप्प-	८६० ५ १४४	उव. सू. ४१, सुय. थु. २ अ. २ सू. ३६
परिगृह्य आदि विशेषण		
श्रुत ज्ञान	१५ १ १३	ठा. २३ १ सू. ७१, भ. श. ८७ २ सू.
		३१८, कर्म भा. १ गा. ४, न. सू. १
श्रुतज्ञान	३७५ १ ३६०	ठा. ४३ ३ सू. ४६३, कर्म. भा. १-
		गा. ४, न. सू. १
श्रुतज्ञान के चौदह भेद	८२२ ५ ३	न. सू. ८८, विशेष गा. ४५४-५५२
श्रुतज्ञान के दो भेद	१६ १ १३	न. सू. ४४, ठा. २३ १ सू. ७१
श्रुत ज्ञान के बीस भेद	६०१ ६ ३	कर्म भा. १ गा. ७
श्रुतज्ञान साकारोपयोग	७८६ ४ २६८	पत्र प. २६ सू. ३१२
श्रुतज्ञानावरणीय	३७८ १ ३६४	ठा. ५ सू. ६६४, कर्म भा. १ गा. ४
श्रुत धर्म	१८ १ १५	ठा. २७ १ सू. ७२
श्रुत धर्म	६६२ ३ ३६१	ठा. १०३ ३ सू. ७६०
श्रुत धर्म के दो भेद	१६ १ १५	ठा. २३. १ सू. ७२

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
श्रुतप्रत्यनीक	४४५	२	५०	भ.श.८३८ सू.३३६
श्रुत मद	७०३	३	३७४	ठा.१०सू.७१०, ठा.८सू.६०६
श्रुतविनय के चार प्रकार	२३१	१	२१५	दशा.०द.४
श्रुत व्यवहार	३६३	१	२७५	ठा.५३ २सू.४२१, भ.श.८३८
श्रुत समाधि के चार भेद	५५३	२	२६४	दश.प्र.६३४
श्रुत सम्पदा	५७४	३	१२	दशा.द.४, ठा.८३ ३सू.६०१
श्रुत सामायिक	१६०	१	१४४	विशे.गा.२६७३-२६७७
श्रुताज्ञान साकारोपयोग	७८६	४	२६८	पत्र.प.२६सू.३१२
श्रेणिक की कथासम्यक्त्व ८२१	४	४६५		नवपद.गा.१८टी.सम्यक्त्वा- धिकार
के उपवृंहणा आचार के लिए				
श्रेणिक के कोप का दृष्टान्त ७८०	४	२५३		भाव.ह.नि.गा.१३४, वृ.पीठिका नि.गा.१७२
भाव अथनुयोग पर				
श्रेणिकराजाकीदसरानियाँ ६८६	३	३३३		अत.व.८
श्रेणियाँ सात	५४४	२	२८२	ठा.७३.३सू.६८१, भ.श.२१३१
श्रेणी के दो भेद	५६	१	३३	कर्म.भा.२गा.२, विशे.गा.१०८४- १३१३, द्रव्यलो.स.३ग्लो.११६६- १२३४, भाव.म.गा.११६-२३
श्रेणी तप	४७७	२	८७	उत्त.प्र.३०गा.१०
श्रेयांसकुमार की सम्यक्त्व ८२१	४	४२३		नवपद.गा.१२८ सम्यक्त्वा- धिकार
प्राप्ति की कथा				
श्रोत्रेन्द्रिय	३६२	१	४१८	पत्र.प.१५सू.१६१, ठा.५३.३ सू.४४३टी., जै.प्र.
श्रृक्ष्ण पृथ्वी	४६५	२	६५	जी.प्रति.३ सू.१०१
श्रृक्ष्णवाटरपृथ्वीके ७ भेद ५४५	२	२८४		पत्र.प.१सू.१४

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति	४७२ २ ७७	पत्र.प १सू १२टी, भ.श ३उ १ सू १३०, प्रव.द्वा २३२ गा १३१७, कर्म भा १गा.४६
श्वावनीपक	३७३ १ ३८८	ठा.६उ ३ सू.४४४
श्वास तथा उच्छ्वास	५५१ २ २६२	जवज.२ सू १८
श्वासोच्छ्वास नारकियों का प्रद०	२ ३३७	जी.प्रति ३सू ८८

ष

पट्पुलिम नव स्फोटका	४४८ २ ५३	ठा ६उ ३सू ५०३, उत्त.म २६
प्रतिलेखना		गा २५
* षड्जग्राम की सात	५४० २ २७३	अनुसू १२७गा.३६, ठा.७उ ३
मूर्धनाएं		सू ५६३, सगीत
षड्ज स्वर	५४० २ २७१	अनुसू १२७गा २५, ठा ७सू ५६३
षाण्मासिकीभिकखु पढिमा ७६५	४ २८६	सम.१२, भ.श.२उ १ सू ६३
		टी, दशा ६७

स

संकर दोष	५६४ ३ १०४	प्र मी अन्ध्या १आ १सू ३३
१ संकिय दोष	६६३ ३ २४२	प्रव द्वा ६७गा ५६८पृ १४८, पि निगा ५२०, ध अधि ३२लो- २२टी पृ ४१, पचा १३गा.२६

५ श्री जैनसिद्धान्त बोल सभह भाग ७ पृष्ठ २७३ पर षड्जग्राम की सात मूर्ध-
नाएं कपी हैं वे सगीत शास्त्र नामक ग्रन्थ से ली हुई हैं। अनुयोग द्वार तथा स्थानाग
सूत्र में षड्जग्राम की मूर्धनाओं के नाम दूसरी तरह दिये हैं। उनकी गाथा इस प्रकार है—

मग्गी कोरविआ हरिया, रयणी य सारकंता य ।

छट्टी य सारसी नाम, सुद्धसज्जा य सचमा ॥

अर्थ—मार्गी, कौरवी, हरिता, रत्ना, सारकाता, सारमी और शुद्ध षड्ज ।

१ आक्षारमें माधाकर्म आदि दोषों की शका होने पर भी उसे लेना संकिय (अकित) दोष है।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
संक्रम की व्याख्या और भेद २५०	१	२३५	ठा. ४५२. २६१, कर्म भा. २ गा १	
संक्रमण करण	५६२	३	६५	कर्म भा. २
१ संक्रामण दोष	७२२	३	४१०	ठा. १०३. ३ सू. ७४३
संक्लेश दस	७१४	३	३८८	ठा. १०३. ३ सू. ७६६
संक्षेप रुचि	६६३	३	३६३	संन म. २८ गा २६
२ संख्यात जीविक वनस्पति ७०	१	५०	ठा. ३३. १ सू. १०१	
संख्यादत्तिक	३५४	१	३६६	ठा. ५३. १ सू. ३६६
संख्यान दस	७२१	३	४०४	ठा. १०३. ३ सू. ७४७
संख्या प्रमाण आठ	६१६	३	१४१	अनुसू. १४६
संख्या या परिमाण	७२१	३	४०४	ठा. १०३. ३ सू. ७४७
जानने के दस बोल				
संख्येय के तीन भेद	६१६	३	१४४	अनुसू. १४६
संगीत के आठ तथा अन्य ५४०	२	२७३	अनुसू. १२७ गा १८, १६, ७३	
गुण				
संगीत के छः दोष	५४०	२	२७३	अनुसू. १२७ गा १७, ७३, १४३
संग्रह दान	७६८	३	४५०	ठा. १०३. ३ सू. ७४७
संग्रह नय और उस के दो	५६२	२	४१४	संन म. १३-२२, अनुसू. १४२ गा. १३७
भेद				
संग्रह परिज्ञा सम्पदा	५७४	३	१५	संन म. १३, २३, ३ सू. ६०१
संघ की आठ उपमाण	६२३	३	१५६	नवीटिम गा. ४-१०
संघ तीर्थ है या तीर्थद्वार	६१८	६	१३४	विन गा. १०३३-१०३७, अन २०८ सू. ६६१
तीर्थ है ?				
संघ भव	६६२	३	३६१	ठा. १०३. ३ सू. ७६०

१ व २ का एक दोष, प्रस्तुत विषय की दृष्टि से अप्रस्तुत विषय की वदना।

२ व ३ परस्पर में संख्यात जीव हैं, जिन नामों से लगा हुआ है।

विषय	बोल भाग, पृष्ठ	प्रमाण
संघातनामकर्म के पाँचभेद	३६१ १ ४१६	कर्म भा १ गा ३६, प्रव द्वा २१६
संघात श्रुत	६०१ ६ ४	कर्म भा १ गा. ७
संघात समास श्रुत	६०१ ६ ४	कर्म भा १ गा. ७
संज्ञा की व्याख्या और भेद	१४२ १ १०४	ठा ४७ ४ सू ३६, प्रव द्वा १४५
संज्ञा चार का अल्प बहुत्व	१४७ १ १०७	पत्र प ८ सू १४=
चार गति में		
संज्ञा दस	७१२ ३ ३८६	ठा १०७ ३ सू ७५२, म श ७७ =
संज्ञी श्रुत	८२२ ५ ४	न सू ४०, विशेष गा ५०४-५२६
संज्ञी	८ १ ६	ठा २७.२ सू ७६
संज्ञी के तीन भेद	८२२ ५ ५	न सू ४०, विशेष गा ५०४
संज्ञीमार्गणा और उसके भेद	८४६ ५ ६३	कर्म भा ४ गा १३
संज्वलन कपाय	१५८ १ ११६	पत्र प १४ सू १८८, ठा ४७ १ सू २४६, कर्म भा १ गा १७-१८
संठाण छः अजीव के	४६६ २ ६६	म श २५७ ३ सू ७२४, पत्र प १ सू ४
संठाण छः जीव के	४६८ २ ६७	ठा. ६ सू. ४६५, कर्म भा १ गा ४०
संथारग पड़णा	६८६ ३ ३५४	द प १ १ १ १
१ संभिन्न श्रोतो लब्धि	६५४ ६ २६१	प्रव द्वा २७० गा १४६२
संभोगी को विसंभोगी	६३२ ३ १७६	ठा ६७ ३ सू ६६१
करने के नौ स्थान		
संभोगी साधुओं को अलग	३४५ १ ३५६	ठा ५७ १ सू ३६८
करने के पाँच बोल		
संयत	६६ १ ५०	म श ६ ७ ३ सू २३७
संयतासंयत	६६ १ ५०	म श. ६ ७ ३ सू २३७

विषय	घोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
संयम	३५१	१	३६६	ठा.५सू.३६६, प्रव.द्वा.६६गा.
				६५४, ध.अधि. ३श्लो ४६टी पृ. १२७
संयम (श्रमण धर्म)	६६१	३	२३४	नव.गा. २३, सम. १०, शा. भा. १
				प्रक. ८ संवरभावना
संयम आठ	५७३	३	११	तत्त्वार्थ अष्टाया ६सू.६
संयम की विराधनादस	६६६	३	२५२	म. ग. २.५३.७, ठा. १०सू. ७३३
संयम के चार प्रकार	१७६	१	१३४	ठा. ४३.२ सू. ३१०
संयम के सत्रह भेद	८८४	५	३६३	सम. १७, आव. द्व. अ. ४पृ. ६५१,
				प्रव.द्वा. ६६गा. ५५६
संयम के सत्रह भेद	८८५	५	३६५	प्रव.द्वा. ६६गा. ५५५
संयम पाँच	२६८	१	२८४	ठा. ५३. २सू. ४२६-४३०
संयम मार्गणा और भेद	८४६	५	५८	कर्म भा. ४गा. १२
संयोग नाम	७१६	३	३६६	अनुसू. १३०
१ संयोजना दोष	३३०	१	३३६	पि. नि. गा. ६३६-३७, ध.अधि. ३
				श्लो. ०३पृ. ५५, उत्त. अ. २४गा. १२टी.
संयोजना प्रायश्चित्त	२४५ख	१	२२३	ठा. ४३. १ सू. ०६३
२ संरक्षणोपघात	६६८	३	२५७	ठा. १०७. ३सू. ७३८
संरम्भ	६४	१	६७	ठा. ३३. १सू. १२४
संलेखना के पाँच अतिचार	३१३	१	३१४	उपा. अ. १सू. ७, ध.अधि. २श्लो.
				६६ टी. पृ. २३०
संवत्सर पाँच	४००	१	४२४	ठा. ५सू. ४६०, प्रव.द्वा. १४२गा. ६०१
संवर के बीस भेद	६०८	६	२५	{ नव. गा. २०, ठा. ५ सू. ४१८, ४२७, ठा. १०३. ३सू. ७०६, प्रश्ननम्रद्वार, सम. ५
संवर के सत्तावन भेद	१०१२	७	२८०	

१ मांडला का एक दोष, रसलोलुपता के कारण एक द्रव्य का दूसरे द्रव्य के साथ संयोग करना । २ परिग्रह से निरुक्त माधु का वस्त्र पात्र तथा शरीरादि में ममत्व होना ।

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
संवर तत्त्व के बीस और सत्तावन भेद	६३३	३ १८४	
संवर दस	७१०	३ ३८५	ठा १०३ ३सू ७०६
संवर पाँच	२६६	१ २८५	ठा. ५ सू ४१८, ४२७, प्रश्न. संवर द्वार ५,
संवर भावना	८१२	४ ३६८,	गा भा २ प्रक ८, भावना, ज्ञान ३८६ प्रक २, प्रव. द्वा ६७ गा. ५७२, तत्त्वार्थ ग्रन्था ६ सू ७
संवृत चक्रुश	३६८	१ ३८३	ठा. ५३ ३ सू ४४५
संवृत योनि	६७	१ ४८	{ तत्त्वार्थ ग्रन्था. २ सू ३३, ठा ३ उ १ सू. ११०
संवृत विवृत योनि	६७	१ ४८	
संवेग	२८३	१ २६४	ध. ग्रंथि २ श्लो २२ टी पृ. ४३
सवेगनीकथाकीव्याख्या, भेद	१५६	१ ११४	ठा ४३ २ सू २८२
संशय	१२१	१ ८५	रत्ना परि. २, न्यायप्र ग्रन्था. ३
संशय दोष	५६४	३ १०४	प्र. मी. ग्रन्था १ अ १ सू ३३
संशुद्ध ज्ञान दर्शनधारी	३७१	१ ३८६	ठा ५३ ३ सू ४४५, भ. श. २४८ ६
अग्निहन्त जिन केवली			सू ७५१
संसक्त	३४७	१ ३६२	आवह अ ३ नि गा ११०७-११०८ पृ ५१६, प्रव. द्वा २ गा ११६-१२०
संसक्त तप	४०५	१ ४३२	उत्त अ ३६, प्रव. द्वा ७३ गा ६४५
संसार की लवण समुद्र के साथ दस उपमा	६७६	३ २६६	
संसार भावना	८१२	४ ३६०,	गा. भा. १ प्रक. ३, भावना, ज्ञान. ३८० प्रक. २, प्रव. द्वा. ६७, तत्त्वार्थ. ग्रन्था. २

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
संसार में आने वाले प्राणियों के दस भेद	७२८	३	४१५	ठा. १०८. ३ सू ७७१
संसारी	७(ख)	१	४	ठा २सू १०१, तत्त्वार्थ प्रव्या. २सू १०
संसारी जीव के चार प्रकार	१३०	१	६७	ठा ४८ २सू ४३०, भ. श. २३. १सू ८८
संसारी जीव के नौ प्रकार	८	१	४	
मे दो दो भेद				
१ ससृष्ट कल्पक	३५३	१	३६८	ठा ५८. १सू ३६६
संस्थान छः अजीव के	४६६	२	६६	भ. श. २६८ ३सू ७२४, पत्र प. १ सू ४, जी प्रति १
संस्थान छः जीव के	४६८	२	६७	ठा ६सू ८६६, कर्म भां १गा. ४०
संस्थान नरकावासों का	५६०	२	३३४	जी प्रति ३ सू ८२
संस्थान नरकों में	५६०	२	३४१	भ. श. २६८ ३सू ७२४
संस्थान नाग की जीवों का	५६०	२	३३७	जी प्रति ३ सू ८७
संस्थान परिणाम	७५०	३	४३३	ठा १०८ ३सू. ७१३, पत्र. प. १३
संस्थान विचयधर्मध्यान	२२०	१.	२०४	ठा ४८ १सू २८७
संस्थान सात	५५२	२	२६३	ठा १सू ४७, ठा ७३ ३सू ४८८
संस्थानानुपूर्वी	७१७	३	३६१	अनु सू ७१
संहनन (संघयण) छः	४७०	२	६६	पत्र प. २३३ २६३, ठा ६८. ३ सू ४६८, कर्म भा. १गा ३८-३६
संहनन नारकी जीवों का	५६०	२	३३७	जी प्रति. ३ सू ८७
संहरण के अयोग्य सात	५३०	२	२६६	प्रव. द्वा २६१ गा १०१६
मकडाल (सहाल) पुत्रश्रावक	६८५	३	३१६	उपा. अ. ७
मकाम मरण	५३	१	३१	उत्त. अ. १गा २

१ गुरुपुत्र अर्थात् खगुटे हुए हाथ या भाजन आदि में दिये जाने वाले आहार को ही ग्रहण करने वाला साधु ।

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सचित्त योनि	६७	१ ४८	{ तत्त्वार्थश्रद्ध्या. २सू. ३३, ठा ३ उ. १सू. १४०
सचित्ताचित्त योनि	६७	१ ४८	
सच्चैत्यागी का स्वरूप	६६४	७ १८८	
बताने वाली दो गाथाएँ			
सतियाँ सोलह	८७५	५ १८५-	ठा. ६उ. ३सू. ६६ १टी. भा. अ १६,
		३७५	त्रि. प. पर्व १, २, ७, ८, १०, पचा.
			१६गा ३१, राज. चन्दन, भरत.
			गा ८-१०, भाव ह.
सतियों के लिये प्रमाण	८७६	५ ३७५	
भूत शास्त्र			
सत् असत् पक्षद्रव्यों में	४२४	२ ६	प्रागम.
सत्ता	२५३	१ २३७	कर्म. भा. २ गा. १ व्याख्या
सत्ताईस कथा औत्पत्तिकी	६४६	६ २४२	नं सू. २७गा. ६२-६५
बुद्धि पर			
सत्ताईस गाथा सुयगडांग	६४६	६ २३०	सूय. अ. १४
सूत्र के १४वें अध्ययन की			
सत्ताईस गाथा सुयगडांग	६४७	६ २३६	सूय अ ५उ १
सूत्र के पाँचवें अ० के १८० की			
सत्ताईस गुण साधु के	६४५	६ २२८	सम. २७, भाव ह. अ. ८पृ ६१६,
			उत्त. अ. ३१गा १८
सत्ताईस नाम आकाश के	६४८	६ २४१	भ. अ. २०उ. २सू. ६६४
सत्ता का स्वरूप	६४	१ ४४	तत्त्वार्थश्रद्ध्या ५सू. २६
सत्ताधिकारकर्मप्रकृतियों	८४७	५ ६६	कर्म. भा. २गा. २६-३४
का गुणस्थानों में			
सत्तावन भेद संवर के	१०१२	७ २८०	नव गा २०
सत्त्व (जीव का एक नाम)	१३०	१ ६८	ठा. ५सू. ४३०, भ. अ. २उ. १सू. ८८

विषय	वोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
सत्त्व गुण	४२५ २ २२	आगम
सत्य	३५१ १ ३६५	ठा ५सू ३६६, ध अवि ३श्लो ४६ टी पृ १२७, प्रव द्वा ६६गा. ५४४
सत्य (श्रमण धर्म)	६६१ ३ २३४	नव गा २३, सम १०, शा भा. १ प्रक ८
सत्य पर चौदह गाथाएं	६६४ ७ १७२	
सत्य भाषा	२६६ १ २४६	पत्र प ११सू १६१
सत्य महाव्रत की पाँच भावनाएं	३१८ १ ३२५	आचाधु २चू ३अ. २४सू १७६, सम २५, आव ह अ ४पृ ६५८, प्रव द्वा. ७२गा ६३७, ध अवि. ३श्लो ४४ टी पृ १२४
सत्य वचन के दस प्रकार	६६८ ३ ३६८	अ १०उ ३सू ७४१, पत्र प ११सू. १६५, ध अवि ३श्लो. ४१ टी पृ १२१
सत्य वचन में भी क्या विवेक होना चाहिए?	६८३ ७ १०७	प्रश्न सवर द्वार २ सू २४, सूय. अ ६गा २३
सत्याणुव्रत (स्थूल मृपा- वाद विगमण व्रत)	३०० १ २८८	आव ह. अ ६पृ ८००, ठा ५उ १सू ३८६, उपा अ. १सू. ६, ध. अवि २श्लो २६पृ ५८
सत्याणुव्रत के पाँच अति-चार	३०२ १ २६४	उपा अ १सू ७, ध अवि २श्लो ४४पृ १०१, आव ह अ ६पृ ८२०
सत्यामृषा भाषा	२६६ १ २४६	पत्र प ११सू १६१
सत्यामृषा भाषा के दस प्रकार	६६६ ३ ३७७	ठा १०सू ७४१, पत्र. प. ११सू १६५, ध अवि ३श्लो ४१ टी पृ १२२
सत्रह गाथाएं भगवानमहावीर की तपश्चर्या विषयक	८७८ ५ ३८०	आचाधु १अ ६उ. ४
सत्रह गाथाएं विनय समाधि अध्ययन की	८७७ ४ ३७७	अ ६उ १

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सत्रह द्वार शरीर के	८८१	५ ३८५	पत्र प २१
सत्रह प्रकार का मरण	८७६	५ ३८२	सम १७, प्रव द्वा १५७ गा १००६
सत्रह प्रकार का संयम	८८४	५ ३६३	सम १७, प्रव द्वा ६६ गा ५५६, आव ह प्र ४८ ६५१
सत्रह प्रकार का संयम	८८५	५ ३६५	प्रव द्वा ६६ गा ५५५
सत्रह प्रकार की विहायोगति	८८२	५ ३८६	पत्र प १६ मृ २०४
सत्रह बातें चरम शरीरी को	८८६	५ ३६५	ध वि अ ७ या ८ मृ ४८४-४८६
प्राप्त होती हैं			
सत्रह बातों की अपेक्षा अवै-	४६७	२ २२३	
दिक दर्शनों की परस्पर तुलना			
सत्रह बातों की अपेक्षा वैदिक	४६७	२ २१४	
दर्शनों की परस्पर तुलना			
सत्रह माया के नाम	८८०	५ ३८५	सम १२ (मोहनीय के ५ नामों में)
सत्रह लक्षण भाव श्राव रु के	८८३	५ ३६२	व अ धि २ ग्लो २२ टी पृ ४६
१ सदा विग्रहशीलता	४०५	१ ४३२	उत्त अ ३६ गा २६४, प्रव द्वा ७३ गा ६४५
सत्रहणा चार	१८६	१ १४२	उत्त अ २८ गा २८, ध अ धि २ ग्लो २२ टी पृ ४३
सद्वाल (सकडाल) पुत्र श्राव रु के	८८५	३ ३१६	उपा अ ७
सनत्कुमार चक्रवर्ती	८१२	४ ३८४	वि प पर्व ४ स ७
सनत्कुमार देवलांक का वर्णन	८०८	४ ३२१	पत्र प २ मृ ४३
सन्तोष सुख	७६६	३ ४५४	ठा १० उ ३ मृ ७३७
सन्मति (महावीर)	७७०	४ ८	जैन विद्या बोध म १ न १

१ प्राप्ति भाषणा का एक भेद, हमेना लड़ाई मत्त में करते रहना, करने के बाद पश्चात्ताप न करना, दुःख के समाने पर भी प्रसन्न न होना और सदा विरोध भाव रखना ।

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
सपर्यवसित श्रुत	८२२ ५ ८	नं सू ४३, विशेष गा ६३७-६४८
सप्तभंगी	५६३ २ ४३५	सयश्रु २अ.६मा १०-१२ टी. आगम, रत्ना परि-४, स्या का. २३, सप्त.
सप्तमासिकी भिक्खुपडिमा ७६५	४ २८६	सम. १२, भ श. २३ १सू. ६३ टी, दशा द. ७
सप्त स्वर सीभर	५४० २ २७४	अनुसू. १२७गा ४६-६०, अ. ७ उ ३ सू ५६३
सप्तदेशीअप्तदेशीके १४बोल ८४१	५ ३४	भ श ६उ. ४ सू. २३६
सभिक्खु अ०की २१ गाथा ६१६	५ १२६	दश अ. १०
सभिक्खु अ० की १६गाथा ८६२	५ १५२	उत्त अ. १५
सप्त (सप्तकित का लक्षण) २८३	१ २६३	ध अधि २श्लो २२टी. पृ. ४३
सप्तकित	२ १ २	प्रवद्वा. १४६गा. ६४०, तत्त्वार्थ. अध्या १, पंचा. १गा ३
सप्तकित की छः भावना ४५४	२ ५८	प्रवद्वा. १४८गा ६४०, ध. अधि. २श्लो. २२टी. पृ. ४३
सप्तकित की तीन शुद्धियां ८२	१ ६०	प्रवद्वा १४८गा ६३२
सप्तकित के छः आगार ४५५	२ ५८	उपा अ १सू ८, आव द. अ. ६५ ८१०, ध अधि. २श्लो २२टी पृ ४१
सप्तकित के छः स्थान ४५३	२ ५७	ध अवि २श्लो २२टी. पृ. ४६, प्रवद्वा. १४८ गा. ६४१
सप्तकित के तीन लिंग ८१	१ ५६	प्रवद्वा. १४८गा. ६२६
सप्तकित के दो प्रकार से तीन भेद	८० १ ५८	त्रिगे गा २६७५, द्रव्यलो. स. ३ श्लो. ६६८-६७०, ध अधि २ श्लो २२ टी पृ. ३६, प्रवद्वा. १४६गा ६४३-६४४, कर्म. भा. १गा १४, आ. प्रगा. ४६-५०

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
समकित के पाँच अतिचार	२८५	१ २६५	उपा अ १सू ७, आब.ह पृ ८१०
समकित के पाँच भूषण	२८४	१ २६४	ध अधि २२लो २२टी पृ ४३
समकित के पाँच भेद	२८२	१ २६१	कर्म.भा १ गा १५
समकित के पाँच लक्षण	२८३	१ २६३	ध अधि २२लो २२टी पृ ४३
समचतुरस्र संस्थान	४६८	२ ६७	ठा ६सू ४६६, कर्म भा १ गा ४०
समपादयुता (निषद्या)	३५८	१ ३७२	ठा ६सू ३६६टी, ठा ६सू ४००
समभिरूढ़ नय	५६२	२ ४१७	अनुसू १६२ गा १३६, रत्ना. परि ७सू ३६
‘समयं गोयम मा पमायण’	६८४	७ १३३	उत्त अ १०
काउपदेशदेनेवाली	३७	गाथा	
समय	७३	१ ५३	ठा ३उ २सू १६५
समय	५५१	२ २६२	जवत्त २सू १८
समयक्षेत्र के ३६ कुल पर्वत	६८६	७ १४४	सम ३६
समवतार	४२७	२ २७	अनुसू ७०
समवायांग सूत्र का संक्षिप्त	७७६	४ ११४	
विषय वर्णन			
समवायी कारण	३५	१ २३	विशे गा २०६६
समाचारी दस	६६४	३ २४६	भ ग २५उ ७सू ८०१, ठा १० उ ३सू ७४६, उत्त.अ २६ गा ०-७, प्रवृद्धा १०१ गा ७६०
समाचार्यनुपूर्वी	७१७	३ ३६१	अनुसू ७१
समाधि	६०१	३ ११८	यो, रा यो.
समाधि अ० की २४ गाथा	६३२	६ १६७	सूय.श्रु १अ १०
समाधिका फल	५५३	२ २६५	दश अ ६उ.४
समारम्भ	६४	१ ६७	ठा ३उ १सू १२४

विषय	बाल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
समारोप कालक्षण और भेद	१२१	१	८५	रत्ना परि १, न्यायप्र. अध्या ३
समास के द्वन्द्व आदि सात भेद	७१६	३	४०१	अनुसू १३०
समिति	२२	१	१६	उत्त अ २४ गा २
समिति की व्याख्या और	३२३	१	३३०	पम १, अ. ५ सू ४७, उत्त अ २०
उमके भेद				गा २, अ. अवि ३१ लो ४७ पृ. १३०
समुच्छिन्न क्रिया अप्रति-	२२५	१	२१०	अवि ह. अ ४ अध्याय गत रुगा. ८२.
पाती शुक्ल ध्यान				ठा ४३ १ सू २४७, ज्ञान. प्रक.
				४२, क भा २ श्री २१७
समुच्छेदवादी	५६१	३	६४	ठा ८ उ ३ सू ६०७
समुद्धान कर्म	७६०	३	४४२	आचा. म २ उ १ नि गा १८३
समुद्धान नारकी जीवों में	५६०	२	३३८	जी प्रति ३ सू. ८८
समुद्धान सात	५४८	२	२८८	पत्र १ ३६ सू ३३१, ठा ७ सू.
				६८१, प्रवक्षा २३१ गा १३११
				१३१६, हव्यलो म ३ पृ १२४
१ समुद्देशानुज्ञाचार्य	३४१	१	३५२	व पथि ३१ लो. १६ टी पृ १२
समुद्रपाल मुनि	८१२	४	३८५	उत्त अ. २१
समुद्रपालीय अ० की गाथाएं	७८१	४	२५५	उत्त अ. २१ गा १३-२४
समूह प्रत्यनीक	४४५	२	५०	अ श ८ उ ८ सू ३३६
सम्पदा आठ	५७४	३	११	दशा ६ ८, ठा. ८ उ ३ सू ६०१
सम्भोग वारह	७६६	४	२६२	निर्दी उ ५, मम १२, व्यव. म
				उ ६ भाष्य गा ४८-४०
सम्मत सत्य	६६८	३	३६८	ठा १० सू ७४१, पत्र १ ११
				१६१, ध अवि ३१ लो ४१ पृ १

१ श्रुति की वाचना देने वाले गुरु के न होने पर श्रुति को स्थिर परिचित करने

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाणा
सम्पत्ति स्थावरकाय	४१२	१ ४३८	ठा ५७ १ सू ३६३
सम्पदा प्रतिलेखना	४४६	२ ५४	ठा ६सू ५०३, उत्त अ २६गा २६
सम्पूर्द्धिम जन्म	६६	१ ४७	तत्त्वार्थ अध्या. २सू ३२
सम्पूर्द्धिम मनुष्यों के उत्प	८२६	५ १८	पन्न प १सू ३७, अनुसू १३३
त्ति स्थान चौदह			
सम्पूर्द्धिम वनस्पति	४६६	२ ६६	दश अ ४सू १
सम्पूर्द्धिम वायु	४१३	१ ४३६	ठा ५७ ३ सू ४४४
सम्गोष्ठी भावना के प्र प्रकार	४०६	१ ४३२	उत्त अ ३६गा २६५टी, प्रव द्वा. ७३ गा ६४६
सम्यक्चारित्र	७६	१ ५७	उत्त अ २८गा ३०, तत्त्वार्थ अध्या. १
सम्यक्चारित्र	४६७	२ १८४	
सम्यक्त्व के उपबृंहणा	८२१	४ ४६५	नवपद गा १८टी सम्यक्त्वा-
आचार पर श्रेणिक की कथा			विकार
सम्यक्त्व के कौत्तादोष के	८२१	४ ४५५	नवपद गा. १८ टी सम्यक्त्वा-
लिए कुशध्वज का दृष्टान्त			विकार
सम्यक्त्व के चार प्रकार से	१०	१ ८	प्रव द्वा १४६गा ६४२, कर्म भा.
दो दो भेद			१गा. १५, तत्त्वार्थ अध्या १, पन्न
			प १ सू ३७, ठा २७ १सू ७०
सम्यक्त्व के जुगुप्सा दोष	८२१	४ ४५८	नवपद. गा १८ टी सम्यक्त्वा-
के लिये दुर्गन्धा का उदाहरण			विकार
सम्यक्त्व के दो प्रकार से	८०	१ ५८	दिशे गा. २६७५, द्रव्यलो. स
तीन भेद			श्लो ६८-७०, ध अधि. २श्लो
			२२टी पृ ३६, आप्र गा ४६-
			५०, प्रव द्वा १४६गा ६४३-
			६४५, कर्म भा. १ गा. १५, १७

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
सम्यक्त्वकेपरपाषंडप्रशंसा ८२१	४ ४६१	नवपद गा १८टी सम्यक्त्वा- धिकार
दोष पर सयडाल की कथा		
सम्यक्त्वके प्रभावना आ- ८२१	४ ४८५	नवपद गा १८ टी सम्यक्त्वा- धिकार
चारपरविष्णुकुमारकीकथा		
सम्यक्त्व के लिये १३ दृष्टान्त ८२१	४ ४२२	नवपद ७ वां सम्यक्त्व द्वार
सम्यक्त्वकेवात्सल्यआचार ८२१	४ ४८१	नवपद गा. १८टी सम्यक्त्वा- धिकार
केलिये वज्रस्वामी का दृष्टान्त		
सम्यक्त्व के विचिकित्सा ८२१	४ ४५६	नवपद गा १८ टी सम्यक्त्वा- धिकार
दोष के लिये महेश्वरदत्त वणिक का दृष्टान्त		
सम्यक्त्व के शंका दोष के ८२१	४ ४५३	नवपद गा. १८ टी सम्यक्त्वा- धिकार, ज्ञा अ ३
लिये मयूराण्ड, सार्थवाह की कथा		
सम्यक्त्व के स्थिरीकरण ८२१	४ ४६६	नवपद. गा १८ टी सम्यक्त्वा- धिकार, उत्त अ. २ (कथा)
आचार के लिये आर्यापाद आचार्य का दृष्टान्त		
सम्यक्त्वप्राप्तिके दसबोल ६६३	३ ३६२	उत्त अ २८ गा. १६-२७
सम्यक्त्व प्राप्तिके लिए ८२१	४ ४३४	नवपद गा १४टी, ज्ञा अ १८
चिलाती पुत्र की कथा		
सम्यक्त्व प्राप्ति के लिये ८२१	४ ४४६	नवपद. गा. १६ सम्यक्त्वाधिकार
धन सार्थवाह की कथा		
सम्यक्त्व प्राप्ति के लिये ८२१	४ ४२३	नवपद गा १२८
श्रेयांसकुमार की कथा		
सम्यक्त्व भ्रष्ट होने पर ८२१	४ ४४४	ज्ञा. अ. १३, नवपद गा १४
नन्द मणियार की कथा		

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
सम्यक्त्व मार्गणा और भेद ८४६	५ ५८	कर्म भा ४ गा १३
सम्यक्त्व सामायिक १६०	१ १४४	विशे गा २६७३-२६७७
सम्यग्ज्ञान ७६	१ ५७	उत्त अ २८, तत्त्वार्थ, अध्या. १ सू १
सम्यग्ज्ञान ४६७	२ १६८	
सम्यग्ज्ञान पर सात गाथा ६६४	७ १६०	
सम्यग्दर्शन ७७	५ ५५	भ श ८ उ २ सू ३२०, ठा ३ सू. १८४
सम्यग्दर्शन ७६	१ ५७	उत्त अ. २८, तत्त्वार्थ, अध्या १ सू १
सम्यग्दर्शन ४६७	२ १६६	
सम्यग्दर्शन पर दस गाथा ६६४	७ १५८	
सम्यग्दर्शन सराग के दस ६६४	३ ३६४	ठा १० सू. ७४१, पत्र प १ सू ३७
प्रकार		
सम्यग्मिथ्यादृष्टिगुणस्थान ८४७	५ ७३	कर्म भा २ गा २
सम्यक्श्रुत ८२२	५ ७	न सू ४१, विशे गा ४२७ ४३६
सयहालकी कथा पर पापंढ-८२१	४ ४६१	नवपद गा १८ टी सम्यक्त्वा-
प्रशंसा दोष के लिये		धिकार
सयोगी केवली गुणस्थान ८४७	५ ८५	कर्म भा २ गा २ व्याख्या
सरदहतलायसे सणया ८६०	५ १४६	उपा अ १ सू ७, भ श ८ उ ४
कर्मादान		सू ३३०, आ व ह अ ६ पृ ८२८
सराग सम्यग्दर्शन दस ६६४	३ ३६४	ठा १० सू ७४१, पत्र प १ सू ३७
सर्वअवसन्न (ओसन्ना माधु ३४७	१ ३५८	आ व ह अ ३ नि गा ११०७ पृ
का भेद)		४१७, प्रव द्वा २ गा १०६
सर्वचारी मच्छ ४१०	१ ४३७	ठा ४ उ ३ सू ४५३
सर्वदेशघाती प्रकृतियों ८०६	४ ३४७	कर्म भा ४ गा १३, १४

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सर्वप्राणभूतजीवसत्त्वकार	२६८	१	२८५	ठा ५उ.२सू.४२६-४३०
समारंभ न करने से होने				
वाला पाँच प्रकारका संयम				
सर्वप्राणभूतजीवसत्त्व के	२६७	१	२८४	ठा ५ उ २ सू ४२६-४३०
आरंभ से होने वाला पाँच				
प्रकार का असंयम				
सर्वबन्ध	५२	१	३०	कर्म भा १ गा ३५ व्याख्या
सर्वरत्न निधि	६५४	३	२२१	ठा ६उ ३सू ६७३
सर्व विरति रूप सामायिक	६८३	७	१०७	भ.श.१उ ३सू ३७ टी
वाले को पोरिसी आदि प्रत्या-				
ख्यानों की क्या आवश्यकता है?				
सर्वविरतिसाधु के	३मनोरथ ८६	१	६४	ठा.३उ.४सू २१०
सर्व विरति सामायिक	१६०	१	१४४	विशे.गा २६७३-२६७७
सर्व विस्तार अनन्तक	४१८	१	४४२	ठा ५उ.३सू.४६२
सर्वसमाधिप्रत्यय आगार	४८३	२	६८	भावद्व.अ ६ पृ ८५२, प्रव.द्वा ४
(पोरिसी का आगार)				गा २०३
सर्व स्रोतचारी भिक्षु	४११	१	४३७	ठा ५उ.३सू ४६३
सर्वोपधि लब्धि	६५४	६	२६०	प्रव.द्वा ७० गा १४६२
सहसाकार आगार	४८३	२	६७	भावद्व.अ ६ पृ ८५२, प्रव.द्वा ४
सहस्रारदेवलोकका वर्णन	८०८	४	३२३	पद्मप २ सू ५३
सहायता विनयके चार प्रकार	२३६	१	२१७	दशा ४४
सांख्य दर्शन	४६७	२	१४४	
सांशयिक मिथ्यात्व	२८८	१	२६७	कर्म भा ४ गा ६१, ध.अधि.२
				श्लो.२२ टी.पृ.३६

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
सांसारिकनिधिके ५ प्रकार	४०७ १ ४३३	ठा ५७ ३ सू ४४८
सागरोपम	३२ १ २२	ठा २७ ४ सू ६६
सागरोपम के तीन भेद	१०६ १ ७८	अनु. सू १३८-१४०, प्रव. द्वा. १५६ गा १७२७-१७३२
सागारियागार (एगट्टाण ५१७ २ २४७ का आगार)		आव ह अ. ६ पृ ८५३, प्रव. द्वा ४ गा २०४
सागारी (शय्यादाता) अवग्रह	३३४ १ ३४५	भ श १६७. २ सू ५६७, प्रव. द्वा ८५ गा ६८१, आचा शु २ चू १ अ. ७७ २ सू १६२
साठ नाम अहिंसा (दया) के	६२२ ३ १५१	प्रश्न संवरद्वार १ सू. २१
साडीकम्मे कर्मादान	८६० ५ १४४	उपा अ १ सू ७, भ श ८७. ५ सू ३३०, आव ह अ ६ पृ ८२८
साहेपचीस आर्य क्षेत्र	६४२ ६ २२३	प्रव. द्वा २७५ गा. १५८७-६२, पत्र. प १ सू ३७, वृ ७ १ नि गा ३२६३
सात अवग्रह प्रतिमाएं	५१८ २ २४८	आचा शु २ चू १ अ ७७ २ सू १६१
सात आगार एगट्टाण के	५१७ २ २४७	आव ह अ ६ पृ ८५३, प्रव. द्वा ४
सात आगार पुरिमड्ड (दो ५१६ २ २४६ पोरिसी) के		आव ह अ ६ पृ ८५२, प्रव. द्वा ४ गा २०३
सात आयु भेद	५३१ २ २६६	ठा ७७ ३ सू ५६१
सात एकेंद्रियरत्नचक्रवर्ती के	५२६ २ २६५	ठा ७७ ३ सू ५५७
सात कर्मों का एक साथ बन्ध होने पर बन्ध के विशेष कारण से विशेष कर्म का बन्ध होना कैसे संगत हो सकता है?	५६० ३ ८३	तत्त्वार्थ (सु०) अध्या ६ सू २६ व्याख्या.
सात का संहरण नहीं होता	५३० २ २६६	प्रव. द्वा २६१ गा. १४१६

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
सात कुलकर आगामी उत्सर्पिणी के	५११ २ २३६	ठा ७उ.३ सू.५६, सम १५६
सात कुलकरगत उत्सर्पिणी के	५१२ २ २३६	ठा ७उ ३ सू.५६, सम १५७
सात कुलकर वर्तमान अवसर्पिणी के	५०८ २ २३७	ठा ७उ ३ सू.५६, सम १५७ जै भा २४.३६२
सात गणापक्रमण	५१५ २ २४४	ठा ७ उ ३ सू ४४१
सात गाथा त्रिनयसमाधि अध्ययन के चौथे उद्देशे की	५५३ २ २६३	दश.अ ६उ.४
सात नय	५६२ २ ४११	अनुसू. १५२, प्रव द्वा. १२४ गा. ८४७, ८४८, विशेष. गा २१८०- २२७८, रत्ना परि ७, तत्त्वार्थ अन्या १, द्रव्यतत्त्व अध्या ५-८, न्यायप्र अध्या ५, आगम, नय, नयप्र, नयवि, नयो आलाप,
सात नरक	५६० २ ३१४	जी.प्रति. ३ सू. ६६-६४, प्रव द्वा १७२-१८४, भा.श. १.७, १४, १८, २६, ३०, पक्ष २०, ३४, प्रश्न म ४
सात निक्षेप अनुयोग के	५२६ २ २६२	विशे. गा. १३८५-१३६२
सात निहव	५६१ २ ३४२	विशे. गा २३००-२६२०, आष ह अ १ गा ७७८ ७८८, भा.श १ उ. १, भा.श. ६उ ३३, ठा ७ सू. ५८७
सात पंचेंद्रियरत्नचक्रवर्ती के	५२८ २ २६५	ठा ७ उ ३ सू ५५७
सात पञ्चाभास	५४६ २ २६१	रत्ना परि. ६ सू ३८-४६
सात षड्विद्याँ	५१३ २ २३६	ठा. ३व. ३ सू. १७७ टी.
सात पानैषणा	५२० २ २५०	{ आचाशु २चू १म १उ ११ सू ६०, ठा. ७उ ३ सू ५४५, प्र अधि. ३ श्लो २२ टी पृ. ४५
सात पिण्डैषणा	५१६ २ २४६	

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
सात पुद्गलपरावर्तन	५४६ २ २८४	ठा.३सू.१६३टी, भ.श.१२३४ सू.४४६, प्रचद्वा २गा ३६टी, कर्म भा.६गा ८७ ८८, प्रचद्वा १६२
सात पृथ्वी के नाम व गोत्र	५६० २ ३१५	जी.प्रति ३सू.६७, प्रचद्वा.१७२
सात प्रकार का अप्रशस्त काय विनय	५०४ २ २३३	भ.श.२५७ ७ सू.८०२, ठा ७ उ ३सू.५८५, उव.सू.२०
सात प्रकार का अप्रशस्त मन विनय	५०० २ २३१	भ.श.२५७ ७ सू.८०२, ठा ७ उ.३सू.५८५
सात प्रकार का अप्रशस्त वचन विनय	५०२ २ २३२	भ.श.२५७ ७ सू.८०२, ठा ७ उ ३सू.५८५
सात प्रकार का काययोग	५४७ २ २८६	भ.श.२५७ १सू.७१६, कर्म भा ४गा २४, द्रव्यलो स ३पृ ३५८
सात प्रकार का प्रशस्त काय विनय	५०३ २ २३२	भ.श.२५७ ७ सू.८०२, ठा ७ उ ३सू.५८५, उव.सू.२०
सात प्रकार का प्रशस्त मन विनय	४६६ २ २३१	भ.श.२५७ ७ सू.८०२, ठा ७ उ ३सू.५८५
सात प्रकार का प्रशस्त वचन विनय	५०१ २ २३२	भ.श.२५७ ७ सू.८०२, ठा ७ उ ३सू.५८५
सात प्रकार का लोकोप- चार विनय	५०५ २ २३३	भ.श.२५७ ७ सू.८०२, ठा ७ उ.३सू.५८५, उव.सू.२०, ध. अधि ३श्लो ५४टी पृ ४१
सात प्रकार का विनय	४६८ २ २२६	
सात प्रकार की दण्डनीति	५१० २ २३८	ठा ७ उ ३सू.५५७
सात प्रकार के सब जीव	५५० २ २६२	ठा ७ उ ३सू.५६२
सात प्रकार श्लक्ष्ण बादर	५४५ २ २८४	पत्र ५ १सू.१४
पृथ्वी काय के		

विषय	शोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सात प्रमाद प्रतिलेखना	५२१	२ २५१	उत्तम २६गा.२७
सात प्राणायाम	५५६	२ ३०२	यो प्रका ६, रा यो , दृष्ट, पी ५
सात फल चिन्तन के	५०७	२ २३५	आप्र.गा. ३६३
सातवातेंछद्वयस्थकेअविषय	५२५	२ २६१	ठा ७३ ३सू ५६७
सातवातों से केवली जाना	५२४	२ २६१	ठा.७३.३ सू ५६०
जा सकता है			
सात वातों से छद्वयस्थ जाना	५२३	२ २६०	ठा ७३३ सू ५६०
जा सकता है			
सात बोल सूत्र सुनने के	५०६	२ २३४	विशे.गा ५६५, सम ७
सात भंग	५६३	२ ४३५	सुय भु.२अ.५गा.१० १२टी., आगम,मस,रत्ना परि ४, स्या का २३
सात भयस्थान	५३३	२ २६८	ठा ७३.३ सू ५४६, सम ७
सात भेद अविरोद्धानुप	५५६	२ २६८	रत्ना परि.३सू ६४-१०२
लब्धि हेतु के			
सात भेद काल के	५५१	२ २६२	ज वन २ सू.१८
सातभेद विरोद्धोपलब्धि के	५५५	२ २६६	रत्ना परि ३ सू ८३-६२
सात भेदव्युत्सर्ग के	५५७	२ ३००	उवम २०
सात महानदियों	५३८	२ २७०	ठा ७३ ३सू.५५५
सात महानदियाँ	५३६	२ २७०	ठा ७३३ सू ५५५
सात मूलगोत्र	५४२	२ २७६	ठा.७३ ३ सू ५५१
सात लक्षणा द्रव्य के	५२७	२ २६३	विशे.गा २८
सात वचन विकल्प	५५४	२ २६५	ठा ७३ ३सू ५८४
सात वर्तमान अवसर्पिणी	५०६	२ २३८	ठा.७३ ३ सू ५५६, सम. १२७
के कुलकरोँ की भार्याओंकेनाम			

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सात वर्षधर पर्वत	५३७	२ २७०	ठा. ७३. ३सू ५५५, सम ७
सातवादी (सुखवादी)	५६१	३ ६४	ठा. ८३ ३सू ६०७
सातवास (क्षेत्र) जम्बू- द्वीप में	५३६	२ २६६	ठा ७३ ३सू ५५५, सम. ७, तत्त्वार्थ अध्या ३सू १०
सात विकथा	५३२	२ २६७	ठा. ७३ ३ सू ५६६
सात विभंगज्ञान	५५८	२ ३०१	ठा ७३. ३ सू ५४२
सातव्यक्तियों (भ० मल्लिनाथ आदि) ने एकसाथ दीक्षा ली	५४३	२ २७७	ठा ७३ ३सू ५६४
सात व्यसन	६१८	६ १५५	ज्ञा. अ १८सू १३७, वृ. उ १नि. गा ६४०, गौ कु.
सात श्रेणी	५४४	२ २८२	ठा ७सू ५८१, अश २५सू ७३०
सात संग्रहस्थान आचार्य तथा उपाध्याय के	५१४	२ २४२	ठा. ५३ १सू ३६६, ठा ७३ ३ सू ५४४
सात संस्थान	५५२	२ २६३	ठा १सू ४७, ठा ७३ ३सू ५४८
सात समुद्रघात	५४८	२ २८८	पन्न प २६ सू ३३१, ठा. ७ सू ५८६, प्रव द्वा २३१ गा १३११- १३१६, प्रत्यलो स ३पृ १२४
सात सेनापति शक्रेन्द्र के	५४१	२ २७६	ठा ७३ ३सू ५८२
सात स्थान दुपमाजानने के	५३४	२ २६८	ठा ७३ ३ सू ५५६
सात स्थान सुपमाजानने के	५३५	२ २६६	ठा ७३ ३ सू ५५६
सात स्थान स्थविरकल्प के	५२२	२ २५१	विशे गा ७
१ सात स्वर	५४०	२ २७०	ठा ७३ ३सू ५५३, अनुसू १२७
साता और असाता वेदनीय	५६०	३ ६१	पन्न प २३सू २६२
का अनुभाव आठ आठ प्रकार का			

१ इस बोल के अन्तर्गत जो इक्कीस मूर्खनाएँ छपी हैं उनके सम्बन्ध में पृष्ठ २६१ पर टिप्पणी देखो।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
साता गौरव (गारव)	६८	१	७०	ठा ३३ ४५ २१४
साता वेदनीय	५१	१	३०	पत्र प २३ सू २६३, कर्म भा १ गा १२
साता वेदनीय कर्म बाँधने के दम बोल	७६१	३	४४३	भग ७३ ६ सू २८६
साता वेदनीय की जघन्य स्थिति अन्तर्गृहृत की या वारह गृहृत की ?	६१८	६	१३६	उत्त अ ३३ गा १६-२०, पत्र प २३ सू २६४
साता वेदनीय की जघन्य स्थिति दो तरह किस विवक्षा से कही गई है ?	६१८	६	१३६	उत्त अ ३३ गा १६-२०, पत्र प २३ सू २६४
सादिश्रुत	८२२	५	८	नं सू ४३, निशे गा ४३७-४४८
सादि संस्थान	४६८	२	६८	ठा ६ सू ४६४, कर्म भा १ गा ४०
साधर्मिक अवग्रह	३३४	१	३४५	भग १६३ २ सू ४६७, प्रन द्वा ८४ गा ६८१, आचा ध्रु २ सू १ म ७३ २
साधु	२७४	१	२५६	भग गलाचरण
साधु आलोचना करने योग्य के दम गुण	६७०	३	२५८	भग २६३ ७ सू ७६६, ठा १० उ ३ सू ७३३
साधु आलोचना देने योग्य के दम गुण	६७१	३	२५६	भग २६३ ७ सू ७६६, ठा १० उ ३ सू ७३३
साधुओं की सेवा भक्ति के परम्परा फल दस	७०८	३	३८३	ठा ३३ ३ सू १६०
साधु और सोने की आठ गुणों से समानता	५७१	३	६	पत्रा १८ गा ३२-३४

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
साधुका पाँच कारणों से ३३८ १ ३४८	ग ४३, २ सू ४१५	
राजा के अन्तःपुर में प्रवेश		
साधुका स्वरूप बतानेवाली ८६२ ५ १५२	उत्त अ. १५	
सभिवरु अ० की १६ गाथाएं		
साधुका स्वरूप बतानेवाली १६ ६ १२६	दश. अ १०	
सभिवरु अ० की २१ गाथाएं		
१ साधुकी अवग्रह प्रतिमा सात ५१८ २ २४८	आचा भु. २ चू. १ अ ७ उ २	
साधु की इकतीस उपमाएं ६६२ ७ ४	प्रश्न सवरद्वार ५ मू २६, उव सू १७	
साधु की बारह उपमाएं ८०५ ४ ३०६	अनु सू १५० गा १३१	
साधु की चारह पडिमाएं ७६५ ४ २८५	सम. १२, भ श २ उ १, दशा द ७	
साधु की समाचारी दस ६६४ ३ २४६	भ. श २५ उ ७ सू ८०१, ठा १०	
	उ ३ सू ७४६, उत्त अ. २६ गा	
	२-७, प्रव द्वा १०१ गा ७६०-६७	
साधु के अठारह कल्प ८६० ५ ४०२	सम १८, दश अ ६ गा ८-६६	
साधु के आहार ग्रहण करने ६६३ ३ २४२	प्रव द्वा ६७ गा ५६८, पि नि गा	
के दस दोष	५२०, ध अ धि ३ श्लो २२ टी	
	पृ. ४२, पचा १३ गा २६	
२ साधु के आहार संबंधी १००० ७ २६५	पि नि गा ६६६	
सैंतालीस दोष		
साधु के इक्कीस शवल दोष ६१३ ६ ६८	सम २१, दशा द २	
साधु के उतरने योग्य तथा ६२३ ६ १७०	आचा भु २ चू १ अ २ उ २	
अयोग्य स्थान तेईस		

१ मकान, वस्त्र, पात्र आदि वस्तुएं लेने में विशेष प्रकार की मर्यादा धारण करना ।
 २ आहार के सैंतालीस दोषों में एक दायक दोष है । इसके चालीस भेद हैं ।
 वे ४० भेद श्री जैन सिद्धान्त बोल सग्रह के तीसरे भाग के बोल नं. ६६३ में दिये गये हैं ।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
साधु के चारित्र्य को दूषित करने वाले दस उपघात दोष	६६८	३	२५४	ठा. १०३ सू. ७३८
साधु के तीन मनोरथ	८६	१	६४	ठा. ३३४ सू. २१०
साधु के दस कल्प	६६२	३	२३४	पचा. १७ गा. ६-४०
साधु के पाँच महाव्रत	३१६	१	३२१	दश. अ. ४, ठा. ५३ सू. ३८६, प्रव. द्वा. ६६ गा. ५५३, अधि. ३ ग्लो. ३६-४४ पृ. १२०-१२४
साधु के बाईस परिपह	६२०	६	१६०	सम. २०, उत्त. अ. २, प्रव. द्वा. ८६ गा. ६८५, सत्त्वार्थ मध्या. ६ सू. ६
साधु के वारह विशेषण	८०६	४	३१४	ध. वि. सू. ३६६
१ साधु के वारह सम्भोग	७६६	४	२६२	निशी. उ. ५, सम. १०, व्यव. उ. ५ भाष्य गा. ५०
साधु के वाचन अनाचीर्ण	१००७	७	२७२	दश. अ. ३
साधु के बीस कल्प	६०४	६	६	वृ. उ. १
साधु के मलादिपरठने के लिये दस विशेषण वाला स्थण्डिल	६७६	३	२६४	उत्त. अ. २४ गा. १६-१८
साधु के लिये अकल्पनीय चौदह वार्ते	८३४	५	२६	वृ. उ. ३ सू. १६-२१
साधु के लिये, आवश्यक आदि क्रिया के समय उनकी उपेक्षा कर क्या ध्यानादि करना उचित है?	६१८	६	१४३	दश. अ. ५ उ. २ गा. ५, गुण. ओ. ३०
साधु के लिये आवश्यक बात	४६७	२	१६८	

१ समान गमाचारी वाले साधुओं का सम्मिलित आहार आदि व्यवहार सम्भोग कहलाता है ।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
साधु को कल्पनीयग्रामादि ८६७	५	१६६	वृ. १५६	
सोलह स्थान				
साधु को कौनसा वादकिस ६१८	६	१५७	अष्ट १२, उत्त (क) अ. १६ (कथा)	
के साथ करना चाहिये ?				
साधु ग्लान की सेवा करने ७६७	४	२६७	प्रव. द्वा. ७१ गा. ६२६-६३४,	
बालेवारह और अड़तालीस			नवपद. सलेखनाद्वारा गा. १०६	
साधु द्वारा आहार करने ४८४	२	६८	उत्त अ. २६ गा. ३२-३३, पि. नि	
के छः कारण			गा. ६६२	
साधु द्वारा आहार त्याग ४८५	२	६८	उत्त. अ. २६ गा. ३४, पि. नि.	
करने के छः कारण			गा. ६६६	
साधु द्वारा साध्वी को ग्रहण ३४०	१	३५१	ठा. ५३.२ सू. ४३७	
करने या सहारा देने के प्रबोल				
साधु मंगलकारी लोको- १२६क	१	६४	आव. ह. अ. ४ पृ. ५६६	
त्तम और शरण रूप है				
साधु योग्य १४ प्रकार का दान ८३२	५	२६	मि. ला., आव. ह. अ. ६ पृ. ८४६	
साधु वचन आगार ४८३	२	६८	आव. ह. अ. ६ पृ. ८४२, प्रव. द्वा. ४	
साधु साध्वी के एक जगह ३३६	१	३४६	ठा. ५३.२ सू. ४१७	
स्थान शय्या निषद्या के प्रकार				
साधु साध्वी के साथ चार १८३	१	१३७	ठा. ५३.२ सू. २६०	
कारणों से आलाप संलाप				
करता हुआ निर्ग्रन्थाचार				
का अतिक्रमण नहीं करता				
साध्य	४२	१	२७	रत्ना परि ३ सू. १४
सानक वस्त्र	३७४	१	३८६	ठा. ५३.३ सू. ४४६

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
सान्निपातिक भाव छः	४७४ २ ८१	अनु सू १२६, ठा ६३ ३ सू ५३७, कर्म भा ४गा ६४-६६
सान्निपातिक भाव के	४७४ २ ८१	अनु सू १२६, ठा ६३ ३ सू ५३७, कर्म भा ४गा ६४ ६६
छब्बीस भंग		
सान्निपातिक भाव के भंग	४७४ २ ८३	अनु सू १२६, ठा ६३.३ सू ५३७, कर्म भा ४गा ६४-६६
२६में से जीवों में पाये जाने		
वाले छः भंग		
सापेक्ष यतिधर्म के विशेषण ८०६	४ ३१४	ध वि सू ३६६ पृ. ७५
साप्तपदिक व्रत का दृष्टान्त ७८०	४ २४६	आव ह गा. १३४ वृ पीठिका नि गा १७२
भाव अननुयोग पर		
सामन्तोपनिपातिकी	२६४ १ २७६	ठा. २३ १ सू ६०, ठा ५३ २ सू ४१६ आव ह अ ४ पृ ६१२
(सामन्तोवर्णिया) क्रिया		
सामानिक	७२६ ३ ४१५	तत्त्वार्थ अध्या ४ सू ४
सामान्य	४१ १ २६	रत्ना परि ५ सू १, स्या का. ४
सामान्य के दो प्रकार से दो	५६ १ ४१	रत्ना परि ५ सू ३-५, रत्ना परि ७ सू १५-१६
भेद		
सामान्य गुण छः	४२५ २ १६	आगम द्रव्य त अध्या ११ श्लो २-४
सामान्य विशेष	५६ १ ४१	रत्ना परि ५ सू ३-५
सामायिक आवश्यक	४७६ २ ६०	आव ह अ. १
सामायिक औग्ग्वेरोपम्या-६८३	७ ११८	भ श १३ ३ सू ३७टी पृ ६०
पनिक चाग्नि अलग अलग		
क्यों कहे गये हैं ?		
सामायिक कल्प स्थिति	४४३ २ ४५	ठा ३३ ४ सू २०६, ठा ६३.३ सू ५३०, वृ (जी) ठ ६

विषय	श्लोक	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सामायिक की व्याख्या और उसके भेद	१६०	१	१४३	ध. १. अ. वि. २. श्लो ३७ टी. पृ. ५३, विशेष ग. २६७३-२६७७
सामायिक के चार भेद	४३१	२	३८	विशेष ग. २७०८-२७१०
सामायिक के वृत्तीय दोष ७७	७	४३		जित्ता
सामायिक चारित्र	३१५	१	३१६	ठा. उ. १. सू. ४२८, अनु. सू. १४६, विशेष ग. १२६०-१२६७
सामायिक चारित्र के अन्तः ४४३	२	४५		ठा. उ. ४. सू. २६६ टी., ठा. ६
व्यवस्थित कल्प छः				उ. सू. ५३० टी.
सामायिक चारित्र के	४४३	२	४५	ठा. उ. ४. सू. २६६ टी., ठा. ६
अवस्थित कल्प चार				सू. ५३० टी.
सामायिक में १२ कायादोष ७८६	४	२७३		शिक्षा.
सामायिक में दमन दोष ७६४	३	४४७		जित्ता
सामायिक में दमन वचन दोष ७६५	३	४४८		जित्ता.
सामायिक व्रत	१८६	१	१४०	आ. १. अ. १. पृ. ३१, पं. १ ग. १५
सामायिक व्रत के ५ अतिचार ३०६	१	३०६		उपा. अ. १, आ. १. अ. १ पृ. ३१
सामायिक व्रत निश्चय और ७६४	४	२८४		भागम
व्यवहार से				
सामायिक भाव प्रमाण नाम ७१६	३	४०१		अनु. १. ३०-
सामाजिक दृष्टि नामक	५६१	२	३५८	विशेष ग. २३८६-२४२३
चार्थ निहय का मत				
सामुदायिक क्रिया	२६६	१	२८२	ठा. उ. १. सू. ६०, ठा. ५३ सू. ४१६, आ. १. अ. १ पृ. १६, सू. ५. अ. २ नि. ग. १६८ टी.
साम्यवाद	४६७	२	२१३	
सारीषधीधजन के अवलोकन ११७	१	८३		ठा. उ. ४. सू. १६८

११८ १५ १३

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सास्वादान समकित	२८२	१ ३६१	कर्म भा १ गा १५५।
सास्वादानसम्यग्दृष्टिगुण	०८४७	५ ७३	कर्म भा २ गा २ प्याख्या
माहरिय दोष (आहार का दोष)	६६३	३ २४३	प्रव द्वा ६७ गा ५६८ पृ. १४८, २ ११० पिसि गा ५२६, पचा १३ गा २६६, ४ अधि ३५ लो २२, टी पृ ४११
सिद्ध	७५	१ ४	ठा. २३ ४ सू १०१, तत्त्वार्थ अध्या २
सिद्ध	२७४	१ २५२	भमंगलाचरण
सिद्ध भगवान् के आठ गुण	५६७	३ ४	अनु सू १२६ पृ ११५, प्रव द्वा. २७६ गा १५६ वे-६४, सम. ३१
सिद्ध भगवान् के इकतीस गुण दो प्रकार से	६६१	७ २	उत्त अ. ३१ गा ३० टी, प्रव द्वा. २७६ गा १५६ ३-१५६४, सम ३१, आचा अ. ५३ ६ सू १७०, आव. ह अ ४ पृ. ६६२
सिद्ध मंगलकारी लोकोत्तम और शरण रूप है	१२६६	१ ६४	आव ह अ ४ पृ ६६६
सिद्ध शिला और अलीक के बीच कितना अन्तर है?	६१८	६ १३५	भ श १४३ ८ सू ५२७ टी.
सिद्ध शिला के आठ नाम	६७६	३ १२६	पत्र प २ सू ५४, ठा ८ उ ३ सू. ६४८, उत्त अ ३६ गा ५६-६२
सिद्धों का अल्पवहुत्व	८४६	५ १२१	पत्र प १ सू ७
सिद्धों के अल्पवहुत्व के ३३ बोल	६७६	७ ६६	सं सू २० टी पृ १२५
सिद्धों के पन्द्रह भेद	८४६	५ ११७	पत्र प १ सू ७
सीता सती	८७५	५ ३२१	विष पर्व ७
सुसुमा, त्रिलावी पुत्र की कथा	६००	५ ४७०	ज्ञा अ १८
सुकाली रानी	६८६	३ ३३८	अत व ८ अ. २

विषय	वोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सुकृष्णा रानी	६८६	३ ३४३	अंतव ८ अ ६
सुख दस	७६६	३ ४५३	ठा. १०७ ३सू ७३७
सुख विपाक की दस कथाएँ	१०	६ ५३-६०	विअ ११-२०
सुख शय्या चार	२५६	१ २४१	ठा. ४७ ३सू. ३२५
सुजात कुमार की कथा	६१०	६ ५८	विअ १३
* सुहुदिनं	८२४	५ १५	भाव ह अ ४ पृ ७३०
सुधर्मा सभा	३६७	१ ४२१	ठा. ५७. ३सू ४७२
सुधर्मास्वामी गणधर के, 'जो जैसा है, परभवमें वह वैसा ही रहता है' मतका समाधान	७७५	४ ४०	विशे. गा. १७७०--१८०१
सुन्दरी (सती)	८७५	५ १६	• विप पर्व १-२, भाव ह. नि गा. ३४८
सुन्दरीनन्द की पारिणा- मिकी बुद्धि की कथा	६१५	६ १०५	भाव ह गा. ६५०, न सू २७ गा. ७३
सुपर्ण कुमार के दस अधिपति	७३३	३ ४१८	भ श ३३. ८सू १६६
सुप्रत्याख्यान	५४	१ ३२	भ श ७३ २सू २७१
सुवाहु कुमार की कथा	६१०	६ ५३	विअ ११
सुबुद्धि व जितशत्रु की कथा	६००	५ ४५८	ज्ञा अ. १२
सुभद्रा सती	८७५	५ ३४०	दश अ. १ नि. गा. ७३-७४
सुगदेव श्रावक	६८५	३ ३१३	उपा अ ४
सुलभ बोधि	८	१ ७	ठा. २८. २ सू ७६
सुलभ बोधि के पाँच बोल	२८७	१ २६६	ठा ५७ २ सू ४२६
सुलसा	६२४	३ १६६	ठा. ६७ ३सू ६६१
सुलसा सती	८७५	५ ३१३	भाव ह नि. गा १२८४, ठा ६७. ३ सू ६६१ टी

विषय	चोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
सुवासव कुमार की कथा	६१० ६ ५८	विश्र. १४
सुश्रामण्यता	७६३ ३ ४४६	ठा १०३ ३ सू. ७५८
सुषमदुषमा आरा अवस-	४३० २ ३१	जं वक्त २ सू. २७-३३, ठा ६
पिंणी का		उ ३ सू. ४६२
सुषमदुषमा आरा उत्स-	४३१ २ ३७	जं वक्त २ सू. ३७-४०, ठा ६
पिंणी का		उ ३ सू. ४६२
सुषम सुषमा आरा अव-	४३० २ ३०	ज वक्त २ सू. १६-२६, ठा ६
सपिंणी का		उ ३ सू. ४६२
सुषम सुषमा आरा उत्स-	४३१ २ ३८	ज वक्त २ सू. ३७-४०, ठा. ६
पिंणी का		उ ३ सू. ४६२
सुषमा आरा अवसपिंणी का	४३० २ ३०	जं वक्त. २ सू. २६, ठा. ६ सू. ४६२
सुषमा आरा उत्सपिंणी का	४३१ २ ३८	जं वक्त. २ सू. ३७-४०, ठा ६ सू. ४६२
सुषमा काल जानने के स्थान	५३५ २ २६६	ठा ७३३ सू. ६५६
सूक्ष्म	८ १ ५	ठा. २३. १ सू. ७३
सूक्ष्म क्रिया अनिवर्ती	२२५ १ २१०	आव. द्व. अ ४ ध्यानशतक गा.
शुक्ल ध्यान		८१, ठा. ४३. १ सू. २४७, ज्ञान.
		प्रक. ४२, क भा २ श्लो २१६
सूक्ष्म जीव आठ	६११ ३ १२८	दश. अ. ८ गा १५, ठा ८ सू. ६१५
सूक्ष्म दस	७४६ ३ ४२३	ठा १०३ ३ सू. ७१६
सूक्ष्म पुद्गल	४२६ २ २५	दश अ ४ भाष्य गा ६० टी.
सूक्ष्म बादर पुद्गल	४२६ २ २५	दश अ ४ भाष्य गा. ६० टी
सूक्ष्मसम्पराय गुणस्थान	८४७ ५ ८२	कर्म भा. २ गा २
सूक्ष्मसम्पराय चारित्र	३१५ १ ३२०	ठा ५३ ३ सू. ४२८, अनुसू १०४,
		विशे. गा १२६०-१२८०
सूक्ष्म सूक्ष्म पुद्गल	४२६ २ २५	दश अ ४ भाष्य गा ६० टी.

विषय	वोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
सूत्र की वाचना देने के ५ वोल ३८२	१ ३६८	ठा. ५ उ ३ सू. ४६८
सूत्र के वत्तीस दोष तथा	६६७ ७ २३	अनुसू. १६१ टी., विज्ञे. गा. ६६६ टी., आठ गुण वृ. पीठिका नि. गा. २७८-२८७
सूत्र के बारह भेद	७७८ ४ २३५	वृ. १ नि. गा. १२२१
१ सूत्रधर पुरुष	८४ १ ६१	ठा. ३ उ ३ सू. १६६
सूत्र पढ़ने के वत्तीस अस्त्रा-६६८	७ २८	ठा. सू. २८५, ७१४, प्रव. द्वा. २६८ गा. १४५०-१४७१, व्यव. भा. उ. ७ नि. गा. २६६-३१६, आव. द्वा. ४ नि. गा. १३२१-६०
सूत्र पढ़ाने की मर्यादा और ५१४	२ २४३	ठा. ५ उ १ सू. ३६६, ठा. ७ सू. ४४४, दीक्षा पर्याय व्यव. भा. उ. १० सू. २१-३५
सूत्र वत्तीस	६६६ ७ २१	
सूत्र रुचि	६६३ ३ ३६३	उत्त. अ. २८ गा. २१
सूत्र श्रुत धर्म	१६ १ १५	ठा. २ उ १ सू. ७२
सूत्र सीखने के पाँच स्थान ३८३	१ ३६६	ठा. ५ उ ३ सू. ४६८
सूत्र सुनने के सात षोड	५०६ २ २३४	विज्ञे. गा. ६६६
२ सूत्र स्थविर	६१ १ ६६	ठा. ३ उ ३ सू. १५६
सूत्रागम	८३ १ ६०	अनुसू. १४४
सूत्र गहांग सूत्र के ग्यारहवें	६८५ ७ १३६	सूत्र अ. ११
मार्गाध्ययन की ३८ गाथाएं		
सूत्र गहांग सूत्र के चौथे अ. ६६३	७ ८	सूत्र अ. ४ उ १
प्रथम उ० की ३१ गाथाएं		

१ सूत्र को धारण करने वाला शास्त्र पाठक पुरुष सूत्रधर कहलाता है ।

२ दशगाण और नमोऽयाम सूत्र के ज्ञाता सात सूत्रस्थविर कहलाते हैं ।

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
सूयगढांग सूत्र के चौदहवें	६४६ ६ २३०	सूय अ १४
अध्ययनकी २७ गाथाएं		
सूयगढांग सूत्र के तेईस	६२४ ६ १७३	
अध्ययनों के नाम		
सूयगढांगसूत्र के दसवें	६३२ ६ १६७	सूय अ १०
समाधि अ०की २४ गाथाएं		
सूयगढांगसूत्र के दूसरे अ०	६७४ ७ ५६	सूय अ २३ २
के दूसरे उ०की ३२ गाथाएं		
सूयगढांग सूत्र के नववें धर्मा-	६८१ ७ ८७	सूय अ ६
अध्ययन की छत्तीस गाथाएं		
सूयगढांग सूत्र के पाँचवें	६४१ ६ २१६	सूय अ ५३ २
नरयविभक्ति अ० के दूसरे		
उद्देशे की पचीस गाथाएं		
सूयगढांग सूत्र के पाँचवें	६४७ ६ २३६	सूय अ ५३ १
नरयविभक्ति अ० के पहले		
उ०की सत्ताईस गाथाएं		
सूयगढांगसूत्र के प्रथमद्वितीय	७७६ ४ ७६	
दोनों श्रुतस्कन्धों के तेईस		
अध्ययनों का विषय वर्णन		
सूयगढांगसूत्र के वीरस्तुति	६५५ ६ २६६	सूय अ ६
अध्ययन की उनतीस गाथाएं		
सूर्यप्रज्ञासि सूत्र के वीसप्राभृतों	७७७ ४ २३०	
का संक्षिप्त विषय वर्णन		
सेठ (कालसेठ) की पारि-	६१५ ६ ७८	न.मू. २७ गा ७२, आव. ह. गा ६४६
णामिकी बुद्धि की कथा		

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सेवार्त्तक (खेवट्ट) संहनन	४७०	२	७०	पत्र.प. २३ सू. ७६३, ठा. ६७.३ सू. ४६४, कर्म मा. १ गा. ३६
१ सैंतालीसदोषआहारके	१०००	७	२६५	पि. नि. गा. ६६६
सैंतीसगाथाएं उत्तराध्ययन	६८४	७	१३३	उत्त. प्र. १०
मूत्र के दसवें अध्ययन की				
२ सोपक्रम आयु	३०	१	२१	तत्त्वार्थ. अध्या. २ सू. ५२, भ. अ. २० उ. १० सू. ६८५
३ सोपक्रम कर्म	२७	१	१६	वि. प्र. ३ सू. २० टी.
सोलह उत्पादना दोष	८६६	५	१६४	{ प्रव. द्वा. ६७ गा. ५६५-५६८, ध. अ. वि. ३ श्लो २२ टी. पृ. ३८, पि. नि. गा. ४०८, ४०९, ६२, ६३, पि. वि. गा. ४८, ५६, ३४, पचा. १३ गा. १८-१९, ५-६
सोलह उद्गम दोष	८६५	५	१६१	
सोलहगाथाएं उत्तराध्ययन	८६२	५	१५२	उत्त. प्र. १५
मूत्र के पन्द्रहवें अध्ययन की				
सोलहगाथाएं दशवैकालिक	८६१	५	१४७	दश. च. २
मूत्र की दूसरी चूलिका की				
सोलहगाथाएं बहुश्रुतसाधु	८६३	५	१५५	उत्त. प्र. ११ गा. १३-३०
की उपमा की				
सोलहगाथाएं भगवान् महा-	८७४	५	१८२	आचा. प्र. ६३ २
वीर की वसतिविषयक				
सोलहगुणदीक्षालेनेवालेके	८६४	५	१५८	ध. अ. वि. ३ श्लो ७३-७८ पृ. १
सोलह नाम मेरु पर्वत के	८७०	५	१७१	सम. १६, अं. ज. च. अ. १०६
सोलह भंग आभवआदिके	८६८	५	१६८	भ. अ. १६ उ. ४ सू. ६४४

१ पृष्ठ ३२१ की टिप्पणी देखो। २ जो आयु पूरी होगे जिना आयु दृष्टने के नात कारणों में से किसी कारण से असमय में ही दृष्ट जाय। ३ जिस कर्म का फल उपदेना आदि से नात हो जाय।

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सोलह भेद वचन के	८६६	५ १७०	पत्र प ११ सू १७३, आचाश्रु २ चू १ अ १३ उ १
सोलह महायुग्म	८७१	५ १७२	भश ३ उ १ सू ८४६
सोलह विशेषणद्रव्यावश्यक के	८७२	५ १७६	अनु सू १३, विशेष गा ८४१-४७
सोलह सतियां	८७५	५ १८५-	ठा ६ उ ३ सू ६६ १ टी, ज्ञा अ १६, ३७५ त्रिष पर्व १, २, ७, ८, १०, पचा १६ गा ३१, चन्दन, राज, भरत गा ८-१०, आव ह
सोलह सतियों के लिये	८७६	५ ३७५	
प्रमाण भूत शास्त्र			
सोलह स्थान (ग्रामादि) साधु	८७७	५ १६६	वृ उ १ सू ६
के लिये कल्पनीय हैं			
सोलह स्वम चन्द्रगुप्तराजा के	८७३	५ १७८	व्यव चू हस्तलिखित
और उनका फल			
सौधर्म देवलोक का वर्णन	८०८	४ ३१६	पत्र प २ सू ४२
सौर्यदत्त की कथा	६१०	६ ४६	वि अ ८
१ स्कन्ध बीज	४६६	२ ६६	दश अ ४
स्तनित कुमार के दस अधिपति	७४०	३ ४२०	भश. ३ उ ८ सू १६६
स्तम्भ की कथा औत्पतिकी	६४६	६ २६६	नं सू २७ गा ६३ टी.
बुद्धि पर			
२ स्तिबुक संकेत पञ्चक्खाण	५८६	३ ४३	आव ह अ ६ गा १६७८, प्रव. द्वा ४
स्तूप की कथा पारिणा-	६१५	६ ११७	उत्त (क) अ १ गा ३ टी, निर., न.
मिकी बुद्धि पर			सू २७ गा ७४, आव ह गा ६५१

१ जिस वनस्पति का स्कन्ध भाग बीज का काम देता है, जिसे शल्लकी आदि ।

२ पञ्चक्खाण करने में एक तरह का संकेत, पानी रखने के स्थान पर पड़ी हुई वृद्धे जब तक सूख न जाय अथवा जब तक ओस की वृद्धे न सूखें तब तक का पञ्चक्खाण ।

विषय	पौल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
स्तोक	५५१	२	२६३	जंबवत्.२ सू.१८
स्नानार्थाद्धि निद्रा	४१६	१	४४३	पञ्च प.२८, कर्म भा. १ गा. ११-१२
स्त्री कथा के चार भेद	१४६	१	१०७	ठा १३२ सू. २८२ टी.
स्त्री कथा से होनेवाली हानि	१४६	१	१०८	ठा १३२ सू. २८२ टी.
स्त्री की कथा औत्पत्तिकी	६४६	६	२६८	न.ज.२७ गा. ६३ टी.
बुद्धि पर				
स्त्री के गर्भ में जीव उत्कृष्ट	६१८	६	१४१	भग. २७ सू. १०१, प्रवद्वा.
कितने काल तक रहता है?				२४१-२८० गा. १३६०
स्त्री तीर्थंकर आश्रये	६८१	३	२७८	ठा १०३ सू. ७७७, प्रवद्वा. १३८
स्त्री लिंग सिद्ध	८४६	५	११६	पञ्च प. १ सू. ७
स्त्री वेद	६८	१	४६	वृत्त ४, कर्म भा. १ गा. २२
स्थण्डिल के चार भांगे	१८२	१	१३७	उत्त प्र. २४ गा. १६
स्थण्डिल के दस विशेषण	६७६	३	२६४	उत्त प्र. २४ गा. १६-१८
स्थलचर	४८६	१	४३६	पञ्च प. १ सू. ३०, उत्त प्र. ३६ गा. १७०
स्थविर कल्प का क्रम	५२२	२	२५१	विजि गा. ७
स्थविर कल्प के १२ विशेषण	८०६	४	३१४	घ. वि. सू. ३६६
स्थविर कल्प स्थिति	४४३	२	४७	ठा ३७ सू. २०६, ठा ६३ सू. ४३०, घृ. (जी) उ६
स्थविर कल्पीयथालन्दिक	५२२	२	२६०	विजि गा. ७
स्थविर कल्पी माधुओं के	८३३	५	२८	पञ्च प. गा. ७०१-७०६
लिये १४ प्रकार के उपकरण				
स्थविर तीन	६१	१	६६	ठा ३३ सू. १४६
स्थविर दस	६६०	३	२३२	ठा. १०३ सू. ७६१
स्थविर पद्मी	५१३	२	२४०	ठा. ३३ सू. १७७ टी.

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
स्थान तेईस साधु के उतरने	६२३ ६ १७०	आचाश्रु २८० १ अ. २ उ २
योग्य तथा अयोग्य		
स्थान परिहरणोपघात	६६८ ३ २५६	ठा १० उ ३ सू ७३८
१ स्थानातिग	३५७ १ ३७१	ठा ५ उ १ सू ३६६
स्थापन दोष	८६५ ५ १६२	प्रव द्वा ६७ गा ५६५, ध अधि ३ ग्लो २० टी पृ ३८, पि नि गा ६२, पि नि गा ३, पचा १३ गा ५
स्थापना अनन्तक	४१७ १ ४४१	ठा ५ उ ३ सू ४६२
स्थापना कर्म	७६० ३ ४४१	आचा अ २ उ १ नि गा १८३
स्थापना दोष	३४७ १ ३५६	आव ह अ ३ नि गा ११०७ पृ. ५१७, प्रव द्वा २ गा १०६
स्थापना निक्षेप	२०६ १ १८७	अनुस १५०, न्यायप्र अध्या ६
स्थापनानुपूर्वी	७१७ ३ ३६०	अनु सू ७१
स्थापनानुयोग	५२६ २ २६२	विशे गा १३६०
स्थापनाप्रमाणनामके ७ भेद	७१६ ३ ४००	अनुसू १३० गा ८५
स्थापनार्थ	७८५ ४ २६६	वृ उ १ नि गा ३२६३
२ स्थापना सत्य	६६८ ३ ३६६	ठा १० सू ७४१, पत्र ११ सू १६५, ध अधि ३ श्लो ४१ पृ १२१
स्थापिता आरोपणा	३२६ १ ३३५	ठा ५ उ २ सू ४३३
स्थावर	८ १ ५	ठा २ उ ४ सू १०१
स्थावरकाय पाँच	४१२ १ ४३७	ठा. ५ उ १ सू ३६३

१ अतिशय रूप से स्थान अर्थात् कायोत्सर्ग करने वाला साधु ।

२ सङ्ग या विसदृश आकार वाली वस्तु में किसी की स्थापना करके उसे उस नाम से कहना स्थापना सत्य है । जैसे गतरज के मोहरों को हाथी घोड़ा आदि कहना अथवा 'क' इस आकार विशेष को 'क' कहना ।

विषय	घोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
स्तोक	५५१	२	२६३	ज.वृत्त.२ सू.१८
स्थानशुद्धि निद्रा	४१६	१	४४३	पत्र प २३, कर्म भा १ गा. ११-१२
स्त्री कथा के चार भेद	१४६	१	१०७	ठा ४३२ सू २८२ टी.
स्त्रीकथा से होनेवाली हानि	१४६	१	१०८	ठा ४३२ सू २८२ टी.
स्त्री की कथा औत्पत्तिकी	६४६	६	२६८	नम.२ अगा ६३ टी
शुद्धि पर				
स्त्री के गर्भ में जीव उत्कृष्ट	६१८	६	१४१	भश २३.४ सू १०१, प्रवद्वा.
कितने काल तक रहता है?				२४१-२४२ गा १३६०
स्त्रीनिर्धकर आश्चर्य	६८१	३	२७८	ठा.१०३ ३मू ७७७, प्रवद्वा. १३८
स्त्रीलिंग सिद्ध	८४६	५	११६	पत्र प १मू.७
स्त्री वेद	६८	१	४६	वृत्त ४, कर्म भा १ गा २२
स्थण्डिल के चार भांगे	१८२	१	१३७	उत्त अ २४ गा. १६
स्थण्डिल के दस विशेषण	६७६	३	२६४	उत्त अ २४ गा १६-१८
स्थलचर	४०६	१	४३६	पत्र प १मू. ३२, उत्त अ ३६ गा. १७०
स्थविर कल्प का क्रम	५२२	२	२५१	जिं गा ७
स्थविरकल्प के १२ विशेषण	८०६	४	३१४	व वि सू ३६६
स्थविर कल्पस्थिति	४४३	२	४७	ठा ३३४ सू २०६, ठा ६३ ३मू ५३०, घु (जी) उ.६
स्थविरकल्पीयथालन्दिक	५२२	२	२६०	जिं गा. ७
स्थविरकल्पी साधुओं के	८३३	५	२८	पंच त गा ७७३-७७६
लिये १४ प्रकार के उपकरण				
स्थविर तान	६१	१	६६	ठा ३३.३मू १४६
स्थविर दम्	६६०	३	२३२	ठा १०३ ३मू ७६१
स्थविर पदवी	५१३	२	२४०	ठा ३३.३मू १७७ टी.

विषय	बोल भाग पृष्ठ		प्रमाण
स्थान तेईस साधु के उत्तरने ६२३ ६ १७०			आचाधु. २२० १ अ २ उ २
योग्य तथा अयोग्य			
स्थान परिहरणोपघात	६६८ ३ २५६		अ १० उ ३ सू ७३८
१ स्थानातिग	३५७ १ ३७१		अ ५ उ १ सू ३६६
स्थापन दोष	८६५ ५ १६२		प्रव द्वा ६ अगा ५६५, ध अघि ३ श्लो २२टी पृ ३८, पि निगा ६२, पि विगा ३, पचा १३ गा ५
स्थापना अनन्तक	४१७ १ ४४१		अ ५ उ ३ सू ४६२
स्थापना कर्म	७६० ३ ४४१		आचा अ २ उ १ निगा १८३
स्थापना दोष	३४७ १ ३५६		आव ह अ ३ निगा ११०७ पृ. ५१७, प्रव द्वा २ गा १०६
स्थापना निक्षेप	२०६ १ १८७		अनुसू १५०, न्यायप्र अध्या ६
स्थापनानुपूर्वी	७१७ ३ ३६०		अनु सू ७१
स्थापनानुयोग	५२६ २ २६२		विशे गा १३६०
स्थापनाप्रमाणनामके ७ भेद ७१६ ३ ४००			अनुसू १३० गा ८५
स्थापनार्य	७८५ ४ २६६		वृ उ १ निगा ३२६३
२ स्थापना सत्य	६६८ ३ ३६६		अ १० सू ७४१, पप्र ११ सू १६५, ध अघि ३ श्लो ४१ पृ १२१
स्थापिता आरोपणा	३२६ १ ३३५		अ ५ उ २ सू ४३३
स्थावर	८ १ ५		अ २ उ ४ सू १०१
स्थावरकाय पाँच	४१२ १ ४३७		अ ५ उ १ सू ३६३

१ अतिशय रूप से स्थान अर्थात् कायोत्सर्ग करने वाला साधु ।

२ सट्ठ या विसट्ठ आकार वाली वस्तु में किपी की स्थापना करके उसे उस नाम से कहना स्थापना सत्य है । जैसे गतरज के मोहरों को हाथी घोड़ा आदि कहना अथवा 'क' इस आकार विशेष को 'क' कहना ।

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
स्थावरजीवोंकीअवगाहना	६६५	७	२५२	भश १६उ ३ सू६५१
केअल्प बहुत्व के४४	वोल			
स्थिति आठ कर्मों की	५६०	३	५६-	पत्र प २३ सू २६४, तत्त्वार्थ ८२ अध्या ८, उत्त अ ३३
स्थिति की व्याख्याऔरभेद३१	१	२१		ठा २उ ३ सू ८४
स्थिति घात	८४७	५	७८	कर्म भा २गा.२
स्थिति नाम निश्चत्तायु	४७३	२	७६	भश ६उ ८ सू २५०, ठा. ६ सू ४३
स्थिति नारकी जीवों की	५६०	२	३१६	जी प्रति. ३ सू ६० टी प्रव. द्व १७५ गा. १०७४-१०७६
स्थिति प्रतिघात	४१६	१	४४०	ठा ५उ १ सू ४०६
स्थिति बन्ध	२४७	१	२३२	ठा. ४ सू २६६, कर्म भा १गा. १
स्थिरीकरण दर्शनाचार	५६६	३	८	पत्र प १ सू ३७गा १२८, उत्त अ २८गा ३१
स्थूल अदत्तादानका त्याग ३००	१	२८६		{ आव ह अ ६ पृ ८१७-८२६ ठा ५उ १ सू ३८६, उपा अ सू ६, ध अधि २ श्लो २४ पृ ५
स्थूल असत्य (मृषा) का त्याग ३००	१	२८८		
स्थूल प्राणातिपात का त्याग ३००	१	२८८		
स्थूल भद्र की पारिणामिकी ६१५	६	६५		आव ह गा. ६६०, नंमू २७गा ७
बुद्धि की कथा				
स्नातक	३६६	१	३८२	{ ठा ५उ ३ सू ४४५, भज. २ उ ६ सू. ७५१.
स्नातक के पाँच भेद	३७१	१	३८६	
स्पर्श आठ	५६७	३	१०८	ठा ८उ ३ सू. ४६६, पत्र प २
स्पर्श नारकी जीवों का	५६०	२	३३६	जी प्रति ३ सू. ८७
स्पर्शनेन्द्रिय	३८२	१	४१६	पत्र प. १५उ. १ सू १६१, ठा ५ उ. ३ सू ४४३, जै प्र.

ह

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
हरिकेशीमृनि(संवरभावना)	८१२	४ ३८६	उत्त अ १२
हरिवंशकुलोत्पत्तिआश्चर्य	६८१	३ २८४	ठा १०३ ३सू ७७७, प्रव द्वा १३८ गा ८८६
हस्ति शुण्डिका	३५८	१ ३७२	ठा ५सू ३६६टी, ठा ५सू ४००
हाड़ाहाड़ा आरोपणा	३२६	१ ३३५	ठा ५उ २सू ४३३
हानि छः प्रकार की	४२५	२ २४	आगम
हायणी अवस्था	६७८	३ २६८	ठा १०३ ३सू ७७२
हासनिःसृत असत्य	७००	३ ३७२	ठा १०सू ४४१, पत्र प. ११सू १६५, ध अधि ३श्लो ४१७ १२२
हास्य कीउत्पत्तिके४स्थान	२५७	१ २४३	ठा ४उ. १ सू २६६
हास्य रस	६३६	३ २१०	अनुसू १२६गा ७६-७७
हास्योत्पादन	४०२	१ ४२६	उत्त.अ ३६गा २६१, प्रव द्वा ७३
हिंसा का स्वरूप	४६७	२ १६०	
हिंसा के छःकारण	४६१	२ ६३	आचा श्रु १अ १उ १सू ११
हीयमान अवधिज्ञान	४२८	२ २८	ठा ६उ ३सू ५२६, नसू १३
हीलित वचन	४५६	२ ६२	ठा ६उ ३सू ५२७, प्रव द्वा २३५ गा १३२१, वृ (जी) उ ६
हुंडक संस्थान	४६८	२ ६८	ठा ६सू ४६५, कर्म भा १गा ४०
हेतु	४२	१ २७	रत्ना परि. ३ सू ११
हेतु	३८०	१ ३६७	रत्ना परि ३ सू ११
हेतुअविरुद्धानुपलब्धि के	५५६	२ २६८	रत्ना परि ३सू ६४-१०२
सात भेद			
हेतु अविरुद्धोपलब्धि के	४६५	२ १०४	रत्ना परि ३सू. ६८-८२
छः भेद			

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
हेतु दोष	७२२ ३ ४०६	ठा १०७ ३सू ७४३
हेतु विरुद्धोपलब्धिके ७ भेद ५५५	२ २६६	रत्ना परि ३सू ८३-६२
हस्व संस्थान	५५२ २ २६३	ठा १सू ४७, ठा ७३ ३सू ४४=

न्यूननाधिकमशुद्धं वा, यद्वा स्याद्वीप्रमादितम् ।

दुष्कृतं तस्य मिथ्याऽस्तु. क्षन्तव्यं तच्च ज्ञानिभिः॥

भावार्थ—श्री जैन सिद्धान्त बोल संग्रह के सात भागों में तथा उनके विषयानुक्रममूचक इस आठवें भाग में बुद्धि प्रमाद से जो न्यून, अधिक अथवा अशुद्ध लिखा गया हो उससे होने वाला पाप निष्फल हो एवं ज्ञानी पुरुष उसके लिये क्षमा करें ।

अन्तिम मंगल कामना

क्षेमं सर्वप्रजानां प्रभवतु बलवान् धार्मिको भूमिपालः ।
काले काले च वृष्टि वितरतु मघवा व्याधयो यान्तु नाशम् ॥
दुर्भिक्षं चौरमारी क्षणमपि जगतां मा स्म भूज्जीवलोके ।
जैनेन्द्रं धर्मेचक्रं प्रसरतु स्ततः सर्वसौख्यप्रदायि ॥

भावार्थ—सकल प्रजाजनों का कल्याण हो, राजा बलवान् और धर्मात्मा हो, वृष्टि यथासमय हुआ करे, सभी रोग नष्ट हो जायें, दुर्भिक्ष (दुष्काल), चोरी और महामारी आदि दुःख ससार में कभी किसी भी प्राणी को न सतावें और रागद्वेष के विजेता श्रीजिनेश्वर देव द्वारा प्रवर्तित, सर्व सृष्टियों को देने वाले धर्मचक्र का सदा सर्वत्र विस्तार हो ।

शान्ति !

शान्ति !!

शान्ति !!!

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
स्पर्श परिणाम	७५०	३	४३४	ठा १०३ ३सू ७१३, पत्र प १३
स्मृति	३७६	१	३६५	रत्ना.पदि.३ सू ३
स्याद्वाद	४६७	२	१७६, २११	
स्वदार सन्तोष व्रत	३००	१	२८६	आव ह अ ईष्ट ८२२, ठा ५३ १ सू ३८६, उपा अ. १सू. ६, ध. अधि २ श्लो २८ पृ ६६
स्वदार सन्तोष व्रत के पाँच	३०४	१	२६८	उपा. अ १सू ७ टी.
अतिचार				
स्व द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावकी	४२४	२	१२	आगम.
अपेक्षा छः द्रव्यों का वर्णन				
स्व द्रव्यादि की चौभंगी	४२४	२	१२	आगम.
जीवादि द्रव्यों में				
स्वप्न के नौ निमित्त	६३८	३	२०६	विशेष गा १७०३
स्वप्न १४ मोक्षगामी आत्मा के	२६	५	२०	भ.श १६३ ६ सू ५८०
स्वप्न (महास्वप्न) १४ तीर्थङ्कर के	३०	५	२२	भ.श १६३ ६सू ५७८, ज्ञा अ ८
चक्रवर्ती के जन्म सूचक				सू ६६, कल्पसू ४
स्वप्न दर्शन के पाँच भेद	४२१	१	४४४	भ.श. १६ ३ ६सू ६७७
स्वप्न दस भगवान् महावीर के	५७	३	२२४	भ.श. १६३ ६सू ५७६, ठा १०
के और उनका फल				उ ३सू ७४०
स्वप्न सोलह चद्रगुप्त राजा के	८७३	५	१७८	व्यव चू हस्तलिखित
के और उनका फल				
स्वभाव	२७६	१	२५७	आगम, कारणा, मम्मति भा ६ काण्ड ३ गा ५३
स्वयं बुद्ध सिद्ध	८४६	५	११७	पत्र प १सू ७

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
स्वयंनुद्ध सिद्ध और प्रत्येक ८४६	५	११८	पत्र.प. १ सू. ७ टी.
नुद्ध सिद्ध का अन्तर			
* स्वर सात	५४०	२ २७०	} अनु सू. १२७, गा. २६-४६- ठा ७३.३ सू. ४६३
स्वरों का फल	५४०	२ २७२	
स्वरों के उत्पत्ति स्थान	५४०	२ २७१	
स्वरों के तीन ग्राम	५४०	२ २७३	} अनु सू. १२७ गा. २६-४२, ठा ७३ ३ सू. ४६३, संगीत.
* स्वरों के तीन ग्राम की मूर्धना	५४०	२ २७३	
स्वलिङ्ग सिद्ध	८४६	५ ११६	पत्र.प. १ सू. ७
स्ववचन निराकृत वस्तु दोष ७२३	३	४११	ठा १०३ ३ सू. ७४३ टी.
स्व वचन निराकृत साध्य- ५४६	२	२६१	रत्ना. परि. ६ सू. ४४
धर्म विशेषण पञ्चाभास			
स्वाध्याय	४७८	२ ८६	उप. सू. २०, उत्त. अ. ३० गा. ३०, प्रव. द्वा. ६ गा. २७१, ठा ६ सू. १११
स्वाध्याय का दृष्टान्त काल ७८०	४	२४०	भाव. द्वा. नि. गा. १३३, वृ. पीठिका नि. गा. १७१
अननुयोग पर			
स्वाध्याय की व्याख्या, भेद ३८१	१	३६८	ठा ६३ ३ सू. ४६६
स्वाध्याय के पाँच भेद	६३३	३ १६५	उप. सू. २०, म. गा. २४३ ७ सू. ८०२
स्वापनी अवस्था	६७८	३ २६८	ठा. १०३. ३ सू. ७७२
स्वाभाविक गुण	५५	१ ३३	द्रव्यत. अध्या. १२ ग्लो ८
स्वार्थानुमान	३७६	१ ३६६	रत्ना. परि. ३ सू. १०
स्वाहस्ति की (साहतिपया) २६४	१	२७६	ठा. २३ १ सू. ६०, ठा ६३. २ सू. ४५६
क्रिया			
स्वेद संकेत पञ्चखाण	५८६	३ ४३	भाव. द्वा. अ. ६ नि. गा. १६७८, प्रव. द्वा. ४ गा. २००

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सुवासव कुमार की कथा	६१०	६ ५८	वि. अ. १४
सुश्रामण्यता	७६३	३ ४४६	अ. १० उ. ३ सू. ७५८
सुषमदुषमा आरा अचस-	४३०	२ ३१	जं. वल २ सू. २७-३३, ठा. ६
पिंणी का			उ. ३ सू. ४६२
सुषमदुषमा आरा उत्स-	४३१	२ ३७	जं. वल २ सू. ३७-४०, ठा. ६
पिंणी का			उ. ३ सू. ४६३
सुषम सुषमा आरा अव-	४३०	२ ३०	जं. वल २ सू. १६-२६, ठा. ६
सर्पिणी का			उ. ३ सू. ४६२
सुषम सुषमा आरा उत्स-	४३१	२ ३८	जं. वल २ सू. ३७-४०, ठा. ६
पिंणी का			उ. ३ सू. ४६२
सुषमा आस अत्र सर्पिणी का	४३०	२ ३०	जं. वल २ सू. २६, ठा. ६ सू. ४६२
सुषमा आरा उत्सर्पिणी का	४३१	२ ३८	जं. वल २ सू. ३७-४०, ठा. ६ सू. ४६२
सुषमा काल जनने के ७ स्थान	५३५	२ २६६	ठा. ७ उ. ३ सू. ५५६
सूक्ष्म	८	१ ५	ठा. २ उ. १ सू. ७३
सूक्ष्म क्रिया अनिवर्ती	२२५	१ २१०	आव. ४ अ. ४ ध्यान शतक गा.
शुक्ल ध्यान			८१, ठा. ४ उ. १ सू. २४७, ज्ञान.
			प्रक. ४२, क भा. २ श्लो २१६
सूक्ष्म जीव आठ	६११	३ १२८	दश. अ. ८ गा. १५, ठा. ८ सू. ६१५
सूक्ष्म दस	७४६	३ ४२३	ठा. १० उ. ३ सू. ७१६
सूक्ष्म पुद्गल	४२६	२ २५	दश. अ. ४ भाष्य गा. ६० टी.
सूक्ष्म बादर पुद्गल	४२६	२ २५	दश. अ. ४ भाष्य गा. ६० टी.
सूक्ष्मसम्पराय गुणस्थान	८४७	५ ८२	कर्म भा. २ गा. २
सूक्ष्मसम्पराय चारित्र	३१५	१ ३२०	ठा. ५ उ. ३ सू. ४२८, अनु सू. १४४,
			विशे. गा. १२६०-१२८०
सूक्ष्म सूक्ष्म पुद्गल	४२६	२ २५	दश. अ. ४ भाष्य गा. ६० टी.

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
सूत्र की वाचना देने के ५ बोल ३८२	१ ३६८	टा ५३३ सू ४६८
सूत्र के वत्तीस दोष तथा	६६७ ७ २३	अनुसू १५१ टी., विशेष. गा. ६६६ टी.,
आठ गुण		वृ. पीठिका नि गा २७८-२८७
सूत्र के चारह भेद	७७८ ४ २३५	वृ. उ. १ नि गा १२२१
१ सूत्र धर पुरुष	८४ १ ६१	टा ३३३ सू १६६
सूत्र पढ़ने के वत्तीस अस्वा-६६८	७ २८	टा म २८५, ७१४, प्रव. द्वा
ध्याय		२६८ गा १४५०-१४७१, व्यव.
		भा उ ७ नि गा २६६-३१६,
		आवह अ. ४ नि गा १३२१-६०
सूत्र पढ़ाने की मर्यादा और ५१४	२ २४३	टा ५३१ सू ३६६, टा ७ सू ४४४,
दीक्षा पर्याय		व्यव गा उ १० सू २१-३४
सूत्र वत्तीस	६६६ ७ २१	
सूत्र रुचि	६६३ ३ ३६३	उत्त अ २८ गा २१
सूत्र श्रुत धर्म	१६ १ १५	टा २३. १ सू. ७०
सूत्र सीखने के पाँच स्थान ३८३	१ ३६६	टा. ५३३ सू ४६८
सूत्र सुनने के सात षोल	५०६ २ २३४	विशे गा ५६५
० सूत्र स्थविर	६१ १ ६६	टा ३३. ३ सू. १४६
सूत्रागम	८३ १ ६०	अनुसू १४४
सूत्र गडांग सूत्र के ग्यारहवें	६८५ ७ १३६	सूत्र अ. ११
मार्गाध्ययन की ३८ गाथाएं		
सूत्र गडांग सूत्र के चौथे अ० ६६३	७ ८	सूत्र अ. ४ उ १
प्रथम उ० की ३१ गाथाएं		

१ सूत्र को धारण करने वाला नाम गाटक पुरुष सूत्रधर कहलाता है ।

२ टागांग और समवायांग सूत्र के ज्ञाता गायु सूत्रग्यवि कहलाते हैं ।

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
सूयगडांग सूत्र के चौदहवें	६४६ ६ २३०	सूय अ १४
अध्ययनकी २७ गाथाएं		
सूयगडांग सूत्र के तेईस	६२४ ६ १७३	
अध्ययनों के नाम		
सूयगडांगसूत्र के दसवें	६३२ ६ १६७	सूय अ १०
समाधि अ०की २४ गाथाएं		
सूयगडांगसूत्र के दूसरे अ०	६७४ ७ ५६	सूय अ २३ २
के दूसरे उ०की ३२ गाथाएं		
सूयगडांग सूत्र के नवें धर्मा-	६८१ ७ ८७	सूय अ ६
ध्ययन की छत्तीस गाथाएं		
सूयगडांग सूत्र के पाँचवें	६४१ ६ २१६	सूय अ ४३ २
नरयविभक्ति अ० के दूसरे		
उद्देशे की पचीस गाथाएं		
सूयगडांग सूत्र के पाँचवें	६४७ ६ २३६	सूय अ ४३ १
नरयविभक्ति अ० के पहले		
उ०की सत्ताईस गाथाएं		
सूयगडांगसूत्र के प्रथमद्वितीय	७७६ ४ ७६	
दोनों श्रुतस्कन्धों के तेईस		
अध्ययनों का विषय वर्णन		
सूयगडांगसूत्र के वीरस्तुति	६५५ ६ २६६	सूय अ ६
अध्ययन की उनतीस गाथाएं		
सूर्यप्रज्ञप्ति सूत्र के वीस प्राभृतों	७७७ ४ २३०	
का संचित विषय वर्णन		
सेठ (कालसेठ) की पारि-	६१५ ६ ७८	नसू २७ गा ७२, आठ ह गा ६ ४६
णामिकी बुद्धि की कथा		

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सेवार्चक (छेवट्ट) संहनन ४७०	२	७०		प्रम.प २३ मृ.२६३, टा.६८.३ मृ.४६४, कर्म भा. १ गा. ३६
१ सैंतालीसदोपआहारके १०००	७	२६५		पि.नि.गा ६६६
सैंतीसगाथाएं उत्तराध्ययन ६८४	७	१३३		उत्त.अ. १०
मूत्र के दसवें अध्ययन की				
२ सोपक्रम आयु	३०	१	२१	तत्त्वार्थ.प्रध्या २मृ.५२, म.श. २० उ.१०.मृ.६८५
३ सोपक्रम कार्य	२७	१	१६	विम ३मृ.२० टी.
सोलह उत्पादना दोप	८६६	५	१६४	{ प्रव.दा ६७गा. ४६५-५६८, ध.अधि ३५लो २२टी पृ ३८, पि.नि.गा ४०८, ४०६, ६२, ६३, पि.नि.गा ४८, ५६, ३-४, पंचा १३गा. १८-१६, ४-६
सोलह उद्गम दोप	८६५	५	१६१	
सोलहगाथाएं उत्तराध्ययन ८६२	५	१५२		उत्त.अ. १५
मूत्रकेपन्द्रहवें अध्ययन की				
सोलहगाथाएं दशवैकालिक ८६१	५	१४७		दश. चृ. २
मूत्र की दूसरी चूलिका की				
सोलहगाथाएं बहुश्रुतमाधु ८६३	५	१५५		उत्त.अ. ११गा. १४-३०
की उपमा की				
सोलहगाथाएं भगवान्महा-८७४	५	१८२		आचा.अ ६८ २
वीर की वसतिविषयक				
सोलहगुणदीक्षालेनेवालेके ८६४	५	१५८		ध.मधि. ३ ग्लो. ७३-७८ पृ १
सोलह नाम मेरु पर्वत के ८७०	५	१७१		सम. १६, अं.वच. मृ. १०६
सोलह भंग आभवआदिके ८६८	५	१६८		अन. १६ उ. ४ मृ. ६५४

१ पृष्ठ ३२१ की टिप्पणी देखें। २ जो आयु पूरी होगे बिना आयु दृढ़ने के सान कारणों में से किसी कारण से अगमय में ही दृढ़ जाय। ३ जिस कर्म का फल उपदेश आदि से नांत हो जाय।

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सोलह भेद वचन के	८६६	५ १७०	पन्नप ११सू १७३, आचार्य २ चू १अ. १३उ १
सोलह महायुग	८७१	५ १७२	भश ३४उ १सू ८५६
सोलहविशेषणद्रव्यावश्यकके	८७२	५ १७६	अनुसू १३, विशेष गा ८५१-५७
सोलह सतियां	८७५	५ १८५-	ठा ६उ ३सू ६६१टी, ज्ञा अ १६, ३७५ त्रिष पर्व १, २, ७, ८, १०, पचा १६ गा ३१, चन्दन, राज, भरत. गा ८-१०, आव. ह
सोलह सतियों के लिये	८७६	५ ३७५	
प्रमाण भूत शास्त्र			
सोलहस्थान(ग्रामादि)साधु	८७७	५ १६६	बृ उ १सू ६
के लिये कल्पनीय हैं			
सोलह स्वम चन्द्रगुप्तराजा	८७३	५ १७८	व्यव चू हस्तलिखित
के और उनका फल			
सौधर्म देवलोक का वर्णन	८०८	४ ३१६	पन्नप २सू. ५२
सौर्यदत्त की कथा	६१०	६ ४६	विअ ८
१ स्कन्ध बीज	४६६	२ ६६	दशअ ४
स्तनितकुमारकेदसअधिपति	७४०	३ ४२०	भश ३उ ८सू १६६
स्तम्भ की कथा औत्पतिकी	६४६	६ २६६	नसू २७ गा ६३ टी
बुद्धि पर			
२ स्तिबुकसंकेत पञ्चक्खाण	५८६	३ ४३	आव ह अ ६गा. १६७८, प्रव. द्वा ४
स्तूप की कथा पारिणा-	६१५	६ ११७	उत्त (क) अ १गा ३टी, निर, न.
मिकी बुद्धि पर			सू २७गा ७४, आव ह. गा ६५१

१ जिस वनस्पति का स्कन्ध भाग बीज का काम देता है, जैसे शलकी आदि ।

२ पञ्चक्खाण करने में एक तरह का संकेत, पानी रखने के स्थान पर पड़ी हुई वृद्धे जब तक सूखे न जाय अथवा जब तक ओस की वृद्धे न सूखें तब तक का पञ्चक्खाण ।

विषय	घोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
स्ताक	५५१	२	२६३	ज.ज.० सू १८
संन्यासगृद्धिनिद्रा	४१६	१	४४३	पञ्च प २३, कर्म भा १ गा ११-१२
स्त्री कथा के चार भेद	१४६	१	१०७	टा १८२ सू २८२ टी
स्त्रीकथा से होनेवाली हानि	१४६	१	१०८	टा १८० सू २८२ टी.
स्त्री की कथा औत्पत्तिकी	६४६	६	२६८	नंमृ २७ गा. ६३ टी
बुद्धि पर				
स्त्री के गर्भ में जीव उत्पन्न	६१८	६	१४१	भग २८ ४ सू १०१, प्रव. द्वा.
कितने काल तक रहता है?				२४१ २४२ गा १३६०
स्त्रीनीर्धक आश्चर्य	६८१	३	२७८	टा १०३ ३ सू ७७७, प्रव. द्वा. १३८
स्त्रीलिंग सिद्ध	८४६	५	११६	पञ्च प. १ मृ ७
स्त्री वेद	६८	१	४६	वृत्त ४, कर्म भा १ गा. ००
स्थण्डिल के चार भाग	१८२	१	१३७	उत्त. प्र २४ गा. १६
स्थण्डिल के दस विशेषण	६७६	३	२६४	उत्त. प्र २४ गा १६-१८
स्थलचर	४०६	१	४३६	पञ्च प १ मृ ३२, उत्त. प्र ३६ गा १७०
स्थविर कल्प का क्रम	५२२	२	२५१	विशे. गा ७
स्थविरकल्प के १२ विशेषण	८०६	४	३१४	ध वि मृ ३६६
स्थविर कल्पस्थिति	४४३	२	४७	टा ३३ श्रु २०६, टा ६३, ३ मृ ४३०, चू (जी) उ ६
स्थविरकल्पीयथालन्दिक	५२२	२	२६०	विशे. गा ७
स्थविरकल्पी माधुओं के	८३३	५	२८	पञ्च प गा ७७१-७७६
लिये १४ प्रकार के उपकरण				
स्थविर तान	६१	१	६६	टा ३८, ३ मृ १४६
स्थविर दस	६६०	३	२३२	टा १०३, ३ मृ ७६१
स्थविर पद्मी	५१३	२	२४०	टा २८ ३ मृ. १७७ टी

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
स्थान तेईस साधु के उत्तरने	६२३	६ १७०	आचाधु. २ चू १ अ २ उ. २
योग्य तथा अयोग्य			
स्थान परिहरणोपघात	६६८	३ २५६	अ १० उ ३ सू ७३८
१ स्थानातिग	३५७	१ ३७१	अ ५ उ १ सू ३६६
स्थापन दोष	८६५	५ १६२	प्र ६ ५ गा ६६५, घ अघि ३ श्लो. २२ टी पृ ३८, पि निगा ६२, पि विगा ३, पचा १३ गा ५
स्थापना अनन्तक	४१७	१ ४४१	अ ५ उ ३ सू ४६२
स्थापना कर्म	७६०	३ ४४१	आचा अ २ उ १ निगा १८३
स्थापना दोष	३४७	१ ३५६	आव ह अ ३ निगा ११०७ पृ ५१७, प्रव. द्वा २ गा १०६
स्थापना निक्षेप	२०६	१ १८७	अनुसू १५०, न्यायप्र अध्या ६
स्थापनानुपूर्वी	७१७	३ ३६०	अनु सू ७१
स्थापनानुयोग	५२६	२ २६२	विशे गा १३६०
स्थापनाप्रमाणनामके ७ भेद	७१६	३ ४००	अनुसू १३० गा ८५
स्थापनार्थ	७८५	४ २६६	वृ उ १ निगा ३२६३
२ स्थापना सत्य	६६८	३ ३६६	अ १० सू ७४१, पचा ११ सू १६५, घ अघि ३ श्लो ४१ पृ १२१
स्थापिता आरोपणा	३२६	१ ३३५	अ ५ उ. २ सू ४३३
स्थावर	८	१ ५	अ २ उ ४ सू १०१
स्थावरकाय पाँच	४१२	१ ४३७	अ ५ उ १ सू ३६३

१ अतिशय रूप से स्थान अर्थात् कायोत्सर्ग करने वाला साधु ।

२ सदृश या विसदृश आकार वाली वस्तु में किसी की स्थापना करके उसे उस नाम से कहना स्थापना सत्य है । जैसे गतरज के मोहरों को हाथी घोड़ा आदि कहना अथवा 'क' इस आकार विशेष को 'क' कहना ।

विषय	वोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
स्थावरजीवोंकीअवगाहना	६६५	७	२५२	भ.श.१६उ३ सू६५१
केअल्प बहुत्व के४४	वोल			
स्थिति आठ कर्मों की	५६०	३	५६-	पन्नप२३सू२६४, तत्त्वार्थ. ८२ अध्या ८, उत्त अ.३३
स्थिति की व्याख्याऔरभेद	३१	१	२१	ठा.२उ३ सू ८४
स्थिति घात	८४७	५	७८	कर्म भा २गा.२
स्थिति नाम निधत्तायु	४७३	२	७६	भ.श.६उ८सू२४०,ठा६सू४३६
स्थिति नारकी जीवों की	५६०	२	३१६	जी.प्रति३ सू६० टी.प्रवृद्धा. १७६ गा.१०७४-१०७६
स्थिति प्रतिघात	४१६	१	४४०	ठा४उ१ सू ४०६
स्थिति बन्ध	२४७	१	२३२	ठा४सू२६६,कर्म भा १गा ३
स्थिरीकरण दर्शनाचार	५६६	३	८	पन्न.प१सू३७गा१२८,उत्त अ २८गा.३१
स्थूल अदत्तादानका त्याग	३००	१	२८६	{ आवह.अ.६पृ८१७-८२६, ठा.४उ.१सू३८६,उपा अ १ सू६,ध.अधि.३.लो २४पृ६७
स्थूलअसत्य(मृपा)कात्याग	३००	१	२८८	
स्थूलप्राणातिपातकात्याग	३००	१	२८८	
स्थूलभद्र की पारिणामिकी	६१५	६	६५	आवह.गा.६६०,नंसू२७गा.७३
बुद्धि की कथा				
स्नातक	३६६	१	३८२	{ ठा४उ.३सू४४६,भ.श.२४ उ.६.सू.७६१
स्नातक के पाँच भेद	३७१	१	३८६	
स्पर्श आठ	५६७	३	१०८	ठा८उ.३सू४६६,पन्न प.०३
स्पर्श नारकी जीवों का	५६०	२	३३६	जी.प्रति.३ सू.८७
स्पर्शनेन्द्रिय	३६२	१	४१६	पन्न.प.१६उ.१सू१६१,ठा.४ उ.३सू.४४३, जै प्र

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
स्पर्श परिणाम	७५० ३ ४३४	ठा १०७ ३सू ७१३, पत्र प १३
स्मृति	३७६ १ ३६५	स्ना.पटि ३ सू ३
स्याद्वाद	४६७ २ १७६, २११	
स्वदार सन्तोष व्रत	३०० १ २८६	आव ह अ ६पृ ८२२, ठा ५७ १ सू ३८६, उपा अ. १सू. ६, ध. अधि २ श्लो २८ पृ ६६
स्वदार सन्तोष व्रत के पाँच	३०४ १ २६८	उपा. अ. १सू ७ टी.
अतिचार		
स्व द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावकी	४२४ २ १२	आगम.
अपेक्षा छः द्रव्यों का वर्णन		
स्व द्रव्यादि की चौभंगी	४२४ २ १२	आगम.
जीवादि द्रव्यों में		
स्वप्न के नौ निमित्त	६३८ ३ २०६	विशेष गा १७०३
स्वप्न १४ मोक्षगामी आत्मा के ८२६	५ २०	भ.श १६उ. ६ सू ५८०
स्वप्न (महास्वप्न) १४ तीर्थङ्कर ८३०	५ २२	भ.श १६उ. ६सू ५७८, ज्ञा अ. ८ सू ६६, कल्प सू ४
चक्रवर्ती के जन्म सचक		
स्वप्न दर्शन के पाँच भेद	४२१ १ ४४४	भ.श. १६ उ ६सू ५७७
स्वप्न दस भगवान् महावीर ६५७	३ २२४	भ.श. १६उ ६सू ५७६, ठा १० उ. ३सू ७५०
के और उनका फल		
स्वप्न सोलह चद्रगुप्त राजा ८७३	५ १७८	अथ च हस्तलिखित
के और उनका फल		
स्वभाव	२७६ १ २५७	आगम, कारण, सम्मति भा ६ काण्ड ३ गा ५३
स्वयं बुद्ध सिद्ध	८४६ ५ ११७	पत्र प १सू ७

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
स्वयंबुद्ध सिद्ध और प्रत्येक ८४६	५	११८	पत्र. १ मृ. ७ टी.
बुद्ध सिद्ध का अन्तर			
* स्वरमात	५४०	२ २७०	अनु सृ १२७, गा २६-४६, ठा ७३. ३ मृ. ५४३
स्वर्गों का फल	५४०	२ २७२	
स्वर्गों के उत्पत्ति स्थान	५४०	२ २७१	
स्वर्गों के तीन ग्राम	५४०	२ २७३	अनु मृ १२७ गा. २६-४७, ठा ७३ ३ मृ. ५४३, संगीत.
* स्वर्गों के तीन ग्राम की मूर्च्छना ५४०	२	२७३	
स्वर्लिंग सिद्ध	८४६	५ ११६	पत्र १ मृ. ७
स्ववचन निराकृत वस्तु दोष ७२३	३	४११	ठा १०३ ३ मृ. ७४३ टी
स्व वचन निराकृत नाध्य- ५४६	२	२६१	स्तना. परि ३ मृ. ४४
धर्म विशेषण पक्षाभास			
स्वाध्याय	४७८	२ ८६	स्व मृ २०, उक्त अ ३० गा. ३०, प्रस. द्वा ६ गा २७१, ठा. ६ मृ. ५११
स्वाध्याय का दृष्टान्त काल ७८०	४	२४०	भाव. द. नि गा १३३, मृ. गी. टिका नि गा. १७१
अननुयोग पर			
स्वाध्याय की व्याख्या, भेद ३८१	१	३६८	अ ६३ ३ मृ. ४६४
स्वाध्याय के पाँच भेद	६३३	३ १६५	उत्तर मृ २०, भ. ग. २४३ ७ मृ. ८०२
स्वापनी अवस्था	६७८	३ २६८	ठा. १०३. ३ मृ. ७७२
स्वाभाविक गुण	५५	१ ३३	द्रव्यत अथवा १२५ लो ८
स्वाधीनुमान	३७६	१ ३६६	स्तना. परि ३ मृ. १०
स्वाहस्मिन्की (साहन्धिया) २६४	१	२७६	ठा. २३ १ मृ. ६०, ठा १७३. २ मृ. ४१६
क्रिया			
स्वेद संकेत पचकत्वाण ५८६	३	४३	भाव. द. अ ६ नि. गा. १४७८, प्रस. द्वा ४ गा. २००

ह

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
हरिकेशीमुनि(संवरभावना)	८१२	४ ३८६	उत्त अ १२
हरिवंश कुलोत्पत्ति आश्चर्य	६८१	३ २८४	ठा १०३ ३सू ७७७, प्रव द्वा १३८ गा ८८६
हस्ति शुण्डिका	३५८	१ ३७२	ठा ६सू ३६६टी, ठा ६सू ४००
हाड़ाहाड़ा आरोपणा	३२६	१ ३३५	ठा ५३.२सू ४३३
हानि छः प्रकार की	४२५	२ २४	आनम
हायणी अवस्था	६७८	३ २६८	ठा १०३ ३सू ७७७
हासनिःसृत असत्य	७००	३ ३७२	ठा १०सू ४४१, पत्र प. ११सू १६५, घ अधि ३१लो ४१पृ १२२
हास्य की उत्पत्तिके ४ स्थान	२५७	१ २४३	ठा ४३ १ सू २६६
हास्य रस	६३६	३ २१०	अनुसू १२६ गा ७६-७७
हास्योत्पादन	४०२	१ ४२६	उत्त. अ ३६ गा २६१, प्रव द्वा ७३
हिंसा का स्वरूप	४६७	२ १६०	
हिंसा के छः कारण	४६१	२ ६३	आचा श्रु १अ १३ १सू ११
हीयमान अवधिज्ञान	४२८	२ २८	ठा ६३ ३सू ६२६, नसू १३
हीलित वचन	४५६	२ ६२	ठा ६३ ३सू ५२७, प्रव द्वा २३५ गा १३२१, वृ (जी) ३६
हंडक संस्थान	४६८	२ ६८	ठा ६सू ४६६, कर्म भा १ गा ४०
हेतु	४२	१ २७	रत्ना परि ३ सू ११
हेतु	३८०	१ ३६७	रत्ना परि ३ सू ११
हेतु अविरोद्धानुपलब्धि के	५५६	२ २६८	रत्ना परि ३सू ६४-१०२
सात भेद			
हेतु अविरोद्धोपलब्धि के	४६५	२ १०४	रत्ना परि ३सू. ६८-८२
छः भेद			

विषय	बोल भाग पृष्ठ	प्रमाण
हेतु दोष	७२२ ३ ४०६	ठा १०३ ३सू ७८३
हेतु विरुद्धोपलब्धिके ७ भेद ५५५	२ २६६	रत्ना.परि ३सू ८३-६२
ह्रस्व संस्थान	५५२ २ २६३	ठा. १सू ४७, ठा ७३ ३सू ४४८

न्यूनाधिकमशुद्धं वा, यद्वा स्याद्धीप्रमादितम् ।

दुष्कृतं तस्य मिथ्याऽस्तु, क्षन्तव्यं तच्च ज्ञानिभिः॥

भावार्थ—श्री जैन सिद्धान्त बोल संग्रह के सारे भागों में तथा उनके विषयानुक्रमसूचक इस आठवें भाग में बुद्धि प्रमाद से जो न्यून, अधिक अथवा अशुद्ध लिखा गया हो उससे होने वाला पाप निष्फल हो एवं ज्ञानी पुरुष उसके लिये क्षमा करें ।

अन्तिम संगल कामना

क्षेमं सर्वप्रजानां प्रभवतु बलवान् धार्मिको भूमिपालः ।
काले काले च वृष्टि वितरतु मघवा व्याधयो यान्तु नाशम्॥
दुर्भिक्षं चौरमारी क्षणमपि जगतां यास्म भृज्जीवल्लोके ।
जैनेन्द्रं धर्मचक्रं प्रसरतु सततं सर्वसौख्यप्रदायि ॥

भावार्थ—सकल प्रजाजनों का कल्याण हो, राजा बलवान् और धर्मात्मा हो, वृष्टि यथासमय हुआ करे, सभी रोग नष्ट हो जायें, दुर्भिक्ष (दुष्काल), चोरी और महापारी आदि दुःख संसार में कभी किसी भाषाणी को न सनावें और रागद्वेष के विजेता श्रीजिनेश्वर देव द्वारा प्रवर्तित, सर्व सुखों को देने वाले धर्मचक्र का सदा सर्वत्र विस्तार हो ।

शान्ति !

शान्ति !!

शान्ति !!!

